

॥ श्रीः ॥

नामलिङ्गानुशासनं नाम

अमरकोपः ।

प्रथमं काण्डम् ।

१ मङ्गलचरणम् ।

यस्य ज्ञानदयासिन्धोरुगाधस्यानघो गुणो
सेव्यतामक्षयो धीरो स श्रियं चामृतोयं च = गुणाभि = १

२ प्रस्ताना ।

समाहृत्यान्यतन्त्राणि सक्षिप्तैः प्रतिसस्कृतेः ३

सपूर्णमुच्यते वर्गेनामलिङ्गानुशासनम् ४

३. परिभाषा ।

प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित् ५

स्त्रीपुनपुंसक ज्ञेयं तद्विशेषविधेः क्वचित् ६

भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न संकरः ७

कृतोऽत्र भिन्नलिङ्गानामनुक्तानां क्रमादृते ८

त्रिलिङ्ग्यां त्रिव्यति पदं मिथुने तु द्वयोरिति ९

निषिद्धलिङ्ग शेषार्थं त्वन्तायादि न पूर्वभाक् १०

४. स्वर्गवर्गः ।

| | |
|---|----|
| स्वरव्ययं। स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः | ११ |
| मुरलोको द्यौर्दिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् | १२ |
| अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः | १३ |
| सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः | १४ |
| आदितेया दिविपदो लेखा अदितिनन्दनाः | १५ |
| आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः | १६ |
| वर्हिर्मुखाः क्रतुभुजो गीर्वाणा दानवारयः | १७ |
| वृन्दारका देवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम् | १८ |
| आदित्यविश्ववसवस्तुपिताभास्वरानिलाः | १९ |
| महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः | २० |
| विद्याधरोप्सरसोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः | २१ |
| पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः | २२ |
| असुरा दैत्यदैतेयदनुजैन्द्रारिदानवाः | २३ |
| शुक्रशिष्या दितिसुताः पूर्वदेवाः सुरद्विषः | २४ |
| सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः | २५ |
| समन्तभद्रो भगवान्मारजिल्लोकजिज्जिनैः | २६ |
| षडभिज्ञो दशवलोऽद्वयवादी विनायकः | २७ |
| मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः शाक्यमुनिस्तु यः | २८ |
| स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः | २९ |
| गौतमश्चार्कवन्धुश्च मायादेवीसुतश्च सः | ३० |
| ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः परमेष्ठी पितामहः | ३१ |

| | |
|--|----|
| हिरण्यगर्भो। लोकेशः। स्वयंभूश्चतुराननः। | ३० |
| धाताञ्जयोनिर्द्बुहिणो विरिञ्चिः कमलासनः। | ३३ |
| स्रष्टा। प्रजापतिर्वेधाः विधाता विश्वसृष्टिधिः। ए० उ० म० के० | ३४ |
| नाभिजन्माण्डजः। पूर्वो निधनः कमलोद्भवः॥ | ३५ |
| सदानन्दी। रजोमूर्तिः। सत्यको। हसवाहनः॥ ए० उ० म० के० | ३६ |
| विष्णुर्नारायणः। कृष्णो। वैकुण्ठो। विष्टरश्रवाः। | ३७ |
| दामोदरो। हृषीकेशः। केशवो। माधवः। स्वभूः। | ३८ |
| दैत्यारिः। पुण्डरीकाक्षो। गोविन्दो गुरुडध्वजः। | ३९ |
| पीताम्बरोऽच्युतः। शार्ङ्गो। विश्वक्सेनो। जनार्दनः। | ४० |
| जोत्स्नः। नन्तालगजश्रक्रपाणिश्चतुर्भुजः। | ४१ |
| वस्त्रविक्रमः। | ४२ |
| ३०७ श्रीपतिः। पुरुषोत्तमः। | ४३ |
| ३०८ ध्वसी। कंसारातिरुधोक्षजः। | ४४ |
| ३०९ कटभजिद्विधुः। श्रीवत्सलाम्बुजः। | ४५ |
| ३१० पुरुषो यज्ञपुरुषो नरकान्तकः॥ | ४६ |
| ३११ लज्जार्थी। विश्वरूपो। मुकुन्दो। मुरमर्दनः॥ ए० उ० म० के० | ४७ |
| वसुदेवोऽस्य जनकः। स। एवानकदुन्दुभिः। ए० उ० म० के० | ४८ |
| बलभद्रः। प्रलम्बघ्नो। बलदेवोऽच्युताग्रजः। | ४९ |
| रेवतीरमणो। रामः। कामपालो। हलायुधः। | ५० |
| नीलाम्बरो। राहिण्यस्तालाङ्गो। मुसली। हली। | ५१ |
| संकर्षणः। मीरपाणिः। कालिन्दीभेदनो बलः। ए० उ० म० के० | ५२ |
| मदनो। मन्मथो। मारः। प्रद्युम्नो। मीनकेतनः। | ५३ |

| | |
|---|-----|
| कंदर्पो/दर्पकोऽनङ्गः॥ कामः॥ पञ्चशरः॥ स्मरः॥ | ५० |
| शम्बरारिर्मनसिजः॥ कुसुमेपुरनन्यजः॥ | ५१ |
| पुष्पधन्वा॥ रतिपतिर्मकरध्वजः॥ आत्मभूः॥ | ५२ |
| ‘अरविन्दमशोकं। च। चूतं। च। नवमल्लिका॥ | *** |
| नीलोत्पलं/च। पञ्चैते। पञ्चवाणस्य। सायकाः॥ | *** |
| उन्मादनस्तापनश्च। शोषणस्तम्भनस्तथा॥ | *** |
| संमोहनश्च। कामस्य। पञ्च। वाणाः॥ प्रकीर्तिताः॥’ | *** |
| ब्रह्मसूर्विश्वकेतुः॥ स्यादनिरुद्धः॥ उपापतिः॥ | ५३ |
| लक्ष्मीः। पद्मालया। पद्मा। कमला। श्रीहरिप्रिया॥ | ५४ |
| ‘इन्दिरा। लोकमाता। मा। क्षीरोदतनया। रमा॥ | *** |
| भार्गवी। लोकजननी। क्षीरसागरकन्यकाः॥’ | *** |
| शङ्खो। लक्ष्मीपतेः॥ पाञ्चजन्यश्चक्रं। सुदर्शनः॥ | ५५ |
| कौमोदकी। गदा। खड्गो। नन्दकः। कौस्तुभो। मणिः॥ | ५६ |
| ‘चापः। शार्ङ्गः। मुरारेस्तु। श्रीवत्सो। लाञ्छनं। स्मृतम्॥ | *** |
| अश्वाश्च शैव्यसुग्रीवमेघपुष्पवलाहकाः॥ | *** |
| सारथिर्दारुको मन्त्री ह्युद्धवश्चानुजो गदः॥’ | *** |
| गरुत्मान्गरुडस्ताक्षर्यो। वैनतेयः। खगेश्वरः॥ | ५७ |
| नागान्तको विष्णुरथः। सुपर्णः। पन्नगाशनः॥ | ५८ |
| शंभुरीशः। पशुपतिः। शिवः। शूली। महेश्वरः॥ | ५९ |
| ईश्वरः। शर्व। ईशानः। शंकरश्चन्द्रशेखरः॥ | ६० |
| भूतेशः। खण्डपरशुर्गिरीशो। गिरिशो। मृडः॥ | ६१ |
| मृत्युञ्जयः। कृत्तिवासा। पिनाकी। प्रमथाधिपः॥ | ६२ |

| | |
|--|----|
| उग्रः कपर्दी' श्रीकण्ठः' शितिकण्ठ । कपालभृत् । | ६३ |
| वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः | ६४ |
| कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहित | ६५ |
| हर । स्मरहरो' भर्गख्यम्बकस्त्रिपुरान्तक | ६६ |
| गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः । क्रतुध्वंसी' वृषध्वजः | ६७ |
| व्योमकेशो भवो' भीम' स्थाणू' रुद्र । उमापतिः' सीतविजा | ६८ |
| 'अहिर्बुध्नयो'ऽष्टमूर्तिश्च' गजारिश्च' महानदः । इन्द्रासीदन् | ६९ |
| कपर्दो'ऽस्य जटाजूट । पिनाको'ऽजगवं' धनु | ७० |
| प्रमथाः । स्युः । पारिपदा' ब्राह्मीत्याद्यास्तु । मातरः । | ७१ |
| 'ब्राह्मी माहेश्वरी' चैव' कौमारी' वैष्णवी' तथा ।। | ७२ |
| वाराही' च तथेन्द्राणी' चामुण्डा' सप्त' मातरः ।। | ७३ |
| विभूतिर्भूतिरैश्वर्यमणिमादिकमष्टधा । इन्द्रासीदन् | ७४ |
| 'अणिमा महिमा' चैव' गरिमा' लघिमा' तथा ।। | ७५ |
| प्राप्तिः । प्राकाम्यमीशित्व । वशित्वं । चाष्टसिद्धयः । इन्द्रासीदन् | ७६ |
| उमा । कात्यायनी । गौरी । काली । हैमवती' श्वरी । | ७७ |
| शिया । भवानी । रुद्राणी । शर्वाणी । सर्वमङ्गला | ७८ |
| अपर्णा । पार्वती' दुर्गा । मृडानी । चण्डिकांम्बिका | ७९ |
| 'आर्या' दाक्षायणी' चैव' गिरिजा' मेनकात्मजा । इन्द्रासीदन् | ८० |
| त्रिनायको विघ्नराजद्वैमातुरगणाधिपा | ८१ |
| अप्येकदन्तहरम्बलम्बोदरगजाननाः । इन्द्रासीदन् | ८२ |
| कातिकैयी महामेनः । शरजन्मा पडानन | ८३ |
| पार्वतीनन्दनः स्कन्दः । सेनानीरग्निभृर्गुह | ८४ |

| | |
|---|----|
| वाहुलेयस्तारकजिद्विशाखः शिखिवाहनः | ७९ |
| पाण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारणः | ८० |
| 'शृङ्गी' भृङ्गी रिदिस्तुण्डी नदिको नन्दिकेश्वरः । | ** |
| 'कर्ममोटी' तु चामुण्डा चर्ममुण्डा तु चर्चिका ॥ | ** |
| इन्द्रो मरुत्वान्मघवा विडौजाः पाकशासनः | ८१ |
| वृद्धश्रवाः सुनासीरः पुरुहूतः पुरंदरः | ८२ |
| जिष्णुर्लेखर्षभः शक्रः शतमन्युर्दिवस्पतिः | ८३ |
| सुत्रामा गोत्रभिद्वज्जी वासवो वृत्रहा वृषा | ८४ |
| वास्तोष्पतिः सुरपतिर्वलारातिः शचीपतिः | ८५ |
| जम्भभेदी हरिहयः स्वाराण्णमुचिसूदनः | ८६ |
| संकन्दनो दुश्चयवनस्तुराषाण्मेघवाहनः | ८७ |
| आखण्डलः सहस्राक्षः ऋभुक्षास्तस्य तु प्रिया | ८८ |
| पुलोमजा शचीन्द्राणी नगरी त्वमरावती | ८९ |
| हय उच्चैःश्रवाः सूतो मातलिर्नन्दनं वनम् | ९० |
| स्यात्प्रासादो वैजयन्तो जयन्तः पाकशासनिः | ९१ |
| ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवलभाः | ९२ |
| हादिनी वज्रमस्त्री स्यात्कुलिशं भिदुरं पविः | ९३ |
| शतकोटिः स्वरुः शम्बो दम्भोलिरशनिर्द्वयोः | ९४ |
| व्योमयानं विमानोऽस्त्री नारदाद्याः सुरर्षयः | ९५ |
| स्यात्सुधर्मा देवसभा पीयूषममृतं सुधा | ९६ |
| मन्दोकिनी वियद्गङ्गा स्वर्णदी सुरदीर्घिका | ९७ |
| नेरुः सुमेरुर्हेमाद्री रत्नसानुः सुरालयः | ९८ |

| | |
|--|-----|
| पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः | ९९ |
| संतानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम् | १०० |
| सनत्कुमारो वैधात्रः स्वर्वेद्यावश्विनीसुता | १०१ |
| नासत्यावश्विनौ दत्तावश्विनैर्यौ च तावुभौ | १०२ |
| स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्वर्वेश्या उर्वशीमुखा | १०३ |
| धृताची मेनका रम्भा उर्वशी च तिलोत्तमा | *** |
| सुकेती मञ्जुघोषाद्याः कथ्यन्तेऽप्सरसो बुधैः ॥ | *** |
| हाहा हुह्रश्चैवमाद्या गन्धर्वास्त्रिदिवौकसाम् | १०४ |
| अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनंजयः | १०५ |
| कृपीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनूनपात् | १०६ |
| वर्हिः शुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिष्केश उपवुधः | १०७ |
| आश्रयाशो बृहद्भानुः कृशानुः पावकोऽनलः | १०८ |
| रोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुशुक्षणिः | १०९ |
| हिरण्यरेता हुतभृग्दहनी हव्यवाहनः | ११० |
| सप्तार्चिर्दमुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः | १११ |
| शुचिरपिप्तमौर्वस्तु वाडवो वडवानल इन्द्रसृष्टि | ११२ |
| वह्नेर्द्वयोर्ज्वालीलावर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियाम् | ११३ |
| त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकण संताप संज्वर समौ | ११४ |
| उल्का स्यान्निर्गतज्वाला भूतिर्भसितभस्मनी | *** |
| क्षारो रक्षो च दावस्तु दवो वनहुताग्न ॥ १२ वन अ | *** |
| धर्मराजः पितृपति समवर्तो परेतराट् | ११५ |
| कृतान्तो यमुनाभ्याता गमनो यमराज्यम् | ११६ |

| | |
|--|-----|
| कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः | ११७ |
| राक्षसः कौपणः क्रव्यात्क्रव्यादोऽस्रप आशरः | ११८ |
| रात्रिचरो रात्रिचरः कर्बुरो निकपात्मजः | ११९ |
| यातुधानः पुण्यजनो तैर्गतो यातुरक्षसी | १२० |
| प्रचेता वरुणः पाशी यादसांपतिरप्यतिः | १२१ |
| श्वसनः स्पर्शनो वायुमार्तरिश्वा सदागतिः | १२२ |
| पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः | १२३ |
| समीरमारुतमरुज्जगत्प्राणसमीरणाः | १२४ |
| नभस्वद्धातपवर्नपवमानप्रभञ्जनाः | १२५ |
| प्रकम्पनो महावातो झंझावार्तः सवृष्टिकः । | *** |
| प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः | १२६ |
| हृदि प्राणो गुदेऽपानः समानो नाभिमण्डले । | *** |
| उदानः कण्ठदेशे स्याद्व्यानः सर्वशरीरगः ॥ | *** |
| शरीरस्था इमे रंहस्तरसी तु रयः स्यदः | १२७ |
| जवोऽथ शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमरं द्रुतम् | १२८ |
| सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु च | १२९ |
| सततानारताश्रान्तसंतताविरतानिशम् | १३० |
| नित्यानवरताजस्रमप्यथातिशयो भरः | १३१ |
| अतिवेलभृशात्यर्थातिमात्रोद्गाढनिर्भरम् | १३२ |
| तीव्रैकान्तनितान्तानि गाढवाढदृढानि च | १३३ |
| क्लीवे शीघ्राद्यसत्त्वे स्यान्निष्पेपां सत्त्वगामि यत् | १३४ |
| कुवेरस्यम्बकसखो यक्षराजुह्यकेश्वरः | १३५ |

| | |
|--|-----|
| मनुष्यधर्मा धनदो 'राजराजो' धनाधिपः । | १३६ |
| किनरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः । | १३७ |
| यक्षैकपिङ्गलविलश्रीदपुण्यजनेश्वराः । | १३८ |
| अस्योद्यान चैत्ररथं पुत्रस्तु नलकूबरः । | १३९ |
| कैलासः स्थानमलका पूर्विमानं तु पुष्पकम् । | १४० |
| स्यात्किनरैः किपुरुषस्तुरगवदनो मयुः । | १४१ |
| निधिर्ना शेवधिर्भेदाः पद्मशङ्खादयो निधेः । | १४२ |
| 'महापद्मश्च पद्मश्च शखो' मकरकच्छपौ । | १४३ |
| मुकुन्दकुन्दनीलाश्च सर्वे निधयो नवः ॥ | १४४ |

५ व्योमवर्ग - ।

| | |
|---|-----|
| द्यौर्दिवौ द्वे स्त्रियामभ्रं व्योम पुष्करमम्बरम् । | १४३ |
| नभोऽन्तरीक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम् । | १४४ |
| वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी । | १४५ |
| 'विहायसोऽपि नाकोऽपि द्युरपि स्यात्तदव्ययम् । | १४६ |
| तारापथोऽन्तरिक्षं च मेघाध्वा च महाविलम् ॥ | १४७ |
| विहायाः शकुने पुंसि गगने पुंनपुंसकम् । | १४८ |

६ दिग्बर्ग ।

| | |
|---|-----|
| दिशस्तु कुरुभे कोष्ठा आशाश्च हरितश्च ता । | १४६ |
| प्राच्यवाची प्रतीच्यस्ताः पूर्वदक्षिणपश्चिमाः । | १४७ |
| उत्तरा दिगुदीची स्याद्दिश्यं तु त्रिषु दिग्भवे । | १४८ |
| 'अवाग्भवमवाचीनमुदीचीनमुदग्भवम् । | १४९ |
| प्रत्यग्भवं प्रतीचीनं प्राचीनं प्राग्भवं त्रिषु ॥ | १५० |

| | |
|--|-----|
| इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् | १४९ |
| कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात् | १५० |
| रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः । | *** |
| बुधो बृहस्पतिश्चेति दिशां चैव तथा ग्रहाः ॥ | *** |
| ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः | १५१ |
| पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः | १५२ |
| करिण्योऽभ्रमुकपिलापिङ्गलानुपमाः क्रमात् | १५३ |
| ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चाङ्गना चाञ्जनावती | १५४ |
| क्लीवाव्ययं त्वपदिशं दिशोर्मध्ये विदिक्खियाम् | १५५ |
| अभ्यन्तरं त्वन्तरालं चक्रवालं तु मण्डलम् | १५६ |
| अभ्रं मेघो वारिवाहः स्तनयित्नुर्वलाहकः | १५७ |
| धाराधरो जलधरस्तडित्वान्वारिदोऽम्बुभृत् | १५८ |
| घनजीमूतमुदिरजलमुग्धूमयोनयः | १५९ |
| कादम्बिनी मेघमाला त्रिषु मेघभवेऽभ्रियम् | १६० |
| स्तनितं गजितं मेघनिर्घोषे रसितादि च | १६१ |
| शंपाशतैर्हृदाह्रदिन्यैरावत्यः क्षणप्रभा | १६२ |
| तडित्सौदामनीविद्युच्चञ्चला चपला अपि | १६३ |
| स्फूर्जथुर्वज्रनिर्घोषो मेघज्योतिरिरमदः | १६४ |
| इन्द्रायुधं शक्रधनुस्तदेव क्रजुरोहितम् | १६५ |
| वृष्टिर्वर्षं तद्विघातेऽवग्रहावग्रहौ समौ | १६६ |
| धारासंपात आसारः शीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः | १६७ |
| वर्षोपलस्तु करका मेघच्छन्नेऽहि दुर्दिनम् | १६८ |

| | |
|--|-----|
| अन्तर्धा' व्यवधा' पुंसि त्वन्तर्धिरपवारणम् | १६९ |
| अपिधान' तिरोधान' पिधाना' च्छादनानि' च ६८ कनकेना | १७० |
| हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र' इन्दु' कुमुदवान्धर्वः | १७१ |
| विधु' सुधांशु' शुभ्रांशुरोपधीशो' निशापतिः | १७२ |
| अब्जो' जैवातृकः सोमो' ग्लौर्मृगाङ्क' कलानिधिः | १७३ |
| द्विजराज' शशधरो' नक्षत्रेश' क्षपाकर' २० मद्रतीर्षा | १७४ |
| कला' तु पोडगो' भागो' विम्बोऽस्त्री मण्डलं' त्रिषु | १७५ |
| भित्तं' शकलखण्डे' वा पुंस्यर्धोऽर्ध' समेऽशके | १७६ |
| चन्द्रिका' कौमुदी' ज्योत्स्ना' प्रसादस्तु' प्रसन्नता | १७७ |
| कलङ्काङ्का' लाञ्छनं' च चिह्नं लक्ष्मं च लक्षणम् | १७८ |
| सुपमा' परमा' शोभा' शोभा' कान्तिर्द्युतिश्छविः | १७९ |
| अवश्यायस्तु' नीहुरस्तु' पारस्तु' हिनं' हिमम् | १८० |
| प्रालेय' मिहिका' चायं हिमानी' हिममंहतिः २ अस्व० | १८१ |
| शीतं' गुणे' तद्वदर्याः सुपीमं' शिशिरो' जडः | १८२ |
| तुपार' शीतल' शीतो' हिम' सैसान्यलिङ्गकाः | १८३ |
| ध्रुव' आत्तानपादि' स्यादगस्त्य' कुम्भसंभव' | १८४ |
| मैत्रा' विरुणिरस्यव' लोपामुद्रा' सधर्मिणी | १८५ |
| नक्षत्रमृक्षं' भं तारा' तारका' प्युडु' वा स्त्रियाम् | १८६ |
| दाक्षायण्योऽश्विनीत्यादितारा' अश्वयुगश्विनी | १८७ |
| राधा' विशाखा' पुष्ये' तु सिध्यतिप्यौ' श्रविष्ठया | १८८ |
| मना' धनिष्ठा' स्युः प्रोष्ठपदा' भाद्रपदा' स्त्रिय' | १८९ |
| मृगशीर्ष' मृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी | १९० |

| | |
|--|-----|
| इत्यलास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः | १९१ |
| बृहस्पतिः सुराचार्यो गीर्पतिर्धिषणो गुरुः | १९२ |
| जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः | १९३ |
| शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः कविः | १९४ |
| अङ्गारकः कुजो भौमा लोहिताङ्गो महीसुतः | १९५ |
| रौहिणेयो बुधः सौम्यः समौ सौरिशनैश्वरौ रश्मिनी | १९६ |
| तमस्तु राहुः स्वर्भानुः संहिकेयो विधुंतुदः | १९७ |
| सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखण्डिनः | १९८ |
| राशीनामुदयो लग्नं ते तु मेघवृषादयः | १९९ |
| सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः | २०० |
| भास्कराहस्करब्रध्नप्रभांकरविभाकराः | २०१ |
| भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदेश्वोष्णरश्मयः | २०२ |
| विकर्तनोर्कमार्तण्डमिहिरारुणपूषणः | २०३ |
| द्युमणिस्तरणिमित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः | २०४ |
| विभावंसुग्रहपतिस्त्विषांपतिरहर्षतिः | २०५ |
| भानुर्हसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः | २०६ |
| पद्माक्षस्तेजसां राशिश्छायार्थंस्तमिच्छहा । | *** |
| कर्मसाक्षी जगच्चक्षुर्लोकबन्धुस्त्रयीतनुः ॥ | *** |
| प्रद्योतनो दिनमणिः खद्योतो लोकवान्धवः ॥ | *** |
| इनो भागो धामनिधिश्चांशुमाल्यब्जिनीपतिः ॥ | *** |
| माठरः पिङ्गलो दण्डश्चेण्डांशोः पारिपार्श्विकाः | २०७ |
| सूरसूतोऽरुणोऽनूरुः काश्यपिर्गुरुडाग्रजः | २०८ |

| | |
|---|-----|
| परिवेपस्तु' परिधिरूपसूर्यकमण्डले' मवेशानाम् | २०९ |
| किरणोत्तमयूखांशुगभस्तिघृणिपृश्नयः | २१० |
| भानुः करो मरीचिः स्त्रीपुंसयोर्दीधितिः स्त्रियाम् | २११ |
| स्युः प्रभारुगुरुचिस्त्विद्भाभाश्छविद्युतिदीप्तयः | २१२ |
| रोचिः शोचिरुभे' क्लीवे प्रकाशो' द्योत' आतप'. | २१३ |
| कोष्णं कवोष्णं' मन्दोष्णं' कदुष्णं त्रिषु तद्वति | २१४ |
| तिग्मं' तीक्ष्णं खरं तद्वन्मृगतृष्णा मरीचिका | २१५ |

~७ कालवर्ग - ।

| | |
|---|-----|
| कालो दिष्टोऽप्यनेहापि' समयोऽप्यथ पक्षति. | २१६ |
| प्रतिपद्दे' इमे स्त्रीत्वे' तदाद्यास्तिथयो' द्वयोः | २१७ |
| घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीवे दिवसवासरौ' | २१८ |
| प्रत्यूषोऽहर्मुख कल्यमुष. प्रत्युपसी अपि' | २१९ |
| 'व्युष्ट' विभात' द्वे क्लीवे पुंसि गोसर्ग इप्यते ।' | *** |
| प्रभातं' च दिनान्ते' तु सायं। संध्या' पितृप्रसू | २२० |
| प्राह्णापराह्णमध्याह्नास्त्रिसंध्यमथ अर्चरी | २२१ |
| निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा' क्षणदा क्षपा | २२२ |
| विभावरीतमस्विन्या' रजनी' यामिनी' तमी' | २२३ |
| तमिस्रा' तामसी रात्रिर्ज्यौत्स्नी चन्द्रिकयान्विता | २२४ |
| आगामिवर्तमानाहर्युक्तायां निशि पक्षिणी | २२५ |
| गणरात्रं निशा बहुथ. प्रदोषो रजनीमुखम् | २२६ |
| अर्धरात्रनिशीर्था' द्वा' द्वा' यामप्रहरौ समा' | २२७ |
| म पर्यसधि प्रतिपत्पञ्चदशयोर्धन्तरम् | २२८ |

| | |
|---|-----|
| पक्षान्तौ पञ्चदश्याँ द्वे पौर्णमासी तु पूर्णिमा | २२९ |
| कलाहीने सानुमतिः पूर्णे राका निशाकरे | २३० |
| अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसंगमः | २३१ |
| सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली सा नष्टेन्दुकला कुहूः | २३२ |
| उपरागो ग्रहो राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च | २३३ |
| सोपप्लवोपरक्तौ द्वावभ्युत्पात उपाहितः | २३४ |
| एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकरनिशाकरौ | २३५ |
| अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा त्रिंशत्तु ताः कला | २३६ |
| तास्तु त्रिंशत्क्षणस्ते तु मुहूर्तो द्वादशास्त्रियाम् | २३७ |
| ते तु त्रिंशदशहोरात्रः पक्षस्ते दश पञ्च च | २३८ |
| पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ मासस्तु तावुभौ | २३९ |
| द्वौ द्वौ मार्गादिमासौ स्यादृतुस्तरयनं त्रिभिः | २४० |
| अयने द्वे गतिरुदक्षिणार्कस्य वत्सरः | २४१ |
| समरात्रिंदिवे काले विषुवद्विषुवं च तत् | २४२ |
| ‘पुण्ययुक्ता’ पौर्णमासी पौषी मासे तु यत्र सा । | २४३ |
| नाम्ना स पौषो माघाद्याश्चैवमेकादशापरे ॥ | २४४ |
| मार्गशीर्षे सहा मार्ग आग्रहायणिकश्च सः | २४५ |
| पौषे तैषसहस्यौ द्वौ तपा माघेऽथ फाल्गुने | २४६ |
| स्यात्तपस्यः फाल्गुनिकः स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः | २४७ |
| वैशाखे माधवो राधो ज्यैष्ठे शुक्रः शुचिस्त्वर्यम् | २४८ |
| आषाढे श्रावणे तु स्यान्नभाः श्रावणिकश्च सः | २४९ |
| स्युर्नभस्यप्रौष्ठपदभाद्रभाद्रपदाः समाः | २५० |

| | |
|---|-----|
| स्यादाश्विन' इयोऽप्याश्वयुजोऽपि' स्यात्तु' कार्तिके' | २४९ |
| वाहुलोजौ' कार्तिकिको हेमन्तः शिशिरोऽस्त्रियाम् | २५० |
| वसन्ते' पुष्पसमय'. सुरभिर्ग्रीष्म उष्मर्कः | २५१ |
| निदाघ' उष्णोपगम' उष्ण' ऊष्मागमस्तपः | २५२ |
| स्त्रियां प्रावृद्ध' स्त्रियां भूमि' वर्षा' अथ शरत्स्त्रियाम् | २५३ |
| षडमी' ऋतवः पुंसि मार्गादीनां' युगैः क्रमात् | २५४ |
| संवत्सरो' वत्सरोऽब्दो हायनोऽस्त्री शरत्सर्मा' | २५५ |
| मासेन' स्यादहोरात्रः पैत्रो' वर्षेण देवतः | २५६ |
| दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्म' कल्पौ' तु तौ नृणाम्' | २५७ |
| मन्वन्तरं' तु दिव्यानां युगानामेकसप्तति' | २५८ |
| सवर्त' प्रलयः कल्प. क्षय. कल्पान्त इत्यपि' | २५९ |
| अस्त्री पङ्क' पुमान्पाप्मा पापं' किल्बिषकल्मषम् | २६० |
| कलुषं' वृजिनोऽधमंहोदुरितदुष्कृतम् | २६१ |
| स्याद्धर्ममस्त्रियां पुण्यश्रेयसी सुकृतं वृष' | २६२ |
| मुत्सीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदामोदसंमदा' | २६३ |
| स्यादानन्दथुरानन्दः शर्मसातसुखानि च | २६४ |
| श्व.श्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गल शुभम् | २६५ |
| भावुकं भविकं भव्य कुशलं क्षेममस्त्रियाम् | २६६ |
| शस्तं चाथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्य सुखादि च | २६७ |
| मतल्लिका मचर्चिका प्रकाण्डमुद्धतल्लजौ | २६८ |
| प्रशस्तवाचकान्यमून्यय. शुभावहो विधि. | २६९ |
| दैवं दिष्ट भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिविधि | २७० |

| | |
|---|-----|
| हेतुर्ना कारणं वीजं निदानं त्वादिकारणम् | २७१ |
| क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम् | २७२ |
| विशेषः कालिकोऽवस्था गुणाः सत्त्वं रजस्तमः | २७३ |
| जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः | २७४ |
| प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुजन्युशरीरिणः | २७५ |
| जातिर्जातं च सामान्यं व्यक्तिस्तु पृथगात्मता | २७६ |
| चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हन्मानसं मनः | २७७ |

८. धीवर्गः ।

| | |
|---|-----|
| बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः | २७८ |
| प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संविद्यतिपञ्चसिचेतनाः | २७९ |
| धीर्धारणावती मेधा संकल्पः कर्म मानसम् | २८० |
| ‘अवधानं समाधानं प्रणिधानं तथैव च ।’ | ** |
| चित्ताभोगो मनस्कारश्चर्चा संख्या विचारणा | २८१ |
| ‘विमर्शो भावना चैव वासना च निगद्यते ।’ | ** |
| अध्याहारस्तर्क ऊहो विचिकित्सा तु संशयः | २८२ |
| संदेहद्वारौ चाथ समौ निर्णयनिश्चयौ | २८३ |
| मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता व्यापदो द्रोहचिन्तनम् | २८४ |
| समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ भ्रान्तिर्मिथ्यामतिभ्रमः | २८५ |
| संविदागूः प्रतिज्ञानं नियमाश्रवसंश्रवाः | २८६ |
| अङ्गीकाराभ्युपगमप्रतिश्रवसमाधयः | २८७ |
| मोक्षे धीर्ज्ञानिमन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः | २८८ |
| मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिःश्रेयसामृतम् | २८९ |

| | |
|---|-----|
| मोक्षोऽपवर्गोऽधाज्ञानमविद्याहंमतिः स्त्रियाम् | २९० |
| रूपं शब्दो गन्धरसस्पर्शाश्च विषया अमी | २९१ |
| गोचरा इन्द्रियार्थाश्च हृषीकं विषयीन्द्रियम् | २९२ |
| कर्मेन्द्रियं तु पाय्वादि मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् | २९३ |
| तुवरस्तु कपायोऽस्त्री मधुरो लवणं कटुं | २९४ |
| तिक्तोऽम्लश्च रसा पुंसि तद्वत्सु पडमी त्रिषु | २९५ |
| विमर्दोत्थे परिमलो गन्धे जनमनोहरे | २९६ |
| आमोदः सोऽतिनिहारी वाच्यलिङ्गत्वमागुणात् | २९७ |
| समाकर्षी तु निहारी सुरभिर्घ्राणतर्पणं. | २९८ |
| इष्टगन्धः सुगन्धिः स्यादामोदी मुखवासनः | २९९ |
| पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धो विस्त्र स्यादामगन्धि यत् | ३०० |
| शुक्लशुभ्रशुचिश्चेतविशर्दश्येतपाण्डरा | ३०१ |
| अवदातः सितो गौरो वलक्षो धवलोऽर्जुनः | ३०२ |
| हरिणः पाण्डुरः पाण्डुरीपत्पाण्डुस्तु धूसरः | ३०३ |
| कृष्णो नीलासितश्यामकालश्यामलमेचकाः | ३०४ |
| पीतो गौरो हरिद्राभः पालाशो हरितो हरित् | ३०५ |
| लोहितो रोहितो रक्तः शोणः कोकनदच्छविः | ३०६ |
| अव्यक्तरागस्वरणं श्वेतरक्तस्तु पाटलः | ३०७ |
| श्यावः स्यात्कपिशो धूम्रधूमलौ कृष्णलोहितं | ३०८ |
| कडारः कपिलः पिङ्गपिशङ्गो कटुपिङ्गलौ | ३०९ |
| चित्रः किमीरकल्माषशर्वलताश्च कर्बुरे | ३१० |
| गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणिलिङ्गास्तु तद्वति | ३११ |

९. शब्दादिवर्गः ।

| | |
|--|-----|
| ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाण्वाणी सरस्वती | ३१२ |
| व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः | ३१३ |
| अपभ्रंशोऽपशब्दः स्याच्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः | ३१४ |
| तिङ्मुबन्तचयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता | ३१५ |
| श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी धर्मस्तु तद्विधिः | ३१६ |
| स्त्रियामृक्सामयजुषी इति वेदास्त्रयस्त्रयी | ३१७ |
| शिक्षेत्यादि श्रुतेरङ्गमोकारप्रणवौ समौ | ३१८ |
| इतिहासः पुरावृत्तमुदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः | ३१९ |
| आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्कविद्यार्थशास्त्रयोः | ३२० |
| आख्यायिकोपलब्धार्था पुराणं पञ्चलक्षणम् | ३२१ |
| प्रबन्धकल्पना कथा प्रवहिका प्रहेलिका | ३२२ |
| स्मृतिस्तु धर्मसंहिता समाहृतिस्तु संग्रहः | ३२३ |
| समस्या तु सामासार्था किंवदन्ती जनश्रुतिः | ३२४ |
| वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यादथाह्वयः | ३२५ |
| आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च | ३२६ |
| हूतिराकारणाह्वानं संहृतिर्वहुभिः कृता | ३२७ |
| विवादो व्यवहारः स्यादुपन्यासस्तु वाङ्मुखम् | ३२८ |
| उपोद्धात उदाहारः शपनं शपथः पुमान् | ३२९ |
| प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छा च प्रतिवाक्योत्तरे समे | ३३० |
| मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यानमथ मिथ्याभिर्शंसनम् | ३३१ |
| अभिशापः प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः | ३३२ |

| | |
|--|-----|
| यशः कीर्तिः समञ्जस च स्तवः स्तोत्रं नुतिः स्तुतिः | ३३३ |
| आम्बेडितं द्विस्त्रिरुक्तमुच्चैर्घुष्टं तु घोषणा | ३३४ |
| काकुः स्त्रियां विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः | ३३५ |
| अवर्णाक्षेपनिर्वादपरीवादापवादवत् | ३३६ |
| उपक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गर्हणे | ३३७ |
| पारुष्यमतिवादः स्याद्भर्त्सनं त्वपकारगीः | ३३८ |
| यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात्परिभाषणम् | ३३९ |
| तत्र त्वाक्षारणा यः स्यादाक्रोशो मैथुनं प्रति | ३४० |
| स्यादाभाषणमालापः प्रलापोऽनर्थकं वचः | ३४१ |
| अनुलापो मुहुर्भाषा विलापः परिदेवनम् | ३४२ |
| विप्रलापो विरोधोक्तिः संलापो भाषणं मिथः | ३४३ |
| सुप्रलापः सुवचनमपलापस्तु निह्वयः | ३४४ |
| ‘चोद्यमाक्षेपाभियोगौ आपाक्रोशौ दुरेपणा । | *** |
| अस्त्री चाट्टु चट्टु श्लाघा प्रेम्णा मिथ्या विकल्थनम् ॥’ | *** |
| संदेहावाग्वाचिकं स्याद्वाग्भेदास्तु त्रिपूतरे | ३४५ |
| रुशती वागकल्याणी स्यात्कल्या तु शुभात्मिका | ३४६ |
| अत्यर्थमधुरं सान्त्वं संगतं हृदयंगमम् | ३४७ |
| निष्ठुरं परुषं ग्राम्यमश्लीलं सूनुतं प्रिये | ३४८ |
| सत्येऽथ संकुलक्लिष्टे परस्परपराहते | ३४९ |
| लुप्तवर्णपदं ग्रस्तं निरस्तं त्वरितोदितम् | ३५० |
| अम्बूकृतं मनिष्ठीवमवह्वं स्यादनर्थकम् | ३५१ |
| अनक्षरमवाच्यं स्यादाहृतं तु मृपार्यकम् | ३५२ |

| | |
|--|-----|
| ‘सोलुण्ठनं तु सोत्सासं भणितं रतिकूजितम् । | *** |
| श्राव्यं हृद्यं मनोहारि विस्पष्टं प्रकटोदितम् ॥’ | *** |
| अथ म्लिष्टमविस्पष्टं वितथं त्वनृतं वचः | ३५३ |
| सत्यं तथ्यमृतं सम्यगमूनि त्रिषु तद्वति | ३५४ |
| शब्दे निनादनिनदध्वनिध्वानरवस्वनाः | ३५५ |
| स्वाननिर्घोषनिर्हादनादनिस्वाननिस्वनाः | ३५६ |
| आरवारावसंरावविरावा अथ मर्मरः | ३५७ |
| स्वनिते वस्त्रपर्णानां भूषणानां तु शिञ्जितम् | ३५८ |
| निक्राणो निक्रणः क्राणः कणः कणनमित्यपि | ३५९ |
| वीणायाः कणिते प्रादेः प्रक्राणप्रक्रणादयः | ३६० |
| कोलाहलः कलकलस्तिरश्चां वाशितं रुतम् | ३६१ |
| स्त्री प्रतिश्रुत्यतिध्वाने गीतं गानमिमे समे | ३६२ |

१०. नाट्यवर्गः ।

| | |
|--|-----|
| निषादर्षभ्रतन्धरिषड्जमध्यमधैवताः | ३६३ |
| ऋमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः | ३६४ |
| काकली तु कले सूक्ष्मे ध्वनौ तु मधुरास्फुटे | ३६५ |
| कलो मन्द्रस्तु गम्भीरे तारोऽत्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु | ३६६ |
| ‘नृणामुरसि मध्यस्थो द्वाविंशतिविधो ध्वनिः । | *** |
| स मन्द्रः कण्ठमध्यस्थस्तारः शिरसि गीयते ॥’ | *** |
| समन्वितलयस्त्वेकतालो वीणा तु वलकी | ३६७ |
| विपञ्ची सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी | ३६८ |
| ततं वीणादिकं वाद्यमानञ्चं मुरजादिकम् | ३६९ |

| | |
|--|-----|
| वंशादिकं तु सुपिरं कांस्यतालादिकं घनम् | ३७० |
| चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्यनामकम् | ३७१ |
| मृदङ्गा मुरजा भेदास्त्वङ्ग्यालिङ्गयोर्ध्वकास्त्रयः | ३७२ |
| स्याद्यशःपटहो ढक्का भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान् | ३७३ |
| आनकः पटहोऽस्त्री स्यात्कोणो वीणादिवादनम् | ३७४ |
| वीणादण्डः प्रवालः स्यात्ककुभस्तुं प्रसेवकः | ३७५ |
| कौलम्बकस्तु कायोऽस्या उपनाहो निबन्धनम् | ३७६ |
| वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिमझङ्गराः | ३७७ |
| मर्दलः पणवोऽन्ये च नर्तकीलासिके समे | ३७८ |
| विलम्बितं द्रुत मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् | ३७९ |
| तालः कालक्रियामानं लय साम्यमथास्त्रियाम् | ३८० |
| ताण्डवं नदनं नाट्य लास्यं नृत्यं च नर्तने | ३८१ |
| तौर्यत्रिकं नृत्यगीतवाद्यं नाट्यमिदं त्रयम् | ३८२ |
| भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्चेति नर्तकः | ३८३ |
| स्त्रीपेधारी पुरुषो नाट्योक्तौ गणिकाञ्जुका | ३८४ |
| भगिनीपतिरावुत्तो भागो विद्वानथावुक | ३८५ |
| जनको युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः | ३८६ |
| राजा भट्टारको देवस्तत्सुता भर्तृदारिका | ३८७ |
| देवी कृताभिपेकायामितरामु तु भट्टिनी | ३८८ |
| अब्रह्मण्यमग्रध्योक्तौ राजश्यालस्तु राष्ट्रिय | ३८९ |
| अम्बा माताय वाला स्याद्वासूरार्यस्तु-मारिपः | ३९० |
| अतिका भगिनी ज्येष्ठा निष्ठानिर्वहणे ममे | ३९१ |

| | |
|---|-----|
| हण्डे हज्जे हलाहानि नीचां चेटीं सखीं प्रति | ३९२ |
| अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो व्यञ्जकाभिनयौ समौ | ३९३ |
| निर्वृत्ते त्वङ्गसत्त्वाभ्यां द्वे त्रिष्वङ्गिकसात्त्विके | ३९४ |
| शृङ्गारवीरकरुणाद्भुतहास्यभयानकाः | ३९५ |
| वीभत्सरौद्रौ च रसाः शृङ्गारः शुचिरुज्ज्वलः | ३९६ |
| उत्साहवर्धनो वीरः कारुण्यं करुणा घृणा | ३९७ |
| कृपा दयानुकम्पा स्यादनुक्रोशोऽप्यथो हसः | ३९८ |
| हासो हास्यं च वीभत्सं विकृतं त्रिष्विदं द्वयम् | ३९९ |
| विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्यं चित्रमप्यथ भैरवम् | ४०० |
| दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम् | ४०१ |
| भयंकरं प्रतिभयं रौद्रं तूग्रममी त्रिषु | ४०२ |
| चतुर्दश दरस्त्रासो भीतिर्भीः साध्वसं भयम् | ४०३ |
| विकारो मानसो भावोऽनुभावो भावबोधकः | ४०४ |
| गर्वोऽभिमानोऽहंकारो मानश्चित्तसमुन्नतिः | ४०५ |
| ‘दर्पोऽवलेपोऽवष्टम्भश्चित्तोद्रेकः स्मयो मदः | ४०६ |
| अनादरः परिभवः परीभावस्तिरस्क्रिया | ४०७ |
| रीढावमाननावज्ञावहेलनमसूक्ष्णम् | ४०८ |
| मन्दाक्षं ह्रीस्त्रपा व्रीडा लज्जा सापत्रपान्यतः | ४०९ |
| क्षान्तिस्तितिक्षाभिध्या तु परस्य विषये स्पृहा | ४१० |
| अक्षान्तिरीर्ष्यासूया तु दोषारोपो गुणेष्वपि | ४११ |
| वैरं विरोधो विद्वेषो मन्युशोकौ तु शुक्लित्याम् | ४१२ |
| पश्चात्तापोऽनुतापश्च विप्रतीसार इत्यपि | ४१३ |

| | |
|---|-----|
| कोपक्रोधामर्षरोषप्रतिघा रुद्रक्रवौ स्त्रियां | ४१३ |
| शुचौ तु चरिते शीलमुन्मादश्चित्तविभ्रमः | ४१४ |
| प्रेमा ना प्रियता हार्दं प्रेम स्नेहोऽथ दोहदम् | ४१५ |
| इच्छा काहा स्पृहेहा तृड्वाञ्छा लिप्सा मनोरथः | ४१६ |
| कामोऽभिलापस्तर्पश्च सोऽत्यर्थं लालसा द्वयोः | ४१७ |
| उपाधिर्ना धर्मचिन्ता पुंस्याधिर्मानसी व्यथा | ४१८ |
| स्याच्चिन्ता स्मृतिराध्यानमुत्कण्ठोत्कलिके समे | ४१९ |
| उत्साहोऽध्यवसायः स्यात्स वीर्यमतिशक्तिभाक् | ४२० |
| कपटोऽस्त्री व्याजदम्भोपधयश्छद्मकैतवे | ४२१ |
| कुसृतिर्निकृतिः शाठ्यं प्रमादोऽनवधानता | ४२२ |
| कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम् | ४२३ |
| स्त्रीणां विलासविच्योकविभ्रमा ललितं तथा | ४२४ |
| हेला लीलेत्यमी हावा क्रिया. शृङ्गारभावजा | ४२५ |
| द्रवकेलिपरीहासाः क्रीडा लीला च नर्म च | ४२६ |
| व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च क्रीडा खेला च कूर्दनम् | ४२७ |
| धर्मो निदाघः स्वेदः स्यात्प्रलयो नष्टचेष्टता | ४२८ |
| अवहित्याकारगुप्तिः समौ संवेगसंभ्रमौ | ४२९ |
| स्यादाच्छुरितक हास सोत्प्रासः स मनाविस्मृतम् | ४३० |
| मध्यमः स्याद्विहसितं रोमाञ्चो रोमहर्षणम् | ४३१ |
| क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं जृम्भस्तु त्रिषु जृम्भणम् | ४३२ |
| विप्रलम्भो विसंवादो रिङ्गण स्वलनं समे | ४३३ |
| स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः मंवेश इत्यपि | ४३४ |

| | |
|--|-----|
| तन्द्री प्रमीला भ्रुकुटिभ्रुकुटिभ्रुकुटिः स्त्रियाम् | ४३५ |
| अदृष्टिः स्यादसौम्येऽक्षिण संसिद्धिप्रकृती त्विमे | ४३६ |
| स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्चाथ वेपथुः | ४३७ |
| कम्पोऽथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः | ४३८ |

११. पातालभोगिवर्गः ।

| | |
|--|-----|
| अधोभुवनपातालं बलिसद्म रसातलम् | ४३९ |
| नागलोकोऽथ कुहरं शुषिरं विवरं विलम् | ४४० |
| छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं वपा शुषिः | ४४१ |
| गर्तावटौ भुवि श्वभ्रे सरन्ध्रे शुषिरं त्रिषु | ४४२ |
| अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः | ४४३ |
| ध्वान्ते गाढेऽन्धतमसं क्षीणेऽवतमसं तमः | ४४४ |
| विष्वक्संतमसं नागाः काद्रवेयास्तदीश्वरः | ४४५ |
| शेषोऽनन्तो वासुकिस्तु सर्पराजोऽथ गोनसे | ४४६ |
| तिलित्सः स्यादजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ | ४४७ |
| अलगर्दो जलव्यालः समौ राजिलडुण्डुभौ | ४४८ |
| मालुधानो मातुलाहिर्निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः | ४४९ |
| सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजंगोऽहिर्भुजंगमः | ४५० |
| आशीविषो विषधरश्चक्री व्यालः सरीसृपः | ४५१ |
| कुण्डली गूढपाञ्चधुःश्रवाः काकोदरः फणी | ४५२ |
| दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो दन्दशूको विलेशयः | ४५३ |
| उरगः पन्नगो भोगी जिह्मगः पवनाशनः | ४५४ |
| ‘लेलिहानो द्विरसनो गोकर्णः कञ्चुकी तथा । | ४५५ |

कुम्भीनसः फणधरो हरिर्भोगधरस्तथा ॥

**

अहेः शरीरं भोग. स्यादाशीरप्यहिदष्टिका ।'

**

त्रिष्वाहेयं विपास्थ्यादि स्फटायां तु फणा द्वयोः

४५५

समौ कञ्चुकनिर्मोकौ क्ष्वेडस्तु गरलं विषम्

४५६

पुंसि क्लीबे च काकोलकालकूटहलाहला

४५७

सौराष्ट्रिक. शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपन

४५८

दारदो वत्सनाभश्च विषभेदा अमी नव

४५९

विषवैद्यो जाङ्गलिको व्यालग्राह्यहितुण्डिकः

४६०

१२ नरकवर्ग ।

स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम्

४६१

तच्चेदास्तपनावीचिमहारौरवरौरवाः

४६२

संघातः कालसूत्रं चेत्याद्याः सत्त्वास्तु नारका

४६३

प्रेता वैतरणी सिन्धुः स्यादलक्ष्मीस्तु निर्ऋतिः

४६४

विष्टिराजूः कारणा तु यातना तीव्रवेदना

४६५

पीडा बाधा व्यथा दुःखमामनस्यं प्रसूतिजम्

४६६

स्यात्कष्टं कृच्छ्रमाभीलं त्रिष्वेषां भेद्यगामि यत्

४६७

१३ वारिवर्ग ।

समुद्रोऽन्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः

४६८

उदन्वानुदधि सिन्धुः सरस्वान्सागरोऽर्णवः

४६९

रत्नाकरो जलनिधिर्यादः पतिरपांपतिः

४७०

तस्य प्रभेदा. क्षीरोदो लवणोदस्तथापरे

४७१

आप. स्त्री भूम्नि वार्वारि सलिल कमलं जलम्

४७२

| | |
|---|-----|
| पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् | ४७३ |
| कवन्धमुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम् | ४७४ |
| अम्भोऽर्णस्तोयपानीयनीरक्षीराम्बुशम्बरम् | ४७५ |
| मेघपुष्पं घनरसस्त्रिषु द्वे आप्यमम्मयम् | ४७६ |
| भङ्गस्तरङ्ग ऊर्मिर्वा स्त्रियां वीचिरथोर्मिषु | ४७७ |
| महत्सूक्ष्णलोलकल्लोलौ स्यादावर्तोऽम्भसां भ्रमः | ४७८ |
| पृपन्ति विन्दुपृपताः पुमांसो विप्रुपः स्त्रियाम् | ४७९ |
| चक्राणि पुटभेदाः स्युर्भ्रमाश्च जलनिर्गमाः | ४८० |
| कूलं रोधश्च तीरं च प्रतीरं च तटं त्रिषु | ४८१ |
| पारावारे परार्वाची तीरे पात्रं तदन्तरम् | ४८२ |
| द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं यदन्तर्वारिणस्तटम् | ४८३ |
| तोयोत्थितं तत्पुलिनं सैकतं सिकतामयम् | ४८४ |
| निपद्गरस्तु जम्वालः पङ्क्तोऽस्त्री शादकदर्दमौ | ४८५ |
| जलोच्छ्वासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः | ४८६ |
| नाव्यं त्रिलिङ्गं नौतार्ये स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः | ४८७ |
| उडुपं तु प्लवः कोलः स्रोतोऽम्बुसरणं स्वतः | ४८८ |
| आतरस्तरपण्यं स्याद्द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी | ४८९ |
| सांयात्रिकः पोतवणिकर्णधारस्तु नाविकः | ४९० |
| नियामकाः पोतवाहाः कूपको गुणवृक्षकः | ४९१ |
| नौकादण्डः क्षेपणी स्यादरित्रं केनिपातकः | ४९२ |
| अग्निः स्त्री काष्ठकुहालः सेकपात्रं तु सेचनम् | ४९३ |
| ह्रीवेऽर्धनावं नावोऽर्धेऽतीतनौकेऽतिनु त्रिषु | ४९४ |

| | |
|--|-----|
| त्रिष्वगाधात्मसन्नोऽच्छः कलुषोऽनच्छ आविलः | ४९५ |
| निम्नं गभीरं गम्भीरमुत्तानं तद्विपर्यये | ४९६ |
| अगाधमतलस्पर्शं कैवर्ते दाशधीवरौ | ४९७ |
| आनायः पुंसि जाल स्याच्छणसूत्रं पवित्रकम् | ४९८ |
| मत्स्याधानी कुवेणी स्याद्द्वडिशं मत्स्यवेधनम् | ४९९ |
| पृथुरोमा झपो मत्स्यो मीनो वैसारिणोऽण्डजः | ५०० |
| विसारः शकुली चाथ गडकः शकुलार्भकः | ५०१ |
| सहस्रदंष्ट्रः पाठीन उलूपी शिशुकः समौ | ५०२ |
| नलमीनश्चिलिचिमः प्रोष्ठी तु शफरी द्वयोः | ५०३ |
| धुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोताधानमथो झपाः | ५०४ |
| रोहितो मद्गुरः शालो राजीवः शकुलस्तिमि | ५०५ |
| तिमिगिलादयश्चाथ यादांसि जलजन्तवः | ५०६ |
| तज्जेदा शिशुमारोद्रशङ्खवो मकरादयः | ५०७ |
| स्यात्कुलीरः कर्कटकः कूर्मे कमठकच्छपां | ५०८ |
| ग्राहोऽग्रहारो नक्रस्तु कुम्भीरोऽथ महीलता | ५०९ |
| गण्डूपदः किचुलको निहाका गोधिका ममे | ५१० |
| रक्तपा तु जलकाया स्त्रियां भूम्नि जलकसः | ५११ |
| मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः शङ्खः स्यात्कम्बुरस्त्रियां | ५१२ |
| धुद्रजङ्घाः शङ्खानखाः शम्बूका जलशुक्तयः | ५१३ |
| भेके मण्डूकवर्षाभूशालूरप्लवदुर्दुराः | ५१४ |
| शिङ्गीगण्डूपदी भेकी वर्षाभ्वी कमठी डुलिः | ५१५ |
| मद्गुरस्य प्रिया शृङ्गी दुर्नामा दीर्घकोशिका | ५१६ |

| | |
|--|-----|
| जलाशयो जलाधारस्तत्रागाधजलो हृदः | ५१७ |
| आहावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये | ५१८ |
| पुंस्येवान्धुः प्रहिः कूप उदपानं तु पुंसि वा | ५१९ |
| नेमिस्त्रिकास्य वीनाहो मुखबन्धनमस्य यत् | ५२० |
| पुष्करिण्यां तु खातं स्यादखातं देवखातकम् | ५२१ |
| पद्माकरस्तडागोऽस्त्री कासारः सरसी सरः | ५२२ |
| वेशन्तः पल्वलं चाल्पसरो वापी तु दीर्घिका | ५२३ |
| खेयं तु परिखाधारस्त्वम्भसां यत्र धारणम् | ५२४ |
| स्यादालवालमावालमावापोऽथ नदी सरित् | ५२५ |
| तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी हादिनी धुनी | ५२६ |
| स्रोतस्वती द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगापगा | ५२७ |
| ‘कूलंकपा निर्झरिणी रोधोवक्रा सरस्वती ।’ | *** |
| गङ्गा विष्णुपदी जह्नुतनया सुरनिम्नगा | ५२८ |
| भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसूरपि | ५२९ |
| कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वसा | ५३० |
| रेवा तु नर्मदा सोमोज्ज्वा मेकलकन्यका | ५३१ |
| करतोया सदानीरा बाहुदा सैतवाहिनी | ५३२ |
| शतद्रुस्तु शुतुद्रिः स्याद्विपाशा तु विपाद् स्त्रियाम् | ५३३ |
| शोणो हिरण्यवाहः स्यात्कुल्याल्पा कृत्रिमा सरित् | ५३४ |
| शरावती वेत्रवती चन्द्रभागा सरस्वती | ५३५ |
| कावेरी सरितोऽन्याश्च संभेदः सिन्धुसंगमः | ५३६ |
| द्वयोः प्रणाली पयसः पदव्यां त्रिषु तूत्तरौ | ५३७ |

| | |
|--|-----|
| देविकायां सरय्या च भवे दाविकसारवौ | ५३८ |
| सौगन्धिकं तु कहारं हृदक रक्तसंध्यकम् | ५३९ |
| स्यादुत्पलं कुचलयमथ नीलाम्बुजन्म च | ५४० |
| इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन्सिते कुमुदकैरवे | ५४१ |
| शालूकमेपां कन्दः स्याद्वारिपर्णी तु कुम्भिका | ५४२ |
| जलनीली तु शेवालं शैवलोऽथ कुमुद्वती | ५४३ |
| कुमुदिन्या नलिन्या तु विसिनीपद्मिनीमुखाः | ५४४ |
| वा पुसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् | ५४५ |
| सहस्रपद्मं कमलं शतपद्मं कुण्डेशयम् | ५४६ |
| पङ्केरुहं तामरसं सारस सरसीरुहम् | ५४७ |
| विसप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणि च | ५४८ |
| पुण्डरीकं सिताम्भोजमथ रक्तसरोरुहे | ५४९ |
| रक्तोत्पलं कोकनदं नालो नालमथास्त्रियाम् | ५५० |
| मृणालं विसमञ्जादिकदम्बे पण्डमस्त्रियाम् | ५५१ |
| करहाटः शिफाकन्दः किंजल्कः केसरोऽस्त्रियाम् | ५५२ |
| संवर्तिका नवदलं बीजकोशो वराटक | ५५३ |

१४ काण्डममाप्ति ।

| | |
|--|-----|
| उक्तं स्वव्योमटिकालधीशब्दादि सनात्यकम् | ५५४ |
| पातालभोगि नरकं वारि चैषा च संगतम् | ५५५ |
| मरमिहकृतौ नामलिङ्गानुशासने | ५५६ |
| शुद्धिकाण्ड प्रथमः साङ्ग एव समर्थितः | ५५७ |

१. वर्गभेदाः ।

| | |
|--|-----|
| वर्गाः पृथ्वीपुरक्ष्माभृद्वनौपधिमृगादिभिः | ५५८ |
| नृब्रह्मक्षत्रविद्वशूद्रैः साङ्गोपाङ्गैरिहोदिताः | ५५९ |

२. भूमिवर्गः ।

| | |
|---|-----|
| भूर्भूमिरचलानन्ता रसा विश्वंभरा स्थिरा | ५६० |
| धरा धरित्री धरणिः क्षोणिर्ज्या काश्यपी क्षितिः | ५६१ |
| सर्वसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुंधरा | ५६२ |
| गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्मावनिर्मेदिनी मही | ५६३ |
| ‘विपुला गह्वरी धात्री गौरिला कुम्भिनी क्ष्मा | *** |
| भूतधात्री रत्नगर्भा जगती सागराम्बरा ॥’ | ** |
| मृन्मृत्तिका प्रशस्ता तु मृत्सा मृत्स्ता च मृत्तिका | ५६४ |
| उर्वरा सर्वसस्याढ्या स्यादूपः क्षारमृत्तिका | ५६५ |
| ऊपवानूपरो द्वावप्यन्यलिङ्गौ स्थलं स्थली | ५६६ |
| समानौ मरुधन्यानौ द्वे खिलाग्रहते समे | ५६७ |
| त्रिष्वथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत् | ५६८ |
| लोकोऽयं भारतं वर्षं शरावत्यास्तु योऽवधेः | ५६९ |
| देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य उदीच्यः पश्चिमोत्तरः | ५७० |
| प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्यान्मध्यदेशस्तु मध्यमः | ५७१ |
| आर्यावर्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्यहिमालयोः | ५७२ |
| नीवृज्जनपदो देशविषयौ तूपवर्तनम् | ५७३ |

| | |
|---|-----|
| त्रिष्वागोष्ठान्नडप्राये नडान्नडुल इत्यपि | ५७४ |
| कुमुद्वान्कुमुदप्राये वेतस्वान्वहुवेतसे | ५७५ |
| शाद्वलः शादहरिते सजम्बाले तु पङ्क्तिः | ५७६ |
| जलप्रायमनूपं स्यात्पुंसि कच्छस्तथाविधः | ५७७ |
| स्त्री शर्करा शर्करिलः शर्करा शर्करावति | ५७८ |
| देश एवादिमावेवमुन्नेयाः सिकतावति | ५७९ |
| देशो नद्यम्बुवृष्ट्यम्बुसंपन्नग्रीहिपालितः | ५८० |
| स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम् | ५८१ |
| सुराज्ञि देशे राजन्यान्स्यात्ततोऽन्यत्र राजवान् | ५८२ |
| गोष्ठं गोस्थानकं तत्तु गौष्ठीनं भूतपूर्वकम् | ५८३ |
| पर्यन्तभूः परिसरः सेतुरालौ स्त्रिया पुमान् | ५८४ |
| यामलूरश्च नाकुश्च वल्मीकं पुंनपुसकम् | ५८५ |
| अयनं वर्त्म मार्गाध्वपन्थान पदवी सृति | ५८६ |
| सरणिः पद्धतिः पद्या वर्तन्त्येकपदीति च | ५८७ |
| अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथश्चार्चितेऽध्वनि | ५८८ |
| व्यध्वो दुरध्वो विपथः कदध्वा कापथः समा | ५८९ |
| अपन्थास्त्वपथ तुल्ये शृङ्गाटकचतुःपथे | ५९० |
| प्रान्तरं दूरश्चान्योऽप्या कान्तागं वर्त्म दुर्गमम् | ५९१ |
| गव्यूतिः स्त्री क्रोशयुगं नल्य किष्कुचतुःशतम् | ५९२ |
| घण्टापथ मंमरणं तत्पुरस्योपनिष्करम् | ५९३ |
| धापथिर्व्या रोदस्यां द्यावाभूमी च रोदमी | *** |
| पञ्च पञ्चाशोऽङ्गं गङ्गा तु रुमा स्याद्विष्णुणाकरः ॥ | ६३४ |

अमरकोषे

३. पुरवर्गः ।

३६

पूः स्त्री पुरीनगयौ वा पत्तनं पुटभेदनम्
 स्थानीयं निगमोऽन्यत्तु यन्मूलनगरात्पुरम्
 तच्छाखानगरं वेक्षो वेक्ष्याजनसमाश्रयः
 आपणस्तु निषद्यायां विषणिः पण्यवीथिका
 रथ्या प्रतोली विशिखा स्याच्चयो वप्रमस्त्रियाम्
 प्राकारो वरणः सालः प्राचीनं प्रान्ततो वृत्तिः
 भित्तिः स्त्री कुड्यमेडूकं यदन्तर्न्यस्तकीकसम्
 गृहं गेहोदवस्तिते वेदम सन्न निकेतनम्
 निशान्तवस्त्यसदनं भवनांगारमन्दिरम्
 गृहाः पुंसि च भूभ्येव निकाय्यनिलयालयाः
 वासः कुटी द्वयोः शाला सभा संजवनं त्विदम्
 चतुःशालं मुनीनां तु पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम्
 चैत्यमायतनं तुल्ये वाजिशाला तु मन्दुरा
 आवेशनं शिल्पिशाला प्रपा पानीयशालिका
 मठश्छात्रादिनिलयो गङ्गा तु मदिरागृहम्
 गर्भगारं वासगृहमरिष्टं सूतिकागृहम्
 'कुट्टिमोऽस्त्री निवद्धा भूश्चन्द्रशाला शिरोगृहम्'
 वातायनं गंवाक्षोऽथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः
 हर्म्यादि धनिनां वासः प्रासादो देवभूमुजाम्
 मौधोऽस्त्री राजसदनमुपकार्योपकारिका
 ; सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्तादयोऽपि चे

५९४

५९५

५९६

५९७

५९८

५९९

६००

६०१

६०२

६०३

६०४

६०५

६०६

६०७

६०८

६०९

६१०

६११

६१२

६१३

६१४

६१५

| | |
|--|-----|
| विच्छन्दकः प्रभेदा हि भवन्तीश्वरसङ्गनाम् | ६१४ |
| रुयगारं भूभुजामन्तःपुरं स्यादवरोधनम् | ६१५ |
| शुद्धान्तश्चावरोधश्च स्याददृक्षोममस्त्रियाम् | ६१६ |
| प्रघाणप्रघणालिन्दा वहिर्द्वारप्रकोष्ठके | ६१७ |
| गृहावग्रहणी देहल्यङ्गणं चत्वरजिरे | ६१८ |
| अधस्तादारणि शिला नासा दारूपरि स्थितम् | ६१९ |
| प्रच्छन्नमन्तर्द्वारं स्यात्पक्षद्वारं तु पक्षकम् | ६२० |
| वलीकनीध्रे पटलप्रान्तेऽथ पटलं छदिः | ६२१ |
| गोपानसी तु वलभी छादने वक्रदारुणि | ६२२ |
| कपोतपालिकाया तु विटङ्गं पुनपुंसकम् | ६२३ |
| स्त्री द्वाद्वारं प्रतीहारः स्याद्वितर्दिस्तु वेदिका | ६२४ |
| तोरणोऽस्त्री वहिर्द्वारं पुरद्वारं तु गोपुरम् | ६२५ |
| कूटं पृथ्वारि यद्धस्तिनसस्तस्मिन्नथ त्रिषु | ६२६ |
| कपाटमरर तुल्ये तद्विष्कम्भोऽर्गलं न ना | ६२७ |
| आरोहणं स्यात्सोपानं निश्रेणिस्त्वधिरोहिणी | ६२८ |
| संमार्जनी शोधनी स्यात्संकरोऽवकरस्तथा | ६२९ |
| क्षिप्ते मुखं नि मरणं सनिवेशो निकर्षणम् | ६३० |
| सर्मा मयमयग्रामो वेदमभूर्वास्तुरस्त्रियाम् | ६३१ |
| ग्रामान्तमुपगल्यं स्यात्मीमसीमे स्त्रियामुभे | ६३२ |
| धोष आभीरपत्नी स्यात्पक्ष्णः शवगलयः | ६३३ |

४. शैल्यर्ग ।

५३४ पञ्चाशद्विंशत्याभृदहार्यपरपर्यन्ता-

६३४

| | |
|--|-----|
| अद्रिगोत्रगिरिग्रावाचलशैलशिलोच्चयाः | ६३५ |
| लोकालोकश्चक्रवालस्त्रिकूटस्त्रिककुत्समौ | ६३६ |
| अस्तस्तु चरमः क्षमाभृदुदयः पूर्वपर्वतः | ६३७ |
| हिमवान्निषधो विन्ध्यो माल्यवान्पारियात्रकः | ६३८ |
| गन्धमादनमन्ये च हेमकूटादयो नगाः | ६३९ |
| पाषाणप्रस्तरग्रावोपलाश्मानः शिला दृपत् | ६४० |
| कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं प्रपातस्त्वतटो भृगुः | ६४१ |
| कंटकोऽस्त्री नितम्बोऽद्रेः स्तुः प्रस्थः सानुरस्त्रियाम् | ६४२ |
| उत्सः प्रस्रवणं वारिप्रवाहो निर्झरो झरः | ६४३ |
| दरी तु कंदरो वा स्त्री देवखातविले गुहा | ६४४ |
| गह्वरं गण्डशैलास्तु च्युताः स्थूलोपला गिरेः | ६४५ |
| ‘दन्तकास्तु बहिस्तिर्यक्प्रदेशान्निर्गता गिरेः’ | *** |
| खनिः स्त्रियामाकरः स्यात्पादाः प्रत्यन्तपर्वताः | ६४६ |
| उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमिरूर्ध्वमधित्यका | ६४७ |
| धातुर्मनःशिलाद्यद्रेर्गैरिकं तु विशेषतः | ६४८ |
| निकुञ्जकुञ्जौ वा क्लीवे लतादिपिहितोदरे | ६४९ |

९. वनौषधिवर्गः ।

| | |
|---|-----|
| अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् | ६५० |
| महारण्यमरण्यानी गृहारामास्तु निष्कुटाः | ६५१ |
| आरामः स्यादुपवनं कृत्रिमं वनमेव यत् | ६५२ |
| अमात्यगणिकागेहोपवने वृक्षवाटिका | ६५३ |
| पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधारणं वनम् | ५३७ |

| | |
|--|-----|
| स्यादेतदेव प्रमदवनमन्तःपुरोचितम् | ६५५ |
| वीथ्यालिरावलिः पङ्क्तिः श्रेणी लेखास्तु राजय | ६५६ |
| वन्या वनसमूहे स्यादङ्कुरोऽभिनवोद्भिदि | ६५७ |
| वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरु. | ६५८ |
| अनोकहः कुटः शालः पलाशी द्रुद्रुमागमाः | ६५९ |
| वानस्पत्य. फलै. पुष्पात्तरपुष्पाद्वनस्पतिः | ६६० |
| औपध्यः फलपाकान्ताः स्युरवन्ध्यः फलेग्रहिः | ६६१ |
| वन्ध्योऽफलोऽवकेशी च फलवान्फलिन. फली | ६६२ |
| प्रफुल्लोत्फुल्लसंफुल्लव्याकोशविकचस्फुटाः | ६६३ |
| फुल्लश्चैते विकसिते स्युरवन्ध्यादयस्त्रिषु | ६६४ |
| स्थाणुर्वा ना ध्रुव. शङ्कुर्ध्रुवशाखाशिफः क्षुपः | ६६५ |
| अप्रकाण्डे सप्तम्बगुल्मी वल्ली तु व्रततिर्लता | ६६६ |
| लता प्रतानिनी वीरुद्रुलिमन्युलप इत्यपि | ६६७ |
| नगाधारोह उच्छ्राय उत्मेधश्चोच्छ्रायश्च स. | ६६८ |
| अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्ध स्यान्मूलाच्छाखावधिस्तरो. | ६६९ |
| समे शाखालते स्कन्धशाखाशाले शिफाजटे | ६७० |
| शाखाशिफारोह. स्यान्मूलाच्चाग्रं गता लता | ६७१ |
| शिरोऽग्र शिखरं वा ना मूलं बुध्नोऽद्विनामक. | ७१६ |
| सारो मज्जा नरि त्वक्स्त्री वल्क वल्कलमस्त्रियाम् | ७१७ |
| काष्ठं दार्दिन्धन त्वेध इध्ममेध. समिस्त्रियाम् | ७१८ |
| निष्कुट कोटरं वा ना वह्निरिर्मज्जरिः स्त्रिया | ७१९ |
| पञ्च पद्माशं हृदनं टल पर्ण, छद. पुमान् | ७२० |

| | |
|---|-----|
| कर्कन्धूर्वदरी कोलिः कोलं कुवलफेनिले | ७२१ |
| सौवीरं वदरं घोण्टाप्यथ स्यात्स्वादुकण्टकः | ७२२ |
| विकङ्कतः स्नुवावृक्षो ग्रन्थिलो व्याघ्रपादपि | ७२३ |
| ऐरावतो नागरङ्गो नादेयी भूमिजम्बुका | ७२४ |
| तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च शितिसारके | ७२५ |
| काकेन्दुः कुलकः काकतिन्दुकः काकपीलुके | ७२६ |
| गोलीढो झाटलो घण्टापाटलिर्मोक्षमुष्ककौ | ७२७ |
| तिलकः क्षुरकः श्रीमान्समौ पिचुलझावुकौ | ७२८ |
| श्रीपर्णिका कुमुदिका कुम्भी कैडर्यकट्फलौ | ७२९ |
| ऋमुकः पट्टिकाख्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसादनः | ७३० |
| तूदस्तु यूपः ऋमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु च | ७३१ |
| तूलं च नीपप्रियककदम्बास्तु हलिप्रियः | ७३२ |
| वीरवृक्षोऽरुण्करोऽग्निमुखी भल्लातकी त्रिषु | ७३३ |
| गर्दभाण्डे कन्दरालकपीतनसुपार्श्वकाः | ७३४ |
| ल्लक्षश्च तिन्तिडी चिञ्चाम्बिलकाथो पीतसारके | ७३५ |
| सर्जकासनवन्धूकपुष्पप्रियकजीवकाः | ७३६ |
| साले तु सर्जकाश्चार्श्वकर्णकाः सस्यसम्बरः | ७३७ |
| नदीसर्जो वीरतरुरिन्द्रद्रुः ककुभोऽर्जुनः | ७३८ |
| राजादनः फलाध्यक्षः क्षीरिकायामथ द्वयोः | ७३९ |
| इङ्गुदी तापसतरुभूर्जे चर्मिमृदुत्वचौ | ७४० |
| पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शाल्मलिर्द्वयोः | ७४१ |
| पिच्छा त शाल्मलीवेष्टे रोचनः कूटशाल्मलिः | ७४२ |

चिरविल्यो नक्तमालः करजश्च करञ्जके
 प्रकीर्यः पूतिकरजः पूतिकः कलिमारकः
 करञ्जभेदाः पद्मग्रन्थो मर्कट्यङ्गारवल्लरी
 रोही रोहितकः स्त्रीहृद्गुर्दाडिमपुष्पकः
 गायत्री बालतनयः खदिरो दन्तधावनः
 अरिमेदो विद्रुखदिरे कदरः खदिरे सिते
 सोमबल्कोऽप्यथ व्याघ्रपुच्छगन्धर्वहस्तकौ
 एरण्ड उरुबूकश्च रुचकश्चित्रकश्च सः
 चञ्चुः पञ्चाङ्गुलो मण्डवर्धमानव्यडम्बकाः
 अल्पा शमी शमीरः स्याच्छमी सक्तुफला शिवा
 पिण्डीतको मरुचकः श्वसनः करहाटकः
 शल्यश्च मदने शक्रपादपः पारिभद्रकः
 भद्रदारु द्रुक्किलिमं पीतदारु च दारु च
 पूतिकाष्ठं च सप्त स्युर्देवदारुण्यथ द्वयोः
 पाटलिः पाटला मोघा काचस्थाली फलेरुहा
 कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी श्यामा तु महिलाहया
 लता गोवन्दिनी गुन्द्रा प्रियङ्गुः फलिनी फली
 विष्वक्सेना गन्धफली कारम्भा प्रियकश्च सा
 मण्डूकपर्णपत्रोर्णनटकट्टङ्गटुण्डुकाः
 स्योनाकशुकनासर्क्षदीर्घवृन्तकुटश्रटाः
 शोणकश्चारली तिष्यफला त्वामलकी त्रिपु-
 अमृता च वयस्या च त्रिलिङ्गम् विभीतक

७४३
 ७४४
 ७४५
 ७४६
 ७४७
 ७४८
 ७४९
 ७५०
 ७५१
 ७५२
 ७५३
 ७५४
 ७५५
 ७५६
 ७५७
 ७५८
 ७५९
 ७६०
 ७६१
 ७६२
 ७६३
 ७६४

| | |
|--|-----|
| नाक्षस्तुपः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमः | ७६५ |
| अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूतनामृता | ७६६ |
| हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा | ७६७ |
| पीतद्रुः सरलः पूतिकाष्ठं चाथ द्रुमोत्पलः | ७६८ |
| कर्णिकारः परिव्याधो लकुचो लिकुचो डहुः | ७६९ |
| पनसः कण्टकिफलो निचुलो हिज्जलोऽम्बुजः | ७७० |
| काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलयूर्जधनेफला | ७७१ |
| अरिष्टः सर्वतोभद्रहिङ्गुनिर्यासमालकाः | ७७२ |
| पिचुमन्दश्च निम्बेऽथ पिच्छिलागुरुशिंशपा | ७७३ |
| कपिला भस्मगर्भा सा शिरीषस्तु कपीतनः | ७७४ |
| भण्डिलोऽप्यथ चाम्पेयश्चम्पको हेमपुष्पकः | ७७५ |
| एतस्य कलिका गन्धफली स्यादथ केसरे | ७७६ |
| वकुलो वज्जुलोऽशोके समौ करकदाडिमौ | ७७७ |
| चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः | ७७८ |
| जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका | ७७९ |
| श्रीपर्णमग्निमन्थः स्यात्कणिका गणिकारिका | ७८० |
| जयोऽथ कुटजः शक्रो वत्सको गिरिमल्लिका | ७८१ |
| एतस्यैव कलिङ्गेन्द्रयवभद्रयवं फले | ७८२ |
| कृष्णपाकफलाविघ्नसुषेणाः करमर्दके | ७८३ |
| कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापिच्छोऽप्यथ सिन्दुके | ७८४ |
| सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणिकेत्यपि | ७८५ |
| वेणी खरा गरी देवताडो नीमूत इत्यपि | ७८६ |

| | |
|--|-----|
| श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी तृणशून्यं तु मल्लिका | ७८७ |
| भूपदी शीतभीरुश्च सैवास्फोटा वनोद्भवा | ७८८ |
| शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी नीलिका च सा | ७८९ |
| मितासौ श्वेतसुरसा भूतवेश्यथ मागधी | ७९० |
| गणिका यूथिकाम्वष्टा सा पीता हेमपुष्पिका | ७९१ |
| अतिमुक्तः पुण्ड्रकः स्याद्वासन्ती माधवी लता | ७९२ |
| सुमना मालती जातिः सप्तला नवमालिका | ७९३ |
| माध्यं कुन्द रक्तकस्तु बन्धूको बन्धुजीवक | ७९४ |
| सहा कुमारी तरणिरम्लानस्तु महासहा | ७९५ |
| तत्र शोणे कुरवकस्तत्र पीते कुरण्टक | ७९६ |
| नीली झिण्टी द्वयोर्वाणा दासी चार्तगलश्च सा | ७९७ |
| सैरेयकस्तु झिण्टी स्यात्तस्मिन्कुरवकोऽरुणे | ७९८ |
| पीता कुरण्टको झिण्टी तस्मिन्तहचरी द्वयोः | ७९९ |
| ओण्डूपुष्पं जपापुष्पं वज्रपुष्पं तिलस्य यत | ८०० |
| प्रतिहासशतप्रासचण्डातहयमारकाः | ८०१ |
| करवीरे करीरे तु क्रकरग्रन्थिलाबुभौ | ८०२ |
| उन्मत्तः कितवो धूर्तो धत्तूरः कनहाह्वयः | ८०३ |
| मातुलो मदनश्चास्य फले मातुलपुत्रकः | ८०४ |
| फलपूरो बीजपूरो रुचको मातुलुङ्गके | ८०५ |
| समीरणो मरुचकः प्रस्थपुष्प फणिज्जकः | ८०६ |
| जर्दारीरोऽप्यथ पर्णासे कठिञ्जरकुठेरकौ | ८०७ |
| सितेऽर्जकोऽत्र पाठी तु चित्रको वह्निसंज्ञकः | ८०८ |

| | |
|---|------|
| अर्काहवसुकास्कोदगणस्पविकीरणाः | ८००. |
| मन्दारश्चार्कपर्णोऽत्र शुक्लेऽलर्कप्रतापनौ | ८१० |
| शिवमल्ली पाशुपत एकाष्टीलो बुको वसुः | ८११ |
| वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिकेत्यपि | ८१२ |
| वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिकामृता | ८१३ |
| जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्ण्यपि | ८१४ |
| मूर्वा देवी मधुरमा मोरटा तेजनी चुवा | ८१५ |
| मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि | ८१६ |
| पाठाम्बष्टा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रमा | ८१७ |
| एकाष्टीला, पापचेली प्राचीना वनतिक्तिका | ८१८ |
| कटुः कटंभराशोक्ररोहिणी कटुरोहिणी | ८१९ |
| मत्स्यपित्ता कृष्णभेदी चक्राङ्गी शकुलादनी | ८२० |
| आत्मगुप्ताजहाव्यण्डा कण्डुरा प्रावृषायणी | ८२१ |
| ऋष्यप्रोक्ता शूकशिविः कपिकच्छुश्च मर्कटी | ८२२ |
| चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती शम्बरी वृषा | ८२३ |
| प्रत्यक्षश्रेणी सुतश्रेणी रण्डा मूपिकपर्ण्यपि | ८२४ |
| अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमयूरका | ८२५ |
| प्रत्यक्षपर्णी केशपर्णी किणिही खरमञ्जरी | ८२६ |
| हज्रिकां ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मणयष्टिका | ८२७ |
| अङ्गारवल्ली वालेयशाकवर्वरवर्धकाः | ८२८ |
| मञ्जिष्ठा विकसा जिङ्गी समङ्गा कालमेपिका | ८२९ |
| मण्डूकपर्णी भण्डीरी भण्डी योजनवल्ल्यपि | ८३० |

| | |
|---|-----|
| यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः | ८३१ |
| रोदनी कच्छुरानन्ता समुद्रान्ता दुरालभा | ८३२ |
| पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्ण्यद्विवल्लिका | ८३३ |
| क्रोष्टुविज्ञा सिंहपुच्छी कलशिर्धावनिर्गुहा | ८३४ |
| निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कण्टकारिका | ८३५ |
| प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिकेत्यपि | ८३६ |
| नीली काला क्लीतकिका ग्रामीणा मधुपर्णिका | ८३७ |
| रञ्जनी श्रीफली तुल्या द्रोणी दोला च नीलिनी | ८३८ |
| अवल्लुजः सौमराजी सुवलिः सौमवल्लिका | ८३९ |
| कालमेपी कृष्णफला वाकुची पूतिफल्यपि | ८४० |
| कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा | ८४१ |
| वपणा पिप्पली शौण्डी कोलाथ करिपिप्पली | ८४२ |
| कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिर पुमान् | ८४३ |
| चव्यं तु चविका काकचिञ्चीगुञ्जे तु कृष्णला | ८४४ |
| पलंकपा त्विभुगन्धा श्वटंष्ट्रा स्वादुकण्टक | ८४५ |
| गोकण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट इत्यपि | ८४६ |
| विश्वा विषा प्रतिविषातिविषोपविषारुणा | ८४७ |
| शृङ्गी महौषधं चाथ क्षीरावी दुग्धिका समे | ८४८ |
| शतमूली बहुमुताभीरुगिन्दीवरी वरी | ८४९ |
| ऋष्यप्रोक्ताभीरुपत्रीनारायण्यः अतापरी | ८५० |
| अहेरुरथ पीतद्रुकालीयकहरिद्रवः | ८५१ |
| दार्वी पचंपचा दाम्हरिद्रा पर्जनीलापि | ८५२ |

की सहाकी ह॥ १५ । ते ॥

| | |
|--|-----|
| वचोग्रगन्धा पङ्कगन्था गोलोमी शतपर्विका | ८५३ |
| शुक्ला हैमवती वैद्यमातृसिंह्यां तु वाशिका | ८५४ |
| वृषोऽटरूपः सिंहास्यो वासको वाजिदन्तकः | ८५५ |
| आस्फोटा गिरिकर्णी स्याद्विष्णुकान्तापराजिता | ८५६ |
| इक्षुगन्धा तु काण्डेक्षुकोकिलाक्षेक्षुरक्षुराः | ८५७ |
| शालेयः स्याच्छीतशिवश्छत्रा मधुरिका मिसिः | ८५८ |
| मिश्रेयाप्यय सीहुण्डो वज्रः स्तुक्स्त्री स्तुही गुडा | ८५९ |
| समन्तदुग्धायो वेल्ममोघा चित्रतण्डुला | ८६० |
| तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गं पुंनपुंसकम् | ८६१ |
| वला वाव्यालका घण्टारवा तु शणपुष्पिका | ८६२ |
| मृद्धीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्धी मधुरसेति च | ८६३ |
| सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत् | ८६४ |
| त्रिभण्डी रोचनी श्यामापालिन्धौ तु सुपेणिका | ८६५ |
| काला मसूरविदलार्धचन्द्रा कालमेपिका | ८६६ |
| मधुकं क्लीतकं यष्टिमधुकं मधुयष्टिका | ८६७ |
| विदारी क्षीरशुक्लेक्षुगन्धा क्रोष्टी तु या सिता | ८६८ |
| अन्या क्षीरविदारी स्यान्महाश्वेतर्क्षगन्धिका | ८६९ |
| अङ्गुली शारदी तोयपिप्पली शकुलादनी | ८७० |
| प्रत्यङ्गा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः | ८७१ |
| हज्रिका श्यामा शारिवा स्यादनन्तोत्पलशारिवा | ८७२ |
| अङ्गारवल्ली वै सिद्धिलक्ष्म्या वृद्धेरप्याह्वया इमे | ८७३ |
| मज्जिष्ठा विकसा रम्भा मोचांशुमत्फला | ८७४ |
| मण्डूकपर्णी भण्डीरा | |

| | |
|--|-----|
| घीला मुद्रपर्णी तु काकमुद्रा सहेत्यपि | ८७५ |
| तर्की हिङ्गुली सिही भण्टाकी दुष्प्रधर्षिणी | ८७६ |
| कुली सुरसा रास्त्रा सुगन्धा गन्धनाकुली | ८७७ |
| कुलेष्टा भुजंगाक्षी छत्राकी सुवहा च सा | ८७८ |
| मदारिगन्धांशुमती सालपर्णी स्थिरा ध्रुवा | ८७९ |
| ण्डिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी बदरेति च | ८८० |
| गारद्वाजी तु सा वन्या शृङ्गी तु ऋपभो वृष- | ८८१ |
| ताङ्गेरुकी नागवला क्षपा ह्रस्वगवेधुका | ८८२ |
| गामार्गवो घोषकः स्यान्महाजाली स पीतकः | ८८३ |
| शौत्स्ली पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका | ८८४ |
| स्याल्लाङ्गलिक्यन्निशिखा काकाङ्गी काकनासिका | ८८५ |
| गोधापदी तु सुवहा मुसली तालमूलिका | ८८६ |
| अजशृङ्गी विपाणी स्याद्गोजिह्वादार्विके समे | ८८७ |
| ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्ल्यप्यथ द्विजा | ८८८ |
| हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी | ८८९ |
| एलावालुकर्मलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् | ८९० |
| वालुकं चाथ पालङ्क्यां मुकुन्दं कुन्दकुन्दुरु | ८९१ |
| वालं त्रीवेरवर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बुनाम च | ८९२ |
| कालानुसार्यवृद्धाश्मपुष्पशीतशिवानि तु | ९३७ |
| शैलेय तालपर्णी तु दैत्या गन्धकुटी मुरा | ९३८ |
| गन्धिनी गजभक्ष्या तु सुवहा सुरभी रसा | ९३९ |
| महेक्ष्णा कुन्दुरुकी सल्लकी ह्यादिनीति - | ९४० |

| | | | |
|-------------|--|---------|------------------|
| व | ५० | अमरकोषे | [५. वनोपधिकर्णः] |
| शु | अग्निज्वालासुभिक्षे तु धातकी धातुपुष्पिका | ८९ | |
| वृ | पृथ्वीका चन्द्रवालैला निष्कुटिर्वहुलाथ सा | ८९ | |
| अ | सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्या कोरङ्गी त्रिपुटा त्रुटिः | ८९ | |
| इक्षुग | व्याधिः कुष्टं पारिभाव्यं वाप्यं पाकलमुत्पलम् | ९० | |
| शाले | शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात्केशिन्यथ वितुन्नकः | ९० | |
| मिश्रे | झटामलाञ्जटा ताली शिवा तामलकीति च | ९० | |
| सम | प्रपौण्डरीकं पौण्डर्यमथ तुन्नः कुवेरकः | ९० | |
| ता | कुणिः कच्छः कान्तलको नन्दिवृक्षोऽथ राक्षसी | ९० | |
| वत् | चण्डा धनहरी क्षेमदुष्पत्रगणहासकाः | ९० | |
| मृद्व | व्याडायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रकारकम् | ९० | |
| सर्व | सुपिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटी नली | ९० | |
| त्रि | धमन्यञ्जनकेशी च हनुर्हृद्विलासिनी | ९० | |
| का | शुक्तिः शङ्खः खुरः कोलदलं नखमथाढकी | ९० | |
| मधु | काक्षी मृत्स्ता तुवरिका मृत्तालकसुराष्ट्रजे | ९१ | |
| चि | कुटन्नटं दाशपुरं वानेयं परिपेलवम् | ९१ | |
| उ | प्लवगोपुरगोनर्दकैवर्तमुस्तकानि च | ९१ | |
| अ | नञ्जन्थिपर्णं शुकं बर्हं पुष्पं स्थौणेयकुङ्कुरे | ९१ | |
| प्रत्य | वान्माला तु पिशुना स्पृक्का देवी लता लघुः | ९१ | |
| हज्जिका | पिशुना वधूः कोटिवर्षा लङ्कोपिकेत्यपि | ९१ | |
| अङ्गारवल्ली | नटामांसी जटिला लोमशा मिसी | ९१ | |
| मज्जिष्ठा | विकसा मण्डूकपर्णी भण्डीरभट्टं त्वचं चोचं वराङ्गकम् | ९१ | |
| मण्डूकपर्णी | भण्डीरभट्टं त्वचं चोचं वराङ्गकम् | ९१ | |
| | काल्पको वेधमुख्यकः | ९१ | |

| | |
|---|-----|
| करोपध्यो जातिमात्रे स्युरजातौ सर्वमापधम् | ९१९ |
| वाकाख्यं पत्रपुष्पादि तण्डुलीयोऽल्पमारिपः | ९२० |
| नवेशल्याग्निशिखानन्ता फलिनी शक्रपुष्पिका | ९२१ |
| नल्यादक्षगन्धा छगलाञ्जयावेगी वृद्धदारकः | ९२२ |
| त्रिङ्गो ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्था सोमवलरी | ९२३ |
| तुपदुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती | ९२४ |
| भृगुपुच्छी तु काम्वोजी मापपर्णी महासहा | ९२५ |
| गुण्डिकेरी रक्तफला विम्बिका पीलुपर्ण्यपि | ९२६ |
| धर्वरा कचरी तुङ्गी खरपुष्पाजगन्धिका | ९२७ |
| श्लापणी तु सुवहा रास्त्रा युक्तरसा च सा | ९२८ |
| चाङ्गेरी चुक्रिका दन्तशठाम्बुष्टाम्बल्लोणिका | ९२९ |
| सहस्रवेधी चुक्रोऽम्बल्लवेतसः शतवेध्यपि | ९३० |
| नमस्कारी गण्डकारी समङ्गा खदिरेत्यपि | ९३१ |
| जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा | ९३२ |
| कूर्चशीर्षो मधुरकः शृङ्गस्वाङ्गजीवकाः | ९३३ |
| किराततिक्तो भूनिम्बोऽनार्यतिक्तोऽथ सप्तला | ९३४ |
| विमला सातला भूरिफेना चर्मकपेत्यपि | ९३५ |
| वायसोली स्वादुरसा वयस्थाय मकूलकः | ९३६ |
| निकुम्भो दन्तिका प्रत्यक्श्रेण्युदुम्बरपर्ण्यपि | ९३७ |
| अजमोदा तूयगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका | ९३८ |
| मूले पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि पौष्करे | ९३९ |
| अव्यथातिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी | ९४० |

| | |
|---|-----|
| काम्पिल्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनीत्यपि | ९४१ |
| प्रपुन्नाडस्त्वेडगजो दद्रुघ्नश्चक्रमर्दकः | ९४२ |
| पद्माट उरणाख्यश्च पलाण्डुस्तु सुकन्दकः | ९४३ |
| लतार्कदुर्द्धमौ तत्र हरितेऽथ महौषधम् | ९४४ |
| लशुनं गृञ्जनारिष्टमहाकन्दरसोनकाः | ९४५ |
| पुनर्नवा तु शोथघ्नी वितुन्नं सुनिपण्णकम् | ९४६ |
| स्याद्वातकः शीतलोऽपराजिता शणपर्ण्यपि | ९४७ |
| पारावताङ्घ्रिः कटभी यण्या ज्योतिष्मती लता | ९४८ |
| वार्षिकं त्रायमाणा स्यात्त्रायन्ती बलभद्रिका | ९४९ |
| विष्वक्सेनप्रिया गृष्टिर्वाराही बदरेत्यपि | ९५० |
| मार्कवो भृङ्गराजः स्यात्काकमाची तु वायसी | ९५१ |
| शतपुष्पा सितच्छत्रातिच्छत्रा मधुरा मिसिः | ९५२ |
| अवाक्पुष्पी कारवी च सरणा तु प्रसारिणी | ९५३ |
| तस्यां कटंभरा राजबला भद्रबलेत्यपि | ९५४ |
| जनी जतूका रजनी जतुकृच्चक्रवर्तिनी | ९५५ |
| संस्पर्शाथ शटी गन्धमूली पङ्ग्रन्थिकेत्यपि | ९५६ |
| कर्चूरोऽपि पलाशोऽथ कारवेष्टः कठिलकः | ९५७ |
| सुषवी चाथ कुलकं पटोलस्तिक्तकः पटुः | ९५८ |
| कूष्माण्डकस्तु कर्कारुरुर्वारुः कर्कटी स्त्रियौ | ९५९ |
| इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्यात्तुम्ब्यलावूरुभे समे | ९६० |
| भना च गवाक्षी गोडुम्बा विशाला त्विन्द्रवारुणी | ९६१ |
| सण्डूचटी सूरणः कन्दो गण्डीरस्तु समष्ठिला | ९६२ |
| भृङ्ग | |

| | |
|---|-----|
| कलम्व्युपोदिका स्त्री तु मूलकं हिलमोचिका | ९६३ |
| वास्तुकं शाकभेदाः स्युर्दूर्वा तु शतपर्विका | ९६४ |
| सहस्रवीर्याभार्गव्यौ रुहानन्ताथ सा सिता | ९६५ |
| गोलोमी शतवीर्या च गण्डाली शकुलाक्षका | ९६६ |
| कुरुविन्दो मेघनामा मुस्ता मुस्तकमस्त्रियाम् | ९६७ |
| स्याद्भद्रमुस्तको गुन्द्रा चूडाला चक्रलोच्चटा | ९६८ |
| वैशे त्वक्सारकर्मारत्वचिसारतृणध्वजाः | ९६९ |
| शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करस्तेजनाः | ९७० |
| वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः | ९७१ |
| ग्रन्थिर्ना पर्वपरुषी गुन्द्रस्तेजनकः शर | ९७२ |
| नडस्तु धमनः पोटगलोऽथो काशमस्त्रियाम् | ९७३ |
| इक्षुगन्धा पोटगलः पुंसि भूम्नि तु वल्बजाः | ९७४ |
| रसाल इक्षुस्तद्भेदा पुण्ड्रकान्तारकादयः | ९७५ |
| स्याद्वीरणं वीरतरं मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् | ९७६ |
| अभयं नलदं सेव्यममृणालं जलाशयम् | ९७७ |
| लामज्जक लघुलयमवदाहेष्टकापथे | ९७८ |
| नडादयस्तृण गर्मुच्छ्रयामाकप्रमुखा अपि | ९७९ |
| अस्त्री कुशं कुथो दर्भः पवित्रमथ कत्तृणम् | ९८० |
| पौरसौगन्धिकध्यामदेवजग्धकरौहिपम् | ९८१ |
| छन्नातिच्छन्नपालघ्ना मालातृणकभूस्तृणे | ९८२ |
| अप्यं बालतृणं घासो यवसं तृणमर्जुनम् | ९८३ |
| तृणानां संहतिस्तृण्या नड्या तु नडसंहति | ९८४ |

| | |
|--|------|
| तृणराजाह्वयस्तालो नालिकेरस्तु लाङ्गली | ९८५ |
| घोण्टा तु पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरोऽस्य तु | ९८६ |
| फलमुद्गेगमेते च हिन्तालसहितास्त्रयः | ९८७ |
| खर्जूरः केतकी ताली खर्जूरी च तृणद्रुमाः | ९८८ |
| ६. सिंहादिवर्गः । | |
| सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केसरी हरिः | ९८९ |
| ‘कण्ठीरवो मृगरिपुर्मृगदृष्टिर्मृगाशनः । | ** |
| पुण्डरीकः पञ्चनखचित्रकायमृगद्विपः’ ॥ | ** |
| शार्दूलद्वीपिनौ व्याघ्रे तरक्षुस्तु मृगादनः | ९९० |
| वराहः सूकरो घृष्टिः कोलः पोत्री किरः किटिः | ९९१ |
| दंष्ट्री घोणी स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार इत्यपि | ९९२ |
| कपिप्लवंगप्लवगशाखामृगवलीमुखाः | ९९३ |
| मर्कटो वानरः कीशो वनौका अथ भल्लुके | ९९४ |
| ऋक्षाच्छभल्लभल्लूका गण्डके खङ्गखङ्गिनौ | ९९५ |
| लुलायो महिषो बाहद्विषत्कासरसैरिभाः | ९९६ |
| स्त्रियां शिवा भूरिमायगोमायुमृगधूर्तकाः | ९९७ |
| शृगालवञ्चकक्रोष्टुफेरुफेरवजम्बुकाः | ९९८ |
| ओतुर्विडालो मार्जारो वृषदंशक आखुभुक् | ९९९ |
| त्रयो गौधेरगौधारगौधेया श्लोधिकोऽत्मजे | १००० |
| श्लोचित्तु शल्यस्तल्लोन्नि शलली शललं शलम् | १००१ |
| वातप्रुर्गद्वीतमृगः कोकस्त्वहीहामृगो वृकः | १००२ |
| मण्डूकः कुरङ्गवातायुहरिणाजिनयोनयः | १००३ |

| | |
|--|------|
| ऐणेयमेण्याश्चर्मद्यमेणस्यैणमुभे त्रिषु | १००४ |
| कदली कन्दली चीनश्चमूरुप्रियकावपि | १००५ |
| समूरुश्चेति हरिणा अमी अजिनयोनयः | १००६ |
| कृष्णसाररुरुन्यङ्कुरङ्कुशम्बररौहिपा. | १००७ |
| गोकर्णपृषतैणश्यरोहिताश्चमरो भृगाः | १००८ |
| गन्धर्व. शरभो रामः सृमरो गवयः शशः | १००९ |
| इत्यादयो मृगेन्द्राद्या गवाद्याः पशुजातय | १०१० |
| ‘अधोगन्ता तु खनको वृक. पुंध्यज उन्दुरः’ | ** |
| उन्दुरुर्मूपकोऽप्याखुर्गिरिका बालमूपिका | १०११ |
| सरटः कृकलास. स्यान्मुसली गृहगोधिका | १०१२ |
| लूता स्त्री तन्तुवायोर्णनाभमर्कटकाः समा. | १०१३ |
| नीलङ्गुस्तु कृमि कर्णजलौकाः शतपद्भुभे | १०१४ |
| वृश्चिक शूककीट स्यादलिद्रुणौ तु वृश्चिके | १०१५ |
| पारावत. कलरव कपोतोऽथ शशादन. | १०१६ |
| पञ्ची इयेन उलूकन्तु वावसारातिपेचका | १०१७ |
| ‘दिवान्ध कौशिको धूको दिवाभीतो निशादन. ।’ | ** |
| व्याघ्राटः स्याद्भरद्वाज खञ्जरीटस्तु खञ्जन | १०१८ |
| लोहपृष्ठस्तु कङ्क स्यादय चाप. किक्कीदिवि. | १०१९ |
| कलिङ्गभृङ्गधूम्याटा अथ स्याच्छतपत्रक. | १०२० |
| दार्वाघाटोऽथ सारङ्गस्तोककश्चातक समा. | १०२१ |
| कृकयाकुस्ताम्रचूडः कुकुटश्चरणायुध | १०२२ |
| चटक कलविङ्ग. स्यात्तस्य स्त्री चटका तयो | १०२३ |

| | |
|---|------|
| पुमपत्ये चाटकैरख्यपत्ये चटकैव सा | १०२४ |
| कर्करेडुः कोरेडुः स्यात्कृकणक्रकरौ समौ | १०२५ |
| वनप्रियः परभृतः कोकिलः पिक इत्यपि | १०२६ |
| काके तु करटारिष्टवलिपुष्टसकृत्प्रजाः | १०२७ |
| ध्वाङ्गात्मघोषपरभृद्वलिभुगवायसा अपि | १०२८ |
| ‘स एव च चिरञ्जीवी चैकदृष्टिश्च मौकुलिः ।’ | *** |
| द्रोणकाकस्तु काकोलो दात्यूहः कालकण्ठकः | १०२९ |
| आतायिचिल्लौ दाक्षाय्यगृध्रौ कीरशुकौ समौ | १०३० |
| क्रुङ्क्रौञ्चोऽथ वकः कह्वः पुष्कराह्वस्तु सारसः | १०३१ |
| कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाह्वयनामकः | १०३२ |
| कादम्बः कलहंसः स्यादुत्क्रोशकुररौ समौ | १०३३ |
| हंसास्तु श्वेतगरुतश्चक्राङ्गा मानसौकसः | १०३४ |
| राजहंसास्तु ते चञ्चुचरणैर्लोहितैः सिताः | १०३५ |
| मलिनैर्मलिकाक्षास्ते धार्तराष्ट्राः सितेतैरैः | १०३६ |
| शरारिराटिराडिश्च बलाका विसकण्ठिका | १०३७ |
| हंसस्य योषिद्वरटा सारसस्य तु लक्ष्मणा | १०३८ |
| जतुकाजिनपत्रा स्यात्परोष्णी तैलपायिका | १०३९ |
| वर्वणा मक्षिका नीला सरघा मधुमक्षिका | १०४० |
| पतङ्गिका पुत्तिका स्यादंशस्तु वनमक्षिका | १०४१ |
| दंशी तज्जातिरल्पा स्याद्गन्धोली वरटा द्वयोः | १०४२ |
| पुष्पगारी झीरुका चीरी चिल्लिका च समा इमाः | १०४३ |
| क्षीर कुरङ्गालभौ खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः | १०४४ |

| | |
|--|------|
| मधुव्रतो मधुकरो मधुलिखी पौत्री मुक्ता | १०८८ |
| द्विरेफपुष्पलिङ्गभृङ्गपद्मपदं स्युर्गतिर्तवा | १०८९ |
| मयूरो वह्निणो वही नीलकण्ठगतिः समे | १०९० |
| शिखावलः शिखी केकी मेघनादानुवासिनी | १०९१ |
| केका वाणी मयूरस्य समौ चन्द्रकमेचयमुक्ती | १०९२ |
| शिखा चूडा शिखण्डस्तु पिच्छवर्हे नपुंसदेका | १०९३ |
| खगे विहंगविहंगविहंगमविहायसः | १०९४ |
| शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः | १०९५ |
| पतत्रिपत्रिपतगपतत्पत्ररथाण्डजाः | १०९६ |
| नगौकोवाजिविकिरविविक्किरपतत्रयः | १०९७ |
| नीडोद्भवा गरुत्मन्तः पित्सन्तो नभसंगमाः | १०५५ |
| तेपा विशेषा हारीतो मद्गुः कारण्डवः प्लवः | १०५६ |
| तित्तिरिः कुक्कुभो लावो जीवजीयश्चकोरकः | १०५७ |
| कोयष्टिकष्टिष्टिभको वर्तको वर्तिकादय | १०५८ |
| गरुत्पक्षच्छदाः पत्रं पतत्रं च तनूरुहम् | १०५९ |
| स्त्री पक्षति पक्षमूल चक्षुस्त्रोटिरुभे स्त्रियौ | १०६० |
| प्रडीनोड्डीनसंडीनान्येताः खगगतिक्रियाः | १०६१ |
| पेंदीकोपो द्विहीनेऽण्डं कुलायो नीडमस्त्रियाम् | १०६२ |
| पोतः पाकोऽर्भको डिम्भः पृथुकः शायक शिशुः | १०६३ |
| स्त्रीपुंसौ मिथुनं द्वन्द्वं युग्मं तु युगलं युगम् | १०६४ |
| समूहनिवहव्यूहसंदोहप्रिसरव्रजाः | १०६५ |
| स्तोमोघनिकरव्रातवारसंघातसंचयाः | १०६६ |

| | |
|---|------|
| शुक्रं तेजोरेतसी च बीजवीर्येन्द्रियाणि च | ११९७ |
| मायुः पित्तं कफः श्लेष्मा स्त्रियां तु त्वगस्रग्धरा | ११९८ |
| पिशितं तरसं मांसं पललं क्रव्यमामिषम् | ११९९ |
| उत्तप्तं शुष्कमांसं स्यात्तद्वल्लूरं त्रिलिङ्गकम् | १२०० |
| रुधिरेऽसृग्लोहितास्ररक्तक्षतजशोणितम् | १२०१ |
| बुक्काग्रमांसं हृदयं हन्मेदस्तु वपा वसा | १२०२ |
| पश्चाद्भीवाशिरा मन्या नाडी तु धमनिः शिरा | १२०३ |
| तिलकं क्लोम मस्तिष्कं गोर्दं किट्टं मलोऽस्त्रियाम् | १२०४ |
| अन्नं पुरीतद्बुल्मस्तु प्लीहा पुंस्यथ वस्तसा | १२०५ |
| स्तायुः स्त्रियां कालखण्डयकृती तु समे इमे | १२०६ |
| सृणिका स्यन्दिनी लाला दूषिका नेत्रयोर्मलम् | १२०७ |
| ‘नासामलं तु सिंघाणं पिञ्जूपः कर्णयोर्मलम् ।’ | *** |
| मूत्रं प्रस्राव उच्चारावस्करौ शमलं शकृत् | १२०८ |
| पुरीषं गूथवर्चस्कमस्त्रीं विष्ठाविशौ स्त्रियौ | १२०९ |
| स्यात्कर्परः कपालोऽस्त्री कीकसं कुल्यमस्थि च | १२१० |
| स्याच्छरीरास्त्रि कंकालः पृष्ठास्त्रि तु कशेरुका | १२११ |
| शिरोऽस्थनि करोटिः स्त्री पार्श्वास्थनि तु पर्शुका | १२१२ |
| अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघनोऽथ कलेवरम् | १२१३ |
| गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्णं विग्रहः | १२१४ |
| कायो देहः क्लीवपुंसोः स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः | १२१५ |
| पादाग्रं प्रपदं पादः पदद्विश्चरणोऽस्त्रियाम् | १२१६ |
| घुटिके गुल्फौ पुमान्पार्णिस्तयोर्ध्रुवः | १२१७ |

| | |
|--|------|
| जङ्घा तु प्रसृता जानूरुर्वाष्ठीवदस्त्रियाम् | १२१८ |
| सक्थि क्लीवे पुमानूरुस्तत्सधिः पुंसि चङ्गणः | १२१९ |
| गुदं त्वपानं पायुर्ना बस्तिर्नाभेरधो द्वयो | १२२० |
| कटो ना श्रोणिफलकं कटिः श्रोणि ककुद्भती | १२२१ |
| पश्चान्नितम्बः स्त्रीकट्याः क्लीवे तु जघनं पुर | १२२२ |
| कूपकौ तु नितम्बस्थौ द्वयहीने कुकुन्दरे | १२२३ |
| स्त्रिया स्फिचौ कटिप्रोथावुपस्थो वक्ष्यमाणयोः | १२२४ |
| भग योनिर्द्वयोः शिश्रो मेढ्रो मेहनशेफसी | १२२५ |
| मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः पृष्ठवंशाधरे त्रिकम् | १२२६ |
| पिचण्डकुक्षी जठरोदर तुन्दं स्तनौ कुचौ | १२२७ |
| चूचुकं तु कुचाग्रं स्यान्न ना क्रीडि भुजान्तरम् | १२२८ |
| उरो वत्सं च वक्षश्च पृष्ठं तु चरम तनो ० | १२२९ |
| स्कन्धो भुजशिरोसोऽस्त्री सधी तस्यैव जत्रुणी | १२३० |
| बाहुमूले उभे कक्षौ पार्श्वमस्त्री तयोरध | १२३१ |
| मध्यमं चावलग्नं च मध्योऽस्त्री द्वौ परौ द्वयोः | १२३२ |
| भुजवाहू प्रवेष्टो दोः स्यात्कफोणिस्तु कूर्परः | १२३३ |
| अस्योपरि प्रगण्डः स्यात्प्रकोष्ठस्तस्य चाप्यधः | १२३४ |
| मणिवन्धादाकनिष्ठं करस्य करभो वह्नि | १२३५ |
| पञ्चशाखः शयः पाणिस्तर्जनी स्यात्प्रदेशिनी | १२३६ |
| अङ्गुल्यः करशाखाः स्युः पुंस्यङ्गुष्ठः प्रदेशिनी | १२३७ |
| मध्यमानामिका चापि कनिष्ठा चेति ताः क्रमात् | १२३८ |
| पुनर्भवः कररुहो नखोऽस्त्री नखरोऽस्त्रियाम् | १२३९ |

| | |
|---|------|
| प्रादेशतालगोकर्णास्तर्जन्यादियुते तते | १२४० |
| अङ्गुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलः | १२४१ |
| पाणौ चपेटप्रतलप्रहस्ता विस्तृताङ्गुलौ | १२४२ |
| द्वौ संहतौ संहतलप्रतलौ वामदक्षिणौ | १२४३ |
| पाणिर्निकुब्जः प्रसृतिस्तौ युतावज्जलिः पुमान् | १२४४ |
| प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तो मुष्ट्या तु वद्धया | १२४५ |
| स रत्निः स्यादरत्निस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना | १२४६ |
| व्यामो बाह्वोः सकरयोस्ततयोस्तिर्यगन्तरम् | १२४७ |
| ऊर्ध्वविस्तृतदोः पाणिनृमाने पौरुषं त्रिषु | १२४८ |
| कण्ठो गलोऽथ ग्रीवायां शिरोधिः कंधरेत्यपि | १२४९ |
| कम्बुग्रीवा त्रिरेखा साऽवदुर्घाटा कृकाटिका | १२५० |
| वक्त्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम् | १२५१ |
| ह्रीवे घ्राणं गन्धग्रहा घोणा नासा च नासिका | १२५२ |
| ओष्ठाधरौ तु रदनच्छदौ दशनवाससी | १२५३ |
| अधस्ताच्चिबुकं गण्डौ कपोलौ तत्परा हनुः | १२५४ |
| रदना दशना दन्ता रदास्तालु तु काकुदम् | १२५५ |
| रसज्ञा रसना जिह्वा प्रान्तावोष्ठस्य सूक्लिणी | १२५६ |
| ललाटमलिकं गोधिरूध्वे दृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रियौ | १२५७ |
| कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यं तारकाक्षः कनीनिका | १२५८ |
| लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी | १२५९ |
| दृग्दृष्टी चाक्षु नेत्राम्बु रोदनं चाक्षमश्रु च | १२६० |
| अपाङ्गौ नेत्रयोरन्तौ कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने | १२६१ |

| | |
|--|------|
| जङ्घा तु प्रसृता जानूरुर्वाष्ठीवदस्त्रियाम् | १२१८ |
| सक्थि क्लीवे पुमानूरुस्तत्संधिः पुंसि वङ्गणः | १२१९ |
| गुदं त्वपानं पायुर्ना वस्तिर्नाभिरधो द्वयोः | १२२० |
| कटो ना श्रोणिफलकं कटिः श्रोणि ककुद्भती | १२२१ |
| पश्चान्नितम्बः स्त्रीकट्याः क्लीवे तु जघनं पुर | १२२२ |
| कूपकौ तु नितम्बस्थौ द्वयहीने कुकुन्दरे | १२२३ |
| स्त्रियां स्फिचौ कटिप्रोथावुपस्थौ वक्ष्यमाणयोः | १२२४ |
| भग योनिर्द्वयो शिश्रो मेढ्रो मेहनशेफसी | १२२५ |
| मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः पृष्ठवर्णाधरे त्रिकम् | १२२६ |
| पिचण्डकुक्षी जठरोदरं तुन्दं स्तनौ कुचौ | १२२७ |
| चूचुकं तु कुचाग्रं स्यान्न ना क्रीड भुजान्तरम् | १२२८ |
| उरो वत्सं च वक्षश्च पृष्ठं तु चरम तनोः ० | १२२९ |
| स्कन्धो भुजशिरोमोऽस्त्री संधी तस्यैव जङ्घणी | १२३० |
| बाहुमूले उभे कक्षौ पार्श्वमस्त्री तयोरधः | १२३१ |
| मध्यमं चावलग्रं च मध्योऽस्त्री द्वौ परौ द्वयोः | १२३२ |
| भुजबाहू प्रवेष्टो द्वौः स्यात्कफोणिस्तु कूर्पर | १२३३ |
| अस्योपरि प्रगण्ड स्यात्प्रकोष्ठस्तस्य चाप्यध | १२३४ |
| मणिवन्धादाकनिष्ठं करस्य करभौ बहि | १२३५ |
| पञ्चशाखः शय पाणिस्तर्जनी स्यात्प्रदेशिनी | १२३६ |
| अङ्गुल्यः करदाखाः स्युः पुंस्यङ्गुष्ठः प्रदेशिनी | १२३७ |
| मध्यमानामिका चापि कनिष्ठा चेति ता क्रमात् | १२३८ |
| पुनर्भवः कररहो नखोऽस्त्री नखरोऽस्त्रियाम् | |

| | |
|--|------|
| हारभेदा यष्टिभेदाद्गुच्छगुच्छार्धगोस्तनाः | १२८४ |
| अर्धहारो माणवक एकावल्येकयष्टिका | १२८५ |
| सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः | १२८६ |
| आवापकः पारिहार्यः कटको वलयोऽस्त्रियाम् | १२८७ |
| केयूरमङ्गदं तुल्ये अङ्गुलीयकमूर्मिका | १२८८ |
| साक्षराङ्गुलिमुद्रा स्यात्कङ्कणं करभूषणम् | १२८९ |
| स्त्रीकट्यां मेखला काञ्ची-सप्तकी रशना तथा | १२९० |
| क्रीवे सारसनं चाथ पुंस्कट्यां शृङ्खलं त्रिषु | १२९१ |
| पादाङ्गदं तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियाम् | १२९२ |
| हंसकः पादकटकः किङ्किणी क्षुद्रघण्टिका | १२९३ |
| त्वक्फलकृमिरोमाणि वस्त्रयोनिर्दश त्रिषु | १२९४ |
| वालकं क्षौमादि फालं तु कार्पासं वादरं च तत् | १२९५ |
| कौशेयं कृमिकौशेयं राङ्गवं मृगरोमजम् | १२९६ |
| अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं च नवास्वरम् | १२९७ |
| तत्स्यादुद्गमनीयं यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम् | १२९८ |
| पत्रोर्णं धौतकौशेयं बहुमूल्यं महाधनम् | १२९९ |
| क्षौमं दुकूलं स्याद्वै तु निवीतं प्रावृतं त्रिषु | १३०० |
| स्त्रियां बहुल्ये वस्त्रस्य दशाः स्युर्वस्तयो द्वयोः | १३०१ |
| दैर्घ्यमायास आरोहः परिणाहो विशालता | १३०२ |
| पटच्चरं जीर्णवस्त्रं समौ नक्तककर्पटौ | १३०३ |
| वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैलं वसनमंशुकम् | १३०४ |
| पुचेलकः पटोऽस्त्री स्याद्वराशिः स्थूलशाटकः | १३०५ |

| | |
|---|------|
| निचोलः प्रच्छदपटः समौ रत्नककम्बलौ | १३०६ |
| अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधौऽशुके | १३०७ |
| द्वौ प्रावारोत्तरासङ्गौ समौ बृहत्तिका तथा | १३०८ |
| संव्यानमुत्तरीयं च चोलः कूर्पासकोऽस्त्रियाम् | १३०९ |
| नीशारः स्यात्प्रावरणे हिमानिलनिवारणे | १३१० |
| अर्धोरुकं वरस्त्रीणा स्याच्चण्डातकमस्त्रियाम् | १३११ |
| स्यान्निष्वाप्रपदीनं तस्यामोत्याप्रपदं हि यत् | १३१२ |
| अस्त्री वितानमुखोचो दूष्याद्यं वस्त्रवेग्मनि | १३१३ |
| प्रतिसीरा जवनिका स्यात्तिरस्करिणी च सा | १३१४ |
| परिकर्माङ्गसंस्कार स्यान्मार्ष्टिर्मार्जना मृजा | १३१५ |
| उद्वर्तनोत्सादने द्वे समे आप्लाव आप्लव. | १३१६ |
| स्नानं चर्चा तु चार्चिक्य स्यासकोऽथ प्रबोधनम् | १३१७ |
| अनुबोध पत्रलेखा पत्राङ्गुलिरिमे समे | १३१८ |
| तमालपत्रतिलकचित्रकाणि विशेषकम् | १३१९ |
| द्वितीयं च तुरीयं च न स्त्रियामथ कुङ्कुमम् | १३२० |
| काश्मीरजन्माग्निशिखं वरं बाह्वीकपीतने | १३२१ |
| रक्तसंकोचपिशुनं धीरं लोहितचन्दनम् | १३२२ |
| लाक्षा राक्षा जतु क्लीवे यावोऽलक्तो द्रुमामयः | १३२३ |
| लवङ्गं देवकुसुम श्रीसङ्गमथ जायकम् | १३२४ |
| कालीयकं च कालानुसार्य चाथ समार्थकम् | १३२५ |
| यशिकागुरुराजार्हलोहं कृमिजजोङ्गकम् | १३२६ |
| कालागुर्वगुरु स्यात्तन्मङ्गल्या मल्लिगन्धि यत् | १३२७ |

| | |
|---|------|
| यक्षधूपः सर्जरसो रालसर्वरसावपि | १३२८ |
| बहुरूपोऽप्यथ वृक्षधूपकृत्रिमधूपकौ | १३२९ |
| तुरुष्कः पिण्डकः सिंहो यावनोऽप्यथ पायसः | १३३० |
| श्रीवासो वृक्षधूपोऽपि श्रीवेष्टसरलद्रवौ | १३३१ |
| मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी चाथ कोलकम् | १३३२ |
| कक्कोलकं कोशफलमथ कर्पूरमस्त्रियाम् | १३३३ |
| घनसारश्चन्द्रसंज्ञः सिताभ्रो हिमवालुका | १३३४ |
| गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्चन्दनोऽस्त्रियाम् | १३३५ |
| तैलपर्णिकगोशीर्षे हरिचन्दनमस्त्रियाम् | १३३६ |
| तिलपर्णी तु पत्राङ्गं रञ्जनं रक्तचन्दनम् | १३३७ |
| कुचन्दनं चाथ जातीकोपजातीफले समे | १३३८ |
| कर्पूरागुरुकस्तूरीकक्कोलैर्यक्षकर्मसः | १३३९ |
| गात्रानुलेपनी वर्तिर्वर्णकं स्याद्विलेपनम् | १३४० |
| चूर्णानि वासयोगाः स्युर्भाषितं वासितं त्रिषु | १३४१ |
| संस्कारो गन्धमाल्याद्यैर्यः स्यात्तदधिवासनम् | १३४२ |
| माल्यं मालास्रजौ मूर्ध्नि केशमध्ये तु गर्भकः | १३४३ |
| प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि पुरोन्यस्तं ललामकम् | १३४४ |
| ग्रालम्बमृजुलम्बि स्यात्कण्ठाद्वैकक्षिकं तु तत् | १३४५ |
| यत्तिर्यक्क्षिप्तमुरसि शिखास्वापीडशेखरौ | १३४६ |
| रचना स्यात्परिस्यन्द आभोगः परिपूर्णता | १३४७ |
| उपधानं तूपवर्हः शय्यायां शयनीयवत् | १३४८ |
| । गयनं मञ्चपर्यङ्कपल्यङ्काः खट्वा समाः | १३४९ |

| | |
|---|------|
| गेन्दुकः कन्दुको दीपः प्रदीपः पीठमासनम् | १३५० |
| समुद्रकः संपुटकः प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः | १३५१ |
| प्रसाधनी कङ्कतिका पिष्टातः पटवासकः | १३५२ |
| दर्पणे मुकुरादर्शौ व्यजनं तालवृन्तकम् | १३५३ |

८. ब्रह्मवर्गः ।

| | |
|---|------|
| संततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ | १३५४ |
| वंशोऽन्ववायः सतानो वर्णाः स्युर्ब्राह्मणादयः | १३५५ |
| विप्रक्षत्रियविदूश्शूद्राश्चातुवर्ण्यमिति स्मृतम् | १३५६ |
| राजबीजी राजवंश्यो वीज्यस्तु कुलसभयः | १३५७ |
| महाकुलकुलीनार्यसभ्यसज्जनसाधवः | १३५८ |
| ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये | १३५९ |
| आश्रमोऽस्त्री द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवाः | १३६० |
| विप्रश्च ब्राह्मणोऽसौ पट्टकर्मा यागादिभिर्वृतः | १३६१ |
| विद्वान्विपश्चिदोपज्ञः सन्सुधी कोविदो बुधः | १३६२ |
| धीरो मनीषी ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान्पण्डितः कवि | १३६३ |
| धीमान्सूरिः कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः | १३६४ |
| दूरदर्शी दीर्घदर्शी श्रोत्रियश्छान्दमौ समौ | १३६५ |
| ‘मीमांसको जैमिनीये वेदान्ती ब्रह्मवादिनि । | *** |
| वैशेषिके स्यादौलूक्यः सांगतः शून्यवादिनि ॥ | *** |
| नैयायिकस्त्वक्षपादः स्यात्स्याद्वादिक आर्हकः । | ~** |
| ‘चार्वाकलौकायतिकौ मत्कार्ये साङ्ख्यिकापिर्ला’ ॥ | *** |
| उपाध्यायोऽध्यापकोऽयः स्यान्निषेकादिकृद्गुरुः | १३६६ |

| | |
|--|------|
| मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य आदेष्टा त्वध्वरे व्रती | १३६७ |
| यष्टा च यजमानश्च स सोमवति दीक्षितः | १३६८ |
| इज्याशीलो यायजूको यज्वा तु विविनेष्टवान् | १३६९ |
| स गीर्षतीष्ट्या स्थपतिः सोमपीथी तु सोमपाः | १३७० |
| सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः | १३७१ |
| अनूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीती गुरोस्तु यः | १३७२ |
| लब्धानुज्ञः समावृत्तः सुत्वा त्वभिपवे कृते | १३७३ |
| छात्रान्तेवासिनौ शिष्ये शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः | १३७४ |
| एकब्रह्मव्रताचारा मिथः सब्रह्मचारिणः | १३७५ |
| सतीर्थ्यास्त्वेकगुरवश्चितवानग्निमग्निचित् | १३७६ |
| पारस्पर्योपदेशे स्यादैतिह्यमितिहाव्ययम् | १३७७ |
| उपज्ञा ज्ञानमाद्यं स्याज्ज्ञात्वारम्भ उपक्रमः | १३७८ |
| यज्ञः सवोऽध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मखः क्रतुः | १३७९ |
| पाठो होनश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं वलिः | १३८० |
| एते पञ्चमहायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः | १३८१ |
| समज्या परिप्लोष्टी सभासमितिसंसदः | १३८२ |
| आस्थानी ह्रीवयास्थानं खीनपुंसकयोः सदः | १३८३ |
| प्राग्वंशः प्राग्धविर्गेहात्सदस्या विधिदर्शिनः | १३८४ |
| सभासदः सभास्ताराः सभ्याः सामाजिकाश्च ते | १३८५ |
| अध्वर्यूद्गातृहोतारो यजुःसामग्विदः क्रमात् | १३८६ |
| आग्नीध्राद्या धनैर्वार्या ऋत्विजो याजकाश्च ते | १३८७ |
| वेदिः परिष्कृता भूमिः समे स्थण्डिलचत्वरै | १३८८ |

| | |
|--|------|
| चपालो यूपकटकः कुम्वा सुगहना वृतिः | १३८९ |
| यूपाग्रं तर्म निर्मन्थ्यदारुणि त्वरणिर्द्वयोः | १३९० |
| दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ त्रयोऽग्नयः | १३९१ |
| अग्नित्रयमिदं त्रेता प्रणीतः संस्कृतोऽनलः | १३९२ |
| समूह्यः परिचाय्योपचाय्यावग्नौ प्रयोगिणः | १३९३ |
| यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निं प्रणीयते | १३९४ |
| तस्मिन्नानाय्योऽथाग्रायी स्वाहा च हुतभुक्तिप्रया | १३९५ |
| ऋक्सामिधेनी धाय्या च या स्यादग्निसमिन्धने | १३९६ |
| गायत्रीप्रमुख छन्दो हव्यपाके चरु पुमान् | १३९७ |
| आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्यादधियोगत | १३९८ |
| धुवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा | १३९९ |
| पृषदाज्य सदध्याज्ये परमान्नं तु पायसम् | १४०० |
| हव्यकव्ये दैवपित्र्ये अन्ने पानं सुवादिकम् | १४०१ |
| ध्रुवोपभृज्जुहर्ना तु सुवो भेदाः सुचः स्त्रिय | १४०२ |
| उपाकृतः पशुरसौ योऽभिमन्त्र्य क्रतौ हतः | १४०३ |
| परम्पराकं गमनं प्रोक्षणं च वधार्थकम् | १४०४ |
| वाच्यलिङ्गाः प्रमीतोपमंपत्रप्रोक्षिता हते | १४०५ |
| सानाय्यं हविरग्नौ तु हुतं त्रिषु वषट्कृतम् | १४०६ |
| दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञे तत्कर्माहं तु यजियम् | १४०७ |
| त्रिप्यथ क्रतुकर्मैष्टं पूर्तं खातादि कर्म यत् | १४०८ |
| अमृतं विघसो यज्ञोपभोजनोपयोः | १४०९ |
| त्यागो जिहापितं दानमुत्सर्जनविसर्जने | १४१० |

| | |
|---|------|
| ‘क्षौरं तु भद्राकरणं मुण्डनं वपनं त्रिषु ।’ | *** |
| उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोद्धृते दक्षिणे करे | १४५१ |
| प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बितम् | १४५२ |
| अङ्गुल्यग्रे तीर्थं दैवं स्वल्पाङ्गुल्योर्मूले कायम् | १४५३ |
| मध्येऽङ्गुष्ठाङ्गुल्योः पित्र्यं मूले त्वङ्गुष्ठस्य ब्राह्मम् | १४५४ |
| स्याद्ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमित्यपि | १४५५ |
| देवभूयादिकं तद्वत्कृच्छ्रं सांतपनादिकम् | १४५६ |
| संन्यासवत्यनशने पुमान्प्रायोऽथ वीरहा | १४५७ |
| नष्टाग्निः कुहना लोभान्मिथ्येर्यापथकल्पना | १४५८ |
| ब्रात्यः संस्कारहीनः स्यादस्वाध्यायो निराकृतिः | १४५९ |
| धर्मध्वजी लिङ्गवृत्तिरवकीर्णी क्षतव्रतः | १४६० |
| सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च | १४६१ |
| अंशुमानभिनिर्मुक्ताभ्युदितौ च यथाक्रमम् | १४६२ |
| परिवेत्तानुजोऽनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात् | १४६३ |
| परिवित्तिरतु तज्ज्यायान्विवाहोपयमौ समौ | १४६४ |
| तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् | १४६५ |
| न्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम् | १४६६ |
| त्रिवर्गो धर्मकामार्थैश्चतुर्वर्गः समोक्षकैः | १४६७ |
| सबलैस्तैश्चतुर्भद्रं जन्याः स्निग्धा वरस्य ये | १४६८ |

९. क्षत्रियवर्गः ।

| | |
|--|------|
| सूर्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट् | १४६९ |
| राजा राट् पार्थिवश्चाभृन्नृपभूपमहीक्षितः | १४७० |

| | |
|--|------|
| राजा तु प्रणताग्नेपसामन्तः स्यादधीश्वरः | १४७१ |
| चक्रवर्ती सार्वभौमो नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः | १४७२ |
| येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्थेश्वरश्च यः | १४७३ |
| शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स संपाडय राजकम् | १४७४ |
| राजन्यकं च नृपतिक्षत्रियाणां गणे क्रमात् | १४७५ |
| मन्त्री धीसचिवोऽमात्योऽन्ये कर्मसचिवास्ततः | १४७६ |
| महामात्राः प्रधानानि पुरोधास्तु पुरोहित | १४७७ |
| द्वष्टरि व्यवहाराणां प्राड्विवाकाक्षदर्शकौ | १४७८ |
| प्रतीहारो द्वाग्पालद्वास्थद्वास्थितदर्शकाः | १४७९ |
| रक्षिवर्गस्त्वनीकस्थोऽप्राध्यक्षाधिकृतौ समौ | १४८० |
| स्थायुकोऽधिकृतो ग्रामे गोपो ग्रामेषु भूरिषु | १४८१ |
| भौरिकः कनकाध्यक्षो रूप्याध्यक्षस्तु नैष्किकः | १४८२ |
| अन्तःपुरे त्यधिकृतः स्यादन्तर्वेशिको जनः | १४८३ |
| मौलिदह्याः कञ्चुकिनः स्थापत्याः सौविदाश्च ते | १४८४ |
| शण्डो वर्षवरस्तुल्यां सेवकार्यनुजीविनः | १४८५ |
| विषयानन्तरो राजा शत्रुमित्रमतः परम् | १४८६ |
| उदासीनः परतरः पाप्मिन्प्राहस्तु पृष्ठतः | १४८७ |
| रिपौ वैरिन्पक्षारिद्विपद्वैपणदुर्द्विद | १४८८ |
| द्विद्विपक्षाहितामित्रदस्युशात्रवशत्रवः | १४८९ |
| अभिघातिपरारातिप्रत्यर्थिपरिपन्थिनः | १४९० |
| वयस्यः क्षौद्रः सत्रया अथ मित्रः सखा सुहृत् | १४९१ |
| सरयः सामान्यः स्यादन्नरोघोऽनघर्तनम् | १४९२ |

| | |
|---|------|
| यथार्हवर्णः प्रणिधिरपसर्पश्चरः स्पशः | १४९३ |
| चारश्च गूढपुरुषश्चाप्तप्रत्ययितौ समौ | १४९४ |
| सांवत्सरो ज्यौतिषिको दैवज्ञगणकावपि | १४९५ |
| स्युर्मौहूर्तिकमौहूर्तज्ञानिकार्तान्तिका अपि | १४९६ |
| तान्त्रिको ज्ञातसिद्धान्तः सत्री गृहपतिः समौ | १४९७ |
| लिपिकारोऽक्षरचणोऽक्षरचुञ्चुश्च लेखके | १४९८ |
| लिखिताक्षरविन्यासे लिपिलिंविरोधे स्त्रियौ | १४९९ |
| स्यात्संदेशहरो दूतो दूत्यं तद्भावकर्मणी | १५०० |
| अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिक इत्यपि | १५०१ |
| स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गवलानि च | १५०२ |
| राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च | १५०३ |
| संधिर्ना विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः | १५०४ |
| पङ्गुणाः शक्तयस्त्रिभुवः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः | १५०५ |
| क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम् | १५०६ |
| स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोपदण्डजम् | १५०७ |
| भेदो दण्डः साम दानमित्युपायचतुष्टयम् | १५०८ |
| साहसं तु दमो दण्डः साम सान्त्वमथो समौ | १५०९ |
| भेदोपजापावुपधा धर्माद्यैर्यत्परीक्षणम् | १५१० |
| पञ्च त्रिष्वपडक्षीणो यस्तृतीयाद्यगोचरः | १५११ |
| विविक्तविर्जनच्छन्ननिःशलाकास्तथा रहः | १५१२ |
| रहश्चोपांशु चालिङ्गे रहस्यं तद्भवे त्रिषु | १५१३ |
| समौ विसम्भविश्वासौ भेषो भ्रंशो यथोक्तिः | १५१४ |

| | |
|---|------|
| अश्वेषन्यायकल्पास्तु देशरूपं समञ्जसम् | १५१५ |
| युक्तमौषधिकं लभ्यं भजमानाभिनीतवत् | १५१६ |
| न्याय्यं च त्रिषु षट् संप्रधारणा तु समर्थनम् | १५१७ |
| अववादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं च स | १५१८ |
| शिष्टिश्चाज्ञा च संस्था तु मर्यादा धारणा स्थिति | १५१९ |
| आगोऽपराधो मन्तुश्च समे तूद्दानबन्धने | १५२० |
| द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डो भागधेयः करो वलि | १५२१ |
| घट्टादिदेय शुल्कोऽस्त्री प्राभृतं तु प्रदेशनम् | १५२२ |
| उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा | १५२३ |
| यौतकादि तु यद्देयं सुदायो हरणं च तत् | १५२४ |
| तत्कालस्तु तदात्यं स्यादुत्तरं काल आयतिः | १५२५ |
| सादृष्टिकं फल सद्य उदकः फलमुत्तरम् | १५२६ |
| अदृष्टं गृहीतोयादि दृष्टं स्वपरचक्रजम् | १५२७ |
| महीभुजामहिभयं स्वपक्षप्रभव भयम् | १५२८ |
| प्रक्रिया त्वधिकारः स्याच्चाभारं तु प्रकीर्णकम् | १५२९ |
| नृपामनं यत्तद्भद्रासनं सिंहासनं तु तत् | १५३० |
| हंसं छत्रं त्यातपत्रं राजस्तु नृपलक्ष्म तत् | १५३१ |
| भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो भृङ्गारं कनकालुका | १५३२ |
| निर्देशः शिष्टिरं षण्ढे सज्जनं तूपरक्षणम् | १५३३ |
| हस्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्याद्यतुष्टयम् | १५३४ |
| दन्ती दन्तायुक्तो हस्ती द्विरदोऽनैरपो द्विप | १५३५ |
| मतङ्गजो गजो नागः मुञ्जरो घाण्ण करी | १५३६ |

| | |
|--|------|
| इंभः स्तम्बेरमः पद्मी यूथनाथस्तु यूथपः | १५३७ |
| मदोत्कटो मदकलः कलभः करिशावकः | १५३८ |
| प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः समाबुद्धान्तनिर्मदौ | १५३९ |
| हास्तिकं गजता वृन्दे करिणी धेनुका वशा | १५४० |
| गण्डः कटो मदो दानं वमथुः करशीकरः | १५४१ |
| कुम्भौ तु पिण्डौ शिरसस्तयोर्मध्ये विदुः पुमान् | १५४२ |
| अवग्रहो ललाटं स्यादीपिका त्वक्षिकूटकम् | १५४३ |
| अपाङ्गदेशो निर्याणं कर्णमूलं तु चूलिका | १५४४ |
| अधः कुम्भस्य बाह्विधं प्रतिमानमधोऽस्य यत् | १५४५ |
| आसनं स्कन्धदेशः स्यात्पद्मकं विन्दुजालकम् | १५४६ |
| पार्श्वभागः पक्षभागो दन्तभागस्तु योऽग्रतः | १५४७ |
| द्वौ पूर्वपश्चाज्जङ्घादिदेशौ गात्रावरे क्रमात् | १५४८ |
| तोत्रं वेणुकमालानं बन्धस्तम्भेऽथ शृङ्खले | १५४९ |
| अन्दुको निगडोऽस्त्री स्यादङ्गुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् | १५५० |
| दूण्या कक्ष्या वरत्रा स्यात्कल्पना सज्जना समे | १५५१ |
| प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो द्वयोः | १५५२ |
| वीतं त्वसारं हस्त्यश्वं वारी तु गजवन्धनी | १५५३ |
| घोटके वीतितुरगतुरंगाश्वतुरंगमाः | १५५४ |
| वाजिवाहर्वगन्धर्वहयसैन्धवसप्तयः | १५५५ |
| आजानेयाः कुलीनाः स्युर्विनीताः साधुवाहिनः | १५५६ |
| वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा बाहिका हयाः | १५५७ |
| ययुरश्वोऽश्वमेधीयो जवनस्तु जवाधिकः | १५५८ |

| | |
|--|------|
| पृष्ठयः स्थौरी सितः कर्को रथ्यो वोढा रथस्य यः | १५५९ |
| वालः किशोरो वाम्यश्वा वडवा वाडवं गणे | १५६० |
| त्रिध्याश्वीनं यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते | १५६१ |
| कश्यं तु मध्यमश्वानां हेपा हेपा च निस्वनः | १५६२ |
| निगालस्तु गलोद्देशो वृन्दे त्वश्वीयमाश्ववत् | १५६३ |
| आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वलितं प्लुतम् | १५६४ |
| गतयोऽमू पञ्च धारा घोणा तु प्रोथमस्त्रियाम् | १५६५ |
| कविका तु खलीनोऽस्त्री शफं क्लीबे खुरः पुमान् | १५६६ |
| पुच्छोऽस्त्री लूमलाङ्गुले वालहस्तश्च वालधिः | १५६७ |
| त्रिपूपावृत्तलुठितौ परावृत्ते मुहुर्भुवि | १५६८ |
| याने चक्रिणि युद्धार्ये शताङ्गः स्यन्दनो रथः | १५६९ |
| असौ पुण्यरथश्चक्रयानं न समराय यत् | १५७० |
| कर्णोरथः प्रवहणं डयनं च समं त्रयम् | १५७१ |
| क्लीबेऽनः शकटोऽस्त्री स्याद्गन्त्री कम्बलिवाह्यकम् | १५७२ |
| शिविका याप्ययानं स्याद्दोला प्रेङ्गादिका स्त्रियाम् | १५७३ |
| उर्भा तु द्वैपयैयार्घा द्वीपिचर्मावृत्ते रथे | १५७४ |
| पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यन्दनः पाण्डुकम्बली | १५७५ |
| रथे काम्बलवस्त्राद्या कम्बलादिभिरावृत्ते | १५७६ |
| त्रिषु द्वैपादयो रथ्या रथकथ्या रथव्रजे | १५७७ |
| धूः स्त्री क्लीबे थानमुखं स्याद्गन्त्राद्गमपस्करः | १५७८ |
| चक्रं रथाङ्गं तस्यान्ते नेमिः स्त्री स्यात्प्रधिः पुमान् | १५७९ |
| पिण्डिका नाभिरक्षाग्रकीलके तु द्वयोरणिः | १५८० |

| | |
|--|------|
| रथगुप्तिर्वरूथो ना कूवरस्तु युगंधरः | १५८१ |
| अनुकर्षो दार्वधःस्थं प्रासङ्गो ना युगाद्युगः | १५८२ |
| सर्वं स्याद्वाहनं यानं युग्यं पत्रं च धोरणम् | १५८३ |
| परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् | १५८४ |
| आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निपादिनः | १५८५ |
| नियन्ता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः | १५८६ |
| सव्येष्टदक्षिणस्थौ च संज्ञा रथकुटुम्बिनः | १५८७ |
| रथिनः स्यन्दनारोहा अश्वारोहास्तु सादिनः | १५८८ |
| भटा योधाश्च योद्धारः सेनारक्षास्तु सैनिकाः | १५८९ |
| सेनायां समवेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्च ते | १५९० |
| वलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहस्रिणः | १५९१ |
| परिधिस्थः परिचरः सेनानीर्वाहिनीपतिः | १५९२ |
| कञ्चुको वारवाणोऽस्त्री यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः | १५९३ |
| वध्नन्ति तत्सारसनमधिकाङ्गोऽथ शीर्षकम् | १५९४ |
| शीर्षण्यं च शिरस्त्रेऽथ तनुत्रं वर्म दंशनम् | १५९५ |
| उरश्छदः कङ्कटको जगरः कवचोऽस्त्रियाम् | १५९६ |
| आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्धवत् | १५९७ |
| संनद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकङ्कटः | १५९८ |
| त्रिष्णामुक्तादयो वर्मभृतां कावचिकं गणे | १५९९ |
| पदातिपत्तिपदगपादातिकपदाजयः | १६०० |
| पद्मश्च पदिकश्चाथ पादातं पत्तिसंहतिः | १६०१ |
| शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायुधीयायुधिकाः समाः | १६०२ |

| | |
|---|------|
| आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्संभावनात्मनि | १६६९ |
| अहमहमिका तु सा स्यात्परस्परं यो भवत्यहंकारः | १६७० |
| द्रविणं तरः सहोवलशौर्याणि स्थाम शुष्मं च | १६७१ |
| शक्तिः पराक्रमः प्राणो विक्रमस्त्वतिशक्तिता | १६७२ |
| वीरपाणं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे | १६७३ |
| युद्धमायोधनं जन्यं प्रधानं प्रविदारणम् | १६७४ |
| मृधमास्कन्दनं संख्यं समीकं सांपरायिकम् | १६७५ |
| अस्त्रियां समरानीकरणाः कलहविग्रहौ | १६७६ |
| संप्रहाराभिसंघातकलिसंस्फोटसंयुगाः | १६७७ |
| अभ्यामर्दसमाघातसङ्ग्रामाभ्यागमाहवाः | १६७८ |
| समुदायः स्त्रियः संयत्समित्याजिसमिद्युधः | १६७९ |
| नियुद्धं बाहुयुद्धेऽथ तुमुलं रणसंकुले | १६८० |
| क्ष्वेडा तु सिंहनादः स्यात्करिणां घटना घटा | १६८१ |
| क्रन्दनं योधसंरावो वृंहितं करिगर्जितम् | १६८२ |
| विस्फारो धनुषः स्वानः पटहाडम्बरौ समौ | १६८३ |
| प्रसभं तु वलात्कारो हठोऽथ स्खलितं छलम् | १६८४ |
| अजन्यं क्लीवमुत्पात उपसर्गः समं त्रयम् | १६८५ |
| मूर्च्छा तु कश्मलं मोहोऽप्यवमर्दस्तु पीडनम् | १६८६ |
| अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं विजयो जयः | १६८७ |
| वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्यातनं च सा | १६८८ |
| प्रद्रावोद्रावसंद्रावसंदावा विद्रवो द्रवः | १६८९ |
| अपक्रमोऽपयानं च रणे भङ्गः पराजयः | १६९० |

| | |
|--|------|
| द्विहायनी द्विवर्पा गौरेकाब्दा त्वेकहायनी | १८४२ |
| चतुरब्दा चतुर्हायण्येवं त्र्यब्दा त्रिहायणी | १८४३ |
| वशा वन्ध्यावतोका तु स्रवद्गर्भाथ संधिनी | १८४४ |
| आक्रान्ता वृषभेणाथ वेहद्गर्भोपघातिनी | १८४५ |
| काल्योपसर्या प्रजने प्रष्टौही वालगर्भिणी | १८४६ |
| स्यादचण्डी तु सुकरा बहुसूतिः परेष्टुका | १८४७ |
| चिरप्रसूता वष्कयणी धेनुः स्यान्नवसूतिका | १८४८ |
| सुव्रता सुखसंदोह्या पीनोद्भी पीवरस्तनी | १८४९ |
| द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा धेनुष्या वन्धके स्थिता | १८५० |
| समांसमीना सा यैव प्रतिवर्षं प्रसूयते | १८५१ |
| ऊधस्तु क्लीवमापीनं समौ शिवककीलकौ | १८५२ |
| न पुंसि दाम संदानं पशुरज्जुस्तु दामनी | १८५३ |
| वैशाखमन्थमन्थानमन्थानो मन्थदण्डके | १८५४ |
| कुठरो दण्डविष्कम्भो मन्थनी गर्गरी समे | १८५५ |
| उष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः करभः शिशुः | १८५६ |
| करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः | १८५७ |
| अजा च्छागी शुभच्छागवस्तच्छगलका अजे | १८५८ |
| मेढोरभ्रोरणोर्णायुमेपवृष्णय एडके | १८५९ |
| उष्ट्रोरभ्राजवृन्दे स्यादौष्ट्रकौरभ्रकाजकम् | १८६० |
| चक्रीवन्तस्तु वालेया रासभा गर्दभाः खराः | १८६१ |
| वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् | १८६२ |
| पण्याजीवो ह्यापणिकः क्रयविक्रयिकश्च सः | १८६३ |

| | |
|--|------|
| विक्रेता स्याद्विक्रयिकः कायिकक्रयिकौ समौ | १८६४ |
| वाणिज्यं तु वणिज्या स्थान्मूल्यं वस्तोऽप्यवक्रयः | १८६५ |
| नीवी परिपणो मूलधनं लाभोऽधिकं फलम् | १८६६ |
| परिदानं परीवर्तो नैमेयनिमयावपि | १८६७ |
| पुमानुपनिधिर्न्यासः प्रतिदानं तदर्पणम् | १८६८ |
| क्रये प्रसारितं क्रय्यं क्रेयं क्रेतव्यमात्रके | १८६९ |
| विक्रेयं पणितव्यं च पण्यं क्रय्यादयस्त्रिषु | १८७० |
| ह्रीबे सत्यापनं सत्यंकारः सत्याकृतिः स्त्रियाम् | १८७१ |
| विपणो विक्रयः संख्याः संख्येये ह्यादश त्रिषु | १८७२ |
| विशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययो | १८७३ |
| संख्यार्थे द्विवहुत्वे स्तस्तासु चानवतेः स्त्रिय | १८७४ |
| पङ्के शतसहस्रादि क्रमाद्दशगुणोत्तरम् | १८७५ |
| यौतत्रं द्रुवय पाय्यमिति मानार्थकं त्रयम् | १८७६ |
| मानं तुलाङ्गुलिप्रस्थैर्गुञ्जाः पञ्चाद्यमापकः | १८७७ |
| ते षोडशाक्षः कर्पोऽस्त्री पल कर्पचतुष्टयम् | १८७८ |
| सुवर्णविस्तौ हेम्नोऽक्षे कुरुविस्तस्तु तत्पले | १८७९ |
| तुला स्त्रियां पलशतं भारः स्याद्विशतिस्तुला | १८८० |
| आचितो दश भारः स्युः शाकटो भार आचितः | १८८१ |
| कार्पापणः कार्पिकः स्यात्कार्पिके ताम्रिके पणः | १८८२ |
| अस्त्रियामाढकद्रोणौ खारी चाहो निकुञ्चकः | १८८३ |
| कुडव प्रस्थ इत्याद्या परिमाणार्थकाः पृथक् | १८८४ |
| पादस्तुरीयो भागः स्यादशभागौ तु वण्टके | १८८५ |

| | |
|---|------|
| द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु | १८८६ |
| हिरण्यं द्रविणं द्युम्नमर्थरविभवा अपि | १८८७ |
| स्यात्कोशश्च हिरण्यं च हेमरूप्ये कृताकृते | १८८८ |
| ताभ्यां यदन्यत्तत्कुप्यं रूप्यं तद्व्यमाहतम् | १८८९ |
| गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः | १८९० |
| शोणरत्नं लोहितकः पद्मरागोऽथ मौक्तिकम् | १८९१ |
| मुक्ताथ विद्रुमः पुंसि प्रवालं पुंनपुंसकम् | १८९२ |
| रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च | १८९३ |
| स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् | १८९४ |
| तपनीयं शातकुम्भं गाङ्गेयं भर्म कर्बुरम् | १८९५ |
| चामीकरं जातरूपं महारजतकाञ्चने | १८९६ |
| रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदोऽस्त्रियाम् | १८९७ |
| अलंकारसुवर्णं यच्छृङ्गीकनकमित्यदः | १८९८ |
| दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेतमित्यपि | १८९९ |
| रीतिः स्त्रियामारकूटो न स्त्रियामथ ताम्रकम् | १९०० |
| शुल्वं म्लेच्छमुखं द्रव्यष्टवरिष्टोदुम्बराणि च | १९०१ |
| लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी | १९०२ |
| अश्मसारोऽथ मण्डूरं सिंहाणमपि तन्मले | १९०३ |
| सर्वं च तैजसं लोहं विकारस्त्वयसः कुशी | १९०४ |
| क्षारः काचोऽथ चपलो रसः सूतश्च पारदे | १९०५ |
| गवलं माहिषं शृङ्गमभ्रकं गिरिजामले | १९०६ |
| स्रोतोञ्जनं तु सौवीरं कापोताञ्जनयामुने | १९०७ |

| | |
|--|------|
| तुल्याञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके | १९०८ |
| कर्परीदार्विकाकाथोद्भवं तुल्यं रसाञ्जनम् | १९०९ |
| रसगर्भं तार्क्ष्यशैल गन्धाश्मनि तु गन्धिक- | १९१० |
| सौगन्धिकश्च चक्षुष्याकुलाल्यौ तु कुलत्तिका | १९११ |
| रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पुष्पकं कुसुमाञ्जनम् | १९१२ |
| पिञ्जरं पीतनं तालमाल च हरितालके | १९१३ |
| गैरेयमर्ध्यं गिरिजमश्मजं च शिलाजतु | १९१४ |
| बोलगन्धरसप्राणपिण्डगोपरसा समाः | १९१५ |
| डिण्डीरोऽब्धिकफः फेनः सिन्दूरं नागसंभवम् | १९१६ |
| नागसीसकयोगेष्टवप्राणि त्रपु पिचटम् | १९१७ |
| रङ्गउद्गे अथ पिचुस्तूलोऽथ कमलोत्तरम् | १९१८ |
| स्यात्कुसुम्भं वह्निशिखं महारजनमित्यपि | १९१९ |
| मेषकम्बल ऊर्णायुः दशोर्ण दशलोमनि | १९२० |
| मधु क्षौद्रं माक्षिकादि मधूच्छिष्ट तु सिक्थकम् | १९२१ |
| मनःशिला ननोगुप्ता मनोहा नागजिह्विका | १९२२ |
| नैपाली कनुटी गोला यवक्षारो यवाग्रजः | १९२३ |
| पाक्योऽथ सर्जिकाक्षारः कापोतः सुखवर्चक | १९२४ |
| सावर्चल स्याद्द्रुचक त्वक्क्षीरी वंशरोचना | १९२५ |
| शिमुजं श्वेतमरिचं मोरटं मूलमैक्षयम् | १९२६ |
| अन्धिकं पिप्पलीमूलं चटकाशिर इत्यपि | १९२७ |
| गोलोमी भूतकेशो ना पत्राङ्ग रक्तचन्दनम् | १९२८ |
| त्रिकटु त्र्युपण व्योषं त्रिफला तु फलत्रिकम् | १९२९ |

११. शूद्रवर्गः ।

| | |
|---|------|
| शूद्राश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्यजाः | १९३० |
| आ चण्डालान्तु संकीर्णा अम्बष्ठकरणादयः | १९३१ |
| शूद्राविशोस्तु करणोऽम्बष्ठो वैद्याद्विजन्मनोः | १९३२ |
| शूद्राक्षत्रिययोरुग्रो मागधः क्षत्रियाविशोः | १९३३ |
| माहिष्योऽर्याक्षत्रिययोः क्षत्तार्याशूद्रयोः सुतः | १९३४ |
| ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतस्तस्यां वैदेहको विशः | १९३५ |
| रथकारस्तु माहिष्यात्करण्यां यस्य संभवः | १९३६ |
| स्याच्चण्डालस्तु जनितो ब्राह्मण्यां वृषलेन यः | १९३७ |
| कारुः शिल्पी संहतैस्तैर्द्वयोः श्रेणिः सजातिभिः | १९३८ |
| कुलकः स्यात्कुलश्रेष्ठी मालाकारस्तु मालिकः | १९३९ |
| कुम्भकारः कुलालः स्यात्पलगण्डस्तु लेपकः | १९४० |
| तन्तुवायः कुविन्दः स्यान्तुन्नवायस्तु सौचिकः | १९४१ |
| रङ्गाजीवश्चित्रकरः शस्त्रमार्जोऽसिधावकः | १९४२ |
| पादूकृच्चर्मकारः स्याद्व्योकारो लोहकारकः | १९४३ |
| नाडिधमः स्वर्णकारः कलपोदकः | १९४४ |
| स्याच्छाद्विकः कागद्विकः शौलिबकस्ताम्रकुट्टकः | १९४५ |
| तैक्ष्णं तु वैद्यकैस्त्वष्टा रथकारस्तु काष्ठतद् | १९४६ |
| ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोऽनधीनकः | १९४७ |
| धुरी मुण्डी दिवाकीर्तिनापितान्तावसायिनः | १९४८ |
| निर्णेजकः स्याद्रजकः शौण्डिको मण्डहारकः | १९४९ |
| जावालः स्यादजाजीवो देवाजीवस्तु देवलः | १९५० |

| | |
|--|------|
| स्यान्माया शाम्बरी मायाकारस्तु प्रतिहारकः | १९५१ |
| शैलालिनस्तु शैलूपा जायाजीवाः कृशाश्विनः | १९५२ |
| भरता इत्यपि नटाश्चारणास्तु कुशीलवाः | १९५३ |
| मार्दङ्गिका मौरजिकाः पाणिवादास्तु पाणिघाः | १९५४ |
| वेणुध्माः स्युर्वेणविका वीणावादास्तु वैणिकाः | १९५५ |
| जीवान्तकः शाकुनिको द्वौ वागुरिकजालिकौ | १९५६ |
| वैतंसिकः कौटिकश्च मासिकश्च समं त्रयम् | १९५७ |
| भृतको भृतिभुक्कर्मकरो वैतनिकोऽपि सः | १९५८ |
| वार्तावहो वैवधिको भारवाहस्तु भारिकः | १९५९ |
| विवर्णः पामरो नीचः प्राकृतश्च पृथग्जनः | १९६० |
| निहीनोऽपसदो जाल्मः क्षुल्लकश्चेतरश्च सः | १९६१ |
| भृत्ये दासेरदासेयदासगोप्यकचेटकाः | १९६२ |
| नियोज्यकिंकरप्रैष्यभुजिष्यपरिचारकाः | १९६३ |
| पराचितपरिस्कन्दपरजातपरैधिताः | १९६४ |
| मन्दस्तुन्दपरिन्दुः आलस्यः शीतकोऽलसोऽनुष्णः | १९६५ |
| दक्षे तु चतुरपेशलपटवः सूथान उष्णश्च | १९६६ |
| चण्डालप्लवमातङ्गदिवाकीर्तिजनंगमाः | १९६७ |
| निषादश्चपचावन्तेवामिचाण्डालपुङ्गवाः | १९६८ |
| भेदाः किरातशरपरुलिन्दा स्लेच्छजातयः | १९६९ |
| व्याधो मृगप्रधाजीवो मृगयुर्लब्धकोऽपि सः | १९७० |
| कौलेयकः सारमेयः कुङ्कुरो मृगदशकः | १९७१ |
| शुनको भयकः श्वा स्यादलर्कस्तु स योगितः | १९७२ |

| | |
|---|------|
| श्वा विश्वकद्रुमृगयाकुशलः सरमा शुनी | १९७३ |
| विद्वचरः सूकरो ग्राम्यो वर्करस्तरुणः पशुः | १९७४ |
| आच्छोदनं मृगव्यं स्यादाखेटो मृगया स्त्रियाम् | १९७५ |
| दक्षिणारुर्लब्धयोगादक्षिणेर्मा कुरङ्गकः | १९७६ |
| चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करमोपकाः | १९७७ |
| प्रतिरोधिपरास्कन्दिपाटच्चरमलिम्बुचाः | १९७८ |
| चौरिका सैन्यचौर्ये च स्तेयं लोप्त्रं तु तद्धने | १९७९ |
| वीतंसस्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणाम् | १९८० |
| उन्माथः कूटयन्त्रं स्याद्वागुरा मृगबन्धनी | १९८१ |
| शुल्वं वराटकं स्त्री तु रज्जुस्त्रिषु वटी गुणः | १९८२ |
| उद्धाटनं घटीयन्त्रं सलिलोद्धाहनं प्रहेः | १९८३ |
| पुंसि वेमा वायदण्डः सूत्राणि नरि तन्तवः | १९८४ |
| वाणिर्व्यूतिः स्त्रियौ तुल्ये पुस्तं लेप्यादिकर्मणि | १९८५ |
| पाञ्चालिका पुत्रिका स्याद्वस्त्रदन्तादिभिः कृता | १९८६ |
| जतुत्रपुविकारे तु जातुपं त्रापुपं त्रिषु | १९८७ |
| पिटकः पेटकः पेडा मञ्जुपाथः | १९८८ |
| भारयष्टिस्तदालम्बि विहङ्गिका | १९८९ |
| परमलोमन्तुली मण्डविकः शक्यं काचोऽथ पादुका | १९९० |
| सवानुपदीना पदायता | १९९१ |
| नधी धधी चरत्रा स्यादश्वादेस्ताडनी कशा | १९९२ |
| चाण्डालिका तु कण्डोलबीणा चण्डालबलकी | १९९३ |
| नाराची स्यादेषणिका शाणस्तु निकषः कषः | १९९४ |
| मन्धनः पत्रपरशुरीषिका तुलिका समे | १९९५ |

| | |
|--|------|
| तैजसावर्तनी मूषा भस्त्रा चर्मप्रसेविका | १९९५ |
| आस्फोटनी वेधनिका कृपाणी कर्तरी समे | १९९६ |
| वृक्षादनी वृक्षभेदी टङ्कः पापाणदारणः | १९९७ |
| ऋकचोऽस्त्री करपत्रमारा चर्मप्रभेदिका | १९९८ |
| सूमीं स्थूणाय प्रतिमा शिल्पं कर्म कलादिकम् | १९९९ |
| प्रतिमानं प्रतिबिम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया | २००० |
| प्रतिकृतिरर्चा पुंसि प्रतिनिधिरूपमोपमानं स्यात् | २००१ |
| वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्यः सदक्षः सदशः सदक् | २००२ |
| साधारणः समानश्च स्युरुत्तरपदे त्वमी | २००३ |
| निभसंकाशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः | २००४ |
| कर्मण्या तु रिधाभृत्याभृतयो भर्म वेतनम् | २००५ |
| भरणं भरणं मूल्यं निर्वेशः पण इत्यपि | २००६ |
| सुरा हलिप्रिया हाला परिस्रुठरुणात्मजा | २००७ |
| गन्धोत्तमाप्रमन्नेराकादम्बर्यः परिस्रुता | २००८ |
| मदिरा कड्यमध्ये चाप्यत्रदंशस्तु भक्षणम् | २००९ |
| धुण्डापानं मदस्थान मधुवारा मधुक्रमा | २०१० |
| मध्यामजो माधवको मधु माघीक्रमद्वयोः | २०११ |
| मैरेयमासवः मीधुर्मेदको जगत्तः समौ | २०१२ |
| मंधानं स्यादभिषयः किण्वं पुमि तु नम्रहः | २०१३ |
| कारोत्तरः सुरामण्ड आपानं पानगोष्ठिका | २०१४ |
| चक्रकोऽस्त्री पानपात्र सरकोऽप्यनुतर्षणम् | २०१५ |
| पूर्वोऽक्षदेवी कितवोऽक्षधूर्तो धूतकृत्तमा | २०१६ |

| | |
|--|------|
| स्युर्लग्नकाः प्रतिभुवः सभिका द्यूतकारकाः | २०१७ |
| द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती कैतवं पण इत्यपि | २०१८ |
| पणोऽक्षेषु ग्लहोऽक्षास्तु देवनाः पाशकाश्च ते | २०१९ |
| परिणायस्तु शारीणां समन्ताश्रयनेऽस्त्रियाम् | २०२० |
| अष्टापदं शारिफलं आणिद्यूतं समाह्वयः | २०२१ |
| उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन्येऽत्र यौगिकाः | २०२२ |
| ताद्धर्म्यादन्यतो वृत्तावूह्या लिङ्गान्तरेऽपि ते | २०२३ |

१२. काण्डसमाप्तिः ।

| | |
|---|------|
| इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने | २०२४ |
| द्वितीयकाण्डो भूम्यादिः साङ्ग एव समर्थितः | २०२५ |

तृतीयं काण्डम् ।

१. वर्गभेदाः ।

| | |
|---|------|
| विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरपि | २०२६ |
| लिङ्गादिसंग्रहैर्वर्गाः सामान्ये वर्गसंश्रयोः | २०२७ |

२. परिभाषा ।

| | |
|--|------|
| स्त्रीदाराद्यैर्यद्विशेष्यं यादृशैः प्रस्तुतं पदैः | २०२८ |
| गुणद्रव्यक्रियाशब्दास्तथा स्युस्तत्त्व भेदकाः | २०२९ |

३. विशेष्यनिघ्नवर्गः ।

| | |
|--|------|
| सुकृती पुण्यवान्धन्यो महेच्छस्तु महाशयः | २०३० |
| हृदयालुः सुहृदयो महोत्साहो महोद्यमः | २०३१ |
| प्रवीणे निपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षिताः | २०३२ |

| | |
|--|------|
| वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल इत्यपि | २०३३ |
| पूज्यः प्रतीक्ष्यः सांशयिकः संशयापन्नमानसः | २०३४ |
| दक्षिणीयो दक्षिणार्हस्तत्र दक्षिण्य इत्यपि | २०३५ |
| स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानगण्डा बहुप्रदे | २०३६ |
| जैवातृकः स्यादायुष्मानन्तर्वाणिस्तु शास्त्रवित् | २०३७ |
| परीक्षकः कारणिको वरदस्तु समर्थकः | २०३८ |
| हर्षमाणो विकुर्याणः प्रमना हृष्टमानसः | २०३९ |
| दुर्मना विमना अन्तमना स्यादुत्क उन्मनाः | २०४० |
| दक्षिणे सरलोदारो सुकलो दातृभोक्तरि | २०४१ |
| तत्परे प्रसितासक्ताविष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः | २०४२ |
| प्रतीते प्रथितख्यातवित्तविज्ञातविश्रुताः | २०४३ |
| गुणः प्रतीते तु कृतलक्षणाहतलक्षणौ | २०४४ |
| इभ्य आढ्यो धनी स्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता | २०४५ |
| अधिभूर्नायको नेता प्रभुः परिवृढोऽधिपः | २०४६ |
| अधिकर्द्धि समृद्धः स्यात्कुटुम्बव्यापृतस्तु य | २०४७ |
| स्यादभ्यागारिकस्तस्मिन्नुपाधिश्च पुमानयन् | २०४८ |
| वराङ्गरूपोपेतो यः सिंहसंहननो हि सः | २०४९ |
| निर्वार्यः कार्यकर्ता यः संपन्नः सत्त्वसपदा | २०५० |
| अवाचि भूकोऽय मनोजवसः पितृसनिभः | २०५१ |
| सत्कृत्यालंकृता कन्या यो ददाति स कूकुदः | २०५२ |
| गक्ष्मीर्वालक्ष्मणः श्रीलः श्रीमान्निग्नधस्तु यत्सलः | २०५३ |
| स्यादयात्रुः कारुणिकः कृपालुः सुरतः समाः | २०५४ |

| | |
|--|------|
| स्वतन्त्रोऽपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दो निरवग्रहः | २०५५ |
| परतन्त्रः पराधीनः परवान्नाथवानपि | २०५६ |
| अधीनो निघ्न आयत्तोऽस्वच्छन्दो गृह्यकोऽप्यसौ | २०५७ |
| खलपूः स्याद्बहुकरो दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः | २०५८ |
| जाल्मोऽसमीक्ष्यकारी स्यात्कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः | २०५९ |
| कर्मक्षमोऽलंकर्मीणः क्रियावान्कर्मसूद्यतः | २०६० |
| सं कर्मः कर्मशीलो यः कर्मशूरस्तु कर्मठः | २०६१ |
| भरण्यभुङ्कर्मकरः कर्मकारस्तु तत्क्रियः | २०६२ |
| अपस्नातो मृतस्नात आमिषाशी तु शौण्कुलः | २०६३ |
| बुभुक्षितः स्यात्क्षुधितो जिघत्सुरशनायितः | २०६४ |
| परान्नः परपिण्डादो भक्षको घस्मरोऽन्नरः | २०६५ |
| आद्यूनः स्यादौदरिको विजिगीषाविवर्जिते | २०६६ |
| उभौ त्वात्मभरिः कुक्षिभरिः स्वोदरपूरके | २०६७ |
| सर्वान्नीनस्तु सर्वान्नभोजी गृध्रस्तु गर्धनः | २०६८ |
| लुब्धोऽभिलाषुकस्तृष्णक्समौ लोलुपलोलुभौ | २०६९ |
| सोन्मादस्तून्मदिष्णुः स्यादविनीतः समुद्धतः | २०७० |
| मत्ते शौण्डोत्कटक्षीवाः कामुके कमितानुकः | २०७१ |
| कम्पः कामयिताऽभीकः कमनः कामनोऽभिकः | २०७२ |
| विधेयो विनयग्राही वचनेस्थित आश्रवः | २०७३ |
| वश्यः प्रणयो निभृतविनीतप्रश्रिताः समाः | २०७४ |
| धृष्टे धृष्णग्वियातश्च प्रगल्भः प्रतिभान्विते | २०७५ |
| स्यादधृष्टे तु शालीनो विलक्षो विस्मयान्विते | २०७६ |

| | |
|--|------|
| अधीरे कातरस्त्रस्तो भीरुभीरुकभीलुकाः | २०७७ |
| आशंसुराशंसितरि गृहयालुर्ग्रहीतरि | २०७८ |
| श्रद्धालुः श्रद्धया युक्ते पतयालुस्तु पातुके | २०७९ |
| लज्जाशीलेऽपत्रपिण्णुर्वन्दारुरभिवादके | २०८० |
| शरारुर्घातुको हिंस्रः स्याद्वर्धिण्णुस्तु वर्धनः | २०८१ |
| उत्पतिण्णुस्तूत्पतितालंकरिण्णुस्तु मण्डनः | २०८२ |
| भूण्णुर्भविण्णुर्भविता वर्तिण्णुर्वर्तनः समौ | २०८३ |
| निराकरिण्णुः क्षिप्तुः स्यात्सान्द्रस्निग्धस्तु मेदुरः | २०८४ |
| ज्ञाता तु विदुरो विन्दुर्विकासी तु विकस्वरः | २०८५ |
| विसृत्वरो विसृमरः प्रमारी च विसारिणि | २०८६ |
| सहिण्णुः सहनः क्षन्ता तितिक्षुः क्षमिता क्षमी | २०८७ |
| क्रोधनोऽमर्षणः कोपी चण्डस्त्वत्यन्तकोपनः | २०८८ |
| जागरूको जागरिता घूर्णितः प्रचलायितः | २०८९ |
| स्वमक्शयालुर्निद्रालुर्निद्राणग्रयिता समौ | २०९० |
| पराङ्मुखः पराचीनः स्यादवाङ्मध्यधोमुखः | २०९१ |
| देवानश्चति देवद्वद् विष्वद्वद् विश्वगश्चति | २०९२ |
| यः सहाश्चति सध्यद् स स तिर्यद् यस्तिरोऽश्चति | २०९३ |
| वदो वदावदो वक्ता वागीशो वाक्पतिः समौ | २०९४ |
| वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वायदूकोऽतिवक्तरि | २०९५ |
| स्याज्जल्पाकस्तु वाचालो वाचाटो बहुगर्हवाक् | २०९६ |
| तुर्मुखे मुखरावद्मुखौ शङ्कः प्रियंवदे | २०९७ |
| लोहलः स्यादस्फुटवाग्गर्हवादी तु कद्वदः | २०९८ |

| | |
|--|------|
| समौ कुवादकुचरौ स्यादसौम्यस्वरोऽस्वरः | २०९९ |
| रवणः शब्दनो नान्दीवादी नान्दीकरः समौ | २१०० |
| जडोऽज्ञ एडमूकस्तु वक्तुं श्रोतुमशिक्षिते | २१०१ |
| तूष्णींशीलस्तु तूष्णीको नग्नोऽवासा दिगम्बरे | २१०२ |
| निष्कासितोऽवकृष्टः स्यादपध्वस्तस्तु धिक्कृतः | २१०३ |
| आत्तगर्वोऽभिभूतः स्याद्वापितः साधितः समौ | २१०४ |
| प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात्प्रत्याख्यातो निराकृतः | २१०५ |
| निकृतः स्याद्विप्रकृतो विप्रलब्धस्तु वञ्चितः | २१०६ |
| मनोहतः प्रतिहतः प्रतिबद्धो हतश्च सः | २१०७ |
| अधिक्षिप्तः प्रतिक्षिप्तो वद्धे कीलितसंयतौ | २१०८ |
| आपन्न आपत्नाप्तः स्यात्कांदिशीको भयद्रुतः | २१०९ |
| आक्षारितः क्षारितोऽभिशास्ते संकसुकोऽस्थिरे | २११० |
| व्यसनातोपरक्तौ द्वौ विहस्तव्याकुलौ समौ | २१११ |
| विक्लवो विह्वलः स्यात्तु विवशोऽरिष्टदुष्टधीः | २११२ |
| कश्यः कशार्हे संनद्धे त्वाततायी वधोद्यते | २११३ |
| द्वेष्ये त्वक्षिगतो वध्यः शीर्षच्छेद्य इमौ समौ | २११४ |
| भविष्यो विषेण यो वध्यो मुसल्यो मुसलेन यः | २११५ |
| क्लोत्विदानोऽकृष्णकर्मा चपलश्चिकुरः समौ | २११६ |
| दोषैकहृदपुरोभागी निकृतस्त्वनृजुः शठः | २११७ |
| कर्णेजपः सूचकः स्यात्पिशुनो दुर्जनः खलः | २११८ |
| नृशंसो घातुकः क्रूरः पापो धूर्तस्तु वञ्चकः | २११९ |
| अज्ञे मूढयथाजातमूर्खवैधेयबालिशः | २१२० |

| | |
|---|------|
| कदर्ये कृपणक्षुद्रकिपचानमितंपचाः | २१२१ |
| निःस्वस्तु दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतोऽपि सः | २१२२ |
| वनीयको याचनको मार्गणो याचकार्थिनौ | २१२३ |
| अहंकारवानहंयुः शुभंयुस्तु शुभान्वित | २१२४ |
| दिव्योपपादुका देवा नृगवाद्या जरायुजाः | २१२५ |
| स्वेदजाः कृमिदंशाद्याः पक्षिसर्पादयोऽण्डजाः | २१२६ |
| उद्भिदस्तरुगुल्माद्या उद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् | २१२७ |
| सुन्दरं रुचिरं चारु सुपमं साधु शोभनम् | २१२८ |
| कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् | २१२९ |
| तदासेचनक तृप्तेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात् | २१३० |
| अभीष्टेऽभीप्सितं हृद्यं दयितं बलभं प्रियम् | २१३१ |
| निकृष्टप्रतिकृष्टार्बरेफयाप्यावमाधमाः | २१३२ |
| कुपूयकुत्सितावद्यखेटगर्ह्याणकाः समाः | २१३३ |
| मलीमसं तु मलिनं कच्चरं मलदूषितम् | २१३४ |
| पूतं पवित्रं मेध्यं च वीधं तु विमलार्थकम् | २१३५ |
| निर्णिकं शोधितं मृष्टं नि शोध्यमनवस्करम् | २१३६ |
| असारं फल्गु शून्यं तु वशिकं तुच्छरिक्तके | २१३७ |
| ह्रीवे प्रधानं प्रमुखप्रवेकानुत्तमोत्तमाः | २१३८ |
| मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रबहोऽनवरार्थवत् | २१३९ |
| परार्थाग्रप्राग्रहरप्राड्याड्याग्रीयमप्रियम् | २१४० |
| श्रेयाञ्श्रेष्ठः पुष्कलः स्यात्सत्तमश्चातिशोभने | २१४१ |
| स्युरुत्तरपदे व्याघ्रपुंगवर्षभकुञ्जराः | २१४२ |

| | |
|---|------|
| सिंहशार्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः | २१४३ |
| अप्राग्र्यं द्वयहीने द्वे अप्रधानोपसर्जने | २१४४ |
| विशङ्कटं पृथु बृहद्विशालं पृथुलं महत् | २१४५ |
| वडोरुविपुलं पीनपीन्नी तु स्थूलपीवरे | २१४६ |
| स्तोकाल्पक्षुलकाः सूक्ष्मं श्लक्ष्णं दम्भं कृशं तनु | २१४७ |
| स्त्रियां मात्रा त्रुटिः पुंसि लवलेशकणाणवः | २१४८ |
| अत्यल्पेऽल्पिष्ठमल्पीयः कनीयोऽणीय इत्यपि | २१४९ |
| प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यमदम्भं बहुलं बहु | २१५० |
| पुरुहः पुरु भूयिष्ठं स्फारं भूयश्च भूरि च | २१५१ |
| परःशताद्यास्ते येषां परा संख्या शतादिकात् | २१५२ |
| गणनीये तु गणेयं संख्याते गणितमथ समं सर्वम् | २१५३ |
| विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तनिखिलाखिलानि निःशेषम् | २१५४ |
| समग्रं सकलं पूर्णमखण्डं स्यादनूनके | २१५५ |
| घने निरन्तरं सान्द्रं पेलवं विरलं तनु | २१५६ |
| समीपे निकटासन्नसंनिकृष्टसनीडवत् | २१५७ |
| संदेशाभ्याशसत्रिधिसमर्यादसवेशवत् | २१५८ |
| उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा अप्यभितोऽव्ययम् | २१५९ |
| संसक्ते त्वव्यवहितमपदान्तरमित्यपि | २१६० |
| नैदिष्ठमन्तिकतमं स्यादूरं विप्रकृष्टकम् | २१६१ |
| दवीयश्च दविष्ठं च सुदूरं दीर्घमायतम् | २१६२ |
| वर्तुलं निस्तलं वृत्तं बन्धुरं तून्नतानतम् | २१६३ |
| उच्चप्रांशून्नतोदग्रोच्छ्रितास्तुङ्गेऽथ वामने | २१६४ |

| | |
|--|------|
| न्यङ्गनीचखर्वह्रस्वाः स्युरवाग्रेऽवनतानतम् | २१६५ |
| अरालं वृजिनं जिह्वामूर्मिमत्कुञ्चितं नतम् | २१६६ |
| आविद्धं कुटिलं भुग्नं वेलितं वक्रमित्यपि | २१६७ |
| ऋजावजिह्वप्रगुणौ व्यस्ते त्वप्रगुणाकुलौ | २१६८ |
| शाश्वतस्तु ध्रुवो नित्यसदातनसनातनाः | २१६९ |
| स्थालुः स्थिरतरः स्थेयानेकरूपतया तु यः | २१७० |
| कालव्यापी स कूटस्थः स्थावरो जङ्गमेतरः | २१७१ |
| त्वरिण्यु जङ्गमचर-त्रसमिद्ध चराचरम् | २१७२ |
| चलनं कम्पनं कम्पं चलं लोलं चलाचलम् | २१७३ |
| चञ्चलं तरलं चैव पारिप्लवपरिप्लवे | २१७४ |
| अतिरिक्तं समधिको दृढसंधिस्तु संहतः | २१७५ |
| कर्कशं कठिनं क्रूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम् | २१७६ |
| जठरं मूर्तिमन्मूर्तं प्रवृद्धं प्रौढमेधितम् | २१७७ |
| पुराणे प्रतनप्रक्षुरातनचिरंतनाः | २१७८ |
| प्रत्यग्रोऽभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः | २१७९ |
| नूलश्च सुकुमारं तु कोमलं मृदुलं मृदु | २१८० |
| अन्वगन्वक्षमनुग्रेऽनुपदं ह्रीवमव्ययम् | २१८१ |
| प्रत्यक्षं स्यादैन्द्रियकमप्रत्यक्षमतीन्द्रियम् | २१८२ |
| एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनावपि | २१८३ |
| अप्येकसर्गं एकाग्र्योऽप्येकायनगतोऽपि सः | २१८४ |
| पुस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथमांघ्रा अथास्त्रियाम् | २१८५ |
| अन्तो जघन्यं चरममन्त्यपाश्चात्यपश्चिमाः | २१८६ |

| | |
|---|------|
| मोघं निरर्थकं स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्तमुत्त्वणम् | २१८७ |
| साधारणं तु सामान्यमेकाकी त्वेक एककः | २१८८ |
| भिन्नार्थका अन्यतर एकस्त्वोऽन्येतरावपि | २१८९ |
| उच्चावचं नैकभेदमुच्चण्डमविलम्बितम् | २१९० |
| अरुंतुदं तु मर्मस्पृगवाधं तु निर्गलम् | २१९१ |
| प्रसव्यं प्रतिकूलं स्यादपसव्यमपष्ठु च | २१९२ |
| वामं शरीरं सव्यं स्यादपसव्यं तु दक्षिणम् | २१९३ |
| संकटं ना तु संवाधः कलिलं गहनं समे | २१९४ |
| संकीर्णं संकुलाकीर्णं मुण्डितं परिवापितम् | २१९५ |
| ग्रन्थितं संदितं दृढं विसृतं विस्तृतं ततम् | २१९६ |
| अन्तर्गतं विस्मृतं स्यात्प्राप्तप्रणिहिते समे | २१९७ |
| वेलितप्रेङ्खिताधूतचलिताकम्पिता धुते | २१९८ |
| नुत्तनुन्नास्तनिष्ठयूताविद्धक्षिप्तेरिताः समाः | २१९९ |
| परिक्षिप्तं तु निवृतं मूपितं मुपितार्थकम् | २२०० |
| प्रवृद्धप्रसृते न्यस्तनिसृष्टे गुणिताहते | २२०१ |
| निदिग्धोपचिते गूढगुप्ते गुण्ठितरूपिते | २२०२ |
| उप निदिग्ध कीर्णे उद्गूर्णोद्यते काचितशिव्यते | २२०३ |
| संसक्ते निदिग्ध दिग्धलिप्ते समुदक्तोद्धृते समे | २२०४ |
| वेष्टितं स्याद्भ्रलयितं संवीतं रुद्धमावृतम् | २२०५ |
| रुग्णं भुग्नेऽथ निशितक्ष्णुतशातानि तेजिते | २२०६ |
| स्याद्विनाशोन्मुखं पक्वं ह्रीणहीतौ तु लज्जिते | २२०७ |
| वृत्ते तु वृतव्यावृत्तौ संयोजित उपाहितः | २२०८ |

| | |
|--|------|
| प्राप्यं गम्यं समासाद्यं स्थञ्चं रीणं स्नुतं स्नुतम् | २२०९ |
| संगूढः स्यात्संकलितोऽवगीतः ख्यातगर्हणः | २२१० |
| विविधः स्याद्बहुविधो नानारूपः पृथग्विधः | २२११ |
| अवरीणो धिकृतश्चाप्यवध्वस्तोऽवचूर्णितः | २२१२ |
| अनायासकृतं फाण्टं स्वनितं ध्वनितं समं | २२१३ |
| बद्धे संदानितं मूतमुद्धितं संदितं सितम् | २२१४ |
| निष्पक्वे कथितं पाके क्षीराज्यहविषां शृतम् | २२१५ |
| निर्वाणो मुनिवह्नाद्यादौ निर्वातस्तु गतेऽनिले | २२१६ |
| पक्वं परिणते गूढं हस्ते भीढं तु मूत्रिते | २२१७ |
| पुष्टे तु पुषितं सोढे क्षान्तमुद्धान्तमुद्गते | २२१८ |
| दान्तस्तु दमिते शान्तः शमिते प्रार्थितेऽर्दितः | २२१९ |
| ज्ञप्तस्तु ज्ञपिते छन्नश्छादिते पूजितेऽञ्जितः | २२२० |
| पूर्णस्तु पूरिते क्लिष्टः क्लिशितेऽवसिते सितः | २२२१ |
| मुष्टपुष्टोषिता दग्धे तष्टत्वष्टौ तनूकृते | २२२२ |
| वैधितच्छिद्रितौ विद्धे विन्नवित्तौ विचारिते | २२२३ |
| निष्प्रभे विगतारोकौ विलीने विद्रुतद्रुतौ | २२२४ |
| सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ दारिते भिन्नभेदितौ | २२२५ |
| ऊतं स्यूतमुतं चेति त्रितयं तन्तुसततेः | २२२६ |
| स्यादर्हिते नमस्थितनमसितमपचायितार्चितापचितम् | २२२७ |
| वरिवसिते वरिवस्थितमुपासितं चोपचरितं च | २२२८ |
| संतापितसंतप्तौ धूपितधूपायितौ च दूनश्च | २२२९ |
| हृष्टे मन्तस्तृप्तः प्रहृष्टः प्रमुदितः प्रीतः | २२३० |

| | |
|--|------|
| छिन्नं छातं लूनं कृत्तं दातं दितं छितं वृक्णम् | २२३१ |
| स्रस्तं ध्वस्तं भ्रष्टं स्कन्नं पन्नं च्युतं गलितम् | २२३२ |
| लब्धं प्राप्तं विन्नं भावितमासादितं च भूतं च | २२३३ |
| अन्वेपितं गवेपितमन्विष्टं मार्गितं मृगितम् | २२३४ |
| आर्द्रं सार्द्रं क्लिन्नं तिमितं स्तिमितं समुन्नमुत्तं च | २२३५ |
| त्रातं त्राणं रक्षितमवितं गोपायितं च गुप्तं च | २२३६ |
| अवगणितमवमतावज्ञाते अवमानितं च परिभूते | २२३७ |
| त्यक्तं हीनं विधुतं समुज्झितं धूतमुत्सृष्टे | २२३८ |
| उक्तंभाषितमुदितं जल्पितमाख्यातमभिहितं लपितम् | २२३९ |
| बुद्धं बुधितं मनितं विदितं प्रतिपन्नमवसितावगते | २२४० |
| कुरीकृतमुररीकृतमङ्गीकृतमाश्रुतं प्रतिज्ञातम् | २२४१ |
| संगीर्णविदितसंश्रुतसमाहितोपश्रुतोपगतम् | २२४२ |
| ईलितशस्तपणायितपनायितप्रणुतपणितपनितानि | २२४३ |
| अपि गीर्णवर्णिताभिष्टुतेडितानि स्तुतार्थानि | २२४४ |
| भक्षितचर्वितलीढप्रत्यवसितगलितखादितप्सातम् | २२४५ |
| अभ्यवहृतान्नजग्धग्रस्तग्लस्ताशितं भुक्ते | २२४६ |
| क्षेपिष्ठक्षौदिष्ठप्रेष्ठवरिष्ठस्थविष्ठवंहिष्ठाः | २२४७ |
| क्षिप्रक्षुद्राभीप्सितपृथुपीवरबहुप्रकर्षार्थाः | २२४८ |
| साधिष्ठद्राधिष्ठस्फेष्ठगरिष्ठहसिष्ठवृन्दिष्ठाः | २२४९ |
| वाढव्यायतबहुगुरुवामनवृन्दारकातिशये | २२५० |

४. संकीर्णवर्गः ।

प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः संकीर्णैः लिङ्गमुन्नयेत् २२५१

| | |
|--|------|
| कर्म क्रिया तत्सातत्ये गम्ये स्थुरपरस्परा- | २२५२ |
| साकल्यासङ्गवचने पारायणतुरायणे | २२५३ |
| यदृच्छा स्वैरिता हेतुशून्या त्वास्या विलक्षणम् | २२५४ |
| शमथस्तु शमः शान्तिर्दान्तिस्तु दमथो दम- | २२५५ |
| अवदानं कर्म वृत्तं काम्यदानं प्रवारणम् | २२५६ |
| वशक्रिया संवननं मूलकर्म तु कार्मणम् | २२५७ |
| विधूननं विधुवनं तर्पणं प्रीणनावनम् | २२५८ |
| पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं हस्तवारणमित्यपि | २२५९ |
| सेवनं सीवनं स्यूतिर्विंदरः स्फुटनं भिदा | २२६० |
| आक्रोशनमभीपङ्गः संवेदो वेदना न ना | २२६१ |
| संमूर्च्छनमभिव्याप्तिर्याच्चा भिक्षाऽर्चनाऽर्दना | २२६२ |
| वर्धनं छेदनेऽथ द्वे आनन्दनसभाजने | २२६३ |
| आप्रच्छन्नमथान्नायः संप्रदायः क्षये क्षिया | २२६४ |
| अहे ग्राहो वशः कान्तौ रक्षणस्त्राणे रणः कणे | २२६५ |
| व्यधो वेधे पचा पाके हयो हूतो वरो वृत्तौ | २२६६ |
| ओषः श्लोपे नयो नाये ज्यानिर्जीर्णौ भ्रमोभ्रमौ | २२६७ |
| स्फातिर्वृद्धौ प्रथा ख्याती स्पृष्टिः पृक्तौ स्तवः स्तवे | २२६८ |
| एधा समृद्धौ स्फुरणे स्फुरणा प्रमितौ प्रमा | २२६९ |
| प्रसूतिः प्रसवे श्रयोते प्राधारः कुमथः कुमे | २२७० |
| उत्कर्षोऽतिशये सधिः श्लेषे विषय आश्रये | २२७१ |
| क्षिपाया क्षेपणं गीर्णिर्गिरौ गुरणमुद्यमे | २२७२ |
| उन्नाय उन्नये श्रायः श्रयणे जयने जयः | २२७३ |

| | |
|---|------|
| स संस्तावः क्रतुषु या स्तुतिभूमिर्द्विजन्मनाम् | २३१८ |
| निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स उद्धनः | २३१९ |
| स्तम्बघ्नस्तु स्तम्बघनः स्तम्बो येन निहन्यते | २३२० |
| आविधो विध्यते येन तत्र विष्वक्समे निधः | २३२१ |
| उत्कारश्च निकारश्च द्वौ धान्योत्क्षेपणार्थकौ | २३२२ |
| निगारोद्गारविक्षावोद्ग्राहास्तु गरणादिषु | २३२३ |
| आरत्यवरतिविरतय उपरामेऽथास्त्रियां तु निष्ठेवः | २३२४ |
| निष्ठयूतिर्निष्ठेवनं निष्ठीवनमित्यभिन्नानि | २३२५ |
| ज्वने जूतिः सातिस्त्ववसाने स्यादथ ज्वरे जूतिः | २३२६ |
| उदजस्तु पशुप्रेरणमकरणिरित्यादयः शापे | २३२७ |
| गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दमित्यौपगवकादिकम् | २३२८ |
| आपूपिकं शाकुलिकमेवमाद्यमचेतसाम् | २३२९ |
| माणवानां तु माणव्यं सहायानां सहायता | २३३० |
| हल्या हलानां ब्राह्मण्यवाडव्ये तु द्विजन्मनाम् | २३३१ |
| द्वे पशुकानां पृष्ठानां पार्श्वे पृष्ठयमनुक्रमात् | २३३२ |
| खलानां खलिनी खल्याप्यथ मानुष्यकं नृणाम् | २३३३ |
| अमता जनता धूम्या पादया गल्या पृथक्पृथक् | २३३४ |
| अपि साहस्रकारीषवार्मणाथर्वणादिकम् | २३३५ |

५. नानार्थवर्गः ।

| | |
|--|------|
| नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गेष्वेवात्र कीर्तिताः | २३३६ |
| भूरिप्रयोगा ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते | २३३७ |
| आकाशे त्रिदिवे नाको लोकस्तु भुवने जने | २३३८ |

| | |
|---|------|
| पद्मे यशसि च श्लोकः शरै खड्गे च सायकं | २३३९ |
| जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ पृथुकौ चिपिटार्भकौ | २३४० |
| आलोकौ दर्शनद्योतौ भेरीपटहमानकौ | २३४१ |
| उत्सङ्गचिह्नयोरङ्गः कलङ्कोऽङ्गापवादयोः | २३४२ |
| तक्षको नागवर्धक्योरर्कः स्फटिकसूर्ययो. | २३४३ |
| मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि कः कं शिरोऽम्बुनो | २३४४ |
| स्यात्पुलाकस्तुच्छधान्ये संक्षेपे भक्तसिक्थके | २३४५ |
| उल्लूके करिण पुच्छमूलोपान्ते च पेचकः | २३४६ |
| कमण्डलौ च करक सुगते च विनायकः | २३४७ |
| किष्कुर्हस्ते वितस्तौ च शूककीटे च वृश्चिक | २३४८ |
| प्रतिकूले प्रतीकस्त्रिष्वेकदेशे तु पुंस्ययम् | २३४९ |
| स्याद्भूतिकं तु भूनिम्बे कस्तूणे भूस्तृणेऽपि च | २३५० |
| ज्योत्स्निकाया च घोपे च कोशातक्यथ कटूफले | २३५१ |
| सिते च एदिरे सोमवल्क स्यादथ सिंहके | २३५२ |
| तिलकल्के च पिण्याको बाहीक रामठेऽपि च | २३५३ |
| महेन्द्रगुग्गुलूलूकव्यालग्राहिषु कौशिक. | २३५४ |
| रुक्तापशङ्कास्वातङ्गः स्वल्पेऽपि क्षुल्लकस्त्रिषु | २३५५ |
| जैवातृक शशाङ्केऽपि खुरेऽप्यश्वस्य वर्तक. | २३५६ |
| व्याघ्रेऽपि पुण्डरीको ना यवान्यामपि दीपक. | २३५७ |
| शालावृका कपिक्रोष्टुश्चान. स्वर्णेऽपि गैरिकम् | २३५८ |
| पीडार्थेऽपि व्यलीकं स्यादलीकं त्वप्रियेऽनृते | २३५९ |
| शीलान्वयावनूके द्वे श्लके शकलवल्कले | २३६० |

| | |
|---|------|
| साष्टे शते सुवर्णानां हेमयुरोभूषणे पले | २३६१ |
| दीनारेऽपि च निष्कोऽस्त्री कल्कोऽस्त्री शमलैनसोः | २३६२ |
| दम्भेऽप्यथ पिनाकोऽस्त्री शूलशंकरधन्वनोः | २३६३ |
| धेनुका तु करेष्वां च मेघजाले च कालिका | २३६४ |
| कारिका यातनावृत्त्योः कर्णिका कर्णभूषणे | २३६५ |
| करिहस्तेऽङ्गुलौ पद्मबीजकोष्यां त्रिषूत्तरे | २३६६ |
| वृन्दारकौ रूपिमुख्यावेके मुख्यान्यकेवलाः | २३६७ |
| स्यादाम्भिकः कौक्कुटिको यश्चादूरेरितेक्षणः | २३६८ |
| लालाटिकः प्रभोर्भालदर्शी कार्याक्षमश्च यः | २३६९ |
| ‘भूभृन्नितम्बवलयचक्रेषु कटकोऽस्त्रियाम् | *** |
| सूच्यग्रे क्षुद्रशत्रौ च रोमहर्षे च कण्टकः | *** |
| पाकौ पक्तिशिशू मध्यरत्ने नेतरि नायकः | *** |
| पर्यङ्कः स्यात्परिकरे स्याद्व्याघ्रेऽपि च लुब्धकः | *** |
| पेटकस्त्रिषु वृन्देऽपि गुरौ देश्ये च देशिकः | *** |
| खेटकौ ग्रामफलकौ धीवरेऽपि च जालिकः | *** |
| पुष्परेणौ च किञ्जल्कः शुल्कोऽस्त्री स्त्रीधनेऽपि च | *** |
| स्यात्कल्लोलेऽप्युत्कलिका वार्द्धकं भाववृन्दयोः | *** |
| करिण्यां चापि गणिका दारकौ बालभेदकौ | *** |
| अन्धेऽप्यनेडमूकः स्यात् टङ्कौ दर्पाश्मदारणौ’ | *** |
| मयूखस्त्विद्रकरज्वालास्वलिकाणौ शिलीमुखौ | २३७० |
| शङ्खो निधौ ललाटास्त्रिं कम्बौ न स्त्रीन्द्रियेऽपि खम् | २३७१ |
| घृणिज्वाले अपि शिखे शैलवृक्षौ नगावगौ | २३७२ |

| | |
|--|------|
| आशुगौ वायुविशिखौ शरार्कविहगाः खगाः | २३७३ |
| पतङ्गौ पक्षिसूर्यौ च पूगः क्रमुकवृन्दयोः | २३७४ |
| पशवोऽपि मृगा वेगः प्रवाहजवयोरपि | २३७५ |
| परागः कौसुमे रेणौ स्नानीयादौ रजस्यपि | २३७६ |
| गजेऽपि नागमातङ्गावपाङ्गस्तिलकेऽपि च | २३७७ |
| सर्गः स्वभावनिमोक्षनिश्चयाध्यायसृष्टिषु | २३७८ |
| योगः संनहनोपायध्यानसंगतियुक्तिषु | २३७९ |
| भोग. सुखे रुयादिभृतावहेश्च फणकाययोः | २३८० |
| चातके हरिणे पुंसि सारङ्गः शबले त्रिषु | २३८१ |
| कपौ च प्लवग. शापे त्वभिपङ्ग. पराभवे | २३८२ |
| यानाद्यङ्गे युगः पुंसि युगं युग्मे कृतादिषु | २३८३ |
| स्वर्गेऽपुपशुवाग्वज्रदिङ्नेत्रघृणिभूजले | २३८४ |
| लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रिया पुंसि गौर्लिङ्गं चिह्नशेफसोः | २३८५ |
| शृङ्ग प्राधान्यमान्वोश्च वराङ्ग मूर्धगुह्ययोः | २३८६ |
| भगं श्रीकाममाहात्म्यवीर्ययत्नार्ककीर्तिषु | २३८७ |
| परिध. परिधातेऽस्त्रेऽप्योघो वृन्देऽम्भसा रये | २३८८ |
| मूल्ये पूजाविधावर्धोऽहोदु. खव्यसनेष्वधम् | २३८९ |
| त्रिष्विष्टेऽल्पे लघु. काचाः शिष्यमृद्देददृष्टुजः | २३९० |
| विपर्यासे विस्तरे च प्रपञ्चः पावके शुचिः | २३९१ |
| मास्यमात्ये चात्युपधे पुंसि मेध्ये सिते त्रिषु | २३९२ |
| अभिप्वङ्गे स्पृहाया च गभस्तौ च रुचिः स्त्रियाम् | २३९३ |
| ‘ प्रसन्ने भद्रकेऽप्यच्छो गुच्छ. स्तवकहारयोः | *** |

| | |
|--|------|
| परिधानाञ्चले कच्छो जलप्रान्ते त्रिलिङ्गकः* | २३९४ |
| केकिताक्षर्यावहिभुजौ दन्तविप्राण्डजा द्विजाः | २३९५ |
| अजा विष्णुहरच्छागा गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः | २३९६ |
| धर्मराजौ जिनयमौ कुञ्जो दन्तेऽपि न स्त्रियाम् | २३९७ |
| वलजे क्षेत्रपूर्वारे वलजा वल्गुदर्शना | २३९८ |
| समे क्षमांशे रणेऽप्याजिः प्रजा स्यात्संततौ जने | २३९९ |
| अञ्जौ शङ्खशङ्खौ च स्वके नित्ये निजं त्रिषु | २४०० |
| पुंस्यात्मनि प्रवीणे च क्षेत्रज्ञो वाच्यलिङ्गकः | २४०१ |
| संज्ञा स्याच्चेतना नाम हस्ताद्यैश्चार्थसूचना | २४०२ |
| काकेभगण्डौ करटौ गजगण्डकटी कटौ | २४०३ |
| शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे | २४०४ |
| देवशिल्पिन्यपि त्वष्टा दिष्टं दैवेऽपि न द्वयोः | २४०५ |
| रसे कटुः कटुकार्ये त्रिषु मत्सरतीक्ष्णयोः | २४०६ |
| रिष्टं क्षेमाशुभाभावेष्वरिष्टे तु शुभाशुभे | २४०७ |
| मायानिश्चलयन्त्रेषु कैतवानृतराशिषु | २४०८ |
| अयोधने शैलशृङ्गे सीराङ्गे कूटमस्त्रियाम् | २४०९ |
| सूक्ष्मैलायां त्रुटिः स्त्री स्यात्कालेऽल्पे संशयेऽपि सा | २४१० |
| आर्त्युत्कर्षाश्रयः कोट्यो मूले लग्नकचे जटा | २४११ |
| व्युष्टिः फले समृद्धौ च दृष्टिर्ज्ञानेऽक्षिण दर्शने | २४१२ |
| इष्टिर्यागेच्छयोः सृष्टं निश्चिते बहुनि त्रिषु | २४१३ |
| कष्टे तु कृच्छ्रगहने दक्षामन्दागदेषु च | २४१४ |
| पटुर्द्वौ वाच्यलिङ्गौ च नीलकण्ठः शिवेऽपि च | २४१५ |

| | |
|---|------|
| पुंसि कोष्ठोऽन्तर्जठरं कुसूलोऽन्तर्गृहं तथा | २४१५ |
| निष्ठा निष्पत्तिनाशान्ताः काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि | २४१६ |
| त्रिषु ज्येष्ठोऽतिशस्तेऽपि कनिष्ठोऽतियुवाल्पयोः | २४१७ |
| दण्डोऽस्त्री लगुडेऽपि स्याद्गुडो गोलेक्षुपाकयोः | २४१८ |
| सर्पमांसात्पशू व्याडौ गोभूवाचस्त्विडा इलाः | २४१९ |
| क्ष्वेडा वंशशलाकापि नाडी नालेऽपि पटूक्षणे | २४२० |
| काण्डोऽस्त्री दण्डवाणार्धवर्गाधिसरवारिषु | २४२१ |
| स्याद्भाण्डमन्वाभरणेऽमत्रे मूलवणिग्धने | २४२२ |
| भृशप्रतिज्ञयोर्वाढं प्रगाढं भृशकृच्छयोः | २४२३ |
| शक्तस्थूलौ त्रिषु दृढौ व्यूढौ विन्यस्तसंहतौ | २४२४ |
| भ्रूणोऽर्भके खैणगर्भे वाणो वलिसुते शरे | २४२५ |
| कणोऽतिसूक्ष्मे धान्यांशे संघाते प्रमथे गणः | २४२६ |
| पणो द्यूतादिपूत्सृष्टे भृतौ मूल्ये धनेऽपि च | २४२७ |
| मौर्व्या द्रव्याश्रिते सत्वशौर्यसंध्यादिके गुण | २४२८ |
| निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषोत्सवयोः क्षण. | २४२९ |
| वर्णो द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ वर्णं तु वाक्षरे | २४३० |
| अरुणो भास्करेऽपि स्याद्वर्णभेदेऽपि च त्रिषु | २४३१ |
| स्याणुः शर्वेऽप्यथ द्रोण काकेऽप्याजौ रवे रण | २४३२ |
| ग्रामणीर्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु | २४३३ |
| ऊर्णा मेपादिलोम्नि स्यादायर्ते चान्तरा भ्रुवोः | २४३४ |
| हरिणी स्यान्मृगी हेमप्रतिमा हरिता च या | २४३५ |
| त्रिषु पाण्डौ च हरिण. स्थूणा स्तम्भेऽपि वेदमन. | २४३६ |

| | |
|---|------|
| प्रकृतिर्योनिलिङ्गे च कैशिक्याद्याश्च वृत्तयः | २४८० |
| सिकताः स्युर्वालुकापि वेदे श्रवसि च श्रुतिः | २४८१ |
| वनिता जनितात्यर्थानुरागायां च योषिति | २४८२ |
| गुप्तिः क्षितिर्व्युदासेऽपि धृतिर्धारणधैर्ययोः | २४८३ |
| बृहती क्षुद्रवार्ताकी छन्दोभेदे महत्यपि | २४८४ |
| वासिता स्त्रीकरिण्योश्च वार्ता वृत्तौ जनश्रुतौ | २४८५ |
| वार्तं फल्गुन्यरोगे च त्रिष्वप्सु च घृतामृते | २४८६ |
| कलधौतं रूप्यहेम्नोर्निमित्तं हेतुलक्ष्मणोः | २४८७ |
| श्रुतं शास्त्रावधृतयोर्युगपर्याप्तयोः कृतम् | २४८८ |
| अत्याहितं महाभीतिः कर्म जीवानपेक्षि च | २४८९ |
| युक्ते क्षमादावृते भूतं प्राण्यतीते समे त्रिषु | २४९० |
| वृत्तं पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते दृढनिस्तले | २४९१ |
| महद्राज्यं चावगीतं जन्ये स्याद्गर्हिते त्रिषु | २४९२ |
| श्वेतं रूप्येऽपि रजतं हेम्नि रूप्ये सिते त्रिषु | २४९३ |
| त्रिष्वतो जगदिङ्गेऽपि रक्तं नील्यादिरागि च | २४९४ |
| अवदातः सिते पीते शुद्धे वद्भार्जुनौ सितौ | २४९५ |
| युक्तेऽतिसंस्कृते मर्षिण्यभिनीतोऽथ संस्कृतम् | २४९६ |
| कृत्रिमे लक्षणोपेतेऽप्यनन्तोऽनवधावपि | २४९७ |
| ख्याते हृष्टे प्रतीतोऽभिजातस्तु कुलजे बुधे | २४९८ |
| विविक्तौ पूतविजनौ मूर्छितौ मूढसोच्छ्रयौ | २४९९ |
| द्वौ चाम्लपरुषौ शुक्तौ शिती धवलमेचकौ | २५०० |
| सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्तेऽभ्यर्हिते च सत् | २५०१ |

| | |
|--|------|
| पुरस्कृतः पूजितेऽरात्यभियुक्तेऽग्रतः कृते | २५०२ |
| निवातावाश्रयावातौ शस्त्राभेद्यं च वर्म यत् | २५०३ |
| जातोन्नद्धप्रवृद्धाः स्युरुच्छ्रिता उत्थितास्त्वमी | २५०४ |
| वृद्धिमत्सोद्यतोत्पन्ना आदृतौ सादरार्चितौ | २५०५ |
| अर्थोऽभिधेयरैवस्तुप्रयोजननिवृत्तिषु | २५०६ |
| निपानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे जले गुरौ | २५०७ |
| समर्थस्त्रिषु शक्तिस्थे संबद्धार्ये हितेऽपि च | २५०८ |
| दशमीस्थौ क्षीणरागवृद्धौ वीथी पदव्यपि | २५०९ |
| आस्थानीयक्षयोरास्था प्रस्योऽस्त्री सानुमानयो. | २५१० |
| ‘शास्त्रद्रविणयोर्ग्रन्थः संस्थाधारे स्थितौ मृतौ’ | ## |
| अभिप्रायवशौ छन्दावब्दौ जीमूतवत्सरौ | २५११ |
| अपवादौ तु निन्दाज्ञे दायादौ सुतवान्धवौ | २५१२ |
| पादा रश्म्यद्वितुर्याशाश्चन्द्राश्चर्कास्तमोनुदः | २५१३ |
| निर्वादो जनवादेऽपि शादो जम्बालशप्पयो. | २५१४ |
| आरावे रुदिते त्रातर्याक्रन्दो दारुणे रणे | २५१५ |
| स्यात्प्रसादोऽनुरागेऽपि सूदः स्याद्व्यञ्जनेऽपि च | २५१६ |
| गोष्ठाध्यक्षेऽपि गोविन्दो हर्षेऽप्यामोदवन्मद. | २५१७ |
| प्राधान्ये राजलिङ्गे च वृषाङ्गे ककुदोऽस्त्रियाम् | २५१८ |
| स्त्री संविज्ञानसभापाक्रियाकाराजिनामसु | २५१९ |
| धर्मे रहस्युपनिषत्स्यादृतौ वत्सरे शरत् | २५२० |
| पद व्यवसितत्राणस्थानलक्ष्माङ्गिवस्तुषु | २५२१ |
| गोष्पदं सेविते माने प्रतिष्ठाकृत्यमास्पदम् | २५२२ |

| | |
|---|------|
| त्रिष्विष्टमधुरौ स्वादू मृदू चातीक्ष्णकोमलौ | २५२३ |
| मूढाल्पापटु निर्भाग्या मन्दाः स्युर्द्वौ तु शारदौ | २५२४ |
| प्रत्यग्राप्रतिभौ विद्वत्सुप्रगल्भौ विशारदौ | २५२५ |
| व्यामो वटश्च न्यग्रोधावुत्सेधः काय उन्नतिः | २५२६ |
| पर्याहारश्च मार्गश्च विवधौ वीवधौ च तौ | २५२७ |
| परिधिर्यज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्यके | २५२८ |
| बन्धकं व्यसनं चेतःपीडाधिष्ठानमाधयः | २५२९ |
| स्युः समर्थननीवाकनियमाश्च समाधयः | २५३० |
| दोषोत्पादेऽनुबन्धः स्यात्प्रकृत्यादिविनश्वरे | २५३१ |
| मुख्यानुयार्थिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने | २५३२ |
| विधुर्विष्णौ चन्द्रमसि परिच्छेदे विलेऽवधिः | २५३३ |
| विधिर्विधाने दैवेऽपि प्रणिधिः प्रार्थने चरे | २५३४ |
| बुधवृद्धौ पण्डितेऽपि स्कन्धः समुदयेऽपि च | २५३५ |
| देशे नदविशेषेऽन्धौ सिन्धुर्ना सरिति स्त्रियाम् | २५३६ |
| विधा विधौ प्रकारे च साधू रम्येऽपि च त्रिषु | २५३७ |
| वधूर्जाया स्नुषा स्त्री च सुधा लेपोऽमृतं स्नुही | २५३८ |
| संधा प्रतिज्ञा मर्यादा श्रद्धा संप्रत्ययः स्पृहा | २५३९ |
| मधु मद्ये पुष्परसे क्षौद्रेऽप्यन्धं तमस्यपि | २५४० |
| अतस्त्रिषु समुन्नद्धौ पण्डितं मन्यगर्वितौ | २५४१ |
| ब्रह्मबन्धुरधिक्षेपे निर्देशेऽथावलम्बितः | २५४२ |
| अविदूरोऽप्यवष्टब्धः प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ | २५४३ |
| सूर्यवह्नी चित्रभानू भानू रश्मिदिवाकरौ | २५४४ |

| | |
|--|------|
| भृतात्मानौ धातुदेहौ मूर्खनीचौ पृथग्जनौ | २५४५ |
| ग्रावाणौ शैलपापाणौ पत्रिणौ शरपक्षिणौ | २५४६ |
| तरुशैलौ शिखरिणौ शिखिनौ वह्निबर्हिणौ | २५४७ |
| प्रतियक्षावुभौ लिप्सोपग्रहावथ सादिनौ | २५४८ |
| द्वौ सारथिहयारोहौ वाजिनोऽश्वेषुपक्षिणः | २५४९ |
| कुलेऽप्यभिजनो जन्मभूम्यामप्यथ हायनाः | २५५० |
| वर्षार्चिर्व्रीहिभेदाश्च चन्द्राग्न्यर्का विरोचनाः | २५५१ |
| क्लेशोऽपि वृजिनो विश्वकर्माकसुरशिल्पिनो | २५५२ |
| आत्मा यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्म वर्ष्म च | २५५३ |
| शक्रो धातुकमत्तेभो वर्षुकाब्दो घनायन | २५५४ |
| घनो मेघे मूर्तिगुणे त्रिषु मूर्ते निरन्तरे | २५५५ |
| अभिमानोऽर्थादिदर्पे ज्ञाने प्रणयहिसयो | २५५६ |
| इनः सूर्ये प्रभौ राजा मृगाङ्गे क्षत्रिये नृपे | २५५७ |
| वाणिन्यौ नर्तकीदूतौ स्रवन्त्यामपि वाहिनी | २५५८ |
| हादिन्यौ वज्रतडितौ वन्दायामपि कामिनी | २५५९ |
| त्वग्देहयोरपि तनुः सूनाधोजिह्विकापि च | २५६० |
| ऋतुविस्तारयोरस्त्री वितानं त्रिषु तुच्छके | २५६१ |
| मन्देऽथ केतनं कृत्ये केतावुपनिमन्त्रणे | २५६२ |
| वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म ब्रह्मा विप्रः प्रजापतिः | २५६३ |
| उत्साहने च हिंसायां सूचने चापि गन्धनम् | २५६४ |
| आतञ्जनं प्रतीवापजवनाप्यायनार्थकम् | २५६५ |
| व्यञ्जनं लाञ्छन इमंश्रुनिष्ठानात्रयवेष्वपि | २५६६ |

| | |
|--|------|
| स्यात्कौलीनं लोकवादे युद्धे पश्वहिपक्षिणाम् | २५६७ |
| स्यादुद्यानं निःसरणे वनभेदे प्रयोजने | २५६८ |
| अवकाशे स्थितौ स्थानं क्रीडादावपि देवनम् | २५६९ |
| उत्थानं पौरुषे तन्त्रे संनिविष्टोद्गमेऽपि च | २५७० |
| व्युत्थानं प्रतिरोधे च विरोधाचरणेऽपि च | २५७१ |
| मारणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्योऽर्थदापने | २५७२ |
| निर्वर्तनोपकरणानुव्रज्यासु च साधनम् | २५७३ |
| निर्यातनं वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च | २५७४ |
| व्यसनं विपदि भ्रंशे दोषे कामजकोपजे | २५७५ |
| पक्षमाक्षिलोन्नि किंजल्के तन्त्राद्यंशेऽप्यणीयसि | २५७६ |
| तिथिभेदे क्षणे पर्व वर्त्म नेत्रच्छदेऽध्वनि | २५७७ |
| अकार्यगुह्ये कौपीनं मैथुनं संगतौ रते | २५७८ |
| प्रधानं परमात्मा धीः प्रज्ञानं बुद्धिचिह्नयोः | २५७९ |
| प्रसूनं पुष्पफलयोर्निधनं कुलनाशयोः | २५८० |
| क्रन्दने रोदनाह्वाने वर्ष्म देहप्रमाणयोः | २५८१ |
| गृहदेहत्विद्प्रभावा धामान्यथ चतुष्पथे | २५८२ |
| संनिवेशे च संस्थानं लक्ष्म चिह्नप्रधानयोः | २५८३ |
| आच्छादने संपिधानमपवारणमित्युभे | २५८४ |
| आराधनं साधने स्यादवाप्तौ तोषणेऽपि च | २५८५ |
| अधिष्ठानं चक्रपुरप्रभावाध्यासनेष्वपि | २५८६ |
| रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि वने सलिलकानने | २५८७ |
| तलिनं विरले स्तोके वाच्यलिङ्गं तथोत्तरे | २५८८ |

| | |
|---|------|
| समानाः सत्समैके स्युः पिशुनौ खलसूचकौ | २५८९ |
| हीनन्यूनादूनगर्ह्यां वेगिशूरी तरस्विनी | २५९० |
| अभिपन्नोऽपराद्धोऽभिग्रस्तव्यापद्गतावपि | २५९१ |
| कलापो भूषणे वर्हे तूणीरे संहतावपि | २५९२ |
| परिच्छदे परीवापः पर्युप्तौ सलिलस्थितौ | २५९३ |
| गोधुग्गोष्ठपती गोपौ हरविष्णू वृषाकपी | २५९४ |
| वाष्पमूमाश्रु कशिपु त्वन्नमाच्छादनं द्वयम् | २५९५ |
| तत्पं शय्याद्वदारेषु स्तम्बेऽपि विटपोऽस्त्रियाम् | २५९६ |
| प्राप्तरूपस्वरूपाभिरूपा बुधमनोजयोः | २५९७ |
| भेद्यलिङ्गा अमी कूर्मी वीणाभेदश्च कच्छपी | २५९८ |
| ‘कुतपो मृगरोमोत्थपटे चाहोऽष्टमंऽशके’ | *** |
| रवर्णे पुंसि रेफः स्यात्कुत्मिते वाच्यलिङ्गरुः | २५९९ |
| अन्तराभवसत्त्वेऽश्वे गन्धर्वो दिव्यगायने | २६०० |
| कम्बुर्ना वलये शङ्खे द्विजिह्वौ सर्पसूचकौ | २६०१ |
| पूर्वोऽन्यलिङ्गः प्रागाह पुबहुत्वेऽपि पूर्वजान् | २६०२ |
| कुम्भौ घटेभमूर्धाग्रौ डिम्भौ तु शिशुवालिङ्गौ | २६०३ |
| स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ शंभू ब्रह्मत्रिलोचनौ | २६०४ |
| कुक्षिभ्रूणार्भका गर्भा विस्रम्भः प्रणयेऽपि च | २६०५ |
| स्याद्भेद्यौ दुन्दुभिः पुंसि स्यादक्षे दुन्दुभिः स्त्रियाम् | २६०६ |
| स्यान्महारजने क्लीब कुसुम्भं करके पुमान् | २६०७ |
| क्षत्रियेऽपि च नाभिर्ना सुरभिर्गणि च स्त्रियाम् | २६०८ |
| सभा संसदि सभ्ये च त्रिष्वध्यक्षेऽपि वल्लभ | २६०९ |

| | |
|--|------|
| किरणप्रग्रहौ रश्मी कपिभेकौ प्लवंगमौ | २६१० |
| इच्छामनोभवौ कामौ शौर्योद्योगौ पराक्रमौ | २६११ |
| धर्माः पुण्ययमन्यायस्वभावाचारसोमपाः | २६१२ |
| उपायपूर्व आरम्भ उपधा चाप्युपक्रमः | २६१३ |
| वणिक्पथः पुरं वेदो निगमो नागरो वणिक् | २६१४ |
| नैगमौ द्वौ बले रामो नीलचारुसिते त्रिषु | २६१५ |
| शब्दादिपूर्वो वृन्देऽपि ग्रामः क्रान्तौ च विक्रमः | २६१६ |
| स्तोमः स्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे जिह्वास्तु कुटिलेऽलसे | २६१७ |
| उष्णेऽपि घर्मश्चेष्टालंकारे भ्रान्तौ च विभ्रमः | २६१८ |
| गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः | २६१९ |
| क्षितिक्षान्त्योः क्षमा युक्ते क्षमं शक्ते हिते त्रिषु | २६२० |
| त्रिषु श्यामौ हरितकृष्णौ श्यामा स्याच्छारिवा निशा | २६२१ |
| ललामं पुच्छपुण्ड्राश्वभूपाप्राधान्यकेतुषु | २६२२ |
| सूक्ष्ममध्यात्ममप्याद्ये प्रधाने प्रथमस्त्रिषु | २६२३ |
| वामौ वल्गुप्रतीपौ द्वावधमौ न्यूनकूत्सितौ | २६२४ |
| जीर्णं च परिभुक्तं च यातयाममिदं द्वयम् | २६२५ |
| तुरंगगरुडौ ताक्ष्यौ निलयापचयौ क्षयौ | २६२६ |
| श्वशुर्यौ देवरश्यालौ भ्रातृव्यौ भ्रातृजद्विषौ | २६२७ |
| पर्जन्यौ रसदब्देन्द्रौ स्यादर्यः स्वामिवैश्ययोः | २६२८ |
| तिष्यः पुष्ये कलियुगे पर्यायोऽवसरे क्रमे | २६२९ |
| प्रत्ययोऽधीनशपथज्ञानविश्वासहेतुषु | २६३० |
| रन्ध्रे शब्देऽथानुशयो दीर्घद्वेषानुतापयोः | २६३१ |

| | |
|--|------|
| स्थूलोच्चयस्त्वमाकल्ये नागानां मध्यमे गते | २६३२ |
| समयाः शपथाचारकालमिद्धान्तसंविदः | २६३३ |
| व्यसनान्यशुभं दैवं विपदित्यनयास्त्रयः | २६३४ |
| अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे दोषे दण्डेऽप्यथापदि | २६३५ |
| युद्धायत्योः संपरायः पूज्यस्तु श्वशुरेऽपि च | २६३६ |
| पश्चादवस्थायि बलं समवायश्च संनयौ | २६३७ |
| सघाते संनिवेशे च संस्त्यायः प्रणयास्त्वमी | २६३८ |
| विघ्नम्भयाच्चाप्रेमाणो विरोधेऽपि समुच्छ्रयः | २६३९ |
| विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि | २६४० |
| निर्यासेऽपि कषायोऽस्त्री सभाया च प्रतिश्रयः | २६४१ |
| प्रायो भूभ्यन्तगमने मन्युदैर्न्ये क्रतौ क्रुधि | २६४२ |
| रहस्योपस्थयोर्गुह्यं सत्यं शपथतथ्ययोः | २६४३ |
| वीर्यं बले प्रभावे च द्रव्यं भव्ये गुणाश्रये | २६४४ |
| धिष्ण्यं स्थाने गृहे भेऽग्नौ भाग्यं कर्म शुभाशुभम् | २६४५ |
| कशेरुहेन्द्रोर्गाङ्गेयं विगल्या दन्तिकापि च | २६४६ |
| वृषाकपायी श्रीगौर्योरभिख्या नामशोभयोः | २६४७ |
| आरम्भो निष्कृतिः शिक्षा पूजन सप्रधारणम् | २६४८ |
| उपायः कर्म चेष्टा च चिकित्सा च नव क्रियाः | २६४९ |
| छाया सूर्यप्रिया कान्तिः प्रतिविम्बमनातपः | २६५० |
| कक्ष्या प्रकोष्ठे हर्म्यादेः काञ्चया मध्येभवन्धने | २६५१ |
| कृत्या क्रियादेवतयोस्त्रिषु भेदे धनादिभिः | २६५२ |
| जन्यं स्याज्जनवादेऽपि जघन्योऽन्त्येऽधमेऽपि च | २६५३ |

| | |
|--|------|
| अजिरं विषये कायेऽप्यम्बरं व्योम्नि वाससि | २६९८ |
| चक्रं राष्ट्रेऽप्यक्षरं तु मोक्षेऽपि क्षीरमप्सु च | २६९९ |
| स्वर्णेऽपि भूरिचन्द्रौ द्वौ द्वारमात्रेऽपि गोपुरम् | २७०० |
| गुहादम्भौ गह्वरे द्वे रहोऽन्तिकमुपह्वरे | २७०१ |
| पुरोऽधिकमुपर्यग्राण्यगारे नगरे पुरम् | २७०२ |
| मन्दिरं चाथ राष्ट्रोऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे | २७०३ |
| दरोऽस्त्रियां भये श्वभ्रे वज्रोऽस्त्री हीरके पवौ | २७०४ |
| तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छदे | २७०५ |
| औशीरश्चामरे दण्डेऽप्यौशीरं शयनासने | २७०६ |
| पुष्करं करिहस्ताग्रे वाद्यभाण्डमुखे जले | २७०७ |
| व्योम्नि खड्गफले पद्मे तीर्थौपधिविशेषयोः | २७०८ |
| अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्तर्धिभेदतादर्थ्ये | २७०९ |
| छिद्रात्मीयविनावहिरवसरमध्येऽन्तरात्मनि च | २७१० |
| मुस्तेऽपि पिठरं राजकशेरुण्यपि नागरम् | २७११ |
| शार्वरं त्वन्धतमसे घातुके भेद्यलिङ्गकम् | २७१२ |
| गौरोऽरुणे सिते पीते व्रणकार्यप्यरुष्करः | २७१३ |
| कठिनेऽपि स्यादधस्तादपि चाधरः | २७१४ |
| चैकाग्रो व्यग्रो व्यासक्त आकुले | २७१५ |
| स्यादनुत्तरः | २७१६ |
| विपर्यये श्रेष्ठे दूरानात्मोत्तमाः पराः | २७१७ |
| स्वादुप्रियौ तु मधुरौ क्रूरौ कठिननिर्दयौ | २७१८ |
| दातृमहतोरितरस्त्वन्यनीचयोः | २७१९ |

| | |
|--|------|
| मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरः शुभ्रमुद्दीप्तशुक्लयोः | २७२० |
| चूडा किरीटं केशाश्च संयता मौलयस्त्रयः | २७२१ |
| द्रुमप्रभेदमातङ्गकाण्डपुष्पाणि पीलवः | २७२२ |
| कृतान्तानेहसोः कालश्चतुर्येऽपि युगे कलिः | २७२३ |
| स्यात्कुरङ्गेऽपि कमलः प्रावारेऽपि च कम्बलः | २७२४ |
| करोपहारयोः पुंसि वलिः प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम् | २७२५ |
| स्थाल्यसामर्थ्यसैन्येषु बल ना काकसीरिणोः | २७२६ |
| वातूलः पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु | २७२७ |
| भेद्यलिङ्गः शठे व्यालः पुंसि श्वापदसर्पयोः | २७२८ |
| मलोऽस्त्री पापविद्किट्टान्यस्त्री शूलं रुगायुधम् | २७२९ |
| शङ्कावपि द्वयोः कीलः पालिः रुच्यश्चङ्कपङ्क्तिषु | २७३० |
| कला शिल्पे कालभेदेऽप्याली सख्यापली अपि | २७३१ |
| अन्ध्यन्धुत्रिकृतां वेला कालमर्यादयोरपि | २७३२ |
| बहुलाः कृत्तिका गावो बहुलोऽग्नौ गितां त्रिषु | २७३३ |
| लीला त्रिलासक्रिययोरपला शर्करापि च | २७३४ |
| शोणितेऽम्भसि कीलालं मूलमाद्ये शिफाभयो | २७३५ |
| जालं समूह आनायगत्राक्षक्षारकेष्वपि | २७३६ |
| शील स्वभावे सद्वृत्ते सस्ये हेतुकृते फलम् | २७३७ |
| छदिर्नेत्ररजोः क्लीवं समूहे पटल न ना | २७३८ |
| अथ स्वरूपयोरस्त्री तलं स्याच्चाभिषे पलम् | २७३९ |
| और्ध्वानलेऽपि पाताल चलं रस्त्रेऽधमे त्रिषु | २७४० |
| कुक्कूलं शत्रुभिः कीर्णे श्वश्रे ना तु तुषानले | २७४१ |

| | |
|---|------|
| निर्णीते केवलमिति त्रिलिङ्गं त्वेककृत्स्नयोः | २७४२ |
| पर्याप्तिक्षेमपुण्येषु कुशलं शिक्षिते त्रिषु | २७४३ |
| प्रवालमङ्कुरेऽप्यस्त्री त्रिषु स्थूलं जडेऽपि च | २७४४ |
| करालो दन्तुरे तुङ्गे चारौ दक्षे च पेशलः | २७४५ |
| मूर्खेऽर्भकेऽपि वालः स्याल्लोलश्चलसतृष्णयोः | २७४६ |
| दवदावौ वनारण्यवह्नी जन्महरौ भवौ | २७४७ |
| मन्त्री सहायः सचिवौ पतिशाखिनरा धवाः | २७४८ |
| अवयः शैलमेपार्का आज्ञाह्वानाध्वरा हवाः | २७४९ |
| भावः सत्तास्वभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु | २७५० |
| स्यादुत्पादे फले पुण्ये प्रसवो गर्भमोचने | २७५१ |
| अविश्वासेऽपह्ववेऽपि निकृतावपि निह्ववः | २७५२ |
| उत्सेकामर्षयोरिच्छाप्रसरे मह उत्सवः | २७५३ |
| अनुभावः प्रभावे च सतां च मतिनिश्चये | २७५४ |
| स्याज्जन्महेतुः प्रभवः स्थानं चाद्योपलब्धये | २७५५ |
| शूद्रायां विप्रतनये शस्त्रे पारशवो मतः | २७५६ |
| ध्रुवो भभेदे क्लीबं तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु | २७५७ |
| स्वो ज्ञातावात्मनि स्वं त्रिष्वात्मीये स्वोऽस्त्रियां धने | २७५८ |
| स्त्रीकटीवस्त्रवन्धेऽपि नीवी परिपणेऽपि च | २७५९ |
| शिवा गौरीफेरवयोर्द्वन्द्वं कलहयुग्मयोः | २७६० |
| द्रव्यासुव्यवसायेषु सत्त्वमस्त्री तु जन्तुषु | २७६१ |
| क्लीबं नपुंसकं पण्डे वाच्यलिङ्गमविक्रमे | २७६२ |
| द्वौ विशौ वैश्यमनुजौ द्वौ चराभिमरौ स्पशौ | २७६३ |

| | |
|--|------|
| द्वौ राशी पुञ्जमेपाद्यौ द्वौ वंशौ कुलमस्करो | २७६४ |
| रहःप्रकाशौ वीकाशौ निर्वेशो भृतिभोगयो. | २७६५ |
| कृतान्ते पुंसि कीनाश. क्षुद्रकर्षकयोस्त्रिषु | २७६६ |
| पदे लक्ष्ये निमित्तेऽपदेगः स्यात्कुशमप्सु च | २७६७ |
| दशावस्थानेकविधाप्याशा तृष्णापि चायता | २७६८ |
| वशा स्त्री करिणी च स्याद्दृग्ज्ञाने ज्ञातरि त्रिषु | २७६९ |
| स्यात्कर्कशः साहसिकः कठोरामसृणावपि | २७७० |
| प्रकाशोऽतिप्रमिद्धेऽपि शिशावज्ञे च बालिग | २७७१ |
| कोशोऽस्त्री कुड्मले खड्गपिधानेऽर्थार्थदिव्ययो | २७७२ |
| सुरमत्स्यावनिमिषौ पुरुषावात्ममानवौ | २७७३ |
| काकमत्स्यात्खगौ ध्याद्द्वौ कक्षौ तु तृणवीरुधौ | २७७४ |
| अभीषु. 'प्रग्रहे रश्मौ ग्रैप' प्रेपणमर्दने | २७७५ |
| पक्षः सहायेऽप्युष्णीष शिरोवेष्टकिरीटयोः | २७७६ |
| शुक्ले मूपिके श्रेष्ठे सुकृते वृषभे वृषः | २७७७ |
| द्युतेऽक्षे शारिफलकेऽप्याकर्षोऽधाक्षमिन्द्रिये | २७७८ |
| ना द्यूताङ्गे कर्षचक्रे व्यवहारे कलिद्रुमे | २७७९ |
| कर्षूर्वाति करीपान्नि. कर्षु कुल्याभिधायिनी | २७८० |
| पुभावे तत्क्रियाया च पौरुषं विपमप्सु च | २७८१ |
| उपादानेऽप्यामिषं स्यादपराधेऽपि किल्विपम् | २७८२ |
| स्याद्दृष्टौ लोकधात्वञ्चो वत्सरे वर्षमस्त्रियाम् | २७८३ |
| प्रेक्षा नृत्येक्षण प्रज्ञा भिक्षा सेवार्थना भृति. | २७८४ |
| त्विद् शोभापि त्रिषु परे न्यक्षं कात्स्न्यनिकृष्टयो. | २७८५ |

| | |
|--|------|
| प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षो रूक्षस्त्वप्रेम्ण्यचिक्कणे | २७८६ |
| रविश्वेतच्छदौ हंसौ सूर्यवह्नी विभावसू | २७८७ |
| वत्सौ तर्णकवर्षौ द्वौ सारङ्गाश्च दिवौकसः | २७८८ |
| शृङ्गारादौ विपे वीर्ये गुणे रागे द्रवे रसः | २७८९ |
| पुंस्युत्तंसावतंसौ द्वौ कर्णपूरे च शेखरे | २७९० |
| देवभेदेऽनले रश्मौ वसू रत्ने धने वसु | २७९१ |
| विष्णौ च वेधाः स्त्री त्वाशीर्हिताशंसाहिदंष्ट्रयोः | २७९२ |
| लालसे प्रार्थनौत्सुक्ये हिंसा चौर्यादिकर्म च | २७९३ |
| प्रसूरश्वापि भूद्यावौ रोदस्यौ रोदसी च ते | २७९४ |
| ज्वालाभासौ न पुंस्यर्चिर्ज्योतिर्भद्योतदृष्टिषु | २७९५ |
| पापापराधयोरागः खगवाल्यादिनोर्वचः | २७९६ |
| तेजःपुरीषयोर्वर्चो महस्तूत्सवतेजसोः | २७९७ |
| रजो गुणे च स्त्रीपुष्पे राहौ ध्वान्ते गुणे तमः | २७९८ |
| छन्दः पद्येऽभिलाषे च तपः कृच्छ्रादिकर्म च | २७९९ |
| सहो बलं सहा मार्गो नभः खं श्रावणो नभाः | २८०० |
| ओकः सङ्गाश्रयश्चौकाः पयः क्षीरं पयोऽम्बु च | २८०१ |
| ओजो दीप्तौ बले स्रोत इन्द्रिये निम्नगारये | २८०२ |
| तेजः प्रभावे दीप्तौ च बले शुक्लेऽप्यतस्त्रिषु | २८०३ |
| विद्वान्विदंश्च वीभत्सो हिंस्रोऽप्यतिशये त्वमी | २८०४ |
| वृद्धप्रशस्ययोज्यायान्कनीयास्तु युवाल्पयोः | २८०५ |
| वरीयांस्तूरुवरयोः साधीयान्साधुबाढयोः | २८०६ |
| दलेऽपि बर्हं निर्वन्धोपरागाकर्कादयो ग्रहाः | २८०७ |

| | |
|---|------|
| द्वार्यापीडे काथरसे निर्व्यूहो नागदन्तके | २८०८ |
| तुलासूत्रेऽश्वादिरश्मौ प्रग्राहः प्रग्रहोऽपि च | २८०९ |
| पत्नीपरिजनादानमूलश्रापाः परिग्रहाः | २८१० |
| दारेषु च गृहाः श्रोण्यामप्यारोहो वरस्त्रियाः | २८११ |
| व्यूहो वृन्देऽप्यहिर्वृत्रेऽप्यग्नीन्द्रकास्तमोपहाः | २८१२ |
| परिच्छदे नृपार्हेऽयं परिवर्होऽव्ययाः परे | २८१३ |
| आडीपदयेऽभिव्याप्तौ सीमार्थे धातुयोगजे | २८१४ |
| आ प्रगृह्य. स्मृतौ वाक्येऽप्यास्तु स्यात्कोपपीडयोः | २८१५ |
| पापकुत्सेपदये कु धिद् निर्भर्त्सननिन्दयोः | २८१६ |
| चान्याचयसमाहारेतरेतरसमुच्चये | २८१७ |
| स्वस्त्याशी क्षेमपुण्यादौ प्रकर्षे लङ्घनेऽप्यति | २८१८ |
| स्वित्प्रश्ने च वितर्के च तु स्याद्देऽवधारणे | २८१९ |
| सकृत्सहैकवारं चाप्याराहूरसमीपयोः | २८२० |
| प्रतीच्या चरमे पश्चादुताप्यर्थविकल्पयोः | २८२१ |
| पुन महार्थयोः शश्वत्साक्षात्प्रत्यक्षतुल्ययोः | २८२२ |
| खेदानुकम्पामतोपयिस्मयामन्त्रणे वत | २८२३ |
| हन्त हर्षेऽनुकम्पाया वाक्यारम्भविपादयोः | २८२४ |
| प्रति प्रतिनिधौ वीप्सालक्षणादौ प्रयोगतः | २८२५ |
| इति हेतुप्रकरणप्रकाशादिसमाप्तिषु | २८२६ |
| प्रान्यां पुरस्तात्प्रथमे पुरार्थेऽग्रत इत्यपि | २८२७ |
| यावत्तावच्च साकल्येऽर्थो मानेऽवधारणे | २८२८ |
| मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकात्स्न्येऽप्यर्थो अथ | २८२९ |

| | |
|--|------|
| प्राकाश्ये प्रादुराविः स्यादोमेवं परमं मते | २८७३ |
| समन्ततस्तु परितः सर्वतो विष्वगित्यपि | २८७४ |
| अकामानुमतौ काममसूयोपगमेऽस्तु च | २८७५ |
| ननु च स्याद्विरोधोक्तौ कञ्चित्कामप्रवेदने | २८७६ |
| निःपमं दुःपमं गर्ह्यं यथास्वं तु यथायथम् | २८७७ |
| मृषा मिथ्या च वितथे यथार्थं तु यथातथम् | २८७८ |
| स्युरेवं तु पुनर्वै वेत्यवधारणवाचकाः | २८७९ |
| प्रागतीतार्थकं नूनमवश्यं निश्चये द्वयम् | २८८० |
| संवद्वर्पेऽवरे त्वर्वागामेवं स्वयमात्मना | २८८१ |
| अल्पे नीचैर्महत्युच्चैः प्रायो भूभ्यद्रुते शनैः | २८८२ |
| सना नित्ये बहिर्वाह्ये स्मातीतेऽस्तमदर्शने | २८८३ |
| अस्ति सत्त्वे रुपोक्तावु ऊं प्रश्नेऽनुनये त्वयि | २८८४ |
| हुं तर्के स्यादुपा रात्रेरवसाने नमो नतौ | २८८५ |
| पुनरर्थेऽङ्ग निन्दायां दुष्टु सुष्टु प्रशंसने | २८८६ |
| सायं साये प्रगे प्रातः प्रभाते निकपान्तिके | २८८७ |
| परुत्परार्यैपमोऽब्दे पूर्वं पूर्वतरे यति | २८८८ |
| अद्यात्राह यथ पूर्वेऽह्नीत्यादौ पूर्वोत्तरापरात् | २८८९ |
| तथाधरान्यान्यतरतरात्पूर्वेद्युरादयः | २८९० |
| उभयद्युश्चोभयेद्युः परे त्वहिं परेद्यवि | २८९१ |
| ह्यो गते नागतेऽहिं श्वः परश्वस्तु परेऽहनि | २८९२ |
| तदा तदानीं युगपदेकदा सर्वदा सदा | २८९३ |
| एतर्हि संप्रतीदानीमधुना सांप्रतं तथा | २८९४ |

| | |
|--|------|
| दिग्देशकाले पूर्वार्द्धे प्रागुदक्प्रत्यगादयः | २८९५ |
| ७ लिङ्गादिसग्रहवर्ग । | |
| सलिङ्गशास्त्रैः सन्नादिकृत्तद्धितसमासजैः | २८९६ |
| अनुक्तैः संग्रहे लिङ्गं सकीर्णवदिहोन्नयेत् | २८९७ |
| लिङ्गोपविधिव्यापी विशेषैर्यद्यवाधितः | २८९८ |
| स्त्रियामीदूद्विरामैकाक्षस्योनिप्राणिनाम च | २८९९ |
| नाम विद्युन्निशाग्रह्रीवीणादिग्भूनदीप्त्रियाम् | २९०० |
| अदन्तैर्द्विगुरेकार्थो न स पात्रयुगादिभिः | २९०१ |
| तत्त्वन्दे ये तिकथ्यत्रा वैरमैथुनिकादिवुन् | २९०२ |
| स्त्रीभावादावनिक्तिण्वुत्तण्चण्वुक्क्यं व्युजिज्जिङ्गा | २९०३ |
| उणादिषु निरूरीश्च ड्यावूडन्तं चलं स्थिरम् | २९०४ |
| तत्कीडाया प्रहरणं चेन्मौष्टा पाह्वाण दिक् | २९०५ |
| घञो जः सा क्रियास्या चेद्वाण्डपाता हि फाल्गुनी | २९०६ |
| द्वयैवपाता च मृगया तैलपाता स्वधेति दिक् | २९०७ |
| स्त्री स्यात्काचिन्मृणाल्यादिविवक्षापचये यदि | २९०८ |
| लङ्का शेफालिका टीका धातकी पञ्जिकादकी | २९०९ |
| सिध्दका सारिका हिका प्राचिकोल्का पिपीलिका | २९१० |
| तिन्दुकी कणिका भङ्गिः सुरङ्गासूचिमाढ्य | २९११ |
| पिच्छावितण्डाकाकिण्यश्चूर्णिः शाणी द्रुणी ढरत् | २९१२ |
| सातिः कन्धा तथाऽसन्दी नाभी राजसभापि च | २९१३ |
| झलरी चर्चरी पारी होरा लट्वा च सिध्मला | २९१४ |
| लाक्षा लिक्षा च गण्डूपा गृध्रमी चममी मसी | २९१५ |

| | |
|--|------|
| पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः | २९१६ |
| स्वर्गयागाद्रिभेधाब्धिद्रुकालासिशरारयः | २९१७ |
| करगण्डोष्ठदोर्दन्तकण्ठकेशनखस्तनाः | २९१८ |
| अह्नाहान्ताः क्ष्वेडभेदा रात्रान्ताः प्रागसंख्यकाः | २९१९ |
| श्रीवेष्टाद्याश्च निर्यासा असन्नन्ता अवाधिताः | २९२० |
| कशेरुजतुवस्तूनि हित्वा तुरुविरामकाः | २९२१ |
| कपणभमरोपान्ता यद्यदन्ता अमी अथ | २९२२ |
| पथनयसदोपान्ता गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः | २९२३ |
| नाम्यकर्तरि भावे च घञजन्तङ्गघाथुचः | २९२४ |
| ल्युः कर्तरीमनिज्भावे कौ घोः किः प्रादितोऽन्यतः | २९२५ |
| इन्द्वेऽश्ववडवावश्ववडवा न समाहृते | २९२६ |
| कान्तः सूर्येन्दुपर्यायपूर्वोऽयः पूर्वकोऽपि च | २९२७ |
| वटकश्चानुवाकश्च रलकश्च कुडङ्गकः | २९२८ |
| पुङ्खो न्यूङ्खः समुद्रश्च विटपट्टधटाः खटाः | २९२९ |
| कोट्टारघट्टहट्टाश्च पिण्डगोण्डपिचण्डवत् | २९३० |
| गडुः करण्डो लगुडो वरण्डश्च किणो घुणः | २९३१ |
| दृत्तिसीमन्तहरितो रोमन्थोद्गीथबुद्बुदाः | २९३२ |
| कासमर्दोऽर्बुदः कुन्दः फेनस्तूपौ सयूपकौ | २९३३ |
| आतपः क्षत्रिये नाभिः कुणपक्षुरकेदराः | २९३४ |
| पूरक्षुरप्रचुकाश्च गोलहिङ्गुलपुङ्गलाः | २९३५ |
| वेतालभल्लमल्लाश्च पुरोडाशोऽपि पट्टिशः | २९३६ |
| कुल्मापो रभसश्चैव सकटाहः पतङ्गहः | २९३७ |

| | |
|--|------|
| द्विहीनेऽन्यच्च खारण्यपर्णश्वभ्रहिमोदकम् | २९३८ |
| शीतोष्णमासरुधिरमुखाक्षिद्रविणं वलम् | २९३९ |
| फलहेमशुल्वलोहसुखदुःखशुभाशुभम् | २९४० |
| जलपुष्पाणि लवणं व्यञ्जनान्यनुलेपनम् | २९४१ |
| कोट्याः शतादिसख्यान्या वा लक्षा नियुतं च तत् | २९४२ |
| द्व्यचक्रमसिसुसन्नन्तं यदनान्तमकर्तरि | २९४३ |
| त्रान्तं सलोपधं शिष्टं रात्रं प्राक्संख्ययान्वितम् | २९४४ |
| पात्राद्यदन्तैरेकार्थो द्विगुलक्ष्यानुसारतः | २९४५ |
| द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभार्चो पथः संख्याव्ययात्परः | २९४६ |
| पष्ठयाश्छाया बहूना चेद्विच्छाय संहतौ सभा | २९४७ |
| शालार्थापि परा राजामनुप्यार्थादराजकात् | २९४८ |
| दासीसभं नृपसभं रक्षःसभमिमा दिशः | २९४९ |
| उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्रकाशने | २९५० |
| कोपज्ञकोपक्रमादि कन्थोऽनीनरनामसु | २९५१ |
| भाये नणकचिद्भ्योऽन्ये समूहे भावकर्मणो | २९५२ |
| अदन्तप्रत्ययाः पुण्यसुदिनाभ्या त्यहः पर | २९५३ |
| क्रियाव्ययाना भेदकान्येकत्वेऽप्युक्त्वतोदके | २९५४ |
| चोचं पिच्छ गृहस्थूणं तिरीट मर्मयोजनम् | २९५५ |
| राजसूय वाजपेय गद्यपद्ये कृतां कपे | २९५६ |
| माणिक्यभाष्यसिन्दूरचीरचीउरपिञ्जरम् | २९५७ |
| लोकायतं हरितालं त्रिदलस्थालवाहिकम् | २९५८ |
| पुनपुनकयो शेषोऽर्धर्चपिण्याऋण्डका | २९५९ |

| | |
|---|------|
| मोदकस्तण्डकपटङ्कः शाटकः कर्पटोऽर्बुदः | २९६० |
| पातकोद्योगचरकतमालामलका नडः | २९६१ |
| कुष्ठं मुण्डं शीधु वुस्तं क्ष्वेडितं क्षेमकुट्टिमम् | २९६२ |
| संगमं शतमानामशम्बलाव्ययताण्डवम् | २९६३ |
| कवियं कन्दकार्पासं पारावारं युगंधरम् | २९६४ |
| यूपं प्रग्रीवपात्रीवे यूपं चमसचिकसौ | २९६५ |
| अर्धर्चादौ घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं ध्रुवम् | २९६६ |
| तन्नोक्तमिह लोकेऽपि तच्चेदस्त्यस्तु शेषवत् | २९६७ |
| स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ता द्विचतुःपट्पदोरगाः | २९६८ |
| जातिभेदाः पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः सह मल्लकः | २९६९ |
| ऊर्मिर्वराटकः स्वातिर्वर्णको ज्ञाटलिर्मनुः | २९७० |
| मूपा सृपाटी कर्कन्धूर्यष्टिः शाटी कटी कुटी | २९७१ |
| स्त्रीनपुंसकयोर्भावक्रिययोः प्यञ्कचिच्च वुञ् | २९७२ |
| औचित्यमौचिती मैत्री मैत्र्यं वुञ्प्रागुदाहृतः | २९७३ |
| पष्ठ्यन्तप्राक्पदाः सेनाछायाशालासुरानिशाः | २९७४ |
| स्याद्वा नृसेनं श्वनिशं गोशालमितरे च दिक् | २९७५ |
| आवन्नन्तोत्तरपदो द्विगुश्चापुंसि नश्च लुप् | २९७६ |
| त्रिखट्वं च त्रिखट्ठी च त्रितक्षं च त्रितक्ष्यपि | २९७७ |
| त्रिपु पात्री पुटी वाटी पेटी कुवलदाडिमौ | २९७८ |
| परं लिङ्गं स्वप्रधाने द्वन्द्वे तत्पुरुषेऽपि तत् | २९७९ |
| अर्थान्ताः प्राद्यलंप्राप्तापन्नपूर्वाः परोपगाः | २९८० |
| तद्धितार्थो द्विगुः संख्यासर्वनामतदन्तकाः | २९८१ |

| | |
|--|------|
| बहुव्रीहिरदिङ्नाम्नामुन्नेयं तदुदाहृतम् | २९८२ |
| गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधिभिः परगामिनः | २९८३ |
| कृतः कर्तर्यसज्ञाया कृत्याः कर्तरि कर्मणि | २९८४ |
| अणाद्यन्तास्तेन रक्ताद्यर्थे नानार्थभेदकाः | २९८५ |
| पट्संज्ञकास्त्रिषु समा युष्मदस्मात्तिडव्ययम् | २९८६ |
| परं विरोधे शेषं तु ज्ञेयं शिष्टप्रयोगतः | २९८७ |

८ काण्डसमाप्तिः ।

| | |
|--|------|
| इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने | २९८८ |
| सामान्यकाण्डस्तृतीयः साङ्ग एव समर्थितः | २९८९ |

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥



॥ श्रीः ॥

अथ मूलस्थशब्दानामकारादिक्रमेण

शब्दानुक्रमणिका ।

— ८ ६ ६ —

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|-------------|---------|-----------|---------|-------------|---------|----------|---------|
| अ | २८७१ | अक्षरलुपु | १२९८ | अक्षरणी | १२९५ | अक्षर | १६११ |
| अक्ष | १८८५ | अक्षरलण | १२९८ | अक्षि | १२९५ | अक्ष | १६१० |
| अक्षु | २१० | अक्षरती | १०१८ | अक्षिकण | १११३ | अक्ष | १६११ |
| अक्षुक | ११०४ | अक्षरति | ४१० | अक्षिचित् | १२७६ | अक्ष | १६८९ |
| अक्षुगनी | ८७९ | अक्षि | १२५५ | अक्षि-वर्णः | ८९३ | अक्षनयन | १४४७ |
| अक्षुगनरा | ८७४ | अक्षि | २२२९ | अक्षिभू | ७८ | अक्ष | १८४० |
| अक्ष | १२४० | अक्षि | १५४४ | अक्षिम-थ | ७८० | अक्ष | १३८ |
| अक्षल | ११६१ | अक्षिगत | २११४ | अक्षिमुली | ७३३ | अक्ष | २३४२ |
| अक्षति | १४१२ | अक्षार | ७१० | अक्षिगिशा | १२७१ | अक्ष | ६५७ |
| अक्षत् | २६१ | अक्षार | १०७९ | अक्षिगिशा | ८८५ | अक्ष | १५२ |
| अक्षरणि | २३२७ | अक्षार | ७०६ | अक्षिगिशा | ९२१ | अक्ष | ७०६ |
| अक्षरार | ४६८ | अक्षारिणा | १६३० | अक्षिगुलन | २३४ | अक्ष | १७२ |
| अक्षर्यमान् | २११६ | अक्षर | २१५५ | अक्ष | २१४० | अक्ष | १२११ |
| अक्ष | ७६५ | अक्षर | ५२१ | अक्ष | २७०२ | अक्ष | २८६७ |
| अक्ष | १०९३ | अक्षर | २१५४ | अक्ष | ११५० | अक्ष | २८८६ |
| अक्ष | १८७८ | अक्ष | २३७२ | अक्ष-मन् | ११६० | अक्ष | १७८८ |
| अक्ष | २०१९ | अक्ष | ११७४ | अक्ष-मन् | १६११ | अक्ष | ६१८ |
| अक्ष | २७७८ | अक्षद्वार | ११८० | अक्ष-मन् | २८२७ | अक्ष | १५४ |
| अक्ष | १८०० | अक्षम | ६५९ | अक्ष | २८६३ | अक्ष | १०७९ |
| अक्षर्ण | १४७८ | अक्षर | १८४ | अक्षमोक्ष | १२०२ | अक्षविप | ३३ |
| अक्षदेविन् | २०१६ | अक्षर | ४९७ | अक्षि | ११५९ | अक्षमवार | १२१५ |
| अक्षभूत | २०१६ | अक्षर | ६०२ | अक्षि | २१४० | अक्षर | ९३ |
| अक्षर | २६९९ | अक्षर | १३२७ | अक्षि | २१४० | अक्षर | १७६६ |
| | | अक्षरविप | ७७३ | अक्षि | ११२० | अक्षर | १५ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|-----------------|---------|-------------|---------|---------------|---------|---------------|---------|
| अक्षरधानिका | १७६५ | अजामी ... | १७७९ | अर्णायम् ... | २१४९ | अतिशय ... | १३१ |
| अक्षरवह्वरी | ७४५ | अजामीव ... | १९५० | अणु ... | १७४७ | " ... | २२७१ |
| अक्षरवह्वी | ८२८ | अजित ... | २४५८ | " ... | २१४८ | अतिशोभन | २१४१ |
| अक्षरशुद्धी | १७६५ | अजिन ... | १४४५ | अण्ट ... | १०६२ | अतिसर्जन... | २३०५ |
| अक्षीकार ... | २८७ | अजिनपत्रा | १०३९ | अण्टकोश... | १२२६ | अनिसारिकम् | ११९२ |
| अक्षीकृत ... | २२४१ | अजिनयोनि | १००६ | अण्डज ... | ५०० | अतिशौरभ | ७१५ |
| अक्षुल्लिमुद्रा | १२८९ | अजिर ... | ६१८ | " ... | १०५३ | अतीन्द्रिय... | २१८२ |
| अक्षुली ... | १२३७ | " ... | २६९८ | " ... | २१२६ | अतीव ... | २८५३ |
| अक्षुलीयक | १२८८ | अजित ... | २१६८ | अतट ... | ६४१ | आत्तिका ... | ३९१ |
| अक्षुष्ट ... | १२३७ | अजितग ... | १६४० | अतलक्ष्य | ४९७ | अत्यन्तकोपन | २०८८ |
| आङ्गि ... | १२१६ | अञ्जुका ... | ३८४ | अतसी ... | १७४६ | अत्यन्तीन... | १६२० |
| अङ्गिनामक | ६७२ | अञ्जुटा ... | ९०२ | अति ... | २८१८ | अत्यय ... | १६९९ |
| अङ्गिवाहिका | ८३३ | अज्ञ ... | २१०१ | " ... | २८५३ | " ... | २६३५ |
| अचण्डा ... | १८४७ | " ... | २१२० | अतिक्रम ... | २३१६ | अत्यर्थ ... | १३२ |
| अचल ... | ६३५ | अज्ञान ... | २९० | अतिचरा ... | ९४० | अत्याहित ... | २४८९ |
| अचला ... | ५६ | अधिन ... | २२२० | अतिच्छत्र ... | ९८२ | अत्रि ... | १९८ |
| अच्युत ... | ३८ | अध्वन ... | १५१ | अतिच्छया | ९५२ | अथ ... | २८२९ |
| अच्युताग्रज | ४५ | अध्वनकेशी | ९०८ | अतिजव ... | १६१३ | अथो ... | २८९२ |
| अच्छ ... | ४९५ | अध्वनावती | १५४ | अतिथि ... | १४२० | अध्र ... | २१५० |
| अच्छमल्ल ... | ९९५ | अध्वलि ... | १२४४ | अतिथि ... | ४९४ | अदर्शन ... | २२९४ |
| अन ... | १८५८ | " ... | १४३० | अतिपथिन् .. | ५८८ | अदितिनन्दन | १५ |
| " ... | २३९५ | अध्वरा ... | २८५२ | अतिपात ... | १४२६ | अद्वर ... | ११९६ |
| अनगन्धिका | ९२७ | " ... | २८७२ | " ... | २३१६ | अदृष्ट ... | १५२७ |
| अनगर ... | ४४७ | अटनी ... | १६३६ | अतिमात्र ... | १३२ | अदृष्टि ... | ४३६ |
| अनगव ... | ६९ | अटरूप ... | ८५५ | अतिमुक्त ... | ७९२ | अङ्गा ... | २८७२ |
| अनन्य ... | १६८५ | अटवी ... | ६५० | अतिमुक्तक | ७०१ | अञ्जुत ... | ३९५ |
| अनमोदा ... | ९३८ | अटा ... | १४२३ | अतिरिक्त ... | २१७५ | " ... | ४०९ |
| अनशुद्धी ... | ८८७ | अट्ट ... | ६१६ | अतिवक्त्र ... | २०९५ | अक्षर ... | २०६५ |
| अजस ... | १३१ | अट्टा ... | १४२३ | अतिवाद ... | ३३८ | अद्य ... | २८८९ |
| अजहा ... | ८२१ | अणक ... | २१३३ | अतिविषा ... | ८४७ | अद्रि ... | ६३५ |
| अजा ... | १८५८ | अणि ... | १५८० | अतिवैल ... | १३२ | " ... | २६६२ |
| " ... | २३९५ | अणिमन् ... | ७२ | अनिशक्तिना | १६७२ | " ... | २०१७ |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|-------------|----------|----------|----------|----------|----------|-------------|----------|
| अद्वयमादिन् | २७ | अध्यापक | १३६६ | अनामप | २६५० | अनुर्जीविन् | १४८५ |
| अधम | २१३२ | अध्याहार | २८२ | अनादर | ४०६ | अनुर्जीण | २०१५ |
| " | २६२४ | अध्यूढा | १०८७ | अनामय | ११७३ | अनुनाप | ४१२ |
| अधमण | १७१६ | अध्येषणा | १४१७ | अनामिका | १२३८ | अनुत्तम | २१३८ |
| अधर | १२५३ | अध्यग | १५०१ | अनामकृत | ७७१३ | अनुत्तर | २७१६ |
| " | २७१४ | अध्यनीन | १५०१ | अनामत | १३० | अनुपद | २१८१ |
| अधिकक्षि | २०४७ | अध्यन् | ५८६ | अनार्त | २४६७ | अनुपदधिना | १२२ |
| अधिकान्न | १५९४ | अध्यय | १५०१ | अनापत्ति | ०३४ | अनुपमा | १५३ |
| अधिकार | १५७२ | अध्यर | १४७२ | अनाहत | १२२७ | अनुप्लव | १६१० |
| अधिवृत्त | १४८० | अध्ययु | १३८६ | अनिमिष | २७७३ | अनुपम्य | २५३१ |
| अधिविहित | २१०८ | अनक्षर | ३५२ | अनिरद | ५३ | अनुपौष | १३१८ |
| अधिव्यवसा | ६४७ | अनक्ष | ५० | अनिरा | १२ | अनुपव | २३०४ |
| अधिप | २०४९ | अनक्ष | ४९५ | अनिरा | १२३ | अनुभाव | ४०४ |
| अधिभू | २०४६ | अनक्ष | १८२६ | अनिरा | १२० | " | २७५४ |
| अधिरौहिणी | ६५८ | अनक्ष | १४४ | अनिरा | १६२४ | अनुमति | २३० |
| अधिवानन | १३४२ | " | ४४६ | अनिरा | १६३६ | अनुयोग | ३३० |
| अधिविगत | १०८७ | " | २४२७ | अनिरा | १४८० | अनुरोध | १४२३ |
| अधिभयणी | १७६४ | अनक्ष | ५६० | अनिरा | १६७३ | अनुगाप | ३४२ |
| अधिविगत | २५८६ | " | ८३२ | अनिरा | १६३० | अनुतेजन | २९४१ |
| अधीन | २०५७ | " | ८७२ | अनु | २८३१ | अनुवर्तन | १४९२ |
| अधीर | २०७७ | " | ९२१ | अनुक्त | २०७१ | अनुवाक | २९५८ |
| अधीर | १४७१ | अनक्ष | ५१ | अनुक्त | ३९८ | अनुशय | २६३३ |
| अधुना | २८९४ | अनक्ष | २१८३ | अनुक्त | १५८७ | अनुधन | १९६५ |
| अधुना | २०७६ | अनक्ष | २६७४ | अनुक्त | १४३२ | अनुहार | २२८४ |
| अधुना | १३०७ | अनक्ष | १८ | अनुक्त | १६२० | अनुहा | २३६० |
| अधोक्ष | ४२ | अनक्ष | ४२२ | अनुक्त | २२८४ | अनुपान | १३७३ |
| अधोमुख | ४३९ | अनक्ष | २१३९ | अनुक्त | १४२५ | अनुपक | २१५५ |
| अधोमुख | २००१ | अनक्ष | २१३९ | अनुक्त | ३९८ | अनुप | ५७७ |
| अधोमुख | १४८० | अनक्ष | २१३९ | अनुक्त | २१८१ | अनुह | २८ |
| " | २७८५ | अनक्ष | २१३९ | अनुक्त | २०७५ | अनुह | २११७ |
| अधोवसाय | ४३० | अनक्ष | १५७२ | अनुक्त | १६१० | अनुह | १०११ |
| अधोवस | ४३० | अनक्ष | १०८९ | अनुक्त | ११६० | अनुह | ११३५ |

| शब्द | पंक्ति | शब्द | पंक्ति | शब्द | पंक्ति | शब्द | पंक्ति |
|-----------------|--------|----------------|--------|-------------------|--------|----------------|--------|
| अनेहसू ... | २१६ | अन्त्र ... | १२०५ | अपत्रपिष्णु ... | २०८० | अपाङ्ग ... | १२६१ |
| अनोकह ... | ६५९ | अन्दुक ... | १५५० | अपथ ... | ५९० | " ... | २३७७ |
| अन्त ... | १७०० | अन्ध ... | ११९६ | अपथिन् ... | ५९० | अपान ... | १२६ |
| " ... | २१८६ | " ... | २५४० | अपदान्तर ... | २१६० | " ... | १२०० |
| अन्त पुर ... | ६१५ | अन्वकारिपु ... | ६७ | अपदिश ... | १५५ | अपानार्ग ... | ८२५ |
| अन्तक ... | ११७ | अन्वकार ... | ४४३ | अपदेश ... | ४०७ | अपावृत्त ... | २०५५ |
| अन्तर ... | २७०९ | अन्धतमसू ... | ४४४ | " ... | २७६७ | अपासन ... | १६९४ |
| अन्तरा ... | २८६८ | अन्धम् ... | १८०३ | अपध्वन्त ... | २१०३ | अपि ... | २८३३ |
| अन्तरामवसरव ... | २६०० | अन्धु ... | ५१९ | अपध्वंश ... | ३१४ | अपिधान ... | १७० |
| अन्तराय ... | २२८८ | अन्त्र ... | १८०३ | अपयान ... | १६९० | अपिन्द्र ... | १५०७ |
| अन्तराल ... | १५६ | " ... | २२४६ | अपरस्पर ... | २०५३ | अपूप ... | १८०२ |
| अन्तरीक्ष ... | १४४ | अन्य ... | २१८९ | अपराजिता ... | ८५६ | अपोगण्ड ... | ११६५ |
| अन्तरीप ... | ४८३ | अन्यतर ... | २१८९ | " ... | ९४७ | अप्पति ... | १२१ |
| अन्तरीय ... | १३०७ | अन्वक्ष ... | २१८१ | अपराद्धवृत्तक ... | १६०४ | अपित्त ... | ११७ |
| अन्तरे ... | २८६८ | अन्वक् ... | २१८१ | अपराव ... | १५२० | अप्रकाण्ड ... | ६६६ |
| अन्तरेण ... | २८७४ | अन्वय ... | १३५४ | अपराह ... | २२१ | अप्रगुण ... | २१६८ |
| " ... | २८६८ | अन्ववाय ... | १३५५ | अपर्णा ... | ७४ | अप्रत्यक्ष ... | २१८७ |
| अन्तर्गत ... | २१०७ | अन्वाहार्य ... | १४१५ | अपर्णा ... | ३४४ | अप्रधान ... | २१४४ |
| अन्तर्वा ... | १६९ | अन्विष्ट ... | २०३४ | अपर्णा ... | ३४४ | अप्रहत ... | ५६७ |
| अन्तर्वा ... | १६९ | अन्वेपणा ... | १४१६ | अपवर्ग ... | २९० | अप्राप्त ... | २१४४ |
| अन्तर्वा ... | ६०० | अन्वेपित ... | २०३४ | अपवर्जन ... | १४१२ | अप्राप्त्य ... | २१४४ |
| अन्तर्मेनसू ... | २०४० | अन्वेपित ... | २०३४ | अपवाद ... | ३३६ | अप्सरसू ... | २१ |
| अन्तर्वर्णी ... | १११७ | अन्वेपित ... | २०३४ | " ... | २५१७ | " ... | १०३ |
| अन्तर्वर्णी ... | २०३७ | अन्वेपित ... | २०३४ | अपवारण ... | १६९ | अफल ... | ६६७ |
| अन्तर्वर्णी ... | १४८३ | अन्वेपित ... | २०३४ | अपवृष्ट ... | २१९७ | अवह ... | ३५१ |
| अन्तावमयिन् ... | १९४८ | अन्वेपित ... | २०३४ | अपसद ... | १९६१ | अवहसुख ... | २०९७ |
| अन्तिक ... | २१०९ | अन्वेपित ... | २०३४ | अपसर्प ... | १४९३ | अवला ... | १०७७ |
| अन्तिकतम ... | २१६१ | अन्वेपित ... | २०३४ | अपसव्य ... | २१९३ | अवाध ... | २१९१ |
| अन्तिका ... | १०६४ | अन्वेपित ... | २०३४ | " ... | २१९३ | अवज ... | १७३ |
| अन्तिका ... | १३०४ | अन्वेपित ... | २०३४ | अपकार ... | १५७८ | " ... | २३९९ |
| " ... | १९६८ | अन्वेपित ... | २०३४ | अपज्ञान ... | २७६३ | अवजयानि ... | ३३ |
| अन्य ... | २१८६ | अन्वेपित ... | २०३४ | अपहार ... | २२८१ | अन्द ... | ३५५ |
| | | अन्वेपित ... | २०३४ | अपापनि ... | ४७० | " ... | २५११ |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|----------|----------|------------|----------|-----------|----------|----------|----------|
| अधि | ४६८ | अभिमान | ४०५ | अमीवद्वा | २२६१ | अभि | ४९३ |
| अधि | २९१७ | | २५५५ | अमीपु | २७७५ | अभिय | १६० |
| अधिकृष | १९६६ | अभिषेक | २२७६ | अमीष्ट | २१३१ | अभिय | १५१५ |
| अभ्यु | १५३ | अभिरूप | २५९७ | अभ्यम | २१५९ | अभन | १७७१ |
| अभ्युत्थ | २८९ | अभिलाष | २२९७ | अभ्यतर | १५६ | अभन | १३ |
| अभय | ९७७ | अभिलाष | ४१७ | अभ्यमित | ११९० | अभनराजनी | ८५ |
| अभय | ७६६ | अभिष्ठापुः | २०६९ | अभ्यमिणी | १६१७ | अभन | १६ |
| अभाषण | १४२४ | अभिवादक | २०८ | अभ्यमिणी | १६१७ | अभन | ४१३ |
| अभिर | २०७२ | अभिवादक | १४३४ | अभ्यमिणी | १६१७ | अभन | २०८८ |
| अभिराज | १६६० | अभिव्यक्ति | २२६३ | अभ्यम | २१५९ | अभन | १८३५ |
| अभिराष | २६७७ | अभिराज | २११ | अभ्यवर्णन | २२८३ | अभन | ११६१ |
| अभिराष्ट | २२७६ | अभिराज | १४१७ | अभ्यवर्णन | १६८७ | अभन | १५०२ |
| अभिराष्ट | २२८६ | अभिराज | २२६१ | अभ्यवर्णन | २२४६ | अभन | २२१ |
| अभिराष्ट | १४९ | अभिराज | २२८२ | अभ्यवर्णन | १६७८ | अभन | १४८९ |
| अभिराष्ट | २२८७ | अभिराज | १४४६ | अभ्यवर्णन | २०४८ | अभन | २८६५ |
| अभिराष्ट | १४५४ | अभिराज | २०१३ | अभ्यवर्णन | २२०२ | अभन | २८७ |
| अभिराष्ट | २४५० | अभिराज | १६५७ | अभ्यवर्णन | १६७८ | अभन | २८९ |
| अभिराष्ट | २४९८ | अभिराज | २२४४ | अभ्यवर्णन | २१५८ | अभन | १४९ |
| अभिराष्ट | २०३२ | अभिराज | १६७७ | अभ्यवर्णन | १६८७ | अभन | १४१२ |
| अभिराष्ट | २१५९ | अभिराज | १६१० | अभ्यवर्णन | १६८७ | अभन | २४८६ |
| अभिराष्ट | २८४६ | अभिराज | १०९३ | अभ्यवर्णन | १६८७ | अभन | ४६४ |
| अभिराष्ट | १२५ | अभिराज | २२८३ | अभ्यवर्णन | १६८७ | अभन | ४६६ |
| अभिराष्ट | ४०९ | अभिराज | २६६२ | अभ्यवर्णन | १६८७ | अभन | ८१२ |
| अभिराष्ट | ४९३ | अभिराज | २२४९ | अभ्यवर्णन | १६८७ | अभन | १६ |
| अभिराष्ट | २१७९ | अभिराज | २०७२ | अभ्यवर्णन | १६८७ | अभन | १४३ |
| अभिराष्ट | १४६२ | अभिराज | २८५१ | अभ्यवर्णन | १६८७ | अभन | १४३ |
| अभिराष्ट | १६५८ | अभिराज | २८७० | अभ्यवर्णन | १६८७ | अभन | १४३ |
| अभिराष्ट | १५१६ | अभिराज | २१३१ | अभ्यवर्णन | १६८७ | अभन | १४३ |
| अभिराष्ट | २४९६ | अभिराज | २२४८ | अभ्यवर्णन | १६८७ | अभन | १४३ |
| अभिराष्ट | २५९१ | अभिराज | ८४९ | अभ्यवर्णन | १६८७ | अभन | १४३ |
| अभिराष्ट | २५९० | अभिराज | ८५० | अभ्यवर्णन | १६८७ | अभन | १४३ |
| अभिराष्ट | २१०४ | अभिराज | ८५० | अभ्यवर्णन | १६८७ | अभन | १४३ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|----------------|---------|-------------------|---------|----------------|---------|-----------------|---------|
| अम्बुषा ... | ७९१ | अरति ... | १२४६ | अर्काह ... | ८०९ | अर्धचन्द्रा ... | ८६६ |
| ” ... | ८१७ | अरर ... | ६२७ | अर्गल ... | ६२७ | अर्धनाव ... | ४९४ |
| ” ... | ९२९ | अरलु ... | ७६३ | अर्व ... | २३८९ | अर्धरात्र ... | २२७ |
| अम्बा ... | ३९० | अरविन्द ... | ५४५ | अर्ध ... | १४१८ | अर्धर्च ... | २९५९ |
| अम्बिका ... | ७४ | अरानि ... | १४९० | अर्चा ... | १४२१ | अर्धहार ... | १२८५ |
| अम्बु ... | ४७५ | अराल ... | २१६६ | ” ... | २००१ | अर्बुद ... | २९३३ |
| अम्बुज ... | ७७० | अरि ... | १४८८ | अर्चित ... | २२०७ | ” ... | २९६० |
| अम्बुभृत् ... | १५८ | ” ... | २९१७ | अर्चिस् ... | ११३ | अर्नक ... | १०६३ |
| अम्बुवेतस ... | ७०९ | अरित्र ... | ४९२ | ” ... | २७९५ | अर्न ... | २९६३ |
| अम्बुधृत ... | ३५१ | अरिमेद ... | ७२८ | अर्जक ... | ८०८ | अर्थ ... | १७०८ |
| अम्भस् ... | ४७५ | अरिष्ट ... | ६०९ | अर्जुन ... | ३०७ | ” ... | २६२८ |
| अम्भोरुह ... | ५४८ | ” ... | ७११ | ” ... | ७३८ | अर्थमन् ... | २०७ |
| अम्भय ... | ४७६ | ” ... | ७७२ | ” ... | ९८३ | अर्या ... | ११०१ |
| अम्भ ... | २९५ | ” ... | ९४५ | अर्जुनी ... | १८४० | अर्याणी ... | ११०१ |
| अम्भवेतस ... | ९३० | ” ... | १०२७ | अर्गत्र ... | ४६९ | अर्या ... | ११०३ |
| अम्भलोणिका ... | ९२९ | ” ... | १८१७ | अर्णस् ... | ४७५ | अर्व ... | २१३२ |
| अम्भवेतम ... | ७९५ | ” ... | २४०६ | अर्तन ... | २३१४ | अर्वन् ... | १५५५ |
| अम्भान ... | ७९५ | अरिष्टदुष्टधी ... | २११२ | अर्ति ... | २४७० | ” ... | २१३२ |
| अम्भिका .. | ७३५ | अरण ... | २०३ | अर्थ ... | १२६७ | अर्वाक् ... | २८७१ |
| अय ... | ७६९ | ” ... | २०८ | ” ... | १८८७ | अर्शस ... | ११९१ |
| अयन ... | २४० | ” ... | ३०७ | ” ... | २५०६ | अर्शस् ... | ११८२ |
| ” ... | ५८६ | ” ... | २४३१ | अर्थना ... | १४१७ | अर्शोन्न ... | ९६२ |
| अयस् ... | १९०२ | अरुणा ... | ८४७ | ” ... | २२६२ | अर्हणा ... | १४२१ |
| अय प्रतिमा ... | १९९९ | अस्तुद ... | २१९१ | अर्थप्रयोग ... | १७१४ | अर्हित ... | २२२७ |
| अयि ... | २८८४ | अरुणकर ... | ७३३ | अर्थिन् ... | १४८५ | अलग् ... | २८३९ |
| अयोत्र ... | १७५७ | ” ... | २७१३ | ” ... | २१२३ | ” ... | २८७१ |
| अर ... | १२८ | अरुम् ... | ११८१ | अर्थ्य ... | १९१४ | अलक ... | १२६५ |
| अरघट ... | २९३० | अरोक्त ... | २२२४ | ” ... | २६५५ | अत्का ... | १४० |
| अरणि ... | १३९० | अर्क ... | २०३ | अर्दना ... | २२६७ | अलक्त ... | १३२३ |
| अरण्य ... | ६५० | ” ... | २३४३ | अर्दित ... | २२१९ | अलगर्द ... | ४४८ |
| ” ... | २९३८ | अर्कपर्ण ... | ८१० | अर्थ ... | १७६ | अलंकरिण्यु ... | १२७३ |
| अरण्यानी ... | ६५१ | अर्कान्यु ... | ३० | ” ... | १७६ | ” ... | २०८२ |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|----------|----------|---------|----------|---------|----------|---------|----------|
| अलङ्घनं | १२७३ | अवगीत | २४९३ | अलङ्घन | ११६३ | अलङ्घन | ४०७ |
| अलङ्घनम् | २०६० | अवग्रह | १६६ | अलम् | २१२२ | अलङ्घ | २०५१ |
| अलङ्कार | १२७६ | " | १५८३ | अलम्ब | २२३७ | " | २०२१ |
| अलङ्कृत | १२७४ | अवग्रह | १६६ | अलम्ब | १६८५ | अलङ्कृत | २५३ |
| अलङ्किया | १२७५ | अवधूत | २२१२ | अलम्बना | ४०७ | अलङ्क | २१६५ |
| अलङ्क | ८१० | अवश | ४७ | अलम्बित | २२३७ | अलङ्क | १४७ |
| " | १२७२ | अवज्ञात | २२३७ | अलम्ब | १२१३ | अलङ्क | १५३ |
| अलङ्क | १२६५ | अवष्ट | ४४२ | अलङ्क | १५४८ | अलङ्क | ४८३ |
| अलङ्क | १७६६ | अवष्ट | ११६३ | अलङ्क | ११६० | अलङ्क | २१०३ |
| अलङ्क | २६० | अवष्ट | १२५० | अलङ्क | २२३४ | अलङ्क | १११४ |
| अलङ्क | १०१५ | अवष्ट | २७९० | अलङ्क | १२३० | " | २७४९ |
| " | १०४५ | अवष्ट | ४४४ | अलङ्क | २२११ | अलङ्क | ७८३ |
| " | १०४६ | अवष्ट | १८४४ | अलङ्क | ६१६ | अलङ्क | २२३६ |
| अलङ्क | १२५७ | अवष्ट | २००९ | अलङ्क | ६१५ | अलङ्क | २९० |
| अलङ्क | १०४५ | अवष्ट | २०१ | अलङ्क | ६७१ | अलङ्क | २०७० |
| अलङ्क | १७६८ | " | २४५५ | अलङ्क | १३६ | अलङ्क | ११० |
| अलङ्क | ६१७ | अवष्ट | २२५६ | अलङ्क | १०२ | अलङ्क | १२९ |
| अलङ्क | २२५९ | अवष्ट | ९७८ | अलङ्क | १२३३ | " | २१९० |
| अलङ्क | २१४७ | अवष्ट | १७३१ | अलङ्क | ८६९ | अलङ्क | २५३ |
| अलङ्क | ११७० | अवष्ट | २२०३ | अलङ्क | १५१८ | अलङ्क | ४६३ |
| अलङ्क | १२० | अवष्ट | २१३३ | अलङ्क | २८८० | अलङ्क | १०९६ |
| अलङ्क | ५२३ | अवष्ट | १७३१ | अलङ्क | १८० | अलङ्क | २३०६ |
| अलङ्क | २१४९ | अवष्ट | २५३३ | अलङ्क | २५४३ | अलङ्क | २३७८ |
| अलङ्क | २१४९ | अवष्ट | २२१२ | अलङ्क | २२९८ | अलङ्क | २०७ |
| अलङ्क | ६२९ | अवष्ट | २२५८ | अलङ्क | २२२६ | अलङ्क | ८२१ |
| अलङ्क | १४६० | अवष्ट | २१६५ | अलङ्क | २२३० | अलङ्क | ७६६ |
| अलङ्क | २१०३ | अवष्ट | ११६३ | " | २२४० | " | ९४० |
| अलङ्क | ६६३ | अवष्ट | २३०३ | अलङ्क | १२०८ | अलङ्क | २९६३ |
| अलङ्क | १८६५ | अवष्ट | ५६३ | " | २६७० | अलङ्क | २१६० |
| अलङ्क | २२३७ | अवष्ट | १७८५ | अलङ्क | २७३ | अलङ्क | १८१५ |
| अलङ्क | २१४० | अवष्ट | ६६१ | अलङ्क | ५०९ | अलङ्क | २०६४ |
| अलङ्क | २२१० | अवष्ट | १४०७ | अलङ्क | ४२९ | अलङ्क | ९४ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|-----------------|---------|-------------------|---------|-----------------|---------|----------------|---------|
| अग्निः ... | २२४६ | अघकृत् ... | २८५१ | अय ... | १२६० | आकर ... | ६४६ |
| अग्निमी ... | १०९५ | असती ... | १०९४ | " ... | २६६४ | आकर्ष ... | २७७८ |
| अनुम ... | २९४० | अमर्तामुन ... | ११०५ | असप ... | ११८ | आकल्प ... | १२७२ |
| अग्नेय ... | २१५४ | असन ... | ७३६ | अव्यु ... | १२६० | आकार ... | २२७९ |
| अयोक्त ... | ७७७ | असनीक्ष्यकारि ... | २०५९ | अस्वच्छन्द ... | २०५७ | " ... | २६६० |
| अयोमरोहिणी ... | ८१९ | अघार ... | २१३७ | अन्वम ... | १६ | आकारश्रुति ... | ४२९ |
| अदमगर्भ ... | १८९० | अमि ... | १६४५ | अन्वर ... | २०९९ | आकारणा ... | ३२७ |
| अदमज ... | १९१४ | अमि ... | २९१७ | अंशु ... | २१२४ | आकाश ... | १४५ |
| अदमय ... | ६४० | असिता ... | १११० | आङ्कार ... | ४०५ | आकार्ण ... | २१९५ |
| अदमन्त ... | १७६४ | अमिन ... | ३०४ | अङ्कारवान् ... | २१२४ | आकुल ... | २१६८ |
| अदममुप ... | ८९३ | अभिवाचक ... | १९४२ | अदम् ... | २१७ | आकन्द ... | २०१५ |
| अदमयी ... | ११८६ | अभिधेनुग ... | १६५७ | अदमनमिका ... | १६७० | आक्रीड ... | ५५४ |
| अदम्यार ... | १९०३ | अभिधुत्रा ... | १६५२ | अहर्षिका ... | १६६८ | आलोशन ... | २२६१ |
| अध्यात्म ... | १३० | अधु ... | १३०६ | अहमति ... | २९० | आधारणा ... | ३४० |
| अग्नि ... | १६५४ | अधुवारण ... | १७०६ | अहर्षिता ... | २०५ | आधारित ... | २११० |
| अधु ... | १२६० | अधु ... | २३ | अहर्ष्य ... | २१९ | आक्षेप ... | ३३६ |
| अधर्मा ... | ३४८ | अधुर्धन ... | १०७ | अहर्कर ... | २०१ | आमण्डल ... | ८८ |
| अध्या ... | १५५४ | अधुर्धन ... | ४१० | अहर् ... | २८४९ | आमु ... | १०११ |
| अध्याहारिता ... | ७३७ | अधुर्धरा ... | ११०८ | अहर्ष ... | ६३४ | आमुमुञ्ज ... | १९७१ |
| अध्याय ... | ६९० | अधुर्ध ... | १२०१ | अहि ... | ४५० | आर्द्र ... | १९७५ |
| अध्याय ... | १८७ | अधीन्द्रायर ... | २०९९ | अहित ... | १४८९ | आर्या ... | ३२६ |
| अध्याय ... | २९२६ | अध्या ... | ६४७ | अधितुष्टिका ... | ४६० | आरुपान ... | २३३५ |
| अध्या ... | १५६० | " ... | २१९५ | अहितय ... | १५२८ | आरुपयिका ... | ३२१ |
| अध्या ... | १५५८ | " ... | २८८३ | अहितुञ्ज ... | २२९४ | आरुप्य ... | १४२० |
| अध्या ... | १०३ | अध्या ... | २८८४ | अहित ... | ८५१ | आरुप्य ... | १५२० |
| अध्यायी ... | १८७ | अध्या ... | २८७४ | अहि ... | २८६६ | " ... | २७९६ |
| अध्यायी ... | १०१ | अध्या ... | १६३२ | अहो ... | २३८ | आरु ... | २८६ |
| अध्यायी ... | १५६३ | अध्या ... | १६८५ | अहोरात्र ... | २३८ | आरुप्य ... | १३८० |
| अध्यायी ... | १५५१ | अध्या ... | १२१० | अहोरात्र ... | २३८ | आरुप्य ... | १३८० |
| अध्यायी ... | १८९४ | अध्यायी ... | २११० | आ. ... | | आरुप्य ... | २४३ |
| अध्यायी ... | १८३१ | अध्यायी ... | २१९८ | आ. ... | २८१५ | आरुप्य ... | १९० |
| अध्यायी ... | १४१० | अध्यायी ... | १४०१ | आ. ... | २८८१ | आरु ... | २८१४ |
| | | | | आ. ... | २१९८ | आरुप्य ... | ३२४ |

| शब्दः | पतिः | शब्दः | पतिः | शब्दः | पतिः | शब्दः | पतिः |
|-----------|------|---------|------|------------|------|-----------|------|
| आक्षिप्त | १९३ | आनय | २१३ | आहार | ५२४ | आधान | २०१४ |
| आचमन | १४२४ | " | २९३४ | अधि | ४१८ | आपाङ | १३४६ |
| आचाम | १८०५ | आनयत्र | १५३१ | " | २५२९ | आशीन | १८५२ |
| आचार्य | १३६७ | आनय | ४८९ | आधून | २१९८ | आगुपित | १७६३ |
| आचार्या | ११०२ | आनादिन् | १०३० | आधोरण | १५८५ | , | २३२९ |
| आचार्यानी | ११०३ | " | २११३ | आप्यान | ४१९ | आत | १४९४ |
| आचिन | १८८१ | आतिथेय | १४१९ | आपक | ३७४ | आप्य | ४७६ |
| आरुहादा | १७० | आतिथ्य | १४१९ | , | २३४१ | आवायन | २५६५ |
| | १३०४ | आनुर | ११९० | आनयकुडुमि | ३३ | आमपचन | २२६४ |
| | २५८४ | आतोय | ३७१ | आनत | २१६५ | आमपद | १३१३ |
| आनुरितक | ४३० | आनय | २१३ | आनद | ३६९ | आमपदीन | १३१३ |
| अच्छादन | १९७५ | आनयगुता | ८२१ | आनय | १२५१ | आप्लव | १३१६ |
| आनक | १८६० | आनयवोप | १२८ | आनद | ३६४ | आप्लव | १३१६ |
| आजानेय | १५५६ | आनय | ११२८ | आनयधु | २६४ | आवय | १७३२ |
| आभि | १६७९ | आनयन् | २७७ | आनयन् | २३६३ | आनयण | १३७६ |
| " | २३९८ | आनयन् | ३१ | आनय | २४६३ | आनायन | ३४१ |
| आजीव | १७०९ | , | ५२ | आनाय | ४९८ | आनायन | १९ |
| आनू | ४६५ | आनयमरि | २०६७ | आनय | १३९५ | आमीर | १८२१ |
| आनू | १५१९ | अनेधी | १११४ | आनाद | ११८३ | आमीरपल्ली | ६३३ |
| आनय | १८०९ | आनयन | २३३५ | आनयूरी | १४३५ | आमीरी | ११०० |
| आदि | १०३७ | आनय | १३५३ | आनयिक | १७६२ | आमील | ४६७ |
| अ डम्बर | १६८३ | आदि | २१८५ | अ वाधिका | ३२० | आमील | १३४७ |
| , | २६७१ | आदिकारण | २७१ | आपः | ४७२ | आमगधिन् | ३०० |
| आदि | १०३७ | आदितेर | १५ | आपक | १८० | आमनय | ४६६ |
| आदक | १८८३ | आदित्य | १६ | आपना | ५२७ | आमय | ११७५ |
| आनवि | १७२६ | , | १९ | आपन | ५९७ | आमयाविन् | ११८९ |
| आनकी | ९०९ | , | २०० | आपणिक | १८६३ | आमयक | २९६१ |
| " | २९०९ | आनीय | २३८ | आपत्यात | २१०९ | आमयली | ७६३ |
| आप्य | २४५ | आदय | २५५ | आपद | १६३१ | आमिया | १३९८ |
| आतक | २३५५ | आप्य | ०१८५ | आपत्र | २१०९ | आमिय | ११९९ |
| आनयन | २५६५ | आपयार्थ | १८७७ | आपत्रच्छता | १११७ | | २७८२ |
| आनयानिन् | २११३ | आपन | २०६६ | आपमित्यव | १७१५ | आमियाविन् | २०६३ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|--------------|---------|---------------|---------|--------------|---------|-----------------|---------|
| आमुक्त ... | १५९७ | आराधिका ... | १७६२ | आयत ... | ४७८ | आमुमुक्षुणि ... | १८९ |
| आनोद ... | २६३ | आराध ... | १५७ | आयलि ... | ६५६ | आधर्म ... | १०० |
| " ... | २९७ | आरेखत ... | ६९६ | आवमित ... | १७५३ | आधम ... | १३६० |
| " ... | २५१७ | आरोन्य ... | ११७३ | आवाप ... | ५२५ | आधय ... | १५०४ |
| आनोदिन् ... | २९९ | आरोह ... | १३०२ | आवापक ... | १०८७ | " ... | २२७१ |
| आज्ञाय ... | ३१६ | " ... | २८११ | आवाल ... | ५०५ | आध्याश ... | १०८ |
| " ... | २२६४ | आरोहण ... | ६२८ | आविद्ध ... | २१६७ | आध्रज ... | ०८६ |
| आम्र ... | ७१५ | आर्नगल ... | ७९७ | " ... | ०१९९ | " ... | २८७३ |
| आम्रातक ... | ७०३ | आर्तव ... | १११५ | आविध ... | २३२१ | आधुत ... | ०२४१ |
| आम्रेडित ... | ३३४ | आर्द्र ... | २२३५ | आविल ... | ४९५ | आध्व ... | १५६३ |
| आयत ... | २१६२ | आर्द्रक ... | १७८१ | आविस् ... | २८७३ | आध्वय ... | ६८५ |
| आयतन ... | ६०६ | आर्थ ... | ३९० | आवुग ... | ३७५ | आध्वज ... | २४९ |
| आयति ... | २४७ | " ... | १३५८ | जवुत्त ... | ४८५ | आधिन ... | २४२ |
| " ... | १५२० | आर्यावर्त ... | ५७२ | आवृत् ... | १४२५ | आग्निनय ... | १०२ |
| आयत्त ... | २०५७ | आर्यभट्ट ... | १८३१ | आवृत्त ... | २००५ | आग्निन ... | १५६१ |
| आयान ... | १३०२ | आल ... | १९१३ | आवेगी ... | ९२२ | आपाठ ... | २४५ |
| आयुध ... | १६३२ | आलम्भ ... | १६९८ | आविशन ... | ६०७ | " ... | १४४३ |
| आयुधिका ... | १६०२ | आलय ... | ६०३ | आवेशिक ... | १४२० | आसक्त ... | २०८० |
| आयुधीय ... | १६०२ | आलवाल ... | ५२५ | आशंसेतु ... | २०७८ | आसन ... | १३५७ |
| आयुष्मन् ... | २०३७ | आलस्य ... | १९६५ | आशंसु ... | २०७८ | " ... | १५०४ |
| आयुस् ... | १७०७ | आलान ... | १५४९ | आशय ... | २२९० | " ... | १५४६ |
| आयोधन ... | १६७४ | आलाप ... | ३४१ | आशर ... | ११८ | आसना ... | २२९२ |
| आरकूट ... | १९०० | आलि ... | ५८४ | आशा ... | १४६ | आसन्दी ... | २९१३ |
| आरग्वध ... | ६९५ | " ... | ६५६ | " ... | २७६९ | आसन्न ... | २१७७ |
| आरनालक ... | १७८४ | " ... | १०९७ | आशितगवीन ... | १८२४ | आसान ... | २०१२ |
| आरनि ... | २३२४ | " ... | २७३१ | आशीविप ... | ४५१ | आसादिन ... | २०३३ |
| आरम्म ... | २३०२ | अलिङ्ग्य ... | ३७२ | आशिसू ... | २७९२ | आसार ... | १६७ |
| आरव ... | ३५७ | आलीढ ... | १६३८ | आशु ... | १२९ | " ... | १६५९ |
| आरा ... | १९९८ | आल्ह ... | १७६८ | " ... | १७३७ | आसुरी ... | १७४७ |
| आरात् ... | २८२० | आलोक ... | २३४१ | आशुग ... | १२३ | आसेचनक ... | २१३० |
| आराधन ... | २५८५ | आलोकन ... | ०३११ | " ... | १६४० | आस्फन्दन ... | १६७५ |
| आराम ... | ६५२ | आवपन ... | १७७३ | " ... | २३७३ | आस्कन्दित ... | १५६४ |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|------------|----------|------------|----------|------------|----------|-------------|----------|
| आत्तरण | १५५२ | दक्षायु | ९६० | इन्द्रादि | २३ | ईर्ष्य | ११८१ |
| आग्धा | २५१० | इक्ष्वा | २१७२ | इन्द्रावरत | ३९ | इक्ष्वा | ४१० |
| आरुमान | १३८३ | " | २२७९ | इन्द्रिय | २९२ | ईक्षित | २०४३ |
| आरुथानी | १३८३ | इक्षित | २२७९ | " | ११९७ | ईक्षी | १६४९ |
| आरुपद | २५२२ | इक्षुदी | ७४० | इन्द्रियाथ | २९२ | इक्ष | ५० |
| आरुफोट | ८०९ | इक्ष्वा | ७१६ | इक्ष्व | ६७४ | " | १७० |
| आरुफोटनी | १९९६ | इक्ष्वावनी | १०९३ | इक्ष | १५३७ | ईक्षान | ६० |
| आरुफोटो | ७८८ | इक्ष्वाणी | १३६९ | इक्ष्व | २०४५ | ईक्षितृ | २०४५ |
| " | ८५६ | इक्ष्वर | १८३१ | इक्ष्व | १६४ | ईक्षर | ६० |
| आरुप | १३५१ | इक्ष्वा | २४१९ | इक्ष्वा | २००८ | " | २०४५ |
| आरुप्या | २२९२ | इक्ष्वर | १९६१ | " | २८८७ | ईक्षरा | ७२ |
| आरुपव | २३०८ | " | २१८९ | इक्ष्वा | २४१९ | ईक्ष्व | २८६५ |
| आरुत | ३५२ | इक्ष्वर | २७१९ | इक्ष्वला | १९१ | इक्ष्वलाण्ड | ३०३ |
| " | २२०१ | इक्ष्व | २८३६ | इक्ष्व | २८६६ | ईक्ष | १७३५ |
| आरुतलक्षण | २०४४ | इक्ष्व | १७७७ | इक्ष्व | २४९ | ईक्षि | १५४३ |
| आरुप | १६७८ | इक्ष्व | ३१९ | इक्ष्व | १६४१ | " | १९९४ |
| आरुपनीय | १३९१ | इक्ष्वरी | १०९४ | इक्ष्वि | १६४४ | ईक्ष | ४१६ |
| आरुपार | १८१८ | इक्ष्वान् | २८९४ | इक्ष्व | १४०८ | ईक्षानुग | १००२ |
| आरुपव | ५१८ | इक्ष्व | ६७४ | " | १८३० | उ | |
| आरुप | ४५५ | इक्ष्व | २५५७ | इक्ष्वानुग | ९७८ | उ | २८८४ |
| आरुप | २८५८ | इक्ष्व | ५४१ | इक्ष्वानुग | २९९ | उत्त | २९३९ |
| आरुपुसपिना | १६६९ | इक्ष्व | १७१ | इक्ष्वानुग | २०४९ | उत्ति | ३१३ |
| आरुप | ३२५ | इक्ष्वरी | ८४९ | इक्ष्व | २४१२ | उत्तम | २९५४ |
| आरुप | ३२६ | इक्ष्व | ८१ | इक्ष्व | १६३४ | उत्तम | १८७५ |
| आरुप | ३२७ | इक्ष्व | १३९ | इक्ष्व | १३५९ | उत्तम | १७६९ |
| इक्ष्व | २७५ | इक्ष्व | ७३८ | इक्ष्व | २३११ | उत्तम | १७९६ |
| इक्ष्व | ८४५ | इक्ष्व | ७८२ | इक्ष्व | १११३ | उत्तम | ६३ |
| " | ८५७ | इक्ष्व | ९६१ | इक्ष्व | २२४४ | उत्तम | ४०२ |
| " | ८६८ | इक्ष्व | ७८५ | इक्ष्व | २३७१ | " | १९३३ |
| " | ९७४ | इक्ष्व | ८९ | इक्ष्व | २४४८ | उत्तम | ८५३ |
| इक्ष्व | ८५७ | इक्ष्व | १६५ | इक्ष्व | २१९९ | " | ९३८ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|------------------|---------|------------------|---------|-----------------|---------|------------------|---------|
| उच्च ... | २१६४ | उत्तंस ... | ७७९० | उत्साह ... | १५०५ | उदुम्बर ... | १९०१ |
| उच्चटा ... | ९६८ | उत्त ... | २०३५ | उत्साहवर्धन ... | ३९७ | उदुम्बरपर्णी ... | ९३७ |
| उच्चण्ड ... | २१९० | उत्तत ... | १२०० | उत्सुक ... | २०४२ | उदूखल ... | १७५७ |
| उच्चार ... | १२०८ | उत्तम ... | २१३८ | उत्सृष्ट ... | २०३८ | उद्गन ... | २०१८ |
| उवावच ... | २१९० | उत्तमर्ण ... | १७१६ | उत्सेध ... | ६६८ | उद्गमनीन ... | १२९८ |
| उच्चैःश्रवम् ... | ९० | उत्तमा ... | १०८२ | " ... | २५२६ | उद्गाढ ... | १३२ |
| उच्चैर्घृष्ट ... | ३३४ | उत्तमाङ्ग ... | १२६३ | उदक् ... | २८९५ | उद्गावृ ... | १३८६ |
| उच्चैस् ... | २८८२ | उत्तर ... | ३३० | उदक ... | ४७४ | उद्गार ... | २३२३ |
| उच्छ्रय ... | ६६८ | " ... | २७१६ | " ... | २९३८ | उद्गीथ ... | २९३२ |
| उच्छ्राय ... | ६६८ | उत्तरा ... | १४८ | उदक्या ... | १११५ | उद्गूर्ण ... | ३२०३ |
| उच्छ्रित ... | २१६४ | उत्तरासङ्ग ... | १३०८ | उदग्र ... | २१६४ | उद्ग्राह ... | २३२३ |
| " ... | २५०४ | उत्तरीय ... | १३०९ | उदज ... | २७ | उद्ग ... | २६८ |
| उच्चासन ... | १६९७ | उत्तान ... | ४९६ | उदधि ... | ४६९ | उद्गन ... | २३१९ |
| उच्चवल् ... | ३९६ | उत्तानशया ... | ११५६ | उदन्त ... | ३२५ | उद्घाटन ... | १८९३ |
| उच्छशिल ... | १७११ | उत्थान ... | २५०७ | उदन्या ... | १८१७ | उद्घात ... | २३०२ |
| उटज ... | ६०५ | उत्थित ... | २५०४ | उदन्वत् ... | ४६९ | उद्धान ... | १५२० |
| उट्ट ... | १८६ | उत्पत्तिवृ ... | २०८२ | उदपान ... | ५१९ | उद्दाल ... | ७१७ |
| उट्टप ... | ४८८ | उत्पत्ति ... | २७४ | उदय ... | ६३७ | उद्धित ... | २२१४ |
| उट्टीन ... | १०६१ | उत्पत्तिष्णु ... | २०८२ | उदर ... | १२२७ | उद्द्राव ... | १६८९ |
| उन ... | २२२६ | उत्पन्न ... | २५०५ | उदर्क ... | १५२६ | उद्धपे ... | ४३८ |
| " ... | २८०१ | उत्पल ... | ५४० | उदवासित ... | ६०१ | उद्धव ... | ४३८ |
| " ... | २८५८ | " ... | ९०० | उदशित् ... | १८१३ | उद्धान ... | १७१४ |
| उनाहो ... | २८५८ | उत्पलशारिवा ... | ८७० | उदान ... | १२६ | उद्गार ... | १७६४ |
| उन्क ... | २०४० | उत्पान ... | १६८५ | उदार ... | २०४१ | उद्धृत ... | २२०४ |
| उत्पट ... | ९१७ | उत्फुल्ल ... | ६६३ | " ... | २७१९ | उद्धव ... | २७४ |
| " ... | २०७१ | उत्स ... | ६४३ | उदासीन ... | १४८७ | उद्भिज ... | २१२७ |
| उत्पण्डा ... | ४१९ | उत्सर्जन ... | १४१० | उदाहार ... | ३२९ | उद्भिद् ... | २१०७ |
| उत्तर ... | १०७२ | उत्सव ... | ४३८ | उदित ... | २२३९ | उद्भिद ... | २१०७ |
| उत्कर्ष ... | २२७१ | " ... | २७५३ | उदीची ... | १४८ | उद्भ्रम ... | २०७४ |
| उत्कलिता ... | ४१९ | उत्सादन ... | १३१६ | उदीच्य ... | ५७० | उद्यत ... | २००३ |
| उत्कार ... | २३०२ | उत्साव ... | ४२० | " ... | ८९२ | उद्यम ... | २२७२ |
| उन्मोश ... | १०३३ | " ... | १३१६ | उदुम्बर ... | ६९२ | उद्यान ... | ६५४ |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|--------|----------|--------|----------|--------|----------|--------|----------|
| उद्योग | २५६८ | उद्योग | २५७१ | उद्योग | २५७४ | उद्योग | १२२४ |
| उद्योग | २५६९ | " | २५७२ | उद्योग | २५७५ | उद्योग | १२२४ |
| उद्योग | ५०७ | उद्योग | ३५७ | उद्योग | १५६४ | उद्योग | १५२३ |
| उद्योग | १२१६ | उद्योग | २२४२ | उद्योग | १५६४ | उद्योग | २७०१ |
| उद्योग | १५३९ | उद्योग | २५१० | उद्योग | २५७ | उद्योग | १५१३ |
| " | २२१८ | उद्योग | १७०५ | उद्योग | २५११ | उद्योग | १५१३ |
| उद्योग | १६९७ | उद्योग | १५२३ | उद्योग | १५३३ | उद्योग | १५१३ |
| उद्योग | १५६५ | उद्योग | २२८८ | उद्योग | २५३ | उद्योग | १५१३ |
| उद्योग | ९८७ | उद्योग | २२२८ | उद्योग | २५३७ | उद्योग | १५१३ |
| " | २५७४ | उद्योग | १५९३ | उद्योग | २७०२ | उद्योग | २५१६ |
| उद्योग | १०११ | उद्योग | २२०२ | उद्योग | ६४० | उद्योग | २२८२ |
| उद्योग | २१६३ | उद्योग | ८६३ | उद्योग | ३५१ | उद्योग | ४१८ |
| उद्योग | २१६३ | उद्योग | १५१० | उद्योग | २७९ | " | २७४८ |
| उद्योग | २५०४ | उद्योग | १५७८ | उद्योग | २५०४ | उद्योग | १५६६ |
| उद्योग | २२७३ | उद्योग | २५०८ | उद्योग | २७३४ | उद्योग | ११०९ |
| उद्योग | २२७३ | उद्योग | १७७५ | उद्योग | ६५२ | उद्योग | ११०४ |
| उद्योग | ८०६ | उद्योग | ६४० | उद्योग | ५७३ | " | ११०४ |
| " | ११९४ | उद्योग | १५२३ | उद्योग | १५७८ | उद्योग | १९९० |
| उद्योग | २०७० | उद्योग | १५१० | उद्योग | ८४७ | उद्योग | १५७३ |
| उद्योग | ००४० | " | २६१३ | उद्योग | १५५१ | उद्योग | १५६८ |
| उद्योग | १६९८ | उद्योग | १५७८ | उद्योग | ६३२ | उद्योग | १६४३ |
| " | १०८१ | उद्योग | ४२१ | उद्योग | २५१३ | उद्योग | १६१९ |
| उद्योग | ४१४ | उद्योग | ३७६ | उद्योग | २२४२ | उद्योग | १५२३ |
| उद्योग | २०७० | उद्योग | १८६८ | उद्योग | १५७७ | उद्योग | ०५२८ |
| उद्योग | ११९३ | उद्योग | २५२० | उद्योग | १५०५ | उद्योग | २५४ |
| उद्योग | २१५९ | उद्योग | ५९३ | " | १७९७ | उद्योग | २२०८ |
| उद्योग | ६१२ | उद्योग | ३२८ | उद्योग | २५९९ | उद्योग | ३५ |
| उद्योग | ६१२ | उद्योग | ११४४ | उद्योग | १६८५ | उद्योग | ९६३ |
| उद्योग | ८९९ | उद्योग | १३४८ | उद्योग | २१४४ | उद्योग | ३२९ |
| " | १७८० | उद्योग | १४०२ | उद्योग | १८८६ | उद्योग | २८९१ |
| उद्योग | ८४१ | उद्योग | २७८९ | उद्योग | ३०९ | उद्योग | १८९१ |
| उद्योग | १३७८ | उद्योग | २००१ | उद्योग | १७७६ | उद्योग | ७२ |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|------------|----------|------------|----------|----------|----------|-----------|----------|
| वर्तिन | २१९८ | वरवा | १६४६ | वपूरव | ९१८ | वर्मोद्भव | २९३ |
| वाम | २१७३ | वरवाञ्जिका | १६४९ | वप | १२६६ | वर्ग | १८०८ |
| वाम्बल | १३०६ | करवीर | ८०२ | कणजलोपसू | १०१४ | वर्गव | १०१९ |
| | १६३१ | वरवाञ्ज | १२३७ | कणधार | ४९० | वर्गवत् | ७६५ |
| | २७२४ | वरवीर | १५४५ | कणवेष्टा | १२८० | वपु | २७८० |
| ववि | १७७४ | करहा | ५५ | वर्जिका | १२८० | कल | ३६६ |
| वस्तु | ५१२ | वरहाण | ७५३ | " | २३६५ | कलकल | ३६१ |
| " | ३६०१ | वराड | २७४५ | वर्जिवार | ७६९ | कलङ्क | १७८ |
| वास्तुभाषा | १२५० | वरिणी | १५४० | वर्णीरथ | १५७१ | " | २३४७ |
| वम | २०७२ | करिण | १५३६ | वर्जजप | १११८ | वपुव | २६९२ |
| वर | २११ | वरिविप्लवी | ८४२ | वतरी | १९९६ | वपुषी | २४८७ |
| | १५२१ | वरिवाञ्ज | १५३८ | वदम | ४८५ | कलम | १५३८ |
| | २६६३ | वरीर | ८०२ | वपु | १३०३ | वपुम | १७५५ |
| वरक | १६८ | " | ७६८२ | कपर | २९६० | वटव | १६४१ |
| | ७७७ | वरीव | १८०८ | वपरी | १२१० | " | १७७६ |
| " | २३४७ | वरणा | ३९५ | कपरी | १९०९ | कल वा | ९६३ |
| वरण | ७४३ | " | २९७ | कपाव | २९६४ | कलव | १०१६ |
| " | ९०६ | वरैडु | १०२५ | वपूर | १३३३ | कल्ल | ११५० |
| वरञ्जक | ७४३ | वरैणु | २४३९ | वपुर | ११९ | कलविक्र | १०२२ |
| वरट | १०२७ | वरीटि | १२१२ | " | ३१० | कलश | १७६९ |
| | २४०२ | वर्क | १५५९ | " | १८९५ | कलशि | ८३४ |
| वरण | १९३२ | वर्कक | ५०८ | कमवर | १९५८ | कलहस | १०४३ |
| | २४४३ | वर्कनी | ९५९ | २०६२ | २०६२ | कलह | १६७६ |
| वरण | २९३१ | वर्कपू | ७३१ | वर्मकार | २०६२ | कला | १७५ |
| वरनीया | ५३२ | २९७१ | २९७१ | कमधुम | २०६० | " | २३६ |
| वरपत्र | १९९८ | वर्करी | १७६८ | वमट | २०६१ | " | २७३१ |
| वरग | १२३५ | वर्करेडु | १०२५ | कमधवा | २००५ | कलाद | १९४४ |
| | १८५६ | वर्कश | ९४१ | वर्मोद्व | १४३५ | कलानिधि | १७४ |
| वरगुण | १२८९ | " | २१७६ | वर्मशीर | २०६१ | कलाप | २५९२ |
| वरमर्द | ७८३ | " | २७७ | वर्मशूर | २०६१ | कलाप | १७३८ |
| वरम्भ | १८०२ | कर्कश | ९५९ | वर्मसविध | १४७६ | कलि | १६७७ |
| वरदह | १२३९ | कपूर | ९५७ | वर्मोर | ९६९ | " | २७२३ |

| शब्दः | पतिः | शब्दः | पतिः | शब्दः | पतिः | शब्दः | पतिः |
|------------|------|-------------|------|-------------|------|------------|------|
| काय(तीर्थ) | १४५३ | काठ | ११७ | कावचिक | १५९९ | किण | २९३१ |
| कायस्थ | ७६६ | " | २१६ | कावेरी | ५३६ | किणरी | ८२६ |
| कारण | २७१ | " | ३०४ | काव्य | १९४ | किण्य | २०१३ |
| कारणा | ४६५ | " | २०३३ | काय | ९७३ | किन्व | ८०३ |
| कारणिक | २०३८ | काव्य | ११७२ | कायमरा | ७१९ | " | २०१६ |
| कारण्य | १०५६ | काव्यण्टर | १०२९ | कायमय | ७२० | किन्व | २१ |
| कारम्मा | ७६० | काव्यकूट | ४५७ | कास्मीर | ९३९ | " | १२१ |
| कारवी | ८७१ | काव्यलण्ड | १२०६ | कास्मीरलम्ब | १३२१ | किन्वरेण | १३० |
| " | ९५३ | काव्यधर्म | १६९९ | काव्यवि | २०८ | किन्व | २८३७ |
| " | १७८० | काव्यदृष्ट | १६६४ | काव्यशी | ५६१ | " | २८५८ |
| " | १७८७ | काव्यमेविका | ८९९ | काष्ठ | ६७४ | किन्व | २८५८ |
| कारवेष्ट | ९५० | " | ८६६ | काष्ठकुहाल | ४९३ | किन्व | २८५३ |
| कारा | १७०५ | काव्यमेवी | ८७० | काष्ठनक्ष | १९४६ | " | २८५८ |
| कारिका | २३६५ | काव्यमेव | १८१२ | काष्ठा | १४६ | किन्वचान | २१२१ |
| कारीय | २३३५ | काव्यमूत्र | ४६३ | " | २३६ | किन्वदय | १४१ |
| कार | १९१८ | काव्यमूत्र | ४६३ | " | २४१६ | किन्वदम्मा | ३०० |
| कारणिक | २०५४ | काव्यमूत्र | ४६३ | काष्ठीरा | ८७५ | किन्व | २९१ |
| कादय | ३९० | " | ७८४ | काष्ठ | ११७७ | किन्व | २१० |
| कादोत्तर | २०१४ | काष्ठा | ८३० | काष्ठमई | २९३३ | किन्व | १९६९ |
| कार्तस्वर | १८९७ | " | ८६६ | काष्ठर | ९९६ | किन्वतित | ९३४ |
| कातान्तिम | १४९६ | " | १७८० | काष्ठा | ५०० | किन्वरी | ११७७ |
| कातन | २४२ | काष्ठागुरु | १३२७ | किन्वा | १४४८ | किन्वरी | २९५५ |
| कार्तिकिक | २५० | काष्ठागुरु | ८९३ | किन्वा | २६६१ | किन्वीर | ३१० |
| कार्तिकेय | ७० | काष्ठागुरु | १३२५ | किन्वा | ७०७ | किन्व | २८४ |
| कायम | १३०५ | काष्ठागुरु | १३२७ | किन्वा | १०१९ | किन्वा | ११७७ |
| कायमी | ८८० | काष्ठागुरु | ८९३ | किन्वा | १९६३ | किन्वा | ११९६ |
| कर्म | २०६१ | काष्ठागुरु | १३२५ | किन्वा | १२९३ | किन्वा | १०५९ |
| कर्मण | २९५७ | काष्ठागुरु | ८९३ | किन्वा | २८६५ | किन्वा | २६० |
| काष्ठा | १६३३ | काष्ठागुरु | ८९३ | किन्वा | ७१० | किन्वा | २७८२ |
| काय | ७३० | काष्ठागुरु | १३२५ | किन्वा | ५५३ | किन्वा | १५६० |
| कायम | १८८२ | काष्ठागुरु | ९१८ | किन्वा | ९९१ | किन्वा | २८८० |
| कार्तिक | १८८२ | काष्ठागुरु | १८४६ | किन्वा | १२०४ | किन्वा | ६६० |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|----------|----------|----------------|----------|------------|----------|-------------|----------|
| कीमान | ... १२१० | कुक्ष | ... २३९६ | कुण्डल | ... १२८० | कुमारी | ... ७९५ |
| कीचक | ... ९७१ | कुक्षर | ... १५३६ | कुण्डलित् | ... ४५२ | " | ... १०८९ |
| कीमाश | ... २७६६ | कुक्षराशन | ... ६८९ | कुण्डी | ... १४४४ | कुमुद | ... १५१ |
| कीर | ... १०३० | कुक्षल | ... १७८५ | कुतप | ... १४१५ | " | ... ५४१ |
| कीर्ति | ... ३३३ | कुट | ... ६५९ | कुतुक | ... ४२३ | कुमुदवान्धव | १७१ |
| कील | ... ११३ | " | ... १७७० | कुतुप | ... १७७२ | कुमुदिका | .. ७२९ |
| " | ... २७३० | कुटन | ... १७३३ | कुन् | ... १७७७ | कामुदिनी | ५४४ |
| कीलक | ... १८५७ | कुटज | ... ७८१ | कुत्तल | ... ६७२ | कुमुदत् | ... ५७५ |
| कीलाळ | ... ४७३ | कुटनट | ... ७६२ | कुत्ता | ... ३३७ | कुमुदती | .. ५४३ |
| " | ... २७३५ | " | ... ९११ | कुत्सित | ... २१३३ | कुन्ना | ... १३७९ |
| कीरिन | ... ७१०८ | कुटिल | ... ७१६७ | कुथ | ... ९८० | कुस्म | ... ७१६ |
| कीश | ... ९९४ | कुटी | ... ६०४ | " | ... १५५२ | " | ... १५४७ |
| कु... | ... ५६३ | " | ... २९७१ | कुटाल | ... ६९३ | " | ... २६०३ |
| " | ... २८१६ | " | ... ७९७८ | कुणटी | ... १९२३ | कुस्मकार | ... १०४० |
| कु... | ... ११६९ | कुटुम्बव्याप्त | २०४७ | कुणाशक | ... ८३१ | कुस्मसंभव | १८४ |
| कुटुम्बर | ... १२२३ | कुटुम्बिनी... | १०८५ | कुन्त | ... १६५४ | कुम्बिका | .. ७४२ |
| कुट्ट | ... २७४१ | कुटनी | ... १११२ | कुन्तल | ... १२६५ | कुम्भी | ... ७७९ |
| कुट्ट | ... १०७७ | कुटिम | ... ७९६७ | कुन्त | ... ७९४ | कुम्भीर | .. ५०९ |
| कुट्टम | ... १०५७ | कुट्टमल | ... ६८१ | " | ... ८९१ | कुम्भीर | ... १००३ |
| कुट्टर | ... ०१३ | कुट्टर | ... १८५५ | " | ... ७९३३ | कुम्भीरक | ... ७९६ |
| " | ... १०७१ | कुट्टार | ... १६५१ | कुम्भुक | ... ८९१ | " | ... ७९८ |
| कुट्टि | ... १२३८ | कुट्टेरक | ... ८०७ | कुम्भुकी | ... ८९६ | कुम्भिका | ... ७९६ |
| कुट्टि | ... २०६७ | कुट्टन | ... १८८४ | कुम्भ | ... ७१३३ | कुम्भीर | ... ७९८ |
| कुट्टम | ... १२२० | कुट्टन | ... २९२८ | कुम्भ | ... १८८७ | " | ... १०३३ |
| कुट्ट | ... १०७७ | कुट्ट | ... ६०० | कुम्भेर | ... १३५ | कुम्भीरक | ... ७९६ |
| कुट्टन | ... १२३८ | कुट्टर | ... १७०४ | " | ... १५० | कुम्भिविन्द | ... ०६७ |
| कुट्ट | ... २०९९ | " | ... २९३४ | कुम्भेरक | ... ००३ | कुम्भिविन्द | ... १८७९ |
| कुट्ट | ... १२२८ | कुट्टि | ... ००४ | कुम्भेराधी | .. ७५८ | कुल | ... १०७० |
| कुट्ट | ... ११५५ | " | ... ११६९ | कुम्भ | ... ११६९ | " | ... १३५४ |
| कुट्टि | ... २१६६ | कुट्ट | ... ७०७७ | कुम्भार | .. ८० | कुम्भ | ... ७०६ |
| कुट्ट | ... ६८५ | कुट्ट | ... ११६५ | " | ... ३८६ | " | ... १५८ |
| | | " | ... १०६९ | कुम्भारण | ... ६९८ | " | ... १९२९ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|--------------|---------|------------|---------|------------|---------|-----------|---------|
| कुलटा | १०९४ | कुट | ९०० | कृपावत | १३०९ | कृपीटयोनि | १०६ |
| कुलपिका | १०९५ | कुष्ठ | ११८२ | कृम | ५०८ | कृमि | १०१४ |
| कुलपात्रिका | १०८८ | " | २९६२ | कृन् | ४८१ | कृमिज | ८६१ |
| कुलभेष्टिन् | १०९९ | कुलीद | १०१४ | कृष्माण्डक | ९५९ | कृमिज | १४२६ |
| कुलसमय | ११५७ | कुसीदिव | १०१७ | कृष्ण | १०२५ | कृष्ण | २१४७ |
| कुलसी | १०८८ | कुसुम | ६८२ | कृष्णलस | १०१२ | कृष्णलस | १०८ |
| कुलाय | १०६२ | कुसुमाञ्जन | १०१२ | कृष्णलस | १०२२ | कृष्णलस | ६५ |
| कुलाक | १०४० | कुसुमपु | ५१ | कृष्णलस | १२५ | कृष्णलस | १०५२ |
| कुलासी | १०११ | कुसुम | १०१९ | कृष्णलस | ४६७ | कृष्णलस | १०४३ |
| कुलिङ्ग | ९३ | " | २६०७ | कृष्णलस | १०५६ | कृष्णलस | १०१० |
| कुली | ८३६ | कुसुमि | ४२२ | कृष्णलस | २४८८ | कृष्णलस | १०१८ |
| कुलीङ्ग | ११५८ | कुसुमपु | १०८२ | कृष्णलस | १६०३ | कृष्णलस | १०३३ |
| कुलीर | ५०८ | कुलगा | १०५८ | कृष्णलस | ६९६ | कृष्णलस | १०१८ |
| कुलगा | १०४३ | कुलर | ४४० | कृष्णलस | २०४३ | कृष्णलस | १०२३ |
| " | २०३७ | कुलर | २३३ | कृष्णलस | २०४३ | कृष्णलस | १०३३ |
| कुलगापानियुत | १०८४ | कुलर | २०५२ | कृष्णलस | १०८७ | कृष्णलस | ३५ |
| कुल | १२१० | कुल | ६४१ | कृष्णलस | १६०३ | कृष्णलस | २३८ |
| कुल | ५३४ | " | १०७२ | कृष्णलस | ११६ | कृष्णलस | २०४ |
| कुल | ७३१ | " | २४०८ | कृष्णलस | २४६३ | कृष्णलस | १०७८ |
| " | २०७८ | कुल | १०८१ | कृष्णलस | १३६३ | कृष्णलस | ७८३ |
| कुलसमय | ५४० | कुल | ७४२ | कृष्णलस | २०३३ | कृष्णलस | ८४० |
| कुल | २०९९ | कुल | २१७१ | कृष्णलस | २२३१ | कृष्णलस | ८२० |
| कुल | १०४१ | कुल | ५१९ | कृष्णलस | १४४५ | कृष्णलस | ८४४ |
| कुल | ४९९ | कुल | ४८६ | कृष्णलस | ६२ | कृष्णलस | ३०८ |
| कुल | ९८० | " | ४९१ | कृष्णलस | २६५३ | कृष्णलस | १०७ |
| " | २०६७ | " | १२२३ | कृष्णलस | १३२९ | कृष्णलस | ७५८ |
| कुल | २६६ | कुल | १५८१ | कृष्णलस | २१५४ | कृष्णलस | १००७ |
| " | २०३३ | कुल | १२५८ | कृष्णलस | २१२१ | कृष्णलस | ८४१ |
| " | २०४३ | कुल | ९३३ | कृष्णलस | ३९८ | कृष्णलस | १०४५ |
| कुली | १००४ | कुल | १०९४ | कृष्णलस | १६४६ | कृष्णलस | ११७१ |
| कुली | १०५३ | कुल | ४२० | कृष्णलस | १०९६ | कृष्णलस | १०४८ |
| कुली | ५४६ | कुल | १२३३ | कृष्णलस | २०५४ | कृष्णलस | १०४८ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|-----------------|---------|-------------------|---------|--------------|---------|------------------|---------|
| केतकी ... | ९८८ | कैरव ... | ५४१ | कोरङ्गी ... | ८९९ | कौन्तिक ... | १६०८ |
| केतन ... | १६६६ | कैलास ... | १४० | कोरदूय ... | १७३९ | कौन्ती ... | ८८९ |
| ” ... | २५६२ | कैवर्त ... | ४९७ | कोल ... | ४८८ | कौपीन ... | २५७८ |
| केतु ... | २४२५ | कैवर्तामुस्तक ... | ९१२ | ” ... | ७२१ | कौमुदी ... | १०७ |
| केदार ... | २९३४ | कैवल्य ... | २८९ | ” ... | ९९१ | कौमोदकी ... | ५६ |
| केदार ... | १७२८ | कैशिक ... | १२६५ | कोलक ... | १३३२ | कौलटिनेय ... | ११२० |
| केनिपातक ... | ४९२ | कैश्य ... | १२६५ | ” ... | १७७८ | कौलटेय ... | ११२६ |
| केयूर ... | १२८८ | कोक ... | १००२ | कोलदल ... | ९०९ | ” ... | ११२७ |
| केलि ... | ४२६ | ” ... | १०३२ | कोलचक ... | ३७६ | कौलटेर ... | ११२६ |
| केवल ... | २७४२ | कोकनट ... | ५५० | कोलवह्नी ... | ८४३ | कौलीन ... | २५६७ |
| केश ... | १२६४ | कोकनदच्छवि ... | ३०६ | कोला ... | ८४२ | कौलेयक ... | १९७१ |
| केशपर्णी ... | ८२६ | कोकिल ... | १०२६ | कोलाहल ... | ३६१ | कौशिक ... | ७१६ |
| केशपाशी ... | १२६८ | कोकिलाक्ष ... | ८५७ | कोलि ... | ७२१ | ” ... | २३५४ |
| केशव ... | ३६ | कोटर ... | ६७५ | कोविद ... | १३६२ | कौशेय ... | १२९६ |
| ” ... | ११६४ | कोटवी ... | ११०७ | कोविदार ... | ६९३ | कौस्तुभ ... | ५६ |
| केशवेश ... | १२६७ | कोटि ... | १६३६ | ” ... | १५०२ | ककच ... | १९९८ |
| केशाम्बुनाम ... | ८९२ | ” ... | १६५४ | कोश ... | १८८८ | ककर ... | ८०२ |
| केशिक ... | ११६४ | ” ... | २४१० | ” ... | २७७२ | ” ... | १०२५ |
| केशिन् ... | ११६४ | कोटिचर्पा ... | ९१५ | कोशकल ... | १३३३ | कानु ... | १३७९ |
| केशिनी ... | ९०१ | कोटिश ... | १७३० | कोशानकी ... | २३५१ | कानुध्वंसिन् ... | ६७ |
| केसर ... | ५५२ | कोट्ट ... | २९३० | कोर ... | १०६२ | कानुभुज् ... | १७ |
| ” ... | ६९९ | कोठ ... | ११८२ | कोष्ठ ... | २४१५ | कथन ... | १६९७ |
| ” ... | ७७६ | कोण ... | ३७४ | कोष्ण ... | २१४ | कन्दन ... | १६८२ |
| ” ... | ७७८ | ” ... | १६५४ | कोकुटिक ... | २३६८ | ” ... | २५८१ |
| केसरिन् ... | ९८९ | कोदण्ट ... | १६३३ | कोक्षेयक ... | १६४६ | कन्दित ... | ४३२ |
| कैटभजित् ... | ४३ | कोद्रव ... | १७३९ | कौटतथ ... | १९४७ | कम ... | १४३१ |
| कैडर्य ... | ७२९ | कोप ... | ४१३ | कौटिक ... | १९५७ | कमुक ... | ७३० |
| कैतव ... | ४२१ | कोपना ... | १०८१ | कौणप ... | ११८ | ” ... | ७३१ |
| ” ... | २०१८ | कोपिन् ... | २०८८ | कोणप ... | ११८ | ” ... | ९८६ |
| कैदारक ... | १७२९ | कोमल ... | २१८० | कोतुक ... | ४२३ | कमेलक ... | १८१६ |
| कैदारिक ... | १७२९ | कोयष्टिक ... | १०५८ | कौतूहल ... | ४२३ | कथविक्रयिक ... | १८६३ |
| कैदार्य ... | १७२९ | कोरक ... | ६८० | कौद्रवीण ... | १७२२ | कायिक ... | १८६४ |

| शब्दः | पक्तिः | शब्दः | पक्तिः | शब्दः | पक्तिः | शब्दः | पक्तिः |
|------------|--------|----------|--------|----------------|--------|----------------|--------|
| प्रत्यय | १८६९ | क्रियिन् | २२७१ | धमा | २६२० | धीरावी | ८४८ |
| प्रत्यय | ११९९ | क्रिये | २४९ | धमिन् | २०८७ | धीरिका | ७३९ |
| प्रत्ययाद् | ११८ | २२२१ | २०८७ | धमिन् | २०८७ | धीरोद | ४७१ |
| प्रत्ययाद् | ११८ | ८६७ | २०८७ | धन्व | २०८७ | धुत् | ११७७ |
| प्रत्यय | १८६४ | ८६७ | २५९ | धय | २५९ | धुत | ११७७ |
| क्रिया | २१५ | ११५२ | ११७६ | " | ११७६ | क्षुताभिपन्न | १७४५ |
| " | २६४९ | २७६२ | १५०६ | " | १५०६ | क्षुद्र | २१२१ |
| क्रियावत् | २०६० | २१०९ | २२६४ | " | २२६४ | " | २६९७ |
| श्रीश | ४२६ | १२०४ | २६२६ | क्षुद्रचविज्ञा | ११७७ | क्षुद्रचविज्ञा | १२९३ |
| " | ४२७ | २५९ | १७४५ | क्षुद्रशू | १७४५ | क्षुद्रशू | ५१३ |
| धुध | १०६१ | २२६५ | ११७७ | क्षुद्रा | ११७७ | क्षुद्रा | ८३६ |
| धुध | ४१३ | २५९ | २२१८ | " | २२१८ | " | २३४७ |
| धृष्ट | ४३२ | २२१५ | ४०९ | " | ४०९ | क्षुध् | १८१५ |
| धृष्ट | २११९ | २३७ | १९ ५ | क्षुधित | १९ ५ | क्षुधित | २०६४ |
| " | २१७६ | ४३८ | ६८० | क्षुध | ६८० | क्षुध | ६६५ |
| " | २७१८ | २४२९ | ५६५ | क्षुध | ५६५ | क्षुध | १७४६ |
| धेय | १८६९ | २३२ | २११० | क्षुधा | २११० | क्षुधा | ८५७ |
| धीह | ९९३ | १६९५ | ५६१ | क्षुध | ५६१ | क्षुध | २९३५ |
| " | १२२८ | १६२ | २४७५ | क्षुधक | २४७५ | क्षुधक | ७२८ |
| धोय | ४१३ | १२०१ | २२७२ | क्षुधम | २२७२ | क्षुधम | २९३५ |
| धोय | २०८८ | १४६० | २१९९ | क्षुधम् | २१९९ | क्षुधम् | १९४८ |
| धोय | ९९८ | १५८६ | २०८४ | क्षुधिन् | २०८४ | क्षुधिन् | १९६१ |
| धोयविना | ८३४ | १९६४ | १२८ | क्षुधि | १२८ | क्षुधि | २१४७ |
| धोय | ८६८ | २४६० | २२४८ | " | २२४८ | " | २१५५ |
| धोय | १०६१ | १४६९ | २२६४ | क्षुधि | २२६४ | क्षुधि | १७२८ |
| धोयदारण | ८० | ११०१ | २०४१ | क्षुधि | २०४१ | क्षुधि | १७२९ |
| धम | २६४० | ११०१ | ४७५ | क्षुधि | ४७५ | क्षुधि | २६९५ |
| धम | २२४० | २३२ | १८०८ | " | १८०८ | क्षुधि | २७२ |
| धम | २२४५ | २३२ | २६९९ | " | २६९९ | क्षुधि | २४०० |
| धम | ११९९ | १७४ | ८६९ | क्षुधि | ८६९ | क्षुधि | १७१८ |
| धम | ११९९ | २६२० | ८६८ | क्षुधि | ८६८ | क्षुधि | २१७२ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|-----------|----------|-----------|----------|------------|----------|------------|----------|
| धोपणी | ... ४९२ | खञ्जरीट | ... १०१८ | खलिनी | ... २३३३ | गडक | ... ५०१ |
| धोपिष्ठ | ... २२४७ | खट | ... २९२९ | खलीग | ... १५६६ | गडु | ... २९३१ |
| धोम | ... २६६ | खट्वा | ... १३४९ | खलु | ... २८४५ | गडु | ... ११५९ |
| " | ... ९०५ | खड्ग | ... ९९५ | खनेदारु | ... १७३६ | गण | ... १०६७ |
| " | ... २९६२ | " | ... १६४५ | खलया | ... २३३३ | " | ... १६२९ |
| धोणि | ... ५६१ | खजिन् | ... ९९५ | खत | ... ५२१ | " | ... २४२६ |
| धोद | ... १६६५ | खण्ड | ... १७६ | खात | ... २२४५ | गणक | ... १४९५ |
| धोदिष्ठ | ... २४७ | खण्डपरशु | ... ६१ | खादित | ... १८८३ | गणनीय | ... २१५३ |
| धोम | ... ६१६ | खण्डविकार | १७९३ | खारी | ... १८८३ | गणराग | ... २२६ |
| " | ... १२९५ | खण्डिक | ... १७३९ | खारीक | ... १७२७ | गणरूप | ... ८०९ |
| धौद्र | ... १९२१ | खदिर | ... ७४७ | खारीवाय | ... १७२७ | गणहासक | ... ९०५ |
| धौम | ... १३०० | खदिरा | ... ९३१ | खिल | ... ५६७ | गणाधिप | ... ७५ |
| क्षुत | ... २२०६ | खद्योत | ... १०४४ | खुर | ... ९०९ | गणिका | ... ७९१ |
| क्षमा | ... ५६३ | खनि | ... ६४६ | " | ... १५६६ | " | ... ११११ |
| क्षमाभृत् | ... ६३४ | खनित्र | ... १७३१ | खुरणस् | ... ११६७ | गणिकारिका | ... ७८० |
| " | ... १४७० | खपुर | ... ९८६ | खुरणस् | ... ११६७ | गणित | ... २१५३ |
| क्षेड | ... ४५६ | खर | ... २१५ | खेट | ... २१३३ | गणय | ... २१५३ |
| क्षेडा | ... १६८१ | " | ... १८६१ | खेय | ... ५२४ | गण्ड | ... १७५४ |
| " | ... २४२० | खरणस् | ... ११६६ | खेय | ... ४२७ | " | ... १५४१ |
| क्षेडित | ... २९६२ | खरणम | ... ११६६ | खोट | ... ११७१ | गण्डक | ... ९९५ |
| ख. | | खरमुण्या | ... ९२७ | खनात | ... २०४३ | गण्टकारी | ... ९३१ |
| ख | ... १४४ | खरमञ्जरी | ... ८२६ | ख्यातगर्हण | ... २२१० | गण्टशैल | ... ६४५ |
| " | ... २३७१ | खरा | ... ७८६ | ख्याति | ... २२६८ | गण्टाली | ... ९६६ |
| " | ... २९३८ | खराश्वा | ... ८७१ | ग. | | गण्टीर | ... ९६२ |
| खग | ... १०५१ | खर्जू | ... ११८० | गगन | ... १४४ | गण्डूपद | ... ५१० |
| " | ... १६४० | खर्जूर | ... ९८८ | गङ्गा | ... ५२८ | गण्डूपद्री | ... ५१५ |
| " | ... २३७३ | " | ... १८९९ | गङ्गाधर | ... ६७ | गण्डूपा | ... २९१५ |
| खगेश्वर | ... ५७ | खर्जूरी | ... ९८८ | गज | ... १५३६ | गतनासिक | ... ११६६ |
| खजाका | ... १७७४ | खर्व | ... ११६५ | गजता | ... १५४० | गद | ... १२७५ |
| खज्ज | ... ११७१ | " | ... २१६५ | गजभक्ष्या | ... ८९५ | गद्य | ... २९५६ |
| खजन | ... १०१८ | खल | ... २११८ | गजानन | ... ६७ | गन्त्री | ... १५७२ |
| | | खलपू | ... २०५८ | गङ्गा | ... ६०८ | गन्ध | ... २९१ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|---------|---------|---------|---------|-------------|---------|-----------|---------|
| गघक | १९१० | गरिष्ठ | २२४९ | गवय | १००९ | गिरि | ७१५ |
| गघयुनी | ८९४ | गरी | ७८६ | गवस | १९०६ | | २२७२ |
| गघन | २५६४ | गदह | ५७ | गवाणु | ६१० | गिरिणी | ८५६ |
| गघायाली | ८७७ | गरम्भव | ३७ | गवाधी | २६१ | गिरिवा | १०११ |
| गघाली | ७६० | गरामज | २८० | गवेयु | १७५६ | गिरिष | १९१४ |
| " | ७७६ | गलग् | १०५९ | गवेयुवा | १७५६ | गिरिनामक | १९०६ |
| गघमादन | ६३९ | गरामग | ५७ | गवेयणा | १७१६ | गिरिमहिषा | ७८१ |
| गघमूनी | ७५६ | " | १०५५ | गवेयिन | २२३४ | गिरिज | ६१ |
| गघरस | १९१५ | " | २४५० | गव्य | १८०७ | गिरीश | ६१ |
| गघर्व | २१ | गगरी | १८५५ | गव्या | १८७७ | गिनि | २२४५ |
| " | १०४ | गजिन | १६१ | गव्युति | ५९२ | गीर | ३६२ |
| " | १०९ | " | १५३९ | गहन | ६५० | गीर | ३१२ |
| " | १५५५ | गज | ४४२ | " | २१९४ | गीर्ण | २२४४ |
| " | २६०० | गर्दम | १८६१ | गहर | ६४५ | गीर्ण | २२४२ |
| गघरदराद | ७४९ | गर्मावह | ७३४ | " | २७०१ | गीर्ण | १९३ |
| गघरद | १२३ | गहन | २०६८ | गह्व | १८९५ | गीर्ण | १७ |
| गघरदा | १२५३ | गर्भ | ११५१ | " | २६४६ | गुग्गुलु | ७१६ |
| गघराह | १२३ | " | २६०५ | गाङ्गा | ८८२ | गुह | १२८४ |
| गगघार | १३३५ | गर्क | १४४३ | गाङ्ग | ११३ | गुह | ६८१ |
| गगघा | १९१० | गर्गागर | ६०९ | गाङ्गव | १११८ | गुहार्ण | १२८४ |
| गगिग | १९१० | गर्गागध | ११५० | गाङ्गव | १६१५ | गुह | ८४४ |
| गगिनी | ८१५ | गगनी | १११७ | गाङ्गव | १६१५ | गुह | ७४१८ |
| गगनीना | २००८ | गगुग | ९७९ | गाङ्ग | १३१४ | गुह | ७०१ |
| गगनीनी | १०४३ | गगी | ४०५ | " | १५४८ | गुह | ७०१ |
| गगनी | २१० | गह्व | २३७ | गाङ्गा १२वी | १३४० | गुह | ७०१ |
| गगनी | २३६ | गह्व | २३४३ | गङ्ग | २६२ | गुह | ८५६ |
| गग | १६५८ | गह्व | २०९८ | गङ्ग | ३६३ | गुह | ८१३ |
| गग | १६५८ | गह्व | १२४९ | गङ्ग | ७४७ | गुह | १६३७ |
| गगनी | ७१९ | गह्व | ३८६२ | गङ्ग | १८९० | " | १८६३ |
| गगनी | २३६ | गह्व | १७६८ | गङ्ग | १११८ | " | १९८२ |
| गग | २२०९ | गह्व | २२४२ | गङ्ग | १३२१ | " | २४१८ |
| गग | १५६ | गह्व | २३४४ | गङ्ग | ७३६ | गुह | ६९१ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|----------|----------|-------------|----------|-----------|----------|----------|----------|
| गुणित | ... २२०१ | गृहजन | ... ९४५ | गोचर | ... २९२ | गोपुर | ... २७०० |
| गुणित | ... २२०२ | गृधु | ... २०६८ | गोजिह्वा | ... ८८७ | गोप्यक | ... १९६२ |
| गुद | ... १२२० | गृध्र | ... १०३० | गोडुम्बा | ... ९६१ | गोमत् | ... १८२३ |
| गुन्द्र | ... ९७२ | गृध्रसी | ... २९१५ | गोण्ड | ... २९३० | गोमय | ... १८०७ |
| गुन्द्रा | ... ७५९ | गृष्टि | ... ९५० | गोत्रं | ... ६३५ | गोमायु | ... ९९७ |
| " | ... ९६८ | गृह | ... ६०१ | " | ... १३५४ | गोमिन् | ... १८२३ |
| गुत | ... २२०२ | " | ... ६०२ | " | ... २६९६ | गोरस | ... १८१२ |
| " | ... २२३६ | " | ... २८११ | गोत्रमिदू | ... ८४ | गोर्द | ... १२०४ |
| गुति | ... २४८३ | गृहगोधिका | १०१२ | गोत्रा | ... ५६३ | गोल | ... १९३५ |
| गुरण | ... २२७२ | गृहपति | ... १४९७ | " | ... १८२७ | गोलक | ... ११४५ |
| गुरु | ... १९२ | गृह्याल | ... २०७८ | गोदारण | ... १७३४ | गोला | ... १९२३ |
| " | ... १३६६ | गृहस्थूण | ... २९५५ | गोदुह | ... १८२१ | गोलीढ | ... ७२७ |
| " | ... २६५९ | गृहागत | ... १४२० | गोधन | ... १८२३ | गोलौमी | ... ८५३ |
| गुर्विणी | ... १११७ | गृहाराध | ... ६५१ | गोधा | ... १६३६ | " | ... ९६६ |
| गुलक | ... १२१७ | गृहावग्रहणी | ६१८ | गोधापदी | ... ८८६ | " | ... १९२८ |
| गुलम | ... ६६६ | गृहिन् | ... १३५९ | गोधि | ... १२५७ | गोवन्दनी | ... ७५९ |
| " | ... १२०५ | गृह्यक | ... १०७४ | गोधिका | ... ५१० | गोविन्द | ... ३७ |
| " | ... १६२९ | " | ... २०५७ | गोधूम | ... १७४२ | " | ... २५१७ |
| " | ... २६१९ | गुडुक | ... १३५० | गोनर्द | ... ९१२ | गोविपू | ... १८०७ |
| गुलिनी | ... ६६७ | गुह | ... ६०१ | गोनस | ... ४४६ | गोशाल | ... २९७५ |
| गुवाक | ... ९८६ | गैरिक | ... ६४८ | गोप | ... १४८१ | गोशार्ध | ... १३३६ |
| गुह | ... ७८ | " | ... २३५८ | " | ... १८२१ | गोष्ठ | ... ५८३ |
| गुहा | ... ६४४ | गैरेय | ... १९१४ | " | ... २५९४ | गोष्ठी | ... १३८२ |
| " | ... ८३४ | गो | ... १८३९ | गोपति | ... १८३१ | गोष्यद | ... २५२२ |
| गुध | ... २६४३ | " | ... २३८५ | गोपरस | ... १९१५ | गोसंख्य | ... १८२१ |
| गुणक | ... २२ | गोरुष्टक | ... ८४६ | गोपानसी | ... ६२२ | गोस्तन | ... १२८४ |
| गुणकेशधर | ... १३५ | गोकर्ण | ... १००८ | गोपायित | ... २२३६ | गोस्तनी | ... ८६३ |
| गुठ | ... २२०२ | " | ... १२४० | गोपाल | ... १८२१ | गोस्थानक | ... ५८३ |
| गुठपात्र | ... ४५२ | गोरुपां | ... ८१६ | गोपी | ... ८७२ | गोः | ... १८२६ |
| गुठपुत्र | ... १४९४ | गोरुल | ... १८२३ | गोपुर | ... ६२५ | " | ... १८३९ |
| गुध | ... १२०९ | गोश्रुरक | ... ८४६ | " | ... ९१२ | गौतम | ... ३० |
| गुल | ... २२५७ | | | | | गौधार | ... १००० |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|-----------|----------|------------|----------|----------|----------|-------------|----------|
| गौधेय | १००० | मावनू | २५४६ | घस्मर | २०६५ | च | |
| गौधेर | १००० | मास | १८१५ | घस | २१८ | च | २८१८ |
| गौर | ३०२ | माह | ५०९ | घाटा | १२५० | | ३८५९ |
| , | ३०५ | " | २२६५ | घण्टिक | १६६१ | चकोरक | १०५७ |
| , | २७१३ | माहिन् | ६९० | घात | १६९८ | चक्र | १०३२ |
| गौरी | ७२ | मीवा | १२४९ | घातुक | २०८१ | | १५७९ |
| , | १०८९ | मीम | २५१ | , | २११९ | " | १६२४ |
| गौष्ठीन | ५८३ | मैत्रेयक | १२८१ | घाम | ९८३ | | २६९९ |
| मिथ | ९७२ | मल्ल | २२४६ | घुटिका | १२१७ | चक्रकारक | ९०६ |
| मिथिव | १९२७ | मल्ल | २०१९ | घुन | २९३१ | चक्रपाणि | ३९ |
| मिथिन | २१९६ | मल्ल | ११८९ | घुर्णित | २०८९ | चक्रमर्दक | ९४२ |
| मिथिपण | ११३ | मल्ला | ११८९ | घृणा | ३९७ | चक्रण | ९६८ |
| मिथिल | ७२३ | मली | १७३ | , | २६१४ | चक्रवर्तिन् | १४७२ |
| " | ८०२ | | | , | २४३७ | चक्रवर्तिनी | ९५५ |
| मल | ३५० | घ | | घृणि | २१० | चक्रवाक | १०३३ |
| " | २२४६ | घट | १७७० | घुन | १८१० | चक्रवाल | १५६ |
| मह | २२३ | घटा | १६८१ | " | २४८६ | | ६३६ |
| " | २२६५ | घटीयन | १९८३ | घुष्टि | ९९१ | चक्रान्न | १०३४ |
| मह | २८०७ | घण्टापाटलि | ७२७ | घोटक | १५५४ | चक्राङ्गी | ८२० |
| महलीर | ११८३ | घण्टायम | ५९३ | धोला | १२५२ | चक्राणि | ४८० |
| महपति | ३०५ | घण्टारवा | ८६२ | धोमिन् | ९९२ | चक्रिन् | ४५१ |
| महीवृ | २०७८ | घन | १५९ | घोण्टा | ७२२ | चक्रिवर | १८६१ |
| माम | ६३१ | " | ३७० | " | ९८६ | चक्राभय | ४५२ |
| " | २६१६ | " | ३७९ | घोर | ४०१ | चक्रार् | १२५९ |
| मामणी | २४३३ | " | १६४९ | घोष | ६३३ | चक्रुष्या | १९११ |
| मामनध | १९४७ | " | २१५६ | घोषक | ८८३ | चक्रल | २१७४ |
| मामना | २३९४ | " | २५५६ | घातना | ३३४ | चक्रला | १६३ |
| मामिणा | ८३७ | घनरस | ४७६ | घात | १२५२ | चक्र | ७५१ |
| माम्य | ४४८ | घनसार | १३३४ | " | २२०४ | " | १०६० |
| माम्यपर्ण | १४६६ | घनावन | २५५४ | घातनार्थ | २९८ | घात | १०३३ |
| मावन् | ६३५ | घर्ष | ४२८ | घात | २२०४ | घटका | १०२४ |
| " | ६४० | " | २६१८ | | | " | |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|--------------|---------|----------------|---------|----------------|---------|---------------|---------|
| जट्टाकारिक | १६१३ | जनि ... | २७४ | जया ... | ७७९ | जयनिका ... | १२१४ |
| जट्टाल ... | १६१३ | जनी ... | ९५५ | जय ... | १६१५ | जह्नुनया ... | ५२८ |
| जटा ... | ६७० | " ... | १०९१ | जरण ... | १७७७ | जागरा ... | २२८७ |
| " ... | १२६८ | जनुम् ... | २७४ | जरत् ... | ११५८ | जागरितृ ... | २०८९ |
| " ... | २४१० | जन्तु ... | २७५ | जरद्वय ... | १८२८ | जागरुका ... | २०८९ |
| जटामांसी ... | ९१६ | जन्तुकल ... | ६९२ | जरा ... | ११५५ | जागर्या ... | २२८७ |
| जटिन् ... | ७१३ | जन्मन् ... | २७४ | जरायु ... | ११५० | जानुलिक ... | ४६० |
| जटिला ... | १०६ | जन्मिन् ... | २७५ | जरायुज ... | २१२५ | जाह्निक ... | १६१३ |
| जठर ... | १२२७ | जन्म ... | १४६८ | जल ... | ४७२ | जात ... | २७६ |
| " ... | २१७७ | " ... | १६७४ | जलजन्तु ... | ५०६ | जातरूप ... | १८९६ |
| " ... | २७१४ | " ... | २६५३ | जलधर ... | १५८ | जातवेदस् ... | १०६ |
| जड ... | १८२ | जन्तु ... | २७५ | जलनिधि ... | ४७० | जानावत्या ... | ११०६ |
| " ... | २१०१ | जप ... | १४४६ | जलनिर्गम ... | ४८० | जानि ... | २७६ |
| जडुल ... | ११७२ | जपापुष्प ... | ८०० | जलनीली ... | ५४३ | " ... | ७९३ |
| जटु ... | १३२३ | जम्पती ... | ११४९ | जलपुष्प ... | २९४१ | " ... | २४७० |
| जनुका ... | १७८६ | जम्बाल ... | ४८५ | जलप्राप ... | ५७७ | जातीकोर ... | ११३८ |
| जनुकृत् ... | ९५५ | जम्बीर ... | ६९७ | जलमुच् ... | १५९ | जातीफल ... | १३३८ |
| जतूका ... | १०३९ | " ... | ८०७ | जलम्बाल ... | ४४८ | जातु ... | २८५६ |
| " ... | ९५५ | जम्बु ... | ६८६ | जलाधार ... | ५१७ | जातुप ... | १९८७ |
| जडु ... | १२३० | जम्बुक ... | ९९८ | जलाशय ... | ५१७ | जातोक्ष ... | १८२९ |
| जनक ... | ११३० | " ... | २३४० | " ... | ९७७ | जातु ... | १२१८ |
| जनंगन ... | १९६७ | जम्बू ... | ६८६ | जलोच्छ्वास ... | ४८६ | जावाज ... | १९७० |
| जनता ... | २३३४ | जम्म ... | ६९७ | जलौकस् ... | ५११ | जामाट ... | ११३८ |
| जनन ... | २७४ | जम्ममेदिन् ... | ८६ | जलीका ... | ५११ | जामि ... | ३६१९ |
| " ... | १३५४ | जम्मल ... | ६९७ | जल्पाक ... | २०९६ | जाम्बव ... | ६८६ |
| जननी ... | ११३१ | जम्मीर ... | ६९७ | जल्पित ... | २२३९ | जाम्बूनद ... | १८९७ |
| जनपद ... | ५७३ | जय ... | ७७९ | जव ... | १२८ | जायक ... | १३२४ |
| जनयित्री ... | ११३१ | " ... | १६८७ | " ... | १६१४ | जाया ... | १०८५ |
| जन्धुति ... | ३२४ | " ... | २२७३ | जवन ... | १५५८ | जायाजीव ... | १९५२ |
| जनादन ... | ३८ | जयन्त ... | ९१ | " ... | १६१४ | जायापती ... | ११४९ |
| जनाश्रय ... | ६१० | जयन्ती ... | ७७९ | " ... | २३२६ | जायु ... | ११७४ |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|---------|----------|-----------|----------|--------------|----------|----------|----------|
| कार | ११४४ | जीवन | १४०९ | ज्ञान | २२२० | सहस्री | २९१४ |
| काल | ४९८ | जीवनी | ९३२ | ज्ञाति | २७९ | शय | ५०० |
| कालक | २७३६ | जीवनीया | ९३२ | ज्ञातसिद्धात | १४९७ | श्या | ८८२ |
| कालिक | ६८० | जीवन्तिका | ८१२ | ज्ञाति | ११४२ | श्याल | ७२७ |
| काली | ८८४ | जीवन्ती | ९३२ | ज्ञातृ | २०८५ | ज्ञातृति | २९४० |
| कालम | १९६१ | जीवा | ९३२ | ज्ञातेय | ११४३ | ज्ञातृक | ७२८ |
| कालि | २०५९ | जीवानु | १४०७ | ज्ञान | २८८ | जिण्डी | ७९८ |
| कालिस्त | २०६४ | जीवान्त | १९५६ | ज्ञानि | १४९६ | सिद्धिका | १०४३ |
| काली | ८२९ | जीविना | १४०९ | ज्ञा | ५६१ | सिद्धि | १०४३ |
| कालिक | १६२१ | जीविनका | १४०७ | ज्ञानि | १६१७ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | २६ | जगुष्ठा | ३३७ | ज्ञानि | २२६७ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | ८३ | जगु | २९३ | ज्ञानि | ११५९ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | १६२१ | जगु | १४०२ | ज्ञानि | २८०५ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | २१६६ | जगु | २९३ | ज्ञानि | २८१७ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | २६१७ | जगु | २९३ | ज्ञानि | २८१ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | ४५४ | जगु | २९३ | ज्ञानि | १०४४ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | १२५६ | जगु | ४३२ | ज्ञानि | ९३८ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | ११५८ | जगु | ४३२ | ज्ञानि | २७९५ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | १५९ | जगु | १६१६ | ज्ञानि | १७७ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | ७८५ | जगु | १६२१ | ज्ञानि | १४९५ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | २४५१ | जगु | १८१८ | ज्ञानि | २२४ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | १४७२ | जगु | १६१५ | ज्ञानि | ८८४ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | ११५८ | जगु | १६१६ | ज्ञानि | ११८५ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | २२६७ | जगु | १७३ | ज्ञानि | २३२६ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | १३०४ | जगु | २०३७ | ज्ञानि | १७६ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | १९३ | जगु | २१५६ | ज्ञानि | ११३ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | १४०६ | जगु | १३२६ | ज्ञानि | २०२ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | ७३६ | जगु | २८६७ | ज्ञानि | २८५२ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | २३३ | जगु | ११५९ | ज्ञानि | ६४३ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | १०५७ | जगु | १३६३ | ज्ञानि | १७७ | सिद्धि | १०४३ |
| कालि | ४७३ | जगु | २२२० | ज्ञानि | १७७ | सिद्धि | १०४३ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|----------|----------|-----------|----------|----------|----------|--------------|----------|
| त. | | तनु | ... १५९५ | तमिन्न | ... ४४३ | तर्मन् | ... १३९० |
| तक्र | ... १८१३ | तनू | ... १२१५ | तमिन्ना | ... २२४ | तर्प | ... ४१७ |
| तक्षक | ... २३४३ | तनूकृत | ... २२२२ | तमी | ... २२३ | " | ... १८१७ |
| तक्षन् | ... १९४६ | तनूनपात् | ... १०६ | तमोमुद् | ... २५१३ | तल | ... १६३६ |
| तट | ... ४८१ | तनूरुद् | ... १०५९ | तमोपह | ... २८१२ | " | ... २७३९ |
| तटिनी | ... ५२६ | " | ... १२७१ | तरक्षु | ... ९९० | तलिन | ... २५८८ |
| तडाग | ... ५२२ | तन्नु | ... १९८४ | तरङ्ग | ... ४७७ | तरप | ... २५९६ |
| तडित् | ... १६३ | तन्नुम | ... १७४१ | तरङ्गिणी | ... ५२६ | तल्लज | ... २६८ |
| तडित्वत् | ... १५८ | तन्नुवाय | ... १०१३ | तरणि | ... २०४ | तट्ट | ... २२२२ |
| तण्डक | ... २९६० | " | ... १९४१ | " | ... ४८७ | तन्कार | ... १९७७ |
| तण्डुल | ... ८६१ | तन्त्र | ... २७०५ | " | ... ७९५ | ताडव | ... ३८१ |
| तण्डुलीय | ... ९२० | तन्त्रक | ... १२९७ | तरपण्य | ... ४८९ | " | ... २९६३ |
| तन | ... ३६९ | तन्त्रिका | ... ८१३ | तरल | ... १२७८ | तात | ... ११३० |
| " | ... २१९६ | तन्त्री | ... ४३५ | " | ... २१७४ | तान्त्रिक | ... १४९७ |
| तनम् | ... २८५४ | " | ... २६८७ | तरला | ... १८०६ | तापस | ... १४३६ |
| तत्काल | ... १५२५ | तप | ... २५२ | तरम् | ... १२७ | तापसतर | ... ७४० |
| तन्त्र | ... ३७९ | तपन | ... २०६ | " | ... १६७१ | तापिच्छ | ... ७८४ |
| तन्पर | ... २०४२ | " | ... ४६२ | तरस | ... ११९९ | तामरस | ... ५४७ |
| तथा | ... २८६६ | तपनीय | ... १८९५ | तरग्विन् | ... १६१४ | तामलनी | ... ९०२ |
| " | ... २८९४ | तपन् | ... २४४ | " | ... २५९० | ताम्वूलवल्ली | ... ८८८ |
| तथागत | ... २५ | " | ... २७९९ | तरि | ... ४८७ | ताम्वूली | ... ८८८ |
| तथ्य | ... ३५४ | तपस्य | ... २४५ | तरु | ... ६५८ | ताम्रक | ... १९०० |
| तद् | ... २८५५ | तपस्विन् | ... १४३६ | तरुण | ... ११५७ | ताम्रकणी | ... १५४ |
| तदा | ... २८९३ | तपस्विनी | ... ९१६ | तरुणी | ... १०९० | ताम्रकटुक | ... १९४५ |
| तदाह | ... १५२५ | तप्त | ... १९७ | तर्क | ... २८२ | ताम्रचूड | ... १०२२ |
| तदानीम् | ... २८९३ | तप्तम् | ... २७३ | तर्कारी | ... ७७९ | तार | ... ३६६ |
| तनय | ... ११२८ | " | ... ४४३ | तर्जनी | ... १२३६ | " | ... २६६७ |
| तनु | ... १२१५ | " | ... २७९८ | तर्पक | ... १८२९ | तारकाजित् | ... ७९ |
| " | ... २१४७ | तमस्विनी | ... २२३ | तर्क | ... १७७४ | तारका | ... १८६ |
| " | ... २१५६ | तमाल | ... ७८४ | तर्पण | ... १३८० | " | ... १२५८ |
| " | ... २५६० | " | ... २९६१ | " | ... १८१९ | तारा | ... १८६ |
| | | तमालपत्र | ... १३१० | " | ... २२५८ | तारण्य | ... ११५३ |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|---------------|----------|-------------|----------|--------------|----------|------------|----------|
| साक्ष्य | ५७ | तिमित | २२३५ | तीव्र | १३३ | तुरासाह | ८७ |
| , | २६२६ | तिमिर | ४४३ | तीव्रवेदना | ४६५ | तुरीय | १२२० |
| साक्ष्यशैल | १९१० | तिरस् | २८४८ | तु | २८१९ | तुरुष्क | १३३० |
| साक्ष | ३८० | " | २८६१ | | २८५९ | तुला | १८८० |
| " | ९८१ | तिरस्करिणी | १३१४ | | २८७९ | तुलाकोटि | १२९३ |
| , | १३४० | तिरस्क्रिया | ४०६ | तुङ्ग | ६९९ | तुल्य | २००२ |
| , | १९१३ | तिरीट | ७१४ | " | २१६४ | तुल्यपात्र | १८१६ |
| साक्षपत्र | १२८० | " | २९५५ | तुङ्गी | ९२७ | तुवर | २९४ |
| साक्षपर्णी | ८९४ | तिरोधान | १७० | तुङ्ग | २१३७ | तुवरिना | ०१० |
| साक्षमूर्त्ति | ८८६ | तिरोहित | १६९१ | तुङ्ग | १३५१ | तुव | ७६५ |
| साक्षुत्प | १३५३ | तिर्यक् | २०९३ | तुङ्गिकेरी | ८८० | " | १७५१ |
| साक्षाद् | ४७ | तिष्ठ | ७२८ | " | ९२६ | तुषार | १८० |
| साक्षी | ९०२ | " | ११७३ | तुल्य | १९०९ | " | १८३ |
| " | ९८८ | " | १२०४ | तुल्य | ८३८ | तुल्य | १९ |
| साक्ष | १२५२ | " | १३१९ | " | ८९९ | तुल्य | १८० |
| साक्ष | २८२८ | " | १७७२ | तुल्यजन | १९०८ | तुल्य | १६४४ |
| तिष्ठ | २९५ | तिष्ठान्क | ११७२ | तुल्य | १२२७ | तुली | १६४४ |
| तिष्ठ | ९५८ | तिष्ठाना | १३३७ | तुल्यपरिभ्रम | १९६५ | तुलीर | १६४४ |
| तिष्ठान | ६९८ | तिष्ठविज्ञ | १७४४ | तुल्य | ११६३ | तुल्य | ७३१ |
| तिष्ठ | २१५ | तिष्ठपेय | १७४४ | " | ११९५ | तुल्य | २६६५ |
| तिष्ठ | १७५८ | तिष्ठिष्ठ | ४४७ | तुल्य | ११६३ | तुल्य | १२९ |
| तिष्ठिष्ठ | ४०९ | तिष्ठ | १७४१ | " | ११९५ | तुल्य | ७३३ |
| तिष्ठिष्ठ | २०८७ | तिष्ठ | ७१४ | तुल्य | ११६३ | " | १९१८ |
| तिष्ठिष्ठ | १०५७ | तिष्ठ | १८८ | तुल्य | ९०३ | तुल्य | १९९४ |
| तिष्ठिष्ठ | २१७ | तिष्ठ | २६२९ | तुल्य | १९४१ | तुल्यजीव | २१०३ |
| तिष्ठिष्ठ | ७०१ | तिष्ठ | ७६३ | तुल्य | १६८० | तुल्य | २१०३ |
| तिष्ठिष्ठ | ७३५ | तिष्ठ | २१५ | तुल्य | ९६० | तुल्य | २८६७ |
| तिष्ठिष्ठ | १७४७ | तिष्ठ | १९०३ | तुल्य | १५५४ | तुल्य | २८६७ |
| तिष्ठिष्ठ | ७३५ | तिष्ठ | २४४१ | तुल्य | १५५४ | तुल्य | ४१६ |
| तिष्ठिष्ठ | २९११ | तिष्ठ | ७१० | तुल्य | १५५४ | तुल्य | ९८३ |
| तिष्ठिष्ठ | ५०५ | तिष्ठ | ४८१ | तुल्य | १४१ | तुल्य | १७५६ |
| तिष्ठिष्ठ | ५०६ | तिष्ठ | २५०० | तुल्य | २३५३ | तुल्य | ९६९ |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|--------------|----------|-----------|----------|-------------|----------|------------|----------|
| दक्षिणेर्मन् | १९७६ | दमघ | २२५५ | दशमिन् | ११५९ | दारा | १०८५ |
| दक्षिण | २०३५ | दमिन | २२१९ | दशमीरिध | २५०९ | दारद | ४५९ |
| दरव | २२२२ | दसुग्व | १११ | दशा | १३०१ | दारित | २९२५ |
| दग्धिका | १८३ | दस्यनी | ११४९ | " | २७६८ | दारु | ६७४ |
| दण्ड | २०७ | दग्म | ४२१ | दयानीकिनी | १६३० | " | ७५५ |
| " | १५०८ | दग्मोक्ति | ९४ | दस्यु | १४८९ | दारण | ४०१ |
| " | १५०९ | दग्म | १८३० | " | १९७७ | दारहरिद्रा | ८५२ |
| " | २४१८ | दवा | ३९८ | दस | १०२ | दारहलक | १७७४ |
| दण्डधर | ११७ | दवापु | २०५४ | दहन | ११० | दावापाठ | १०२१ |
| दण्डाग्नि | २१० | दधिग | २१३१ | दायापणी | १८७ | दाविका | ८८७ |
| दण्डविस्तम्भ | १८५५ | दर | ४०३ | दायाप्य | १०३० | दार्ग | ८५२ |
| दण्डाहन | १८१२ | " | २७०४ | दाडिम | ७७७ | दाव | २७४७ |
| दहुम | ९४२ | दरत् | २९१२ | " | २९७८ | दाविज | ५३८ |
| दहुग | ११९१ | दरिद्र | २१२२ | दाडिमपुष्पक | ७४६ | दाय | ४९७ |
| दहुरोगिन् | ११९१ | दरी | ६४४ | दाण्डपाला | २९०६ | दायपुर | ९२१ |
| दधिरथ | ६९० | दहुर | ५१४ | दात | २२३१ | दाघ | १९६३ |
| दधिरक्त | ६९१ | दधैर | ५० | दात्युह | १०२९ | दाघी | ७९७ |
| दपुन | २३ | दपन | १३५३ | दात | १७३२ | दाघीधम | २९४९ |
| दन् | १२५५ | दल | ९८० | दान | १४१० | दाघेय | १९६२ |
| दग्गपावन | ७४७ | दनि | १७७४ | " | १५०८ | दाघेर | १९६२ |
| दग्ग ताग | १५४७ | दनीरर | ४५३ | " | १५४१ | दिग्गधर | २१०२ |
| दग्गपठ | ६९१ | दध | २३१ | दानय | २३ | दिग्ध | १६४३ |
| " | ६९७ | " | १४४८ | दानकारि | १७ | " | २२४ |
| दग्गगग | ९२९ | दधैर | १४७९ | दानयोग्य | २०३६ | दित | २२३१ |
| दग्गागल | १५३५ | दधन | २३११ | दान | १४३७ | दिभिगुन | २४ |
| दग्गिका | ९३७ | दल | ६७६ | " | २२१२ | दिभिपु | १११९ |
| दग्गिन् | १५३५ | दव | २७४७ | दानित | २२५५ | दिभिपु | १११९ |
| दग्गदर | ४५३ | दविष्ठ | २१६२ | दानिन | २१०४ | दिग | २१८ |
| दध | २१४७ | दवीग | २१६२ | दात | १८५३ | दिगाग | २२० |
| दग | १५०९ | दगन | १४५५ | दामनी | १८३ | दिक् | १२ |
| " | २२५५ | दग्गनयग | १२५३ | दामोदर | ३६ | " | १४३ |
| | | दग्गन | २७ | दागद | २५१२ | दिग्ध | २१८ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|------------------|---------|----------------|---------|------------------|---------|----------------|---------|
| दिवस्वपति ... | ८३ | दुःख ... | २९४० | दुष्टुन ... | २६१ | देवकीनन्दन ... | ४१ |
| दिवा ... | २८६० | दुःपनन् ... | २८७७ | दुष्टु ... | २८८६ | देवकुमुन ... | १३२४ |
| दिवाकर ... | २०० | दुःस्पर्ध ... | ८३१ | दुष्पत्र ... | ९०५ | देवज्ञानक ... | ५२१ |
| दिवाकीर्ति ... | १०४८ | दुःस्पर्शा ... | ८३६ | दुष्पधर्पिणी ... | ८७६ | देवच्छन्द ... | १२८३ |
| , ... | १९६७ | दुकूल ... | १३०० | दुहितृ ... | ११२९ | देवजग्धक ... | ९८१ |
| दिविपद् ... | १५ | दुग्ध ... | १८०८ | दूत ... | १५०० | देवता ... | १८ |
| दिवौकम् ... | १४ | दुग्धिका ... | ८४८ | दूती ... | ११०७ | देवनाड ... | ७८६ |
| , ... | २७८८ | दुन्दुभि ... | ३७३ | दूत्य ... | १५०० | देवदात ... | ७५६ |
| दिव्योपपादुक ... | २१२५ | , ... | २६०६ | दून ... | २२२९ | देवशय्य ... | २०९२ |
| दिश ... | १४६ | दुरध्व ... | ५८९ | दूर ... | २१६१ | देवन ... | २०१९ |
| दिश्य ... | १४८ | दुरालभा ... | ८३२ | दूरदर्शिन ... | १३६५ | , ... | २५५९ |
| दिष्ट ... | २१६ | दुरित ... | २६१ | दूर्वा ... | ९६४ | देवहृत्भ ... | ६९९ |
| , ... | २७० | दुरोदर ... | २६६७ | दूपिका ... | १२०७ | देवभूय ... | १४५६ |
| , ... | २४०४ | दुर्ग ... | १५०२ | दूप्या ... | १३१३ | देवनाटुक ... | ५८१ |
| दिष्टान्न ... | १६९९ | दुर्गन ... | २१२२ | दूप्या ... | १५५१ | देवर ... | ११३७ |
| दिष्टया ... | २८६८ | दुर्गति ... | ४६१ | दृढ ... | १३३ | देवल ... | १९५० |
| दीक्षित ... | १५६८ | दुर्गन्ध ... | ३०० | , ... | २१७६ | देवसभा ... | ९६ |
| दीदिवि ... | १८०३ | दुर्गसंचर ... | २३०० | , ... | २४२४ | देवाजीव ... | १९५० |
| दीधिति ... | २११ | दुर्गा ... | ७४ | दृढसंधि ... | २१७५ | देवी ... | ३८८ |
| दीन ... | २१२२ | दुर्जन ... | २११८ | दृति ... | २९३२ | , ... | ८१५ |
| दीप ... | १३५० | दुर्दिन ... | १६८ | दृव्य ... | २१९६ | , ... | ९१४ |
| दीपक ... | २३५७ | दुर्दुम ... | ९४४ | दृग ... | १२६० | देवृ ... | ११३७ |
| दीप्ति ... | २१२ | दुर्गान्न ... | ११८२ | , ... | २७६९ | देश ... | ५७३ |
| दीप्य ... | ८७१ | दुर्गान्न ... | ५१६ | दृपद् ... | ६४० | देशरूप ... | १५१५ |
| दीर्घ ... | २१६२ | दुर्वल ... | ११६१ | दृष्ट ... | १५२७ | देह ... | १०१५ |
| दीर्घाशिका ... | ५१६ | दुर्मनस ... | २०४० | दृष्टरजस् ... | १०९० | देहली ... | ६१८ |
| दीर्घार्थिन् ... | १३६५ | दुर्मनस ... | २०९७ | दृष्टांत ... | २४५९ | दैतेय ... | २३ |
| दीर्घष्ट ... | ४५३ | दुर्वर्ण ... | १८९९ | दृष्टि ... | १२६० | दैत्य ... | २३ |
| दीर्घवृत्त ... | ७६२ | दुर्विध ... | २१२२ | , ... | २४११ | दैत्यगुरु ... | १९४ |
| दीर्घनृत्त ... | २०५८ | दुर्हृद् ... | १४८८ | देव ... | १३ | दैत्या ... | ८९४ |
| दीर्घिका ... | ५२३ | दुश्चयन ... | ८७ | , ... | ३८७ | दैत्यारि ... | ३७ |
| दुःख ... | ४६६ | | | | | दैर्घ्य ... | १३०२ |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|----------------|----------|-------------|----------|--------------|----------|-----------|----------|
| दैव | २७० | द्रविण | २४३९ | द्रौणिव | १७२६ | द्रैण | १४८ |
| दैव(नीच) | १४५३ | " | २९३९ | द्रन्द | १७६४ | द्रव्य | २११४ |
| दैवह | १४९५ | द्रव्य | १८८६ | " | २७६० | द्रव | १७०४ |
| दैवहा | १११३ | " | ०६७४ | द्रवातिग | १४४१ | द्रैव | १५७४ |
| दैवत | १८ | द्राक् | ०८५२ | द्रादशात्मन् | २०० | द्रैमातुर | ७५ |
| " | २५६ | द्राक्षा | ८६३ | द्रापर | २८३ | द्रवष्ट | १९०१ |
| दैवत(भक्षोराग) | २५६ | द्रागिष्ठ | २२४९ | " | २६५९ | ध | |
| दोला | ८३८ | द्राविण | २१८ | द्रार | ६२४ | धट | ७९२९ |
| " | १५७३ | द्रु | ६५९ | द्रार | ६२४ | धमूर | ८०३ |
| दोपश | १४६२ | द्रुकिन्मि | ७५५ | द्रारपा | १४७९ | धन | १८६६ |
| दोपा | २८६० | द्रुपन | १६४९ | द्रारथ | १४७९ | धननय | १०५ |
| दोपैवद्वद् | २११७ | द्रुण | १०१५ | द्रारिथन | १४७९ | धनद | १३९ |
| दोग् | १२३३ | द्रुणी | १०१५ | द्रिगुणावृण | १४७५ | धनहरी | ९०५ |
| दोहद | ४१५ | | ०९१२ | द्रिज | १०५२ | धनाधिप | १८६ |
| दोहदवनी | १११६ | द्रुत | १२८ | | २३९४ | धनिन् | २०४ |
| यनि | १७९ | | २२०३ | द्रिजराज | १७३ | धनिष्ठा | १८९ |
| | २१२ | | २२२४ | द्रिजा | ८८८ | धनुपर | १६०५ |
| यमणि | २०४ | द्रुम | ६५९ | द्रिजाति | १३६० | धनुपट | ७१८ |
| युम | १८८७ | द्रुमामय | १३२३ | द्रिजिद्ध | २६०१ | धनुम्भ | १६०५ |
| युन | २०१८ | द्रुमरपत्र | ७६८ | द्रिनीवा | १०८४ | धनुग | १६३३ |
| युनवारण | २०१७ | द्रुपय | १८७६ | द्रिय | १५३५ | धन्य | २०० |
| युनट्ट | २०१६ | द्रुमिज | ३३ | द्रियाय | १५२१ | धनम् | ५६० |
| यो | १२ | द्रोग | १८८३ | द्रिरद | १५३५ | धनम् | १६३३ |
| " | १४४ | | २४३२ | द्रिरेव | १०४६ | धनयाव | ८३१ |
| योप | ०१३ | द्रोनका | १०२८ | द्रिए | १४८९ | धनिर् | १६० |
| द्रुष | १८०९ | द्रोणशीरा | १८५० | द्रिवर | १४८८ | धमा | ९०३ |
| द्रुष | ४३६ | द्रोगदुग्धा | १८५० | द्रितायगी | १८४२ | धमनि | १२३ |
| " | १६८९ | द्राणी | ४८९ | द्रिगी | ६८४ | धमनी | ९०८ |
| द्रुम्भी | ८३३ | | ८३८ | द्राय | ४८३ | | १००३ |
| द्रुमिज | १६७१ | द्रोहनिगा | ०८४ | द्रोपनी | ५२७ | धमिगा | १२६७ |
| " | १८८७ | | | नियम् | ९९० | धर | ६३३ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|------------------|---------|------------------|---------|--------------|---------|-----------------|---------|
| धरणि ... | ५६१ | धामार्गव ... | ८२५ | धृत ... | २२३८ | धृता ... | ८७९ |
| धरा ... | ५६१ | ” ... | ८८३ | धृपायित ... | २०२९ | ” ... | १४०२ |
| धरित्री ... | ५६१ | धाट्या ... | १३९६ | धृपित ... | २२२९ | ध्वज ... | १६६६ |
| धर्म ... | २६२ | धारणा ... | १५१९ | धूमकेतु ... | २४५१ | ध्वनिनी ... | १६२३ |
| ” ... | ३१६ | धारा ... | १५६५ | धूमयोनि ... | १७९ | ध्वनि ... | ३५५ |
| ” ... | १४६७ | धाराधर ... | १५८ | धूमल ... | ३०८ | ध्वनित ... | २२१३ |
| ” ... | २६१२ | धारासंपात ... | १६७ | धूम्या ... | २३३३ | ध्वस्त ... | २२३७ |
| धर्मचिन्ता ... | ४१८ | धार्तराष्ट्र ... | १०३६ | धूम्याट ... | १०२० | ध्वत्तु ... | १०२८ |
| धर्मध्वजित् ... | १४५९ | धावनी ... | ८३४ | धूम्र ... | ३०८ | ” ... | २७७४ |
| धर्मपत्तन ... | १७७८ | धिक् ... | २८१६ | धूर्जटि ... | ६५ | ध्वान ... | ३५५ |
| धर्मराज ... | २५ | धिकृत ... | २१०३ | धूर्त ... | ८०३ | ध्वस्त ... | ४४३ |
| ” ... | ११५ | ” ... | २२१२ | ” ... | २०१६ | न. | |
| ” ... | २३९६ | धिपण ... | १०२ | ” ... | २११९ | | |
| धर्षिणी ... | १०९४ | धिपणा ... | २७८ | धूर्वह ... | १८३६ | न ... | २८७१ |
| धव ... | ११४४ | धिष्य ... | २६४५ | धूर्ति ... | १६६४ | नकुलेष्टा ... | ८७८ |
| ” ... | २७४८ | धी ... | २७८ | धूसर ... | ३०३ | नक्तक ... | १३०३ |
| धवल ... | ३०२ | धीन्द्रिय ... | २९३ | धृति ... | २४८३ | नक्तम् ... | २८६० |
| धवल्ल ... | १८४१ | धीमत् ... | १३६४ | धृष्ट ... | २०७५ | नक्तमाल ... | ७४३ |
| धाननी ... | ८९७ | धीमनी ... | १०९८ | धृष्णज् ... | २०७५ | नक्त ... | ५०९ |
| ” ... | २९०९ | धीर ... | १३२३ | धेनु ... | १८४८ | नक्षत्र ... | १८६ |
| धानु ... | ६४८ | ” ... | १३६३ | धेनुका ... | १५४० | नक्षत्रमाला ... | १२८६ |
| ” ... | २४६५ | धीवर ... | ४९७ | ” ... | २३२४ | नक्षत्रेश ... | १७४ |
| धानुपुष्पिका ... | ८९७ | धीशक्ति ... | २३०० | धेनुप्या ... | १८५० | नक्ष ... | ९०९ |
| धानृ ... | ३३ | धीसचिद ... | १४७६ | धेनुक ... | १८२७ | ” ... | १०३९ |
| धानी ... | २६८८ | धुत ... | २१९८ | धेनुक ... | १८२७ | नक्षत्र ... | १२३९ |
| धाना ... | १८०१ | धुनी ... | ७०६ | धेनुक ... | १८२७ | नक्षत्र ... | २३७७ |
| धानुष्क ... | १६०५ | धुरंधर ... | १८३६ | धेनुक ... | १८२७ | नक्षत्र ... | ५०४ |
| धान्य ... | १७४९ | धुरीण ... | १८३६ | धेनुक ... | १८२७ | नैगाकम् ... | १०५४ |
| धान्यक ... | १७८२ | धुर्य ... | १८३६ | धेनुक ... | १८२७ | नक्षत्र ... | २१०७ |
| धान्याम्ब ... | १७८५ | धुवित्र ... | १३९९ | धेनुक ... | १८२७ | नक्षत्र ... | २०१३ |
| धान्य ... | १३६४ | धुर् ... | १५७८ | धेनुक ... | १८२७ | नक्षत्र ... | १०८९ |
| ” ... | २५८२ | | | धेनुक ... | १८२७ | नक्षत्र ... | ७६१ |

| शब्दः | पृष्ठः | शब्दः | पृष्ठः | शब्दः | पृष्ठः | शब्दः | पृष्ठः |
|----------|--------|-----------|--------|-----------|--------|-----------|--------|
| नट | १०५३ | नमस्या | १४२१ | नतिन | १८३३ | नादिपी | ७०९ |
| नटन | ३८१ | नमस्विन | २२२७ | नस्योन | १८३३ | " | ७२१ |
| नगी | २०० | नमुचिगुदा | ८६ | नहि | २८७१ | " | ७३० |
| नह | ०३३ | नय | २२६७ | नाह | ११ | " | ८८४ |
| " | २९६१ | नयन | १३५९ | " | २३३८ | नावा | ७८८० |
| नद्या | २८३ | नर | १०७५ | नाहु | ५८५ | " | ७८५४ |
| नह्वर | ५७३ | नरक | ३६१ | नाहुळी | ८७७ | नावाक्य | २२११ |
| नह्वर | ५७३ | नरबालन | १३७ | नाग | ३३५ | नालीकट | ७१०० |
| नत | २१६६ | नरतकी | ३७१ | " | १५३६ | नालीवादिग | २१०० |
| नमोपिक | ११६३ | नरतन | ३८१ | " | १९१७ | नादिन | १९४८ |
| नदी | ५९५ | नर्मदा | ५३१ | " | २१३३ | नाभि | १५८० |
| नदीमरुत | ५८१ | नान | ३२६ | " | ७३७७ | " | ७६०८ |
| नदीखर | ७३८ | नहपुत्र | १३३ | नागनेमर | ७७८ | " | २९१३ |
| नाभी | १०९१ | नहड | २७७ | नागभिक्षा | १९२२ | नाम | ९८८८ |
| नगाट | ११३२ | नहमीन | ५०३ | नागवला | ८८२ | नामपेय | ३२६ |
| ननु | २८३२ | नहिन | ५३५ | नागरान्त | २३७७ | नामग | ३७६ |
| " | २८७६ | नहिनी | ५३३ | नागर | १७११ | नाय | २२६७ |
| नादक | ५६ | नही | २०७ | नागरकु | ७७७ | नायक | २०३६ |
| नादन | १० | नहव | ५९२ | नागनेक | ३३० | नारक | ३६१ |
| नाहिवृथ | २०३ | नह | ७१७९ | नागवनी | ८८८ | नाराक | १६३२ |
| नागावर्ग | ६१३ | नहदुल | ५५३ | नागवनी | ११६ | नाराधी | १९९३ |
| नहुनर | ११५२ | नहनीग | १८१० | नागवनी | ११६ | नारावण | १५ |
| नही | ११३९ | नहमाधिका | ७९३ | नागवनी | ५८ | नारावणी | ८५० |
| नाम | १३३ | नहमूनिषा | १८३८ | नागवनी | ५८ | नारी | १०७७ |
| " | २३७ | नयावर | १२९७ | नाहिका | १७७५ | नाज | ५५० |
| " | २८०० | नवीन | ७१७० | नाहिकन | १९३३ | " | १७५० |
| नमपेगम | १०५५ | नवीन | ७१७० | नाही | १२०३ | नाना | ५५० |
| नमर | १३८ | नवीन | १८१० | " | १०५ | नाहिके | ९८५ |
| नमरुत | १३५ | नह | २१७९ | " | २३३० | नाहिक | ३९७ |
| नमर | २८८५ | नह | १६९१ | नानीन | ११८१ | नाह | ३८७ |
| नमरि | २३३७ | नहनेम | ३३८ | नामर | २०५६ | ना | १००० |
| नामनी | २३३ | नहति | १३५८ | नाम | ३५६ | नाम | १०३ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|---------------|---------|----------------|---------|--------------|---------|-----------------|---------|
| नासा ... | ६१९ | निकृष्ट ... | २२३२ | निद्राण ... | २०९० | नियुत ... | २९४२ |
| ” ... | १२५२ | निकेतन ... | ६०१ | निद्रालु ... | २०९० | नियुद्ध ... | १६८० |
| नासिका ... | १२५२ | निकोचक ... | ७०६ | निघन ... | १७०० | नियोज्य ... | १९६३ |
| नास्तिकता ... | २८४ | निक्षण ... | ३५९ | ” ... | २५८० | निर ... | २८४१ |
| निःशलाक ... | १५१२ | निक्षण ... | ३५९ | निधि ... | १४३ | निरन्तर ... | २१५६ |
| नि शेष ... | २१५४ | निखिल ... | २१५४ | निधुवन ... | १४६६ | निरय ... | ४६१ |
| नि शोध्य ... | २१३६ | निगड ... | १५५० | निध्यान ... | २३११ | निरर्गल ... | २१९१ |
| नि श्रेणि ... | ६०८ | निगद ... | २०७४ | निन्द ... | ३५५ | निरर्थक ... | २१२७ |
| नि श्रेयस ... | ०८९ | निगम ... | ५९५ | निनाड ... | ३५५ | निरवग्रह ... | २०५५ |
| निःपमम् ... | २८७७ | ” ... | ०६१४ | निन्दा ... | ३३७ | निरमन ... | २३१२ |
| नि सरण ... | ६३० | निगाड ... | ०२७४ | निप ... | १७७० | निरस्त ... | ३५० |
| नि स्य ... | २१२२ | निगार ... | २३२३ | निपठ ... | २३०७ | ” ... | १६४३ |
| निकट ... | २१५७ | निगाल ... | १५६३ | निपाठ ... | २३०७ | ” ... | २१०५ |
| निकर ... | १०६६ | निग्रह ... | २२७६ | निपातन ... | २३०३ | निराकरिष्णु ... | २०८४ |
| निकर्षण ... | ६३० | निघ ... | २३०१ | निपान ... | ५१८ | निराकृत ... | २१०५ |
| निक्रप ... | १९९३ | निघाम ... | १८१८ | निपुण ... | २०३२ | निराकृति ... | १४५९ |
| निकपा ... | २८६२ | निघ्न ... | २०५७ | निबन्ध ... | ११८३ | ” ... | २२१२ |
| ” ... | ०८८७ | निघुल ... | ७७० | निर्वहण ... | १६९२ | निरामय ... | ११८८ |
| निकपात्मज ... | ११९ | निचोल ... | १३०६ | निभ ... | २००४ | निरीश ... | १७३३ |
| निकाम ... | १८०० | निज ... | २३९९ | निभृत ... | २०७४ | निर्गति ... | ४६४ |
| निकाय ... | १०७२ | नितम्ब ... | १०२२ | निमय ... | १८६७ | निर्गुणदी ... | ७८५ |
| निकार्य ... | ६०३ | नितम्बिनी .. | १०८० | निमेष ... | २३६ | ” ... | ७८९ |
| निकार ... | २२७९ | नितान्त ... | १३३ | निम्न ... | ४९६ | निर्ग्रन्थन ... | १६९४ |
| ” ... | २३२२ | नित्य ... | १३१ | निम्नगा ... | ५२७ | निर्घोष ... | ३५६ |
| निकारण ... | १६९२ | ” ... | २१६९ | निम्न ... | ७७३ | निर्जर ... | १३ |
| निकुञ्चक ... | १८८३ | निदाघ ... | २५२ | निम्बतरु ... | ७०० | निर्झर ... | ६४३ |
| निकुञ्ज ... | ६४९ | ” ... | ४२८ | निवृत्ति ... | २७० | निर्णय ... | २८३ |
| निकुम्भ ... | ९३७ | निदान ... | २७१ | नियन्तृ ... | १५८६ | निर्णजक ... | १९४९ |
| निकुरम्ब ... | १०६८ | निदिग्ध ... | २२०२ | नियम ... | २८६ | निर्देश ... | १५१८ |
| निकृत ... | ०१०६ | निदिग्धिका ... | ८३५ | ” ... | १४२७ | निर्भर ... | १३२ |
| ” ... | २११७ | निदेश ... | १५१८ | ” ... | १४५० | निर्मद ... | १५३९ |
| निकृति ... | ४२२ | निद्रा ... | २३४ | नियामक ... | ४९१ | | |

| शब्द | पङ्क्तिः | शब्द | पङ्क्तिः | शब्द | पङ्क्तिः | शब्द | पङ्क्तिः |
|-----------|----------|-----------|----------|-----------|----------|----------------|----------|
| निर्मुक्त | ४४९ | निवेश | १५११ | निधुर | ३४८ | नीजोद्भव | १०५४ |
| निर्माक | ४५६ | निष्ठा | २२२ | " | २१३६ | नीघ्न | ६२१ |
| निर्माण | १५४४ | " | १७८८ | निष्ठेय | २४२४ | नीप | ७३७ |
| निघातन | ७५३४ | " | २०५४ | निष्ठेयन | २३२५ | नीर | ४७ |
| निर्घण | १४१२ | निघात | ६०२ | निष्ठेयन | २१२९ | नीर | १०४ |
| निघर्जन | ३३११ | निघापति | १७२ | निष्ठेयति | २४२५ | नीरपण्ड | १०४३ |
| निर्वहण | ३९१ | निघारवा | १७८८ | निष्ठात | २०३२ | " | २४१४ |
| निर्वाण | २८७ | निमित्त | २३०६ | निष्ठाव | २२१५ | निष्ठा | १०१४ |
| " | १४४२ | निमीध | ७२६ | निष्ठाव | २२२५ | नीललोहित | ६५ |
| " | २२१६ | निमीधनी | २२२ | निष्ठाव | २२२७ | नील | १२४० |
| निघात | २२१९ | निषाव | ४८३ | निष्ठाव | २२२४ | नीलावर | ४७ |
| निवाद | ३३६ | निष्कनी | ६२८ | निष्ठाव | २२२४ | नीलाग्रपुत्रमय | ७४० |
| " | ४५१४ | निष्क | १६४४ | निष्ठाव | १७९७ | नीलिका | ४८९ |
| निष्कपण | १६९५ | निष्कद्वि | १६७ | निष्ठाव | ३३७ | नीलिका | ८३८ |
| निषाव | २०५० | निष्क | ५९७ | निष्ठाव | ३३०१ | नीली | ८३७ |
| निर्वाधन | १६९४ | निष्क | ७८५ | निष्ठाव | २१६३ | नीला | २२०६ |
| निर्गुण | २२१७ | निष्क | ६३८ | निष्ठाव | १६० | नीलर | १७१६ |
| निर्गुण | २००६ | निष्क | ३६३ | निष्ठाव | १६४५ | नीली | १८६६ |
| " | २२८९ | " | १२६८ | निष्ठाव | १८०५ | " | २४५० |
| " | ३७६५ | निष्कादि | १७८५ | निष्ठाव | ३५६ | नीलर | ५७३ |
| निष्कपण | ४४१ | निष्क | १५२३ | निष्ठाव | ३५६ | नीलर | १३१० |
| निष्क | २८०८ | निष्क | २३६२ | निष्ठाव | १६०५ | नीलर | १८० |
| निष्क | २२८३ | निष्क | १११६ | निष्ठाव | ५१० | नीलर | १८११ |
| निष्क | ३९८ | निष्क | २१०३ | निष्ठाव | १६९१ | नीलर | १८१ |
| निष्क | ३५६ | निष्क | ६५१ | निष्ठाव | १२६१ | नीलर | २१९२ |
| निष्क | ६०३ | निष्क | ८२८ | निष्ठाव | ३४४ | नीलर | २१९० |
| निष्क | १०६५ | निष्क | ६७५ | निष्ठाव | २७५२ | नीलर | २१७२ |
| निष्क | २१०३ | निष्क | २३०० | निष्ठाव | २००४ | नीलर | २१८० |
| निष्क | १४१४ | निष्क | ३९१ | निष्ठाव | १९६० | नीलर | २८३६ |
| निष्क | ११०० | " | ७४१६ | निष्ठाव | २१६५ | नीलर | २८८० |
| " | १४५९ | निष्क | १७९५ | निष्ठाव | २८९३ | नीलर | १२९२ |
| निष्क | २२०० | निष्क | २४२५ | निष्ठाव | १०६३ | नीलर | १०७५ |

| शब्द. | पक्ति: | शब्दः | पक्तिः | शब्द- | पक्ति | शब्द- | पक्तिः |
|-----------------|--------|---------------|--------|-----------------|-------|----------------|--------|
| नृत्य ... | ३८१ | न्यग्रोव ... | २५०६ | पद्म ... | २६० | पट ... | २९२९ |
| नृप ... | १४७० | न्यग्रोधी ... | ८२३ | " ... | ४८५ | पट्टिका ... | ७३० |
| नृपलक्ष्मन् ... | १५३१ | न्यच् ... | २१६५ | पङ्क्ति ... | ५७६ | पट्टिन् ... | ७३० |
| नृपसभ ... | २९४९ | न्यङ्कु ... | १०७० | पङ्क्तेर ... | ५४७ | पट्टिश ... | २९३६ |
| नृपासन ... | १५३० | न्यस्त ... | २२०१ | पङ्क्ति ... | ६५६ | पण ... | १८८२ |
| नृशस ... | २११९ | न्याद ... | १८६८ | " ... | २४७८ | " ... | २००६ |
| नृसेन ... | २९७५ | न्याय ... | १५१५ | पशु ... | ११७० | " ... | २०१८ |
| नेतृ ... | २०४६ | न्याय्य ... | १५१७ | पक्षपचा ... | ८५० | " ... | २०१९ |
| नेत्र ... | १२५९ | न्याम ... | १८१८ | पचा ... | २२६६ | " ... | २४२७ |
| " ... | २६९५ | न्युज ... | ११९५ | पक्षजन ... | १०७६ | पणव ... | ३७८ |
| नेत्राश्रु ... | १२६० | न्युज्ज ... | २९२९ | पक्षता ... | १६९९ | पणापित ... | २२४३ |
| नेदिष्ट ... | २१६१ | न्यून ... | २५९० | पक्षदर्शी ... | २२९ | पणित ... | २२४३ |
| नेपथ्य ... | १०७२ | प. | पक्ष | पक्षम ... | ३६४ | पणितव्य ... | १८७० |
| नेमि ... | ५२० | | | पक्षशर ... | ५० | पण्ड ... | ११५२ |
| " ... | १५७९ | पक्षण ... | ६३३ | पक्षशास्त्र ... | १२३६ | पण्डित ... | १३६३ |
| नेमी ... | ७०१ | पक्ष ... | २२०७ | पक्षशास्त्र ... | ७५१ | पण्य ... | १८७० |
| नैऋतेष्ट ... | २१९० | " ... | २२१७ | पक्षानुल ... | ७५१ | पण्यवीथिका ... | ५९७ |
| नैगम ... | १८६२ | पक्ष ... | २३८ | पक्षस्थ ... | ९८९ | पण्या ... | ९४८ |
| " ... | २६१५ | " ... | १०५९ | पक्षिका ... | २००९ | पण्याजीव ... | १८६३ |
| नैचिकी ... | १८४० | " ... | १२७० | पट ... | १३०५ | पनग ... | १०५३ |
| नैपाली ... | १९२३ | " ... | १६४२ | पटशर ... | १३०३ | पतङ्ग ... | १०४४ |
| नैमेय ... | १८६७ | " ... | २७७६ | पटल ... | ६२१ | " ... | २३७४ |
| नैयग्रोध ... | ६८५ | पक्षक ... | ६२० | " ... | २७३८ | पतङ्गिका ... | १०४१ |
| नैऋत ... | १२० | पक्षति ... | २१६ | पटवासक ... | १३५२ | पतत् ... | १०५३ |
| " ... | १४९ | " ... | १०६० | पटह ... | ३७४ | पतत्र ... | १०५९ |
| नैष्ठिक ... | १४८२ | " ... | २४७९ | " ... | १६८३ | पतत्रिन् ... | १०५३ |
| नैस्त्रिगिक ... | १६०८ | पक्षद्वार ... | ६२० | पटु ... | ९५८ | " ... | १०५४ |
| नो ... | २८७१ | पक्षभाग ... | १५४७ | " ... | १९६६ | पतद्ग्रह ... | १३५१ |
| नौ ... | ४८७ | पक्षान्त ... | २२९ | " ... | २४१४ | " ... | २९३७ |
| नौकादण्ड ... | ४९२ | पक्षिन् ... | १०५२ | पटुपर्णी ... | ९२४ | पतयालु .. | २०७९ |
| न्यथ ... | २७८५ | पक्षिणी ... | २२५ | पटोल ... | ९५८ | पताका .. | १६६६ |
| न्यग्रोध ... | ७१३ | पक्षमन् ... | २५७६ | पटोलिका ... | ८८४ | पताकिन् ... | १६०९ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|------------|---------|------------|---------|------------|---------|-------------|---------|
| पने | ११४४ | पदग | १६०० | पयस् | २८०२ | परादि | २८८८ |
| | २०४५ | पदवी | ५६ | पयस्य | १८०९ | पराध्य | २१४० |
| परिवरा | १०८८ | पदाजि | १६०० | पयोधर | २६६२ | परासन | १६९३ |
| पतिव्री | १०९७ | पदाति | १६० | पर | १४९० | परासु | १७०१ |
| पतिना | १०८६ | पदिक | १६०१ | " | २७१७ | पराक्किन्दु | १९७८ |
| पत्तन | ५९४ | पट्ट | १६०१ | परजात | १९६४ | परिकर | २६६६ |
| पति | १६०० | पट्टति | ५८७ | परतन्त्र | २०५६ | परिभर्तु | १६१५ |
| | १६२७ | पट्ट | १४२ | परशिखाद्य | २०६५ | परिभ्रम | २३८२ |
| | ६७७९ | | ५४५ | परमृत | १०२८ | परिनिषा | २३८९ |
| पनी | १०८४ | पट्टक | १०४६ | परमृत | १०२६ | परिश्रित | २३०० |
| पत्र | ६७६ | पट्टचारिणी | ९४० | परमन् | २८७३ | परिखा | ५२४ |
| | १०५९ | पट्टनाम | ४० | परमाग | १४०० | परिमह | २८१० |
| | १५८३ | पट्टपत्र | ९३९ | परमेष्ठिन् | ३१ | परिष | १६५० |
| | २६९३ | पट्टराज | १८२१ | परम्परात् | १४०४ | | २३८८ |
| पत्रपरसु | १००४ | पट्टा | ५४ | परयत् | २०५६ | परिपासन | १६५० |
| पत्रपादया | १२७९ | | ८२७ | परत् | १६५१ | परिष्वप | २२९५ |
| पत्रध | १९५३ | | ९४० | परध | १६५१ | परिष्वर | १५९३ |
| पत्रोष्ठा | १३१८ | पट्टाकर | ५५२ | परधव | २८९२ | परिष्वर्या | १४२२ |
| पत्राङ्ग | १३३७ | पट्टाट | ९४३ | परधत् | २१५३ | परिष्वर्य | १३६३ |
| | १९२८ | पट्टालया | ५४ | परधत्ता | २१५३ | परिष्वर्यक | १९६३ |
| पत्राङ्गलि | १३१८ | पट्टि | १५३७ | परानम | १६७२ | परिष्वर्य | २२१७ |
| रिन् | १०१७ | पट्टिनी | ५४४ | | २६११ | परिणय | १४६५ |
| | १०५३ | पट्ट | २९५६ | पराग | ६८३ | परिणाम | २२८० |
| | १६४१ | पट्टा | ५८७ | | २३७६ | परिणाम | २०२० |
| | २५४८ | पनम | ७७० | पराङ्मुख | २०९१ | परिणाम | १३०३ |
| पत्रोर्ध्व | ७६१ | पनायित | २२४३ | पराविन | १९६४ | परितप्त | २८७४ |
| " | १२९९ | पनिन | २२४३ | परावीर | २०९१ | परिमाण | २३५९ |
| पविट्ट | १५०१ | पन्न | २३३२ | परागम | १६९० | परिदान | १८६७ |
| पविन् | ५८६ | पन्नग | ४५४ | परागि | १६९१ | परिदेवन | ३४२ |
| पष्ठा | ७६६ | पन्नगान | ५८ | परापीन | २०५६ | परिधान | १३०७ |
| पू | १३१६ | पन्नग | ४७६ | पराप | २०६५ | परिधि | २०९ |
| पद | २५३१ | | १८०८ | परामून | १६९१ | " | २५३८ |

| शब्द | पंक्ति | शब्दः | पंक्ति | शब्दः | पंक्ति | शब्द | पंक्ति |
|----------------|--------|---------------|--------|---------------|--------|----------------|--------|
| परिधिस्थ ... | १५९२ | परिस्थोम ... | १५५७ | पर्यङ्क ... | १३४९ | पर्यव ... | ५२३ |
| परिपण ... | १८६६ | परिस्थन्त ... | १३४७ | पर्यटन ... | १४२३ | पर्य ... | २०९७ |
| परिपन्थिन् ... | १४९० | परिस्तुत् ... | २००७ | पर्यन्तम् ... | ५८४ | पर्य ... | १२५ |
| परिपाटी ... | १४७५ | परिस्तुता ... | २००८ | पर्यय ... | १४२६ | " ... | २०९७ |
| परिपूर्णता ... | १३४७ | परोक्षक ... | २०३८ | " ... | २३१६ | पवनाशन ... | ४६४ |
| परिपेलव ... | ९११ | परोभाव ... | ४०६ | पर्यवस्था ... | २२९१ | पवमान ... | १०५ |
| परिप्लव ... | २१७४ | परोवर्त ... | १८६७ | पर्याप्त ... | १८७० | पर्व ... | ९३ |
| परिपुर्ण ... | ७८१३ | परोवाह ... | ३३६ | पर्याप्ति ... | २२५९ | पवित्र ... | ९८० |
| परिभव ... | ४०६ | परोवाप ... | २५९३ | पर्याय ... | १४२६ | " ... | १४४२ |
| परिभाषण ... | ३३९ | परोवार ... | २६७३ | " ... | २६२९ | " ... | २१३७ |
| परिभूत ... | २२३७ | परोवाह ... | ४८६ | पर्युद्धन ... | १७१३ | पवित्रक ... | ४९८ |
| परिमल ... | २९६ | परोष्टि ... | १४१६ | पर्यपगा ... | १४१६ | पशुपति ... | ५९ |
| " ... | २२७५ | परोसार ... | २२९२ | पर्यन ... | ६३४ | पशुरज्जु ... | १८५३ |
| परिरम्भ ... | २३१० | परोहास ... | ४२६ | पर्यन्त ... | ९७२ | पश्चात् ... | २८७१ |
| परिवर्जन ... | १६९५ | परुत् ... | २८८८ | " ... | २५७७ | पश्चात्ताप ... | ४१२ |
| परिवादिनी ... | ३६८ | परुव ... | ३४८ | पर्य ... | २२८ | पश्चिम ... | २१८६ |
| परिवापित ... | २१९५ | परुस् ... | ९७२ | पर्युक्ता ... | १२१२ | पाशु ... | १६६४ |
| परिविक्ति ... | १४६४ | परेत ... | १७०१ | पल ... | १८७८ | पांशुग ... | १०९५ |
| परिवृढ ... | २०४६ | परेतराज ... | ११५ | " ... | २७३९ | पाक ... | १०६३ |
| परिवेष्ट ... | १४६३ | परेद्यवि ... | २८९१ | पलगण्ड ... | १९४० | " ... | २२६६ |
| परिवेष ... | २०९ | परेष्टुका ... | १८४७ | पटकपा ... | ८४५ | पाकल ... | ९०० |
| परिव्याघ्र ... | ७०२ | परेधित ... | १९६४ | पकल ... | ११९९ | पाकशासन ... | ८१ |
| " ... | ७६९ | परोष्णी ... | १०३९ | पलाण्डु ... | ९४३ | पाकशासनि ... | ९३ |
| परिघ्राज् ... | १४३५ | पर्कटी ... | ७१३ | पयाल ... | १७५० | पाकरथान ... | १७६० |
| परिपद् ... | १३८२ | पर्जन्या ... | ८५२ | पयात्र ... | ६७६ | पाक्य ... | १७९१ |
| परिष्कार ... | १०७६ | पर्जन्य ... | २६२८ | " ... | ७०७ | " ... | १९२४ |
| परिष्कृत ... | १०७४ | पर्ण ... | ६७६ | पलायिन् ... | ६५९ | पाञ्चजन्य ... | ५५ |
| परिष्वङ्ग ... | २३१० | " ... | ७०७ | पलिकी ... | १०९८ | पाञ्चालिका ... | १९८६ |
| परिसर ... | ५८४ | " ... | २९३८ | पलित ... | ११५५ | पाद् ... | २८६२ |
| परिसर्प ... | २२८९ | पणशाला ... | ६०५ | पल्लव ... | १३४९ | पाटचर ... | १९७८ |
| परिसर्पा ... | २२९० | पर्णास ... | ८०७ | " ... | ६७७ | पाटन ... | ३८७ |
| परिष्कन्द ... | १९६४ | | | | | " ... | १७३७ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|--------------|---------|------------|---------|-------------|---------|-----------|---------|
| पात्रहा | ७५७ | पाद् | २५१३ | पात्र्य | १८७६ | पारिज | १२१७ |
| पात्रि | ७२७ | पाद्वन् | १२१४ | पात्र | ४८२ | पारिजमाह | १४८७ |
| " | ७५७ | पाद्वहण | १४७४ | पात्रद | १२०५ | पात्रम | २८२ |
| पात्र | १२८० | पाद्व | ६५८ | पात्रद्व | २७५६ | पात्रद्वी | ८९१ |
| " | २३०७ | पाद्वपत्र | १८२२ | पात्रधरि | १६०७ | पात्राद्य | ३०५ |
| पात्रा | ८१७ | पाद्वधे | ११७८ | पात्रधी | १५५७ | पात्रि | १६५४ |
| पात्रि | ८०८ | पाद्वम | १२१६ | पात्रधीय | ११४२ | पात्रि | २७३० |
| पाद्व | ५०२ | पाद्वहृद | १२९२ | पात्रधन | २२५३ | पात्रिदी | ८६५ |
| पात्रि | १२१६ | पाद्वन | १६०१ | पात्रधन | २०१६ | पात्रुवा | २००७ |
| पात्रिगृहीती | १०७४ | पाद्वधिक | १६०० | पात्रधनकृति | २४८ | पात्र | १०८ |
| पात्रि | १२५४ | पात्रुवा | १०८९ | पात्रधर | ४६८ | पात्र | १२७० |
| पात्रिगृह | १४६५ | पात्रु | १२९० | " | २२६४ | पात्र | २०१० |
| पात्रिवाद | १२५४ | पात्रुहृत् | १२४३ | पात्रधरि | १४३५ | पात्रि | १२१ |
| पात्र | १०१ | पात्र | १४१८ | पात्रिधन | १४३६ | पात्रुव | ८११ |
| पात्रिवा | १५७२ | पात्रोपि | २०१४ | पात्रिधन | ०९ | पात्रुवया | १७१० |
| पात्रु | ३०३ | पात्रुवा | २०१५ | " | ७०० | पात्रु | २३४४ |
| पात्रुवा | १५०५ | पात्रुवा | १७७१ | पात्रुवा | १२७९ | पात्र | २१८६ |
| पात्रु | ३०३ | पात्रु | ३०५ | पात्रुव | २१७४ | पात्र | १४३२ |
| पात्र | २९६१ | पात्रुवा | ६०७ | पात्रु | ७०० | पात्र | ६४० |
| पात्र | ३३९ | पात्रु | १५०१ | पात्रु | ७५४ | पात्रुवा | १२९० |
| " | २७३० | पात्र | २६० | पात्रु | २०० | पात्र | १०२६ |
| पात्रु | २०७९ | " | २११९ | पात्रु | ६३८ | पात्र | ३०१ |
| पात्र | ४८२ | पात्रु | २१८ | पात्रु | ७० | पात्र | ३०७ |
| " | १४०१ | पात्रु | २६० | पात्रु | १२७० | पात्र | १०१ |
| " | १०७३ | पात्रु | ११७९ | पात्रु | २५१७ | पात्र | १२३७ |
| " | २०९३ | पात्रु | ११९० | पात्रु | ३३८ | " | २९३० |
| पात्रु | २९७८ | पात्रु | १२६० | पात्रु | १४३० | पात्रु | ११६२ |
| पात्रु | २९६५ | पात्रु | ११७९ | पात्रु | ७४ | पात्रु | १२१८ |
| पात्रु | ३०३ | पात्रु | ११७९ | पात्रु | ७८ | पात्रु | ७०३ |
| पात्रु | ६९६ | पात्रु | १२३० | पात्रु | १२३१ | पात्रु | ७२८ |
| " | १११६ | " | १४०० | " | २३३२ | पात्रु | १२१७ |
| " | १८८५ | पात्रु | १२३० | " | | | |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|----------|----------|---------------|----------|-----------|----------|--------------|----------|
| पिच्छ | ... १०५० | पितृमसू | ... २२० | पोडा | ... ४६६ | पुष्टभेदन | ... ५०४ |
| " | ... २९५५ | पितृवग | ... १७०४ | पीन | ... ३०५ | पुष्टी | ... २९७८ |
| पिच्छा | ... ७४२ | पितृव्य | ... ११३६ | पीनदान | ... ७५५ | पुण्टरीक | ... १५१ |
| " | ... २९१२ | पितृसन्निभ | ... २०५१ | पीतट्ट | ... ७६८ | " | ... ५४० |
| पिच्छिल | ... १७९८ | पित्त | ... ११९८ | " | ... ८५१ | " | ... २३५७ |
| पिच्छिला | ... ७४१ | पित्त (तीर्थ) | ... १४५८ | पीनन | ... ७०२ | पुण्टरीकाक्ष | ... २७ |
| " | ... ७७३ | पित्तसत् | ... १०५५ | " | ... १३२१ | पुण्ड | ... ९७५ |
| पिक्ष | ... १६९८ | पिक्षान | ... १७० | " | ... १९१३ | पुण्टक | ... ९७२ |
| पिक्षर | ... १९१३ | पिनद्ध | ... १५९७ | पीतसारक | ... ७३५ | पुण्य | ... २६२ |
| " | ... २९५७ | पिनाक | ... ६९ | पीता | ... १७८८ | " | ... २६५५ |
| पिक्षल | ... १६६५ | " | ... २३६३ | पीनाम्बर | ... ३८ | पुण्यक | ... १४२७ |
| पिट | ... १७५९ | पिनाकिन् | ... ६२ | पीन | ... २१४६ | पुण्यजन | ... १२० |
| पिटक | ... ११८० | पिपासा | ... १८१७ | पीनस | ... ११७६ | पुण्यजनेश्वर | ... १३८ |
| " | ... १९८८ | पिपीलिका | ... २९१० | पीनोद्री | ... १८४९ | पुण्यभूमि | ... ५७२ |
| पिठर | ... १७६९ | पिप्पल | ... ६८९ | पीयूष | ... ९६ | पुण्यवत् | ... २०३० |
| " | ... २७११ | पिप्पली | ... ८४२ | " | ... १८१४ | पुस्तिका | ... १०४१ |
| पिण्ड | ... १९०२ | पिप्पलीमूल | ... १९२७ | पीलु | ... ७९५ | पुत्र | ... ११२८ |
| " | ... १९१५ | पिप्लु | ... ११७२ | " | ... ७७२३ | " | ... ११४८ |
| " | ... २९३० | पिप्लु | ... ११९३ | पीलुपर्णा | ... ८१६ | पुत्रिका | ... १९८६ |
| पिण्डक | ... १३३० | पिगङ्गा | ... ३०९ | " | ... ९२६ | पुत्री | ... ११४८ |
| पिण्डका | ... १५८० | पिशाच | ... २२ | पीवन् | ... २१४६ | पुद्गल | ... २९३५ |
| पिण्डीतक | ... ७५३ | पिशित | ... ११९९ | पीवर | ... २१४६ | पुन पुनर् | ... २८५१ |
| पिण्याक | ... २३५३ | पिशुन | ... १३२२ | " | ... २२४८ | पुनर् | ... २८४१ |
| " | ... २९५९ | " | ... २११८ | पीवरस्तनी | ... १८४९ | " | ... २८७९ |
| पिनामह | ... ३१ | " | ... २५८९ | पुंश्चली | ... १०९४ | पुनर्नवा | ... ९४६ |
| " | ... ११३९ | पिशुना | ... ९१४ | पुंस् | ... १०७६ | पुनर्भव | ... १२३९ |
| पितृ | ... ११३० | पिष्टक | ... १८०२ | पुक्कस | ... १९६८ | पुनर्भू | ... १११९ |
| " | ... ११४७ | पिष्टपचन | ... १७७१ | पुद्ग | ... २९२९ | पुन्नाग | ... ६९९ |
| पितृदान | ... १४१४ | पिष्टान | ... १३५२ | पुच्छ | ... १५६७ | पुर् | ... ५९४ |
| पितृपति | ... ११५ | पीठ | ... १३५० | पुञ्ज | ... २०७२ | पुर | ... ७१६ |
| " | ... १४५ | पीडन | ... १६८६ | पुष्टभेद | ... ४८० | " | ... २७०२ |
| पितृपितृ | ... ११३९ | | | | | | |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|-------------|----------|-------------|----------|-------------|----------|-------------|----------|
| पुत्र | १६११ | पुत्रि | ४८४ | पुत्रा | १४२१ | पुत्रि | २२६८ |
| पुत्रा | २८६३ | पुत्रिम् | १९६९ | पुत्रिम् | २२२० | पुत्रि | २३० |
| पुत्रार | ६२५ | पुत्रेयता | ८० | पुत्र | २०३४ | पुत्रता | १६२३ |
| पुत्रद | ८२ | पुत्रि | २२१८ | " | २६३६ | " | १६२९ |
| पुत्रि | १०८६ | पुत्रर | १४३ | पुत्र | १४४२ | पुत्रर | २८५४ |
| पुत्रम् | २८६३ | " | ४७४ | " | १७५३ | पुत्ररपणा | ८३२ |
| पुत्रपुत्र | २५०२ | " | ५४८ | पुत्रता | ७६६ | पुत्रगारता | २७६ |
| पुत्रपुत्र | २८२७ | " | ६३९ | पुत्रिपुत्र | ७४४ | " | १४२८ |
| पुत्र | २८४२ | " | २७०७ | पुत्रिका | ७५६ | पुत्रजन | १८६० |
| पुत्र | २३१ | पुत्रपुत्र | १०३१ | " | ७६८ | " | २५४५ |
| " | २१७८ | पुत्ररिणी | ५२१ | पुत्रिगमि | ३०० | पुत्रिगमि | २२११ |
| पुत्रपुत्र | २१७८ | पुत्रर | २१४१ | पुत्रिगमि | ८४० | पुत्रिगमि | ५६३ |
| पुत्रपुत्र | २१९ | पुत्र | २३१८ | पुत्रिगमि | ७४४ | पुत्र | १७८० |
| पुत्रि | ५९४ | पुत्र | ६८२ | पुत्र | १८०२ | " | १७८७ |
| पुत्रिगमि | १२०५ | " | २१३ | पुत्र | २८१५ | " | २१४५ |
| पुत्रिगमि | १२०२ | पुत्रर | १११५ | पुत्रि | ७४१ | " | २२६८ |
| पुत्र | २१५१ | पुत्रर | १४० | पुत्रि | २२२१ | पुत्रर | १०६३ |
| पुत्र | २७२ | " | १८१३ | पुत्रि | १०७६ | " | १८०१ |
| " | ६०५ | पुत्ररपुत्र | १८१३ | पुत्र | २१५५ | " | २३४० |
| " | १०७६ | पुत्ररपुत्र | १५२ | पुत्र | २२२१ | पुत्रिगमि | ५०० |
| " | १७७३ | पुत्ररपुत्र | ५२ | पुत्र | २२२१ | पुत्रिगमि | २१४५ |
| पुत्ररपुत्र | ४१ | पुत्ररपुत्र | ६९१ | पुत्र | १५२२ | पुत्रि | ५६३ |
| पुत्र | २१५१ | पुत्ररपुत्र | ६८३ | पुत्रिगमि | २२९ | " | १७८० |
| पुत्ररपुत्र | ८३ | पुत्ररपुत्र | १०७६ | पुत्र | १४०८ | " | १७८७ |
| पुत्ररपुत्र | १६११ | पुत्ररपुत्र | १११३ | पुत्र | २१८५ | पुत्ररपुत्र | ८९८ |
| पुत्ररपुत्र | १६१२ | पुत्ररपुत्र | २३५ | पुत्र | २७३ | पुत्ररपुत्र | ४५२ |
| पुत्ररपुत्र | १६१३ | पुत्ररपुत्र | २५२ | पुत्र | ११५९ | पुत्ररपुत्र | २१७ |
| पुत्ररपुत्र | २२१६ | पुत्ररपुत्र | १४४ | पुत्ररपुत्र | २४ | " | ११७० |
| पुत्ररपुत्र | १४४७ | पुत्ररपुत्र | १५४० | पुत्ररपुत्र | ६३४ | पुत्ररपुत्र | ८३३ |
| पुत्ररपुत्र | २११७ | पुत्ररपुत्र | १५८५ | पुत्ररपुत्र | १४४ | पुत्ररपुत्र | ४७९ |
| पुत्ररपुत्र | १४४७ | पुत्ररपुत्र | ५६६ | पुत्ररपुत्र | २८१० | पुत्ररपुत्र | ४७९ |
| पुत्ररपुत्र | १४४७ | " | ५३४४ | पुत्ररपुत्र | २०३ | " | १००८ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|----------------------|---------|----------------|---------|-----------------|---------|------------------|---------|
| पृषत्क ... | १६४० | पौर ... | ९८१ | प्रगन्ग ... | २०७५ | प्रणय ... | ३१८ |
| पृषदश्च ... | १२३ | पौरस्य ... | ७१८५ | प्रगाढ ... | ७४२३ | प्रणाद ... | २३२ |
| पृषदाग्न्य ... | १४०० | पौरय ... | १२४८ | प्रगुण ... | २१६८ | प्रणाडी ... | ५३७ |
| पृष्ठ ... | १२२९ | " ... | २७८१ | प्रणे ... | २८८७ | प्रणिधि ... | १४०२ |
| पृष्ठय ... | १५५९ | पौरोग्य ... | १७६१ | प्रमह ... | १७०५ | " ... | २५३४ |
| " ... | २३३२ | पौर्णमान ... | १४४८ | " ... | २८०९ | प्रगिहित ... | २१९७ |
| पेचक ... | १०१७ | पौर्णमासी ... | २२९ | प्रमाह ... | २०२९ | प्रणीन ... | १३९३ |
| " ... | २३४६ | पौलस्त्य ... | १३७ | प्रमीव ... | २९६५ | " ... | १७९७ |
| पेटक ... | १९८८ | पौलि ... | १८०० | प्रमण ... | ६१७ | प्रपुन ... | २२४३ |
| पेटी ... | २९७८ | पौष ... | ७४४ | प्रमाण ... | ६१७ | प्रणय ... | २०७४ |
| पेडा ... | १९८८ | पौष्यक ... | १९१२ | प्रचक्र ... | १६५९ | प्रतन ... | २१७८ |
| पेळव ... | ७१५६ | प्याट्र ... | २८६२ | प्रचल्ययित ... | २०८९ | प्रनल ... | १७४७ |
| पेशक ... | १९६६ | प्रकाण्ड ... | २६८ | प्रचुर ... | ८४६ | " ... | १२४३ |
| " ... | २७४५ | " ... | ६६९ | " ... | २१५० | प्रताप ... | १५०७ |
| पेशी ... | १०६२ | प्रकाम ... | १८२० | प्रचेतस् ... | १२१ | प्रतापव ... | ८१० |
| पैठर ... | १७९६ | प्रकार ... | २६६० | प्रचोदनी ... | १८६ | प्रति ... | २८७५ |
| पैतृष्वसेय ... | ११२३ | प्रकाज ... | २१२ | प्रच्छदनी ... | १३०६ | प्रतिकर्मन् ... | १७७२ |
| पैतृष्वस्त्रीय ... | ११२३ | " ... | २७७१ | प्रच्छदपट ... | १३०६ | प्रतिकूल ... | ७१९२ |
| पैत्र (अहोरात्र) ... | २५६ | प्रकीर्णक ... | १५२९ | प्रच्छन्न ... | ६२० | प्रतिकृति ... | २००१ |
| पोगण्ड ... | ११६५ | प्रकीर्त्य ... | ७४४ | प्रच्छादिका ... | ११८४ | प्रतिकृष्ट ... | २१३२ |
| पोटगल ... | ९७३ | प्रकृति ... | २७२ | प्रजन ... | २२९९ | प्रनिक्षिप्त ... | २१०८ |
| " ... | ९७४ | " ... | ४३६ | प्रजनिन् ... | १६१४ | प्रतिरयाति ... | २३०६ |
| पोटा ... | ११०४ | " ... | १५०३ | प्रजा ... | २३९८ | प्रतिग्रह ... | १६७६ |
| पोत ... | १०६३ | " ... | २४८० | प्रजाता ... | ११०६ | प्रनिग्राह ... | १३५० |
| " ... | २४५८ | प्रकोष्ठ ... | १२३४ | प्रजापति ... | ३४ | प्रतिचा ... | ४१३ |
| पोतवणिज् ... | ४९० | प्रकन ... | २३०१ | प्रजावनी ... | ११३४ | प्रतिचातन ... | १६९६ |
| पोतवाह ... | ४९१ | प्रक्रिया ... | १५२९ | प्रज्ञा ... | २७८ | प्रतिच्छाया ... | २००० |
| पोताधान ... | ५०४ | प्रकण ... | ३६० | " ... | १८९८ | प्रतिजागर ... | २३०६ |
| पोत्र ... | २६९६ | प्रकाण ... | ३६० | प्रज्ञान ... | २५७९ | प्रतिज्ञात ... | २२४१ |
| पोनिन् ... | ९९१ | प्रक्षेपन ... | १६४२ | प्रजु ... | ११६७ | प्रतिज्ञान ... | २८६ |
| पौण्डर्य ... | ९०३ | प्रगण्ड ... | १२३४ | प्रडीन ... | १०६१ | प्रतिदान ... | १८६८ |
| पौत्री ... | ११३२ | प्रगतजानुक ... | ११६७ | प्रणय ... | २२९९ | प्रतिध्यान ... | ३६२ |
| | | | | " ... | २३३८ | | |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|--------------|----------|---------------|----------|---------------|----------|-----------|----------|
| प्रतिनिधि | २००१ | प्रतीर | २३४९ | प्रत्यासार | १६२६ | प्रफुल्ल | ६६३ |
| प्रतिपत् | २१७ | प्रतीकार | १६८८ | प्रत्याहार | २३८२ | प्रवाधन | १३१७ |
| | २७९ | प्रतीकाय | २००४ | प्रत्युत्पन्न | २३०१ | प्रमञ्जन | १२५ |
| प्रतिपत् | २३४० | प्रतीक्ष | २०३४ | प्रत्युत्पत् | २१९ | प्रभव | ३७५५ |
| प्रतिपादन | १४११ | प्रतीची | १४७ | प्रत्युत्प | २१९ | प्रमा | २१२ |
| प्रतिवद्ध | २१०० | प्रतीन | २०४४ | प्रत्युत्प | २३८८ | प्रमाकर् | ३०१ |
| प्रतिवर्त्त | २३०३ | प्रतीत | २४९८ | प्रथम | २१८५ | प्रमात | २२० |
| प्रतिविम्ब | २००० | प्रतापदर्शिनी | १०७८ | | २६२२ | प्रमाव | १५०५ |
| प्रतिमय | ४०२ | प्रतीर | ४८१ | प्रधा | २३६८ | " | १७०७ |
| प्रतिमान्वित | २०७५ | प्रतीहार | ६२४ | प्रधित | २०४३ | प्रमिक्त | १५२० |
| प्रतिमू | २०१७ | | १४७९ | प्रदूर | २६६४ | प्रमु | २०४६ |
| प्रतिमा | २००० | | २६७५ | प्रदीप | १३५० | प्रमूत | २१५० |
| प्रतिमान | १५४५ | प्रतीहारी | २६७५ | प्रदीपय | ४५८ | प्रभट्टक | १३४४ |
| | ७००० | प्रतीली | ५९८ | प्रदेशा | १५२२ | प्रमथ | ७० |
| प्रतिशुभ | १५९७ | प्रत | २१८८ | प्रदेशिनी | १२४६ | प्रमथन | १६९७ |
| प्रतिवत्त | २५४८ | प्रवद्ध | २८९५ | | १३३७ | प्रमथाधिप | ६२ |
| प्रतिवाचना | २००० | प्रत्यरुणा | ८२६ | प्रदीप | २२६ | प्रमद | २६३ |
| प्रतिरोधिन् | १९७८ | प्रत्यभणी | ८२४ | प्रमुन | ४९ | प्रमदवन | ६५५ |
| प्रतिवाचय | ३३० | | ९३७ | प्रद्राव | १६८० | प्रमदा | १०८० |
| प्रतिविषा | ८४७ | प्रत्यक्ष | २१८२ | प्रग्न | १६७४ | प्रमगत् | २०३९ |
| प्रतिशासन | २३१७ | प्रत्यक्ष | २१७९ | प्रगा | २७२ | प्रमा | २६६९ |
| प्रतिवदाव | ११७६ | प्रत्यक्षा | ५७१ | | १४७७ | प्रमाण | २४४३ |
| प्रतिश्रय | २६४१ | प्रत्यतपन्न | ६४६ | | २१४८ | प्रमाद | ४२२ |
| प्रतिश्रव | २८७ | प्रत्यव | २६३० | प्रधि | २५७९ | प्रमापण | १६९३ |
| प्रतिश्रुत् | ३६२ | प्रत्यपि | १४९४ | प्रधि | १५७९ | प्रमिति | २३५५ |
| प्रतिष्टम्भ | २३०३ | प्रत्यपिन् | १४९० | प्रपथ | २३९१ | प्रमीन | १४०५ |
| प्रतिष्ठर | २६८३ | प्रत्यवधित | २३४५ | प्रपद् | १२१६ | | १७०७ |
| प्रतिधीरा | १३१४ | प्रत्यारवा | २१०५ | प्रपा | ६०७ | प्रमीन | ४३२ |
| प्रतिहृत | २१०७ | प्रत्यारवा | २३१२ | प्रपात | ६४१ | प्रमुन | २१३८ |
| प्रतिहार | १०५१ | प्रत्यादिष्ट | २१०५ | प्रतितामह | ११३९ | प्रमुदिन | २२३० |
| प्रतिहास | ८०१ | प्रत्यादेश | २३१२ | प्रपुगाड | ९४२ | प्रभाव | २६३ |
| प्रतीक | १२१३ | प्रतीलीड | १६३८ | प्रतीकटीक | ९०३ | प्रपन | १४४२ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|-------------|----------|-----------|----------|-------------|----------|--------------|----------|
| प्रयस्त | ... १७९७ | प्रवेष्ट | ... १२३३ | प्रसूतिका | ... ११०६ | प्राश्य | ... २१४० |
| प्रयाम | ... २२९६ | प्रव्यक्त | ... २१८७ | प्रसूतिज | ... ४६६ | प्रावार | ... २२७० |
| प्रयोगार्थ | ... २३०१ | प्रश्न | ... ३३० | प्रसून | ... ६८२ | प्राच् | ... २८८७ |
| प्रलम्ब | ... ४५ | प्रश्नय | ... २२९९ | " | ... २५८० | " | ... २८९५ |
| प्रलय | ... २५९ | प्रश्रित | ... २०७४ | प्रसूजनयितृ | ११४७ | प्राचिका | ... १९१० |
| " | ... ४२८ | प्रष्ट | ... १६११ | प्रसून | ... २२०१ | प्राची | ... १४७ |
| " | ... १६९९ | प्रष्टवाह | ... १८३३ | प्रसूना | ... १२१८ | प्राचीन | ... ५९९ |
| प्रलाप | ... ३४१ | प्रष्टौही | ... १८४६ | प्रसूति | ... १२४४ | प्राचीना | ... ८१८ |
| प्रवण | ... २४४७ | प्रसन्न | ... ४९५ | प्रसेव | ... १७५९ | प्राचीनावीत | १४५२ |
| प्रवयस् | ... ११५८ | प्रसन्नना | ... १७७ | प्रमेवक | ... ३७५ | प्राच्य | ... ५६९ |
| प्रवर्ह | ... २१३९ | प्रसन्ना | ... २००८ | प्रस्तर | ... ६४० | प्राजन | ... १७३१ |
| प्रवह | ... २२८५ | प्रसम | ... १६८४ | प्रस्ताव | ... २२९८ | प्राजितृ | ... १५८६ |
| प्रवहण | ... १५७१ | प्रपर | ... २२९५ | प्रस्थ | ... ६४२ | प्राज्ञ | ... १३६३ |
| प्रवाहिका | ... ३२२ | प्रमरण | ... १६५९ | " | ... १८८४ | प्राज्ञा | ... १०९८ |
| प्रवारण | ... २२५६ | प्रसन्न | ... २२७० | " | ... २५१० | प्राज्ञी | ... १०९८ |
| प्रवाल | ... ३७५ | " | ... २७५१ | प्रस्थपुष्प | ... ८०६ | प्राज्य | ... २१५० |
| " | ... १८९२ | प्रमव्य | ... २१९२ | प्रस्थान | ... १६५८ | प्राद्विवाक | १४७८ |
| " | ... २७४४ | प्रसन्न | ... २८६९ | " | ... २५६९ | प्राण | ... १२६ |
| प्रवाह | ... २२८५ | प्रसाद | ... १७७ | प्रस्फोटन | ... १७५८ | " | ... १६७२ |
| प्रवासन | ... १६९३ | " | ... २५१६ | प्रस्रवण | ... ६४३ | " | ... १७०६ |
| प्रवाहिका | ... ११८३ | प्रसाधन | ... १२७२ | प्रस्त्राव | ... १२०८ | " | ... १९१५ |
| प्रविश्याति | ... २३०६ | प्रमाधनी | ... १३५२ | प्रहर | ... २२६ | प्राणिन् | ... २७५ |
| प्रविदारण | ... १६७४ | प्रसाधित | ... १२७४ | प्रहरण | ... १६३२ | प्रातर | ... २८८७ |
| प्रविशेष | ... २२९० | प्रसारिन् | ... २०८६ | प्रह्मन् | ... १२४२ | प्रातिहारिका | १९५१ |
| प्रवीण | ... २०३२ | प्रसारिणी | ... ९५३ | प्रहि | ... ५१० | प्राथमकलिपक | १३७४ |
| प्रवृत्ति | ... ३२५ | प्रमित | ... २०४२ | प्रहेलिका | ... ३२२ | मादुस् | ... २८४७ |
| " | ... २२८५ | प्रसिति | ... २२७८ | प्रहृन्न | ... २२३० | " | ... २८७३ |
| प्रवृद्ध | ... २१७७ | प्रसिद्ध | ... २५४३ | प्राशु | ... २१६४ | प्रादेश | ... १२४० |
| " | ... २२०१ | प्रमू | ... ११३१ | प्राकार | ... ५९९ | प्रादेशन | ... १४१२ |
| प्रवेक | ... २१३८ | " | ... २७९४ | प्रावृत्त | ... १९६० | प्राध्वम् | ... २८५७ |
| प्रवेणी | ... १२६९ | प्रमृता | ... ११०६ | प्राग्वंश | ... १३८४ | प्रान्तर | ... ५९१ |
| " | ... १५५२ | प्रवृत्ति | ... २२७० | प्रामहर | ... २१४० | प्रात | ... २१९७ |

| शब्द | पङ्क्ति | शब्द | पङ्क्ति | शब्द | पङ्क्ति | शब्द | पङ्क्ति |
|-----------|---------|----------|---------|----------|---------|-------------|---------|
| मात | २२३३ | प्रिवध | २०९७ | पूव | १९६७ | पत्नी | ७५९ |
| मातृधन | १७०१ | प्रिया | १७८ | पूवग | ९९३ | पत्नीमहि | ६६१ |
| मातरूप | २५९७ | प्रियण | २२५८ | , | २३८३ | पत्नीरहा | ७५७ |
| माति | २४७२ | प्रोत | २२३० | पूवङ्ग | ९९३ | पत्नी | ७७१ |
| माप्य | २९०९ | प्रोति | २६३ | पूवङ्गम | २६१० | , | २११७ |
| माभुन | १५२२ | प्रुष्ट | २२३२ | पूवध | ६८५ | प्राणित | १९९ |
| माध | १४५७ | मेधा | २५९ | पूवहृत् | १२५ | प्राण्ट | २३१ |
| " | २८८२ | " | २७८४ | पूवगुत्र | ७४६ | प्राण | १२९५ |
| माधस् | २६४३ | मेक्षा | १५७३ | पूव | १५६४ | " | १७३३ |
| माधिन | २२१९ | मेक्षित | २१९८ | पूव | २२३३ | प्राणगुन | २४४ |
| माळक | १२४५ | मेन | १७०१ | पूव | २२६७ | प्राणगुनिका | २४५ |
| माळनिका | १२८२ | " | ७४५४ | पूव | २२४५ | प्राणगुनी | २९०६ |
| माथ | १८१ | मेना | ७६४ | फ | | पूव | ६६४ |
| माथार | १२०८ | मेन | २८६५ | | | फेन | १९१६ |
| मधुन | १२०० | मेन | ७१५ | फणा | ७५५ | , | २९३३ |
| मातृ | २५३ | " | ७१५ | फणिज | ८०६ | फेनिल | ७११ |
| मातृपावनी | ८९१ | मध | २२४७ | फणित | ७५३ | , | ७२१ |
| माध | १६५४ | मिध | २७७५ | फ | १२९४ | फेर | ९९८ |
| माधु | १७८३ | मिध | १९६३ | फ | १६४८ | फेर | ९९८ |
| माधुध | १८३४ | मिधन | १४०४ | " | १७३३ | फेन | १८१९ |
| मासाध | ६११ | माधिन | १४०५ | , | २९४० | ध | |
| मासिक | १६०८ | माध | १५६५ | फलक | १६४८ | धन | १०३१ |
| मास | २२१ | मोष्ठपदा | १८९ | फलकपाणि | १६७९ | धनु | ७७७ |
| मिध | ११४४ | मोठी | ५०३ | कलविका | १९२९ | धनु | ७९९ |
| , | २१३१ | मोष्ठपद | २४८ | कलपूर | ८०५ | धन | २८२३ |
| मिधक | ७३२ | मोठ | २१७७ | कलवार | ६६२ | धन | ७२२ |
| " | ७३६ | पूव | ७१३ | कलवार | ७३९ | धन | ८८० |
| " | ७६० | " | ७३५ | कलवार | ७३९ | , | ९५० |
| , | १००५ | पूव | ७८८ | कलिन | ६६२ | धन | ७२१ |
| मिधु | ७५९ | , | ५१४ | कलिन | ६६५ | धन | १६६२ |
| " | १७४६ | " | ९१२ | कलिन | ७५९ | धन | १७०५ |
| मिधता | ४१५ | , | १०५६ | " | २२१ | धन | २२१४ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|-----------------|---------|-----------------|---------|----------------|---------|----------------|---------|
| वधिर ... | ११६९ | वलवत् ... | ११६१ | वहुल ... | २१५० | वाष्पिका ... | १७८७ |
| वन्धनी ... | १०९४ | " ... | २८५३ | वहुला ... | ८९८ | वाहु ... | १२३३ |
| वन्धन ... | १५२० | वला ... | ८६२ | " ... | २७३३ | वाहुन ... | १४६९ |
| " ... | २२७८ | वलाना ... | १०३७ | वहुलीकृत ... | १७५३ | वाहुदा ... | ५३२ |
| वन्धु ... | ११४७ | वलात्कार ... | १६८४ | वहुवारका ... | ७१७ | वाहुमूल ... | १२३१ |
| वन्धुजीवक ... | ७९४ | वलाराति ... | ८५ | वहुविध ... | २२११ | वाहुसुद्ध ... | १६८० |
| वन्धुता ... | ११४३ | वलारक ... | १५७ | वहुसुता ... | ८४९ | वाहुल ... | २५० |
| वन्धुर ... | २१६३ | वलि ... | १३८० | वहुमृति ... | १८४७ | वाहुलेय ... | ७९ |
| वन्धुल ... | ११२५ | " ... | १५२१ | वाकृची ... | ८४० | वारिक्त ... | १५५७ |
| वन्धूका ... | ७९४ | " ... | २७२५ | वाढ ... | १३३ | " ... | २३५३ |
| वन्धूकपुण्य ... | ७३६ | वलिध्वसिन् ... | ४२ | वाढ ... | २४२३ | " ... | ३९५८ |
| वन्धु ... | २६७६ | वलिन ... | ११६४ | वाण ... | १६४० | वालर्हाफ ... | १३२१ |
| वर्गर ... | ८२८ | वलिपुष्ट ... | १०२७ | " ... | २४२५ | " ... | १७८६ |
| वर्गरा ... | ९२७ | वलिम ... | ११६४ | वाणा ... | ७९७ | " ... | २३५३ |
| वर्ह ... | ९१३ | वलिभुज ... | १०२८ | बादर ... | १०९५ | विड ... | १९९१ |
| " ... | १०५० | वलिर ... | ११७१ | बाग ... | ४६६ | विडाल ... | ९९९ |
| " ... | २८०७ | वलिस्त्रयन् ... | ४३९ | वान्धकिनेय ... | ११२५ | विन्दु ... | ४७९ |
| वर्हिण ... | १०४७ | वलीवर्द ... | १८२५ | वान्धव ... | ११४२ | विन्वोक्त ... | ४२४ |
| वर्हिन् ... | १०४७ | वल्लव ... | १७६१ | वार्हत ... | ६८६ | विन्व ... | १७५ |
| वर्हिमुख ... | १७ | " ... | १८२१ | वाल ... | ८९२ | विन्विता ... | ९२६ |
| वर्हिन् ... | १०७ | वल्लज ... | ९७४ | " ... | ११५७ | विल ... | ४४० |
| " ... | १०४७ | वल्कली ... | १८४८ | " ... | २७४६ | विलेशय ... | ४५३ |
| वर्हिष्ट ... | ८९२ | वस्त ... | १८५८ | वालतनय ... | ७४७ | विन्व ... | ७१२ |
| वल् ... | ४८ | वर्हिष्टरि ... | ६२५ | वालतृण ... | ९८३ | विष्मसून ... | ५४८ |
| " ... | १७०२ | वर्हिष्ट ... | २२४७ | वालमृषिका ... | १०११ | विशिनी ... | ५४४ |
| " ... | १६२४ | वर्हिम् ... | २८८३ | वाल ... | ३९० | विस ... | ५५१ |
| " ... | १६७१ | वहु ... | २१५० | वालिश ... | २१२० | विसकण्टिका ... | १०३७ |
| " ... | २७२६ | वहुकर ... | २८५८ | " ... | २७७१ | विस्त ... | १८७९ |
| " ... | २९३९ | वहुगर्भाच् ... | २०९६ | वालेय ... | १८६१ | वीज ... | २७१ |
| वटदेव ... | ४५ | वहुपाद् ... | ७१३ | वालेयशाक ... | ८२८ | " ... | ११९७ |
| वल्मट्र ... | ४५ | वहुप्रद ... | २०३६ | वाल्य ... | ११५३ | वीनकोय ... | ५५३ |
| वटभट्टिका ... | ९४९ | वहुरूप ... | १३२९ | वाण्य ... | २५९५ | वीजपूर ... | ८०५ |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|----------|----------|------------------|----------|------------|----------|--------------|----------|
| य नाट्य | १७२३ | मद्यचारिन् | १३५९ | मद्यद्वार | १७६३ | मद्यनक | ३०१ |
| धीन्व | १३५७ | " | १३६७ | मद्य | १३२५ | मद्य | १३१ |
| मीनारत्र | ३९६ | मद्यगण | ७३१ | " | २३८७ | मद्यन | २००६ |
| " | २८०३ | मद्यत्र | १३५५ | मद्यनद्वार | १३८५ | मद्यन | २००६ |
| मुक्त | ८११ | मद्यद्वार | २३८ | मद्यन | २६ | मद्यनमुक्त | २०६३ |
| मुक्ता | १३०२ | मद्यदान | ७३१ | मद्यिनी | १३३१ | मद्यत | १०५३ |
| मुक्त | ३५ | मद्यन | ३१ | मद्य | ३७७ | मद्यदान | १०१८ |
| " | २३३० | " | २६६३ | मद्य | १७३७ | मद्य | ६६ |
| मुक्ति | २७८ | मद्यपुत्र | ३५८ | मद्यि | २९११ | मद्य | ११३३ |
| मुक्त | २९३२ | मद्यनपु | २५३२ | मद्यमा | १५१६ | " | २३५३ |
| मुक्त | १९६ | मद्यविद्व | १३३० | मद्य | १५८९ | मद्यद्वार | ३८६ |
| " | १३६३ | मद्यभूष | १३५५ | मद्यि | १७९६ | मद्यद्वारिका | ३८७ |
| " | २५३५ | मद्यनपुत्र | १३२९ | मद्यरक | ३८७ | मद्यन | ३३८ |
| मुक्ति | २३३० | मद्यनपुत्र | १३५५ | मद्यिनी | ३८८ | मद्यन | १८९५ |
| मुक्त | ६७२ | मद्यन | ५३ | मद्यनकी | ८७६ | " | २००५ |
| मुक्त | १८१५ | मद्यनानि | १३३० | मद्यिनी | ७७५ | मद्य | २९३५ |
| मुक्त | २०६३ | मद्यन | १३३१ | मद्यिनी | ८३० | मद्यनकी | ७३३ |
| मुक्त | १७५१ | मद्य | १३५३ | मद्यिनी | ८३० | मद्यन | २९३ |
| मुक्त | २९६३ | मद्य (मद्यन) २५७ | | मद्य | २६५ | मद्यन | ०९५ |
| मुक्त | ८३५ | मद्य | १३६१ | " | १८२५ | मद्य | ६८ |
| मुक्त | २३८३ | मद्यन | १३६१ | मद्यन | १५३२ | " | २३३७ |
| मुक्त | २१३५ | मद्यनपुत्र | ८२७ | मद्यन | ७५५ | मद्यन | ६०३ |
| मुक्त | १३०८ | मद्यन | ८२७ | मद्यन | ७२० | मद्यन | ७३ |
| मुक्त | ११६३ | मद्यन | २३३१ | मद्यन | ९५३ | मद्यन | २६६ |
| मुक्त | १०८ | मद्यन | ७० | मद्यन | ९६८ | मद्यन | २०८३ |
| मुक्त | १९३ | " | २१३ | मद्यन | ७८२ | मद्यन | २०८३ |
| मुक्त | १६८२ | " | ९२३ | मद्यन | १३३५ | मद्यन | २०८३ |
| मुक्त | १६६३ | मद्य | १८६ | मद्यन | १५३० | मद्यन | २६६ |
| मुक्त | ६८९ | मद्य | १८०३ | मद्यन | ४०३ | मद्यन | १९३३ |
| मुक्त | १९१५ | मद्यन | २०६५ | मद्यन | ३०३ | मद्यन | १९९५ |
| मुक्त | २०१ | मद्यन | २२३५ | मद्यन | २१०९ | मद्यन | ८८९ |
| | | | | मद्यन | ३९५ | मद्यन | ७७३ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|---------------|---------|---------------|---------|-------------------|---------|-----------------|---------|
| मा ... | २१२ | माय ... | २७५० | मीरक ... | २०७७ | भूदेव ... | १३६० |
| भाग ... | १८८५ | मावित ... | १३४१ | मीलुक ... | २०७७ | भूनिम्ब ... | ९३४ |
| भागवेय ... | २७० | ” ... | १७९९ | मीपण ... | ४०१ | भूय ... | १४७० |
| ” ... | १५२१ | ” ... | २२३३ | मीष्म ... | ४०१ | भूपदी ... | ७८८ |
| भागिनेय ... | ११३८ | मायुक ... | २६६ | मीष्मम् ... | ५२९ | भूमत् ... | २४५६ |
| भागीरथी ... | ५२९ | मापा ... | ३१२ | मुक्त ... | २२४६ | भूमि ... | ५६० |
| भास्य ... | २७० | मापित ... | ३१३ | मुक्तसमुज्जित ... | ५४१ | भूमिजम्बुका ... | ७२४ |
| ” ... | २६४५ | ” ... | २२३९ | मुक्त ... | २१६७ | ” ... | ८८४ |
| भाजन ... | १७७३ | माप्य ... | २९५७ | ” ... | २२०६ | भूमिस्पृष्ट ... | १७०८ |
| माण्ड ... | १७७३ | मान् ... | २१२ | मुज ... | १२३३ | भूयस् ... | २१५१ |
| ” ... | २४२२ | मास्कार ... | २०१ | मुजग ... | ४५० | भूयिष्ठ ... | २१५१ |
| माद्र ... | २४८ | मास्वत् ... | २०२ | मुजंग ... | ४५० | भूरि ... | २१५१ |
| माद्रपद ... | २४८ | मिक्षा ... | २२६२ | मुजङ्गमुज् ... | १०४७ | ” ... | २७०० |
| माद्रपदा ... | १८९ | ” ... | २७८४ | मुजंगम ... | ४५० | भूरिफेना ... | ९३५ |
| मातु ... | २०६ | मिश्रु ... | १३५९ | मुजङ्गाधी ... | ८२० | भूरिमाय ... | ९९७ |
| ” ... | २११ | ” ... | १४३५ | मुजशिरम् ... | १२३० | भूरण्डी ... | ७८७ |
| ” ... | २५४४ | मित्त ... | १७६ | मुजातर ... | १२२८ | भूर्ज ... | ७४० |
| भामिनी ... | १०८१ | मिति ... | ६०० | मुजिष्य ... | १९६३ | भूपण ... | १२७५ |
| भार ... | १८८० | मिटा ... | २२६० | मुवन ... | ४७२ | भूपित ... | १२७४ |
| भारत ... | ५६९ | मिदुर ... | ९३ | ” ... | ५६८ | भूप्यु ... | २०८३ |
| भारती ... | ३१२ | मिन्दिपाल ... | १६५० | भू ... | ५६० | भूरुण ... | ९८२ |
| भारद्वाजी ... | ८८१ | मित्र ... | २१८९ | भूत ... | २२ | भृगु ... | ६४१ |
| भारयष्टि ... | १९८९ | ” ... | २२०५ | ” ... | २०३३ | भृङ्ग ... | ९१७ |
| भारवाह ... | १९५९ | मिपज् ... | ११८७ | ” ... | २४९० | ” ... | १०२० |
| भारिक ... | १९५९ | मिस्सटा ... | १८०४ | भूतकेश ... | १९२८ | भृङ्ग ... | १०४६ |
| भार्गव ... | १९४ | मिस्सा ... | १८०३ | भूतवेदी ... | ७९० | भृङ्गराज ... | ९५१ |
| भार्गवी ... | ९६५ | मी ... | ४०३ | भूतावास ... | ७६५ | भृङ्गार ... | १५३२ |
| भार्गी ... | ८२७ | मीति ... | ४०३ | भूति ... | ७१ | भृङ्गारी ... | १०४३ |
| भार्या ... | १०८५ | मीम ... | ६८ | ” ... | २४७३ | भृङ्गतक ... | १९५८ |
| भार्यापति ... | ११४९ | ” ... | ४०१ | भूतिक ... | २३५० | भृति ... | २००५ |
| भान ... | ३८५ | मीरु ... | १०७९ | भूतिश ... | ६१ | भृतिमुज् ... | १९५८ |
| ” ... | ४०४ | ” ... | २०७७ | भूदार ... | ९९२ | भृत्य ... | १९६२ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|---------|---------|----------|---------|-----------|---------|-------------|---------|
| सुखा | २००५ | मातृभाषा | ११३३ | मवाचिना | २६८ | मण्डर | १९०३ |
| सुख | १३२ | आतृष | २६२० | मघ | १३४९ | मतङ्गन | १५३६ |
| मेव | ५१४ | आनीय | ११३६ | मज्जा | ६७३ | मतङ्गिका | २६८ |
| मेवा | ५१५ | मान्ति | २८५ | मञ्जलि | ६७५ | मति | २७८ |
| मेद | १५०८ | भाइ | १७६७ | मञ्जिष्ठा | ८२९ | मत्ता | १५३९ |
| " | १५१० | सुबुध | ३८३ | मन्थीर | १३९२ | " | २०७१ |
| मेदिन | २२३५ | सुतुटि | ४३५ | मज्जु | २१२९ | " | २२३० |
| मेरी | ६६३ | भू | १२५७ | मञ्जुल | २१२९ | मत्ताशयिनी | १०८२ |
| मेयन | ११७४ | भ्रुकुच | ३८३ | मञ्जुपा | १९८८ | मत्तर | १६८० |
| मेध | १४४५ | भ्रुकुचि | ४३५ | मठ | ६०८ | मन्थ | ५०० |
| मेरव | ४०० | भ्रूण | ११५१ | महदु | ३७७ | मन्थपण्डी | १७६३ |
| मेरव्य | ११७४ | " | २४२५ | मणि | १८९३ | मत्तयवित्ता | ८२० |
| मोग | २३८० | भ्रैव | १५१४ | मनिह | १७६८ | मत्तयदेवन | ३९९ |
| मोदयनी | २४७४ | | | मनिहव | १३३५ | मत्तयादी | ९२३ |
| मोनिद् | ४५४ | | | मनिमथ | १७९० | मत्तयाधाली | ४९९ |
| मोनिनी | १०८३ | म | | मण्ड | ७५१ | मभिन | १८१३ |
| मोयन | १८१६ | मवर | ५०७ | " | १८०४ | मभिन् | १८५४ |
| मोय् | २८६२ | मवरप्यन | ५२ | मण्डन | १३७७ | मद् | २२७४ |
| भी | १९५ | मवरद | ६८३ | " | २०८२ | " | २५१७ |
| भीरिह | १४८२ | मकु | १२७७ | मण्डन | ६१० | मद्वह | १५३८ |
| भकुच | ३८३ | मकुद | १३५३ | मण्डल | १५६ | मदन | ४९ |
| भकुचि | ४३५ | मकुदर | १७४० | " | १७५ | " | ७५४ |
| भम | २८५ | मकुदर | ९३६ | " | २०९ | " | ८०४ |
| " | ४८० | मञ्जिका | १०४० | मण्डल | ११८२ | मद्वध | २०१० |
| " | २२६७ | मज्ज | १३७९ | मण्डलप | १६४६ | मदिरा | २००९ |
| भरर | १०४६ | मगध | १६६२ | मण्डलधर | १४७२ | मदिराण | ६०८ |
| भमर | १२६६ | मगध | ८१ | मण्डलधर | १९४९ | मदोन्म | १५३८ |
| भमि | २२३२ | मद्वह | २८५२ | मनिह | १२७३ | मदु | १०५६ |
| भट | २२३२ | मद्वह | २६५ | मद्वह | ५१४ | मदुर | ५०५ |
| भक्तिपु | १३७५ | मद्वह | १०४० | मद्वह | ७६१ | " | १६४९ |
| भरर | ११४६ | मद्वह | १३२७ | मद्वह | ८३० | मद | २००९ |
| भरर | ११४६ | मद्वह | १३२७ | मद्वह | ८३० | | |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|----------|----------|------------|----------|------------|----------|---------|----------|
| मधु | ... २४५ | मधूक | ... ७०३ | मनोहा | ... १९२२ | मयूख | ... २१० |
| " | ... ९३० | मधूच्छिष्ट | ... १९२१ | मन्तु | ... १५२० | " | ... २३७० |
| " | ... १९२१ | मधून्का | ... ७०४ | मन्त्र | ... २६६९ | मयूर | ... ८७१ |
| " | ... २०११ | मधूलिका | ... ८१६ | मन्त्रज | ... १५०५ | " | ... १०४७ |
| " | ... २५४० | मध्य | ... १२३२ | मन्त्रिन् | ... १४७६ | मयूरक | ... ८२५ |
| मधुका | ... ८६७ | " | ... २६५७ | मन्थ | ... १८५४ | " | ... १९०८ |
| " | ... १६६२ | मध्यदेश | ... ५७१ | मन्थदण्डक | १८५४ | मरकत | ... १९०० |
| मधुपार | ... १०४५ | मध्यम | ... ३६३ | मन्थनी | ... १८५५ | मरण | ... १७०० |
| मधुकम | ... २०१० | " | ... ५७१ | मन्थर | ... १६१२ | मरीच | ... १७७८ |
| मधुद्रुम | ... ७०३ | " | ... १२३२ | मन्थान | ... १८५४ | मरीचि | ... १९८ |
| मधुर | ... १०४१ | मध्यमा | ... १००० | मन्द | ... १९६५ | " | ... २११ |
| मधुरविहा | ७१९ | " | ... १२३८ | " | ... १५०८ | मरीचिका | ... २१५ |
| " | ... ८३० | मध्याह्न | ... २२१ | मन्दनामिन् | १६१२ | मरु | ... ५६७ |
| मधुरार्ध | ... ८१४ | मध्यामय | ... २०११ | मन्दाकिनी | ९७ | " | ... २६६१ |
| मधुमधिका | १०४० | मधुमिन् | ... १९२३ | मन्दाक्ष | ... ४०८ | मन्त्र | ... १४९ |
| मधुमिका | ८६७ | मन्त्र | ... २७७ | मन्दार | ... ९० | " | ... २४५२ |
| मधुर | ... २५४ | मन्त्रित | ... ५१ | " | ... ७०० | मन्दवत् | ... ८१ |
| " | ... २०१८ | मन्त्रण | ... २८१ | " | ... ८१० | मन्माला | ... ९१४ |
| मधुरक | ... ५३३ | मन्त्रक | ... २८६५ | मन्दिर | ... ६०२ | मन्मथ | ... ७५३ |
| मधुरा | ... ८१५ | मन्त्रि | ... २०४० | " | ... २७०३ | " | ... ८०६ |
| " | ... ८६३ | मन्त्रिणी | ... २०८ | मन्त्रिणी | ... ६०६ | मन्मथ | ... ९९४ |
| मधुरा | ... ९५० | मन्त्रिन् | ... १२६२ | मन्त्रिणी | ... २१४ | मन्मथक | ... १०१३ |
| मधुरिणी | ... ८५८ | मन्त्र | ... २९७० | मन्त्र | ... ४६६ | मन्मथी | ... ७४५ |
| मधुरिणी | ... ३० | मन्त्र | ... १००५ | मन्मथ | ... ४९ | " | ... ८२२ |
| मधुरिणी | ... १०४० | मन्त्र | ... १०३५ | " | ... ६९१ | मन्मथ | ... १०७५ |
| मधुरिणी | ... २०१० | मन्त्र | ... १०३५ | मन्मथ | ... १०३५ | मन्मथ | ... २२९४ |
| मधुरिणी | ... २०४० | मन्त्र | ... १०३५ | मन्मथ | ... १०३५ | मन्मथ | ... ४७८ |
| मधुरिणी | ... १०३५ | मन्त्र | ... १०३५ | मन्मथ | ... १०३५ | मन्मथ | ... २९५५ |
| मधुरिणी | ... १०३५ | मन्त्र | ... १०३५ | मन्मथ | ... १०३५ | मन्मथ | ... ३५७ |
| मधुरिणी | ... १०३५ | मन्त्र | ... १०३५ | मन्मथ | ... १०३५ | मन्मथ | ... २१९१ |
| मधुरिणी | ... १०३५ | मन्त्र | ... १०३५ | मन्मथ | ... १०३५ | मन्मथ | ... १५१९ |
| मधुरिणी | ... १०३५ | मन्त्र | ... १०३५ | मन्मथ | ... १०३५ | मन्मथ | ... १२०४ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|------------|---------|-----------|---------|--------|---------|---------|---------|
| मन् | २०२१ | महास | १०६० | महीध | २४४ | मगुणादि | ४४२ |
| मन्नुवि | २१३० | महामा | १०७० | " | १०८२ | मगुली | ११३४ |
| मन्तु | ७७१ | महारान | १८९६ | मा | २८७१ | मगुल्लव | ७५ |
| मन्तव | ११३५ | महारणा | १८६९ | मांघ | ११९९ | मगु | ७० |
| मन्ति | २१३४ | " | १९१९ | " | २९२९ | " | १९० |
| मन्तिनी | १११४ | महारण | ६५१ | मांघ | ११६१ | " | ११३१ |
| मन्तिपुत्र | १९०८ | महासन्नि | २० | मांघि | १९५७ | " | १८३९ |
| मन्तिमय | २१३४ | महासीरव | ७६९ | मन्धिक | १९२१ | माव | २६९१ |
| मात | २९३६ | महाणव | २०३० | मन्त | १६६३ | मावा | २१४८ |
| मात | २९६९ | महामात्री | ११०० | " | १९३३ | " | २६९० |
| मातिव | ७८७ | महाधेना | ८६९ | मन्ती | ७९० | माव | २३४४ |
| मातिवध | १०३६ | महागहा | ७९५ | " | ८७१ | मावव | ३६ |
| माती | २९१५ | " | ९२५ | माव | २४४ | " | २४६ |
| मात | १०४० | महाीव | ७७ | माव्य | ७९४ | माववक | २०११ |
| मातमिदम | ८६६ | महिना | १०४८ | माव | २०४ | मावरी | ७९९ |
| मात | १०९० | महिनाकवा | ७५८ | मादि | २९१२ | मावरी | २०११ |
| मातर | २७० | महि | ९२६ | मावद | ११५७ | माव | ४०५ |
| मावति | १०३५ | महिनी | १०८३ | " | १२८५ | " | ८४४ |
| मावव | १९६३ | मही | ५६३ | मावव | २३३० | मावव | १०७५ |
| मावव | १९०४ | मही | १४०० | मावव | २९५७ | मावव | २४७ |
| मात | १८९४ | मही | ६३४ | मावव | १०९० | मावव | ४१८ |
| मा | ४३८ | मही | ६५८ | मावव | १९३० | मावव | १०३४ |
| मा | २१३५ | मही | ५०९ | मावव | ११४० | मावव | १०८५ |
| " | २१९१ | मही | १०१ | मावव | ११४० | मावव | १०८५ |
| मा | २१०४ | मही | २०३० | मावव | २० | मावव | २९३३ |
| मा | २०९७ | मही | २९६ | मावव | १९६० | मावव | १९५१ |
| मा | ७९५ | मही | ५९ | मावव | १९३० | मावव | १९५१ |
| मा | १९५८ | मही | १९२४ | मावव | २०३ | मावव | २० |
| मा | १९५९ | मही | ५९५ | " | १९३६ | मावव | ११९८ |
| मा | ८६३ | मही | २०३१ | मावव | ८०४ | मावव | १०७१ |
| मा | ६३ | मही | २०३१ | मावव | ११३३ | माव | ३२ |
| मा | १२३९ | मही | ८४६ | " | १०६० | मावव | ३६ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|------------|----------|---------------|----------|-------------|----------|-----------------|----------|
| मारण | ... १६९६ | मात्सर | ... १८०५ | मुक्तास्फोट | ... ५१२ | मुसल्य | ... २११५ |
| मारिप | ... ३९० | मात्स्य | ... २८७१ | मुक्ति | ... २८९ | मुस्तक | ... ९६७ |
| मारुत | ... १२४ | माहिष्य | ... १९३४ | मुख | ... ६३० | मुस्ता | ... ९६७ |
| मार्कव | ... ९५१ | माहेयी | ... १८३९ | " | ... १२५१ | मुहुस् | ... २८५१ |
| मार्ग | ... २४३ | मितपच | ... २१२१ | " | ... २९३९ | मुहुर्नापा | ... ३४२ |
| " | ... ५८६ | मित्र | ... २०४ | मुत्तर | ... २०९७ | मुहूर्त | ... २३७ |
| मार्गण | ... १६४१ | " | ... १४८६ | मुखवासन | ... २९९ | मूक | ... २०५१ |
| " | ... २१२३ | " | ... १४९१ | मुस्य | ... १४३२ | मूढ | ... २१२० |
| " | ... २३०९ | " | ... २६६९ | " | ... २१३९ | मूत | ... २२१४ |
| मार्गशीर्ष | ... २४३ | मिथस् | ... २८४७ | मुण्ड | ... ११७० | मूत्र | ... १२०८ |
| मार्गित | ... २२३४ | मिथुन | ... १०६४ | " | ... २९६२ | मूयकृच्छ्र | ... ११८६ |
| मार्जन | ... ७१४ | मिथ्या | ... २८७८ | मुण्डित | ... ११७० | मूषित | ... २२१७ |
| मार्जना | ... १३१५ | मिथ्यादृष्टि | ... २८४ | " | ... २१९५ | मूर्ख | ... २१२० |
| मार्जार | ... ९९९ | मिथ्याभियोग | ३३१ | मुण्डिन् | ... १९४८ | मूर्च्छा | ... १६८६ |
| मार्जिता | ... १७९४ | मिथ्याभिर्दशन | ३३१ | मुत् | ... १६३ | मूर्च्छाल | ... ११९६ |
| मार्तण्ड | ... २०३ | मिथ्यामति | ... २८५ | मुदिर | ... १५९ | मूर्च्छित | ... ११९६ |
| मार्दङ्गिक | ... १९५४ | मिश्रेय | ... ८५९ | मुद्रपर्णी | ... ८७५ | " | ... २४९९ |
| मार्द्विक | ... २०११ | मिसि | ... ८५८ | मुद्र | ... १६४९ | मूर्त | ... ११९६ |
| मार्ष्टि | ... १३१५ | " | ... ९१६ | मुधा | ... २८५७ | " | ... २१७७ |
| मालक | ... ७७२ | मिरी | ... ९५२ | मुनि | ... २८ | मूर्ति | ... १२१५ |
| मालती | ... ७९३ | मिहिका | ... १८० | " | ... १४३६ | " | ... २४६७ |
| माला | ... १३४३ | मिहिर | ... २०३ | मुनीन्द्र | ... २८ | मूर्तिमत् | ... २१७७ |
| मालाकार | ... १९३९ | मीढ | ... २२१७ | मुरज | ... ३७२ | मूर्द्धन् | ... १२६३ |
| मालातृणक | ... ९८२ | मीन | ... ५०० | मुरा | ... ८९४ | मूर्द्धाभिपिक्त | १४६९ |
| मालिक | ... १९३९ | मीनकेतन | ... ४९ | मुपित | ... २२०० | " | ... २४५७ |
| मालुधान | ... ४४९ | मुकुट | ... १२७७ | मुष्क | ... १२२६ | मूर्वा | ... ८१५ |
| मालूर | ... ७१२ | मुकुन्द | ... ८९१ | मुष्कक | ... ७२७ | मूल | ... ६७२ |
| माल्य | ... १३४३ | मुकुर | ... १३५३ | मुष्टिवन्ध | ... २२७७ | " | ... २७३५ |
| माल्यवत् | ... ६३८ | मुकुल | ... ६८१ | मुसल | ... १७५७ | मूलक | ... ९६३ |
| मापपर्णी | ... ९२५ | मुक्तकश्रुक | ४४९ | मुसलिन् | ... ४७ | मूलकर्मन् | ... २२५७ |
| मापादि | ... १७५४ | मुक्ता | ... १८९२ | मुसली | ... ८८६ | मूलधन | ... १८६६ |
| मास | ... २३९ | मुक्तावली | ... १२८३ | " | ... १०१२ | मूल्य | ... १८६५ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|-------|---------|-------|---------|-------|---------|-------|---------|
| शुद्ध | २००६ | शुद्ध | १०१२ | शुद्ध | १२०५ | शुद्ध | १६८६ |
| शुद्ध | १०११ | शुद्ध | २०६१ | शुद्ध | १८५९ | शुद्ध | १८९१ |
| शुद्ध | १९०५ | शुद्ध | २१० | शुद्ध | २०१२ | शुद्ध | १०२२ |
| " | २००१ | शुद्ध | ५६६ | शुद्ध | १२०२ | शुद्ध | १०२४ |
| शुद्ध | ८२४ | शुद्ध | १०० | शुद्ध | ५६६ | शुद्ध | १०५४ |
| शुद्ध | २२०० | शुद्ध | ६० | शुद्ध | २०८४ | शुद्ध | १६१० |
| शुद्ध | १००२ | शुद्ध | ५६६ | शुद्ध | २८० | शुद्ध | २०२१ |
| " | २२०९ | शुद्ध | ५६६ | शुद्ध | १०४६ | शुद्ध | २००५ |
| " | २२०५ | " | ९१० | शुद्ध | २११५ | शुद्ध | १०२६ |
| शुद्ध | २२०२ | शुद्ध | २०२ | शुद्ध | ९८ | शुद्ध | १०२६ |
| शुद्ध | २१५ | शुद्ध | २१८० | शुद्ध | २२०८ | शुद्ध | १०२६ |
| शुद्ध | १९०१ | " | २५२३ | शुद्ध | १८५९ | शुद्ध | २५३ |
| शुद्ध | ९९० | शुद्ध | ७४० | शुद्ध | १९२० | शुद्ध | ५०१ |
| शुद्ध | १२२२ | शुद्ध | २१८० | शुद्ध | ११८५ | शुद्ध | १९०१ |
| शुद्ध | १९०० | शुद्ध | ८६३ | शुद्ध | १२२५ | शुद्ध | ५ |
| शुद्ध | १९८१ | शुद्ध | १६०५ | शुद्ध | १८८ | शुद्ध | १२०६ |
| शुद्ध | १६२२ | शुद्ध | २८०८ | शुद्ध | २९०३ | शुद्ध | २१ |
| शुद्ध | १९०५ | शुद्ध | २५२ | शुद्ध | २९०३ | शुद्ध | १२८ |
| शुद्ध | १९३० | शुद्ध | २१२६ | शुद्ध | १०६६ | शुद्ध | १२२९ |
| शुद्ध | १९०५ | शुद्ध | ५२१ | शुद्ध | २५०८ | शुद्ध | १२२८ |
| शुद्ध | १९० | शुद्ध | १२० | शुद्ध | २०१२ | शुद्ध | १२५ |
| शुद्ध | १९० | " | १६६० | शुद्ध | २९० | शुद्ध | ११०६ |
| शुद्ध | १०२ | शुद्ध | १५० | शुद्ध | ७२० | शुद्ध | १२६८ |
| शुद्ध | २९० | शुद्ध | १६६ | शुद्ध | २१८० | शुद्ध | २१० |
| शुद्ध | २२०४ | शुद्ध | १०४ | शुद्ध | ७५० | शुद्ध | १२०२ |
| शुद्ध | २०९ | शुद्ध | ९६० | शुद्ध | ७१० | शुद्ध | १२९९ |
| शुद्ध | १६१५ | शुद्ध | १६१ | शुद्ध | ७०१ | शुद्ध | ६९२ |
| शुद्ध | ६१ | शुद्ध | २०६ | शुद्ध | ८०४ | शुद्ध | १२०० |
| शुद्ध | ७२ | शुद्ध | १६० | शुद्ध | २९६० | शुद्ध | १२६९ |
| शुद्ध | ५५१ | शुद्ध | ८० | शुद्ध | १२६६ | शुद्ध | २८५५ |
| शुद्ध | ५६६ | शुद्ध | २०४ | शुद्ध | ८१५ | शुद्ध | २८५० |
| शुद्ध | १००२ | " | १०६९ | शुद्ध | १९०० | शुद्ध | १२२९ |

| शब्द- | पंक्ति | शब्द- | पंक्ति | शब्द- | पंक्ति | शब्द- | पंक्ति |
|-----------------|--------|-----------------|--------|---------------|--------|-----------------|--------|
| यन्त्रिन् ... | १४३९ | यव्य ... | १७२० | यान ... | २०६ | यूथप ... | १५३७ |
| यथा ... | २८६६ | यश-पटह ... | ३७३ | , ... | २२८६ | यूधिका ... | ७९१ |
| यथाज्ञान ... | २१२० | यशस् ... | ३३३ | यामिनी ... | २२३ | यूप ... | ७३१ |
| यथानयम् ... | २८०८ | यष्टि ... | २९७१ | यामुन ... | १९०७ | , ... | २९३३ |
| यथायथम् ... | २८७७ | यष्टीमयुक्त ... | ८६७ | यायजूक ... | १३६९ | , ... | २९६५ |
| यथार्थम् ... | २८७८ | यष्टृ ... | १३६८ | याव ... | १३७३ | यूपाम ... | १३९० |
| यथार्हवर्ण ... | १४९३ | याग ... | १३७१ | यावक ... | १७४२ | यूप ... | २९६५ |
| यथास्वम् ... | २८७७ | , ... | १३७९ | यावत् ... | २८७८ | यौत्र ... | १७३३ |
| यथेप्सित ... | १८२० | , ... | २९१७ | यावन ... | १३३० | योग ... | २३७९ |
| यदि ... | २८७७ | याचक ... | २१२३ | याष्टीक ... | १६०७ | योगेष्ट ... | १९१७ |
| यदृच्छा ... | २२५४ | याचनक ... | २१२३ | यास ... | ८३१ | योनय ... | ८७३ |
| यन्त्र ... | १५८६ | याचना ... | १४१७ | युक्त ... | १५१६ | योजन ... | २९५५ |
| , ... | २४५३ | याचित ... | १७११ | युक्तरसा ... | ९९८ | योजनवह्नी ... | ८३० |
| यल ... | २५५३ | याचितक ... | १७१५ | युग ... | १०६४ | योध्र ... | १७३७ |
| यम ... | ११६ | याच्या ... | १४१७ | , ... | २३८३ | योद्धृ ... | १५८९ |
| , ... | १४४९ | , ... | २२६२ | युगकीलक ... | १८४४ | योध ... | १५८९ |
| , ... | २२८६ | याजक ... | १३८७ | युगन्धर ... | १५८१ | योनि ... | १२७५ |
| यमराज ... | ११६ | यातना ... | ४६५ | , ... | २९६४ | योषा ... | १०७७ |
| यमुना ... | ५३० | यातयाम ... | २६०५ | युगपद् ... | २८९३ | योषित् ... | १०७७ |
| यमुनाभ्रातृ ... | ११६ | यातु ... | १२० | युगपत्रक ... | ६९३ | यौतिक ... | १८७६ |
| ययु ... | १५५८ | यातुधान ... | १२० | युगपार्थग ... | १८३३ | यौतव ... | १८७६ |
| यव ... | १७३७ | यन्त्र ... | ११३३ | युगल ... | १०६४ | यौवन ... | १११८ |
| यवक्षय ... | १७२० | यात्रा ... | १६५८ | युग्म ... | १०६४ | यौवन ... | ११५३ |
| यवक्षार ... | १९२३ | , ... | २६८६ | युग्य ... | १५८३ | र. | |
| यवफल ... | ९७० | याद पति ... | ४७० | , ... | १८३४ | रंहस् ... | १२७ |
| यवस ... | ९८३ | यादस् ... | ५०६ | युद्ध ... | १६७४ | रक्त ... | ३०६ |
| यवान् ... | १८०६ | यादसांपति ... | १२१ | युध् ... | १६७९ | , ... | १७०१ |
| यवाग्रज ... | १९२३ | यान ... | १५०४ | युवति ... | १०९० | , ... | १३२७ |
| यवादि ... | १७५४ | , ... | १५८३ | युवत् ... | ११५७ | , ... | २४९४ |
| यवानिका ... | ९३८ | यानमुख ... | १५७८ | युवराज ... | ३८६ | रक्तक ... | ७९४ |
| यवान ... | ८३१ | याप्य ... | २१३२ | यूथ ... | १०७० | रक्तचन्द्रन ... | १३३७ |
| यत्रीयम् ... | ११६० | याप्ययान ... | १५७३ | यूथनाथ ... | १५३७ | | |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|-------------|----------|------------|----------|----------|----------|-----------|----------|
| रत्नचन्दन | १२२८ | रत्न | २२६५ | रत्ना | ८७४ | राधा | १३२३ |
| रत्नया | ५४१ | | २४३२ | रत्न | १२७ | राहुव | १३२६ |
| रत्नकला | ९२६ | रत्ना | ८२४ | रत्नक | १३०६ | राज | १४७० |
| रत्नचन्द्रक | ५३९ | रत्न | १४६६ | | २९३८ | | २२५३ |
| रत्नचरीरा | ५४२ | रत्नचिनि | ५३ | रत्न | ३५५ | राजक | १४७४ |
| रत्नाङ्ग | ९११ | रत्न | १८९३ | रत्न | ३१०० | राजग | १४७० |
| रत्नोदय | ५५ | | २५८७ | रत्नि | ३०६ | राजय | १४६९ |
| रत्नमग | १२४९ | रत्नपात्र | ९८ | रत्ना | १३९० | राजयव | १४७५ |
| रत्नम् | २३ | रत्नावर | ४०० | रत्नि | २६१० | राजम्बल | ५८२ |
| | १२० | रत्नि | १२४६ | रत्न | २९३ | राजकला | २५४ |
| रत्निग | १२४६ | रत्न | ७०८ | " | १२०५ | राजकीजिन् | १४५७ |
| रत्निग | १४८० | | १०६९ | रत्नगर्भ | २७८९ | राजराज | १३६ |
| रत्न | २९६५ | रत्नजम्पा | १५८७ | रत्नगर्भ | १२१० | राजवश्य | १३५७ |
| रत्न | १००७ | रत्नार | १०३६ | रत्ना | १३५६ | राजवश | ५८२ |
| रत्न | १९१८ | " | १२४६ | रत्ना | १३५६ | राजगृध | ६९५ |
| रत्नामीव | १९४२ | रत्नश्रुति | १५८९ | रत्नाजी | १३६० | राजगृध | ६१२ |
| रत्नग | १३४७ | रत्नश्रु | ७०१ | रत्ना | ५६० | राजगृध | २१३ |
| रत्नक | १९४९ | रत्नाङ्ग | १०३३ | " | ८१७ | राजगृध | २०५६ |
| रत्न | १८९९ | | १५८९ | रत्नगर्भ | ८९५ | राजगृध | १०३५ |
| | १४९३ | रत्नि | १६१९ | रत्नगर्भ | १२०९ | राजगृध | ७१८ |
| रत्नी | २२३ | रत्नि | १५८८ | रत्नगर्भ | ४३९ | | ७३९ |
| | ९५५ | | १६१९ | रत्नाङ्ग | ७१५ | राज | १३३६ |
| रत्नीमुख | ५३६ | रत्नि | १६१० | " | ००५ | रत्नि | ६५६ |
| रत्नम् | २७३ | रत्न | १५५ | रत्नाङ्ग | १०९४ | रत्नि | १०४५ |
| | १११५ | रत्ना | ५९८ | रत्नि | १६१ | रत्नि | ११८ |
| " | १६६४ | | १५८७ | रत्नि | ९४५ | रत्नीव | ५०५ |
| " | २०८८ | रत्न | १२५५ | रत्न | १५१२ | " | ५७८ |
| रत्नाङ्ग | १११३ | रत्न | १३०५ | रत्न | १५१३ | रत्नि | २६३ |
| रत्न | १६८३ | रत्नचन्द्र | १२५३ | रत्न | १५१३ | रत्नि | ११९ |
| रत्न | १३३७ | रत्न | ४४१ | रत्ना | २३० | रत्नि | १३९ |
| रत्न | ८३८ | रत्न | २२३० | रत्न | ११८ | रत्न | २८५ |
| रत्नि | १६३६ | रत्नी | १०८१ | रत्नी | ५०४ | रत्न | १४६ |

शब्दाजुममणिका ।

| शब्दः | पतिः | शब्दः | पतिः | शब्दः | पतिः | शब्दः |
|-----------|------|-------------|------|-------------|------|-----------|
| समु | २१४ | सव | २१४८ | सिद्ध | २१८५ | सादेय |
| " | २१९१ | " | २२९७ | सिद्धवृत्ति | १४६० | सोषन |
| समुद्रप | २७८ | सयङ्ग | १३२३ | सिद्धि | १४९९ | सोममन्त्र |
| सङ्गा | २९०९ | सयप | २९४ | सिद्धिहार | १४९८ | सोत्र |
| सङ्कोचिता | २१५ | " | २९४१ | सित | २२०४ | सोम |
| सङ्गा | ४०८ | सयगोद | ४०१ | सितक | १६४६ | सोममुद्रा |
| सङ्गाधीन | २०८० | सयन | २९९७ | सिखा | ४१६ | सोमम् |
| सङ्गिन् | २२०७ | सयिन | १४१२ | सिद्धि | १४९९ | सोमगा |
| सङ्गा | २९१४ | सयुन | ९४५ | सीढ | २२४५ | सोत्र |
| सङ्गा | ६६६ | सयन | १६१७ | सीन | ४३५ | " |
| " | ६७० | साखा | १४२१ | " | ४२६ | सोत्रप |
| " | ७५९ | " | २९१५ | " | ४७६४ | सोत्रुम |
| " | ७५९ | साधनसाधन | ७३० | सुटिग | १५६८ | सोष्ट |
| " | ९१४ | साङ्गक | १४३३ | सुम्प | २०६९ | सोष्टमेदन |
| " | ९४८ | साङ्गमिष्टी | ८८५ | सुम्प | १९७० | सोष्ट |
| सङ्गाई | ९४४ | साङ्गमी | ८७० | सुम्प | ९९६ | " |
| सङ्गा | १३५१ | " | ९८५ | सुम्प | १०१३ | " |
| सङ्गिन | २१३ | साङ्गक | १५६० | सुम्प | २९३१ | " |
| " | २२३९ | साङ्ग | १८०० | सुम्प | १५६० | सोष्टारक |
| सङ्गा | २२३९ | साङ्गा | १४८ | सुम्प | १५ | साङ्गा |
| सङ्गावर्ग | १३६४ | साङ्गा | १८६६ | सुम्प | १४९८ | साङ्गा |
| साङ्गा | १५१६ | साङ्गा | २७८ | सुम्प | ८३ | साङ्गा |
| साङ्गा | १२८१ | साङ्गा | ४१७ | सुम्प | ६५६ | साङ्गा |
| साङ्गा | ७६ | " | २४१३ | सुम्प | १९४० | " |
| साङ्गा | २८० | साङ्गा | १२०७ | सुम्प | २९३८ | साङ्गा |
| साङ्गा | १०८० | साङ्गा | २३६९ | सुम्प | १४३० | साङ्गा |
| साङ्गा | १२८१ | साङ्गा | १०५७ | सुम्प | १८१८ | साङ्गा |
| साङ्गा | १२५७ | साङ्गा | १७८ | सुम्प | ५६८ | साङ्गा |
| साङ्गा | १२७९ | साङ्गा | १८१ | सुम्प | २३३४ | साङ्गा |
| साङ्गा | २३६९ | साङ्गा | ७६९ | सुम्प | २६ | साङ्गा |
| साङ्गा | १४४४ | साङ्गा | २९१५ | सुम्प | २९५७ | साङ्गा |
| साङ्गा | २२४ | साङ्गा | १४२९ | सुम्प | ६६६ | साङ्गा |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|---------------|---------|----------------|---------|---------------|---------|----------------|---------|
| वैशिक ... | १३२६ | वणिज् ... | १८६२ | वनसुहृ ... | १७४१ | वरटा ... | १०३८ |
| वैशिरोचना ... | १९२५ | वणिज्या ... | १८६५ | वनशृङ्गाट ... | ८४६ | ,, | १०४२ |
| वक्तव्य ... | २६५४ | वण्टक ... | १८८५ | वनस्पति ... | ६६० | वरण ... | ५९९ |
| वक्र ... | २१६७ | वत्स ... | १२२९ | वनायुज ... | १५५७ | ,, | ६९८ |
| वक्तृ ... | २०९४ | ,, | १८३० | वनिता ... | १०७८ | वरण्ड ... | २९३१ |
| वक्र ... | १२५१ | ,, | २७८८ | ,, | २४८२ | वरणा ... | १५५१ |
| वक्षस् ... | १२२९ | वत्सक ... | ७८६ | वनीयक ... | २१२३ | ,, | १९९१ |
| वङ्क्षण ... | १२१९ | वत्सतर ... | १८३० | वनौकम् ... | ९९४ | वरद ... | २०३८ |
| वह् ... | १९१८ | वत्सनाम ... | ४६९ | वन्दा ... | ८१२ | वरवर्णिनी ... | १०८२ |
| वचन ... | ३१३ | वत्सर ... | २४१ | वन्दार ... | २०८० | ,, | १७८८ |
| वचनेस्थित ... | २०७३ | ,, | २५५ | वन्ध्य ... | ६६२ | वराङ्ग ... | २३८६ |
| वचसू ... | ३१३ | वत्सल ... | २०५३ | वन्ध्या ... | १८४४ | वराङ्गक ... | ९१७ |
| वचा ... | ८५३ | वत्सादनी ... | ८१३ | वन्था ... | ६५७ | वराटक ... | ५५३ |
| वज्र ... | ९३ | वद ... | २०९४ | वपा ... | ४४१ | ,, | १९८२ |
| ,, | ८५९ | वदन ... | १२५१ | ,, | १२०२ | ,, | २९७० |
| ,, | २७०४ | वदान्य ... | २०३६ | वपुस् ... | १२१४ | वरारोहा ... | १०८२ |
| वज्रनिघोष ... | १६४ | ,, | २६५६ | वप्न ... | ५९८ | वराशि ... | १३०५ |
| वज्रपुष्प ... | ८०० | वदावद ... | २०९४ | ,, | १७२८ | वराह ... | ९९१ |
| वज्रिन् ... | ८४ | वध ... | १६९८ | ,, | १९१७ | वरिवसित ... | २२२८ |
| वधक ... | ९९८ | वध्र ... | ९१५ | वमथु ... | ११८४ | वरिवस्या ... | १४२२ |
| ,, | २११९ | ,, | १०७७ | ,, | १५४१ | वरिवस्थित ... | २२२८ |
| वधित ... | २१०६ | ,, | १०९१ | वमि ... | ११८४ | वरिष्ठ ... | १९०१ |
| वधूल ... | ७०२ | ,, | २५३८ | वयस् ... | २७९६ | वरिष्ठ ... | २२४७ |
| ,, | ७०८ | वध्य ... | २११४ | वयस्थ ... | ११५७ | वरी ... | ८४९ |
| ,, | ७७७ | वघ्री ... | १९९१ | वयस्था ... | ७६४ | वरीयस् ... | २८०६ |
| वट ... | ७१३ | वन ... | ४७३ | ,, | ९२३ | वरुण ... | १२१ |
| वटक ... | २९२८ | ,, | ६५० | ,, | ९३६ | ,, | १४९ |
| वटी ... | १९८२ | ,, | २५८७ | वयग्य ... | १४९१ | ,, | ६९८ |
| वटवा ... | १५६० | वननित्तिका ... | ८१८ | वयस्या ... | १०९७ | वरुणात्मजा ... | २००७ |
| वटवानल ... | ११२ | वगप्रिय ... | १०२६ | वर ... | १२७१ | वरुथ ... | १५८१ |
| वट् ... | २१४६ | वननक्षिका ... | १०४१ | ,, | २२६६ | वरुथिनी ... | १६२४ |
| | | वननाम्नि ... | ४२ | ,, | २६८१ | वरेण्य ... | २१३९ |

शब्दानुक्रमणिका ।

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|-------|----------|----------|----------|----------|----------|-----------|----------|
| वर्त | ११७४ | वामन | १५९८ | वल्ली | ६६६ | वज्र | |
| वर्ष | १०६९ | वर्ष | २१३९ | वज्रर | १२०० | वज्रसा | २०५ |
| वचन | २४९७ | वर्षा | १०८८ | वज्र | २२६५ | वह | १८१२ |
| वचन | १२०९ | वज्रणा | १०४० | वज्रमिवा | २२५७ | वह्नि | १०५ |
| वर्ष | ११५९ | वज्र | १६६ | वज्रा | १५४१ | | १४९ |
| " | १५५२ | " | २७८३ | " | १८४४ | वह्निमिवा | १२१९ |
| " | २४३० | वज्रवर | १४८५ | " | २७६९ | वह्निमिवा | ८०८ |
| वज्र | १३४० | वज्रा | २५३ | वह्नि | २१३७ | वा | २८३४ |
| | २९४० | वज्रांशु | ५१४ | वह्नि | ८४३ | " | २८६६ |
| वह्नि | २३४४ | वज्रांशु | ५१५ | " | १४८९ | " | २८४९ |
| वह्नि | १४३७ | वज्रांशु | ११५९ | वह्नि | २०४४ | वाग्नि | २०५४ |
| वह्नि | १०५ | वह्नि | १६८ | वह्नि | २८६४ | वाग्नि | १११५ |
| " | २३५६ | वह्नि | १२१४ | वह्नि | १४०६ | वाग्नि | २०२४ |
| वह्नि | १४०९ | " | २५८१ | वह्नि | २४६८ | वाग्नि | १९८१ |
| " | २०८३ | वह्नि | ३०२ | वह्नि | १३०४ | वाग्नि | १९५६ |
| वह्नि | ५८७ | वह्नि | २३९७ | वह्नि | २५१ | वह्नि | २९५ |
| वह्नि | १३४० | वह्नि | २४०७ | वह्नि | १२०२ | वह्नि | ३३८ |
| वह्नि | १०५८ | वह्नि | ६३३ | वह्नि | ८४३ | वह्नि | ३१२ |
| वह्नि | २०८३ | वह्नि | १३८७ | वह्नि | ९१ | वह्नि | १४३६ |
| वह्नि | २१६३ | वह्नि | २३०५ | " | ८११ | वह्नि | १९३ |
| वह्नि | ५८६ | वह्नि | ११६४ | " | १८८६ | वह्नि | २०५६ |
| " | १५५५ | वह्नि | ११६४ | " | २४९१ | वह्नि | २०५६ |
| " | २५४७ | वह्नि | ६३३ | वह्नि | ८०९ | वह्नि | ३४५ |
| वह्नि | ६३८ | वह्नि | २९३ | " | १४९१ | वह्नि | २०५५ |
| वह्नि | १३४६ | वह्नि | ६४३ | वह्नि | ४४ | वह्नि | १६४३ |
| वह्नि | २०८३ | वह्नि | ६४३ | वह्नि | ५६९ | वह्नि | २९५६ |
| " | २३६६ | वह्नि | १५६४ | वह्नि | ५६९ | वह्नि | ८५५ |
| वह्नि | ४५१ | वह्नि | ५८५ | वह्नि | ५६९ | वह्नि | १०५४ |
| वह्नि | १४३७ | वह्नि | ३६३ | वह्नि | १२१० | " | १५५५ |
| वह्नि | ३०६३ | वह्नि | २३३३ | वह्नि | २९३१ | " | २५४९ |
| वह्नि | १९९३ | वह्नि | २६०९ | वह्नि | ६०९ | वह्नि | ६०६ |
| वह्नि | १५५५ | वह्नि | ६८५ | वह्नि | १४०४ | वह्नि | ४१६ |

श-

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|---------------|---------|---------------|---------|----------------|---------|-----------------|---------|
| वाटी ... | २९७८ | वाय्य ... | ९०० | वारुणी ... | २४३८ | वासिता ... | २४८५ |
| वाव्यालका ... | ८६२ | वाम ... | २६२४ | वर्त ... | ११८८ | वानुकि ... | ४४६ |
| वाटव ... | ११२ | वामदेव ... | ६४ | " ... | २४८२ | वानुदेव ... | ४० |
| " ... | १३६० | वानन ... | १५१ | वार्ता ... | ३२५ | वासु ... | ३९ |
| " ... | १५६० | " ... | ११६५ | " ... | १७०९ | वास्तु ... | ६३१ |
| वाडव्य ... | ७३३१ | " ... | २१६४ | " ... | २४८२ | वास्तुक ... | ९६४ |
| वाणि ... | १९८५ | वामल्ल ... | ५.५ | वार्ताक्री ... | ८७६ | वास्तोष्पति ... | ८५ |
| वाणिज ... | १८६२ | वामलोचना ... | १०७९ | वार्तावह ... | १९६९ | वाद्य ... | १५७६ |
| वाणिज्य ... | १७१० | वामा ... | १०७८ | वार्धक ... | ११५४ | वाह ... | १५५५ |
| " ... | १८६५ | वामी ... | १५६० | वार्धुपि ... | १७१७ | " ... | १८८३ |
| वाणिनी ... | २५५८ | वायदण्ड ... | १९८४ | वार्धुपिक ... | १७१७ | वाहद्विपत् ... | ९९६ |
| वाणी ... | ३१२ | वायस ... | १०२८ | वार्मण ... | २३३५ | वाहस ... | ४४७ |
| वात ... | १२५ | वायमाराति ... | १०१७ | वार्पिक ... | ९४९ | वाहिस्थ ... | १५४४ |
| वातक ... | ९४७ | वायमी ... | ९५१ | वाल ... | १२६४ | वाहिनी ... | १६२३ |
| वातकिन् ... | ११९७ | वायमोली ... | ९३६ | वालधि ... | १५६७ | " ... | १६७९ |
| वातपोथ ... | ७०७ | वायु ... | १२७ | वालपाश्या ... | १२७९ | " ... | २५५८ |
| वातप्रमी ... | १००२ | वायुसम्ब ... | १०९ | वालहस्त ... | १५६७ | वाहिनीपति ... | १५९२ |
| वातमृग ... | १००२ | वार ... | ४७२ | वालुक ... | ८९१ | वि ... | १०५४ |
| वातायन ... | ६१० | वार ... | १०६६ | वालक ... | १२९५ | विकङ्कत ... | ७२३ |
| वातायु ... | १००३ | " ... | २६५८ | वावदूरु ... | २०९५ | विकच ... | ६६३ |
| वातूक ... | २७२७ | वारण ... | १५३६ | वाशिका ... | ८५४ | विकर्तन ... | २०३ |
| वासक ... | १८२७ | वारणजुसा ... | ८७४ | वाशित ... | ३६१ | विकलाङ्ग ... | ११६५ |
| वादिन ... | ३७१ | वारमुखा ... | १११२ | वास ... | ६०४ | विकसा ... | ८२९ |
| बाद्य ... | ३६९ | वारवाण ... | १५९३ | वासक ... | ८५५ | विकम्बर ... | २०८५ |
| वान ... | ६७९ | वारस्त्री ... | ११११ | वासगृह ... | ६०९ | विकार ... | २२८० |
| वानप्रस्थ ... | ७०४ | वाताही ... | ९५० | वासन्ती ... | ७९२ | विकासिन् ... | २०८५ |
| " ... | १३५९ | वारि ... | ४७२ | वासयोग ... | १३४१ | विकिर ... | १०५४ |
| वानर ... | ९९४ | वारिद ... | १५९ | वासर ... | २१८ | विकीरण ... | ८०९ |
| वानस्पत्य ... | ६६० | वारिपर्णी ... | ५४२ | वासव ... | ८४ | विकुर्वाण ... | २०३९ |
| वानीर ... | ७०८ | वारिमवाह ... | ६४३ | वासस् ... | १३०४ | विकृत ... | ३९९ |
| वानेय ... | ९११ | वारिवाह ... | १५७ | वासित ... | १३४१ | " ... | ११८९ |
| वापी ... | ५२३ | वारी ... | १५५३ | " ... | १७९९ | विकृति ... | २२८० |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|-----------|----------|-------------|----------|------------|----------|--------------|----------|
| विनम | १६७२ | विज्ञान | २०४३ | विदिग् | १५५ | विपुनन | २२५८ |
| " | १२१६ | विज्ञान | २८८ | विदु | १५४२ | विपुनन | २२५८ |
| विनय | १८७२ | विट | २५२९ | विदुर | ७०८ | विषेय | २०७३ |
| विकल्पित | १८६३ | विष्क | ६२४ | | २०८५ | विनयग्राहिन् | २०७३ |
| विकल्प | १२२१ | विटप | ६७७ | विपुन | ७०९ | विना | २८५४ |
| विनिषा | २२८० | " | २५६६ | विद | २२२३ | विनायक | २७ |
| विनेष्ट | १८६४ | विगिन् | ६५८ | विद्वत्भी | ८१७ | " | ७५ |
| विनेय | १८७० | विद्वत्खदिर | ७४८ | विद्यावर | २१ | " | २३४७ |
| विज्ञ | २११३ | विद्वत् | १२७४ | विपुन | १६३ | विनाय | २२९४ |
| विज्ञान | २३२३ | विद्वत् | ८६१ | विद्वि | ११८५ | विनीत | १५५६ |
| विगत | २२२३ | विद्वीनत् | ८१ | विद्वन् | १६८९ | विन्दु | २०८७ |
| विज्ञानवा | १११६ | विनष्टा | २९१२ | विदुत | २९२४ | विषय | ६६८ |
| विम | ११६६ | विनय | ३१२ | विदुम | १८९२ | विम | २२३२ |
| विमद | १२१४ | विनयन | १४११ | विदुमक्षरा | २०७ | " | ७५५३ |
| " | १५०४ | विमर्दि | ६२४ | विद्वत् | १३६९ | विग | १४८९ |
| " | १६७६ | विमर्दिन | १२४१ | " | २८०४ | विगधी | ३६८ |
| " | २२९३ | विमान | १३१३ | विद्वन् | ४११ | विग | १८७७ |
| विपय | १४०९ | " | २५६१ | विद्वन् | १०९६ | विग | ५९७ |
| विग | २९८८ | विपुन | २४६ | विधा | २००५ | विग | २४३८ |
| विगच्छ | ७५ | विपुनय | २०१ | " | २५३७ | विग | १६३१ |
| विगच्छ | १३६४ | " | १३६१ | विपान् | २४ | विग | ५८९ |
| विगच्छ | २३०९ | " | १९०८ | विग | २४ | विग | १६३१ |
| विगच्छ | ११७१ | विग | १८८६ | " | ७२० | विग | २३१५ |
| विगच्छ | २८१ | " | २०४३ | " | १४६१ | विग | १३६३ |
| विगच्छ | २२९३ | " | २२२३ | " | २५३४ | विग | ५३२ |
| विगच्छ | २८२ | विद्वत् | २२६० | " | १३२ | विग | ११०८ |
| विगच्छ | ६१४ | विद्वत् | २९५८ | विपु | ४५ | विग | ५३२ |
| विगच्छ | २२४७ | विद्वत् | ४८६ | " | १३२ | विग | ५३२ |
| विगच्छ | १५९३ | विद्वत् | ८६८ | " | ५३३ | विग | ६५० |
| विगच्छ | १६८० | विद्वत् | ८७० | विपु | २२३८ | विग | ११९६ |
| विगच्छ | १३८ | विद्वत् | २०७० | विपु | २२३ | विग | १३६१ |
| विगच्छ | २०७२ | " | २४४२ | विपु | | | |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|------------|----------|------------|----------|--------------|----------|--------------|----------|
| वृष | ... २७७७ | वेधमुख्यक | ९१८ | वैषयिक | ... १९५५ | वृष | ... २७१५ |
| वृषण | ... १२२६ | वेधम् | ... ३४ | वैषिक | ... १९५५ | वृषजन | ... १३५३ |
| वृषदंशक | ... ९९९ | ” | ... २७९२ | वैतसिक | ... १९५७ | वृषशक | ... ३९३ |
| वृषध्वज | ... ६७ | वेवित | ... २२२३ | वैतनिक | ... १९५८ | वृषजन | ... २५६६ |
| वृषन् | ... ८४ | वेपथु | ... ४३७ | वैतरणी | ... ४६४ | ” | ... २९४१ |
| वृषभ | ... १८२५ | वेमन् | ... १९८४ | वैतालिक | ... १६६१ | वृषटम्बक | ... ७५१ |
| वृषल | ... १९३० | वेन्ना | ... २७३२ | वैदेहक | ... १८६२ | वृषल्य | ... २३१५ |
| वृषस्यन्ती | ... १०९२ | वेह | ... ८६० | ” | ... १९३५ | वृषत्वास | ... २३१५ |
| वृषा | ... ८२३ | वेहज | ... १७७७ | वैदेही | ... ८४१ | वृषधा | ... ४६६ |
| वृषाकपाथी | २६४७ | वेह्रित | ... २१६७ | वैद्य | ... ११८७ | वृषध | ... २२६६ |
| वृषाकपि | ... २५८४ | ” | ... २१९८ | वैद्यमानृ | ... ८५४ | वृषध्व | ... ५८९ |
| वृषी | ... १४४४ | वेश | ... ५९६ | वैधात्र | ... १०१ | वृषय | ... २२८४ |
| वृष्टि | ... १६६ | वेशन्त | ... ५२३ | वैधेय | ... २१२० | वृषलीक | ... २३५९ |
| वृष्णि | ... १८५९ | वेदमन् | ... ६०१ | वैनेतेय | ... ५७ | वृषवधा | ... १६९ |
| वेग | ... २३७५ | वेदयभू | ... ६३१ | वैनीतक | ... १५८४ | वृषवहार | ... ३२८ |
| वेगिन् | ... १६१४ | वेदया | ... ११११ | वैमात्रेय | ... ११२४ | वृषवाय | ... १४६६ |
| वेणि | ... १२६९ | वेप | ... १२७२ | वैयात्र | ... १५७४ | वृषसन | ... १३५३ |
| वैणी | ... ७८६ | वेपित | ... २२०५ | वैर | ... ४११ | ” | ... २५७५ |
| वैणु | ... ९७० | वेमवार | ... १७७६ | वैरनिर्यानिन | १६८८ | वृषसनार्त | ... २१११ |
| वैणुक | ... १५५९ | वेहत् | ... १८४५ | वैरशुद्धि | १६८८ | वृषस्त | ... २१६८ |
| वैणुधम | ... १९५५ | वै | ... २८५९ | वैरिन् | ... १४८८ | वृषाकुल | ... २१११ |
| वैनन | ... २००५ | ” | ... २८७९ | वैवधिक | ... १९५९ | वृषाकोश | ... ६६३ |
| वैतस | ... ७०७ | वैकक्षिक | ... १३४५ | वैवस्वन | ... ११७ | वृषात्र | ... ९९० |
| वैतस्यत् | ... ५७५ | वैकुण्ठ | ... ३५ | वैगास | ... २४६ | वृषात्रनख | ... ९०३ |
| वैताल | ... ७८५ | वैजनन | ... ११५१ | ” | ... १८५४ | वृषात्रपाद् | ... ७२३ |
| वैत्रवती | ... ५३५ | वैजयन्त | ... ९१ | वैश्य | ... १७०८ | वृषात्रपुच्छ | ... ७४९ |
| वेद | ... ३१६ | वैजयन्तिक | १६०९ | वैश्रवण | ... १३७ | वृषात्राट | ... १०१८ |
| वेदना | ... २२६१ | वैजयन्तिका | ७७९ | वैश्वानर | ... १०५ | वृषात्री | ... ८३५ |
| वेदि | ... १३८८ | वैजयन्ती | ... १६६६ | वैसारिण | ... ५०० | वृषाज | ... ४२० |
| वेदिका | ... ६२४ | वैज्ञानिका | ... २०३३ | वैपद् | ... २८६४ | ” | ... ४२७ |
| वेध | ... २०६६ | वैणव | ... ६८५ | व्यक्त | ... २४५९ | व्याड | ... २४१९ |
| वेधनिका | ... १९९६ | ” | ... १४४३ | व्यक्ति | ... २७६ | व्याडायुध | ... ९०६ |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|------------|----------|-----------|----------|--------------|----------|------------|----------|
| स्वान | १९७० | ब्रज | ११८१ | अतिहृत्कि | १६०६ | गुणपरिक्ता | ८५३ |
| ॥ | ९०० | मन | १४२७ | शक | ८३ | " | ९६३ |
| स्वाधि | ११७५ | वतति | ६६६ | " | ७८१ | शतपुष्पा | ९५२ |
| स्वाधियात | ६९६ | ॥ | २४६८ | गुणधनुस् | १६५ | गुणमात्र | ८०१ |
| स्वाधिन | ११८९ | मनिन् | १३६७ | गुणपदप | ७५४ | गुणमयु | ८३ |
| स्वान | १२६ | मयन | १९९४ | शक्रपुष्पिना | ९२० | शतमात्र | २९७३ |
| स्वासाद | २८३ | मान | १०६६ | गृह | २०९७ | शतमूली | ८४५ |
| स्वाय | १९४७ | माल | १४५९ | गृह | ६० | " | ६६५ |
| स्वाय | ४५१ | माडा | ४०८ | शकु | ५०७ | शतवीया | ९६६ |
| " | २७२८ | माटि | १७१७ | शकु | १६५३ | शतवेदिन् | ९३० |
| स्वा-माहिग | ४६० | " | १७४९ | शत | १४२ | शतसदा | १६३ |
| स्वा-मा | २९०८ | मैहम | १७१९ | " | ५१३ | शान | १५६९ |
| स्वाय | २३९३ | दा | | " | ९०२ | शतान्वी | ८५० |
| स्वाहार | ६१३ | शरट | १५७२ | " | २३७१ | गुह | १४८९ |
| शु धान | २५७१ | शरक | १७६ | शहनगा | ५१३ | शनेधर | १९६ |
| शुक्ति | २४११ | शरणि | ५०१ | शक्षिनी | ९०१ | शनेध | २८८२ |
| शुद्ध | २४२४ | शुभन | १०५२ | शची | ८१ | शरम | ३२९ |
| शुद्धकट्ट | १५९८ | शुभनि | १०५२ | शचीपति | ८५ | शयन | १२९ |
| शुनि | १२८५ | गुग्गु | १०५२ | शनी | ९५६ | शक | १५६६ |
| शुग | १०६५ | " | २४५० | शट | २११७ | शपरी | ५०३ |
| " | १६१५ | शुक्ति | १०५३ | शजगर्भी | ९४७ | शहर | १९६९ |
| " | २८१३ | शुक्त | ५०५ | गुणपुष्पिना | ८६२ | शकालय | ६३३ |
| शुद्धाग | १६२६ | शुक्लाधरा | ९६६ | शरट | ११५३ | शकउ | ३१० |
| शुक्ला | १९४३ | शुक्लादली | ८२० | " | १४८५ | शकनी | १८४१ |
| शुक्लमय | ६८ | " | ८७० | गुग | १८७५ | गृह | २२१ |
| शुक्लमय | १४३ | गुग्गु | ५०१ | गुगनेपि | ९३ | " | ३१४ |
| शुक्लमय | ९५ | गुग्गु | १२०८ | गुगु | ५३३ | शकदमाह | ३५५ |
| शुक्लमय | १९२९ | गुग्गु | १८३० | गुगु | ५३६ | गृह | २१०० |
| शुक्लमय | २३९५ | शुक्ति | १६७२ | गुगु | १०२० | शक | २२५५ |
| शुक्लमय | १४३३ | " | २४६७ | गुगु | १०१४ | गुग | २२७५ |
| ॥ | १६५८ | शक्ति | ८० | गुगु | ९७० | गुग | ११६ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|------------|----------|-----------|----------|-------------|----------|-----------|----------|
| शमन | ... १४४० | शरण | ... २४४ | शव | ... १७०४ | शब्ध | ... ४२० |
| शमनगन्धर्व | ... ५३० | शरद् | ... २५३ | शश | ... १०० | शाप | ... १९०३ |
| शमल | ... १२०८ | " | ... २५५ | शशधर | ... १७४ | शापी | ... २९१२ |
| शमिन | ... २२१९ | " | ... २५२० | शशलोमन् | ... १९२० | शाण्डिल्य | ... ७१२ |
| शमी | ... ७५२ | शरभ | ... १००९ | शशाङ्ग | ... १०१६ | शान | ... २२०६ |
| " | ... १७५२ | शरव्य | ... १६३९ | शशोर्ण | ... १९२० | शानकुम्भ | ... १८०५ |
| शमीर | ... ७५२ | शराभ्यास | ... १६३९ | शश्वत् | ... २८२२ | शान्न | ... १४८९ |
| शम्पा | ... १६२ | शरारि | ... १०३७ | " | ... २८५१ | शब्द | ... ४८५ |
| शम्पाक | ... ६९५ | शराश | ... २०८१ | " | ... २८७० | " | ... २५१४ |
| शम्ब | ... ९४ | शराव | ... १७७० | शष्य | ... ९८३ | शाङ्गल | ... ५७६ |
| शम्बर | ... ४७५ | शरावती | ... ५३५ | शन्त | ... २६७ | शान्त | ... २२१९ |
| " | ... १००७ | शरासन | ... १६३४ | " | ... २२४३ | शान्ति | ... २२५५ |
| शम्बरारि | ... ५१ | शरीर | ... १२१४ | शस्त्र | ... १६३२ | शायर | ... ७१४ |
| शम्बरी | ... ८२३ | शरीरिन् | ... २७५ | " | ... २६९४ | शान्दरी | ... १९५१ |
| शम्बल | ... २९६३ | शर्करा | ... ५७८ | शस्त्रक | ... १००२ | शार | ... २६६७ |
| शम्बाकृत | ... १७२५ | " | ... १७९३ | शस्त्रमार्ज | ... १९४२ | शारद | ... ६९४ |
| शम्भूक | ... ५१३ | " | ... २६८६ | शस्त्राजीव | ... १६०२ | " | ... २५२४ |
| शम्भली | ... ११५२ | शर्करावत् | ... ५७८ | शस्त्री | ... १६५३ | शारदी | ... ८७० |
| शम्भु | ... ५९ | शर्करिल | ... ५७८ | शाक | ... ९२० | शारिफक | ... २०२१ |
| " | ... २६०४ | शर्मन् | ... २६४ | " | ... १७७५ | शारिवा | ... ८७२ |
| शम्भा | ... १७३४ | शर्व | ... ६० | शाकट | ... १८३४ | शार्कर | ... ५७८ |
| शय | ... १२३६ | शर्वरी | ... २२१ | शाकुनिक | ... १९५६ | शाङ्गिन् | ... ३८ |
| शयन | ... ४३४ | शर्वाणी | ... ७३ | शाक्तीक | ... १६०६ | शार्दूल | ... ९९० |
| " | ... १३४९ | शल | ... १००१ | शाक्यमुनि | ... २८ | शार्वर | ... २७१२ |
| शयनीय | ... १३४८ | शलम | ... १०४४ | शास्त्रसिंह | ... २९ | शल | ... ५०७ |
| शमाल | ... २०९० | शलल | ... १००१ | शाखा | ... ६७० | शाला | ... ६०४ |
| शयित | ... २०९० | शलली | ... १००१ | शाखानगर | ... ५९६ | " | ... ६७० |
| शयु | ... ४४७ | शल्लाट | ... ६७९ | शाखामृग | ... ९९३ | " | ... २९७४ |
| शय्या | ... १३४८ | शल्लक | ... २३६० | शालिन् | ... ६५८ | शालावृक | ... २३५८ |
| शर | ... ९७२ | शल्य | ... ७५४ | शाङ्गिक | ... १९४५ | शालि | ... १७५५ |
| " | ... १६४१ | " | ... १००१ | शाटक | ... २९६० | शालीन | ... २०७६ |
| शरजन्मन् | ... ४७ | " | ... १६५३ | शाटी | ... २९७१ | शल्लक | ... ५४२ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|-------------|---------|-------------|---------|-----------|---------|-----------|---------|
| गालर | ५१४ | शिशु | १७७५ | शिशिरगाला | ६७७ | शीतशिव | ८५८ |
| शानेय | ८५८ | शिशुन | १९२६ | शिव | ५९ | " | ८९३ |
| " | १७१९ | शिक्षाल | २४०३ | " | २६५ | " | १७९० |
| शास्त्रमणि | ७४१ | शित्त | ३५८ | शिवन | १८५३ | शितु | २०१२ |
| शवद | १०६३ | शित्तिनी | १६३७ | शिवमहती | ८११ | " | २९६२ |
| शाधन | २१६९ | शित्तल | १७३७ | शिव | ७३ | शीर्ष | १२६६ |
| शास्त्रुनिध | २३२९ | शिति | २५०० | " | ७५३ | शीर्षक | १५२४ |
| शासन | १४१८ | शित्तिनपठ | ६३ | " | ७६७ | शीर्षकेश | २११४ |
| शास्त्र | २८ | शित्तिनारक | ७२५ | " | ९०३ | शीर्षक | १२६९ |
| शास्त्र | २६९४ | शित्तिविष्ट | २४०३ | " | ९९७ | " | १५९५ |
| शास्त्रविदु | २०३७ | शित्त | ६७० | शिशिर | १८२ | शीत | ४१४ |
| शिव | १९८९ | शिक्षागुरु | ५५२ | " | २५० | " | २७३७ |
| शिवियन | २२०३ | शिविका | १५७३ | शिशु | १०६३ | शुक् | ९१३ |
| शिक्षा | २१८ | शिविर | १५३३ | शिशुन | ५०३ | " | १०३० |
| शिक्षित | २०३२ | शिव्या | १७५२ | शिशुन | ११५३ | शुद्धनास | ७६३ |
| शिक्षण | १०५० | शिरा | १३६३ | शिशुमार | ५०७ | शुक् | २५०० |
| शिक्षणक | १२६६ | शिरा | १५२५ | शिक्ष | १९२५ | शुक्ति | ५१३ |
| शिर | ६४१ | शिरा | १३६९ | शिक्षिग | २११६ | " | ९०२ |
| " | ६४२ | शिरा | १३०३ | शिक्षिग | १५१९ | शुक् | १११ |
| शिक्षिग | ६३३ | शिरा | ७७३ | शिक्ष | १३७४ | " | १९४ |
| " | २५३७ | शिरा | १३४९ | शीकर | १६७ | " | २४६ |
| शिक्षा | ११३ | शिरा | १३७८ | शीत | १२८ | " | ११९७ |
| " | १०५० | शिरा | १३६३ | शीत | १८२ | शुक्शिक्ष | २४ |
| " | १२६८ | शिक्षा | ६१९ | शीत | १८३ | शुक् | २३९ |
| " | २३७२ | " | ६३० | " | ७०८ | " | ४०१ |
| शिक्षण | १०९ | शिक्षणगुरु | १९१४ | " | ७१७ | शुक् | ४११ |
| शिक्षण | १०४८ | शिक्षि | ५१५ | " | २२३९ | शुक् | ११२ |
| शिक्षिग | १०४८ | शिक्षिग | २३७० | शीत | १०६५ | " | २४६ |
| शिक्षिग | २५३७ | शिक्षिग | ६३५ | शीत | ७८८ | " | २९६ |
| शिक्षिग | ७९ | शिक्षिग | १९२९ | शीत | १८३ | " | २३९१ |
| शिक्षिग | ७१० | शिक्षिग | १९२८ | " | ९४७ | शुक् | १७८२ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|---------------|---------|---------------|---------|---------------|---------|------------------|---------|
| शुण्डापान... | २०१० | शून्य ... | २१३७ | शेवाल ... | ५४३ | शौण्ड ... | २०७१ |
| शुतुद्रि ... | ५३३ | शूर ... | १६२१ | शेष ... | ४४६ | शौण्डिक ... | १९४९ |
| शुद्धान्न ... | ६१६ | शूर्य ... | १७५८ | शैक्ष ... | १३७४ | शौण्डी ... | ८४७ |
| " ... | २४६६ | शूल ... | २७२९ | शैसरिक ... | ८२५ | शौटोदिनी... | २९ |
| शुनक ... | १९७२ | शूलाकृत ... | १७९६ | शैल ... | ६३५ | शौरि ... | ४१ |
| शुनी ... | १९७३ | शूलिन् ... | ५९ | शैलालिन् ... | १९५२ | शौर्य ... | १६७१ |
| शुभ ... | २६५ | शूल्य ... | १७९६ | शैल्य ... | ७१२ | शौल्विक ... | १९४५ |
| " ... | १८५८ | शूगाल ... | ९९८ | " ... | १९५२ | शौष्कुल ... | २०६३ |
| " ... | २९४० | शूकल ... | १२९१ | शैल्य ... | ८९४ | क्षयोन ... | २२७० |
| शुभंयु ... | २१२४ | " ... | १५५९ | शैवल ... | ५४३ | क्षमशान ... | १७०४ |
| शुमान्वित . . | २१२४ | शूकलक ... | १८५७ | शैवलिनी ... | ५२६ | क्षमधु ... | १२७१ |
| शुभ्र ... | ३०१ | शूकला ... | १५४९ | शैशव ... | ११५३ | क्षयाम ... | ३०४ |
| " ... | २७२० | शूक ... | ६४१ | शोक ... | ४११ | " ... | २६२१ |
| शुभ्रदन्ती... | १५४ | " ... | ९३० | शोचिष्पेश ... | १०७ | क्षयामल ... | ३०४ |
| शुभ्राशु ... | १७२ | " ... | २३८६ | शोचिस् ... | २१३ | क्षयामा ... | ७५८ |
| शुल्क ... | १५२२ | शूकवेर ... | १७८१ | शोण ... | ३०६ | " ... | ८६५ |
| शुत्र ... | १९०१ | शूकटक ... | ५९० | " ... | ५३४ | " ... | ८७२ |
| " ... | १९८२ | शूकार ... | ३९५ | शोणक ... | ७६३ | " ... | २६२१ |
| " ... | २९४० | " ... | ३९६ | शोणरत्न ... | १८९१ | क्षयामाक ... | ९७९ |
| शुश्रूषा ... | १४२२ | शूङ्गिणी ... | १८३९ | शोणित ... | १२०१ | क्षयाल ... | ११३७ |
| शुषि ... | ४४१ | शूङ्गी ... | ५१६ | शोय ... | ११७८ | क्षयाव ... | ३०८ |
| शुषिर ... | ४४० | " ... | ८४८ | शौथझी ... | ९४६ | क्षयेत ... | ३०१ |
| " ... | ४४२ | " ... | ८८१ | शोधनी ... | ६२९ | क्षयेन ... | १०१७ |
| शुष्कमास ... | १२०० | शूङ्गीकनक ... | १८९८ | शोधित ... | १९९८ | क्षयैर्नपाता ... | २९०७ |
| शुष्म ... | १६७१ | शून ... | २२१५ | " ... | २१३६ | श्रद्धा ... | २५३९ |
| शुष्मन् ... | १०७ | शैसर ... | १३४६ | शोफ ... | ११७८ | श्रद्धालु ... | १११६ |
| शूक ... | १७५२ | शोफस् ... | १२२५ | शोमन ... | २१२८ | " ... | २०७९ |
| शूकग्रीड ... | १०१५ | शोफालिका... | ७८९ | शोमा ... | १७९ | श्रयण ... | २२७३ |
| शूकशिम्बि ... | ८७२ | " ... | २९०९ | शोमाञ्जन ... | ७१० | श्रवण ... | १२६२ |
| शूद्र ... | १९३० | शेसुपी ... | २७८ | शोप ... | ११७६ | श्रवस् ... | १७६२ |
| शूद्रा ... | १०९९ | शैलु ... | ७१७ | शोक ... | १०७३ | श्रविष्ठा ... | १८८ |
| शूद्री ... | १०९९ | शेवधि ... | १४२ | शौहिकेय ... | ४५८ | श्राणा ... | १८०६ |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|-------------|----------|-----------|----------|-----------|----------|--------------|----------|
| आङ् | १११३ | अवत् | २८९ | अभू | ११२५ | अवम | २७८६ |
| आङ्गदेव | ११७ | " | २१११ | अभूयपुर | १११८ | अवाम | २९८६ |
| आय | २२७३ | अवली | ७६७ | अत् | २८९२ | अयुग | १६७७ |
| आवण | २१७ | " | ८१७ | असन | १२२ | अयोधित | २२०८ |
| आवणिव | २१७ | " | ८१२ | " | ७५३ | अराव | २५७ |
| मी | ५४ | अष्ट | २१११ | आविद | १००१ | अलाप | २१३ |
| " | १६११ | अोन | ११७० | अिन | ११८२ | अकल्प | २५५ |
| अकण्ठ | ६१ | अोणि | १२२१ | अोन | १०१ | अवत् | २८८१ |
| अपन | २८ | अोणिपत्र | १२२० | , | १८९९ | अवनन | २२५७ |
| अद् | ११८ | अोष | १२६२ | , | २१९१ | अवर्त | २५९ |
| अपानि | ११ | अानिय | १२६५ | अोनगन्त् | १२४ | अवनिरा | ५५३ |
| अपण | ७८० | अपिद् | २८६४ | अोनमरिच | १२२६ | अवस्य | ६११ |
| " | २४४० | अहन | २११७ | अेतरक्त | १०७ | अवाहन | २२९४ |
| अपार्णिका | ७२९ | अेव | २२७१ | अेतसुरसा | ७९० | अविद् | २७९ |
| अपणी | ७२० | अेधमण | ११२४ | प | | " | २८६ |
| अकृष्ट | ७१२ | अेधमन् | ११९८ | पद्वर्मन् | १२६१ | अवीक्षण | २१०९ |
| अकृष्टी | ८२८ | अेधमत् | ११९४ | पद्वद् | १०४६ | अवीग | २२०२ |
| अमत् | ७२८ | अेधमन्त्र | ७१७ | पद्विज्ञ | २७ | अवेग | ४२९ |
| " | २०५३ | अोक | २२३९ | पदानन | ७७ | अवेद | २२६१ |
| अक | २०५३ | अेयव | २६५ | पद्वमय | ७४५ | अवेद्य | ४१४ |
| अकृष्टलक्षण | ४३ | अदद्वा | ८४५ | पद्वमया | ८५३ | अवान | ११०९ |
| अवात | ११११ | अन् | १२७३ | पद्वमयिका | २५६ | अगतद्व | १६६३ |
| अवेष्ट | १२३१ | अनिय | २२७५ | पद्वा | १६१ | अद्यय | २८२ |
| असह | १२२४ | अयय | १२६८ | पद्वा | ५५१ | अद्ययप्रमानस | २०४४ |
| अहस्तिनी | ७८७ | अम | ४४१ | " | १८३१ | अभय | २८६ |
| अग | २४८८ | " | २२३८ | अष्टिनय | १०२० | अष्टद्व | २२४२ |
| अगि | २१६ | अययु | ११७८ | आम्भालुर | ८० | अष्टेय | २११० |
| " | १२६३ | अयुति | १७११ | स | | अष्टक | २१६० |
| " | २४८१ | अयुर | ११२५ | अवत् | १६७९ | अष्टर | ११८२ |
| अेनी | ६५६ | " | ११२८ | अवन | २१०८ | " | २१४४ |
| , | १९१८ | अयुय | २६१७ | | | | |
| अेवत् | २६२ | | | | | | |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|------------|---------|-----------|---------|-----------|---------|-----------|---------|
| संसिद्धि | ४३६ | संकार्पण | ४८ | सचिव | २७४८ | सत्र | २६९७ |
| संस्कृत | २४९६ | संकाशित | २२१० | सज्ज | १५९८ | सत्रा | २८५६ |
| संस्तर | २६५८ | संकरूप | २८० | सज्जन | १३५८ | सन्निह | १४९७ |
| संस्तव | २२९५ | संक्रमुक | २११० | " | १५३३ | सत्वर | १२९ |
| संस्ताव | २३१८ | संकाश | २००४ | सज्जना | १५५१ | सदन | ६०२ |
| संस्त्याय | २६३८ | संकीर्ण | १९३० | संचय | १०६६ | सदस् | १३८३ |
| संस्था | १५१९ | " | २१९५ | संचारिका | ११०७ | सदस्य | १३८४ |
| संस्थान | २५५३ | " | २४४८ | संजवन | ६०४ | सदा | २८९३ |
| संस्थित | १७०१ | संकुल | ३४९ | संज्वर | ११४ | सदागति | १२२ |
| संस्पर्श | ९५६ | " | २१९५ | संज्ञापन | १६९४ | सदातन | २१६९ |
| संस्फोट | १६७७ | संकोच | १३२२ | संज्ञा | २४०१ | सदानीरा | ५३२ |
| संहत | २१७५ | संक्रन्दन | ८७ | संजु | ११६८ | सदृश | २००२ |
| संहतानुक्र | ११६८ | संक्रम | २३०० | सटा | १२६८ | सदृश | २००२ |
| संहतल | १२४३ | संक्षेपण | २२९१ | संडीन | १०६१ | सदृश | २००२ |
| संहति | १०६८ | संख्य | १६७५ | सणसूत्र | ४९८ | सदेश | २१५८ |
| संहनन | १२१४ | सख्या | २८१ | सत् | १३६२ | सद्गन् | ६०१ |
| सहृति | ३२७ | संख्यात | २१५३ | " | २५०१ | सद्यस् | २८६७ |
| सकटाह | २९३७ | संख्यावत् | १३६३ | सनत | १३० | सध्यच् | २०९३ |
| सकल | २१५५ | सङ्ग | २३०८ | सती | १०८६ | सनत्कुमार | १०१ |
| सकृत् | २८२० | सगत | ३४७ | सतीनक | १७३८ | सना | २८८३ |
| सकृत्प्रज | १०२७ | संगम | २३०८ | सतीर्थ | १३७६ | सनातन | २१६९ |
| सक्तफला | ७५२ | " | २९६३ | सत्तम | २१४७ | सनाभि | ११४० |
| सक्थि | १२१९ | संगर | २६६८ | सर्व | २७३ | सनि | १४१७ |
| सखि | १४९१ | संकीर्ण | २२४२ | " | २७६१ | सनीड | २१५७ |
| सखी | १०९७ | संगृह | २२१० | सत्पथ | ५८८ | संतत | १३० |
| सरय | १४९२ | संग्रह | ३२३ | सत्य | ३५४ | सतति | १३५४ |
| सगर्भ | ११४१ | संग्राम | १६७८ | " | २६४३ | संतप्त | २२२९ |
| सगोत्र | ११४२ | संग्राह | १६४८ | सत्यंकार | १८७१ | संतमस | ४४५ |
| सग्धि | १८१६ | " | २२७७ | सत्यवचस् | १४३८ | संतान | १०० |
| संक्रुट | २१९४ | संघ | १०६९ | सत्याकृति | १८७१ | " | १३५५ |
| संकर | ६२९ | संघात | ४६३ | सत्यानृत | १७१३ | संताप | ११४ |
| | | " | १०६६ | सत्यापन | १८७१ | संतापित | २२२९ |
| | | | | | | संदान | १८५३ |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|------------|----------|-------------|----------|------------|----------|----------|----------|
| सदानित | २२१४ | सहायन्तु | १३७९ | सम नमद् | २६ | समाहित | २२४२ |
| सदान | १६७५ | सहायर्ण | ६९३ | समग् | २८६६ | समाहति | १२४ |
| संक्षित | २१९६ | सहाय | ७९३ | समय | २१६ | समाह्वय | २०२१ |
| , | २२१४ | , | ९३४ | समवा | २६३३ | समित् | ६७४ |
| सदेधवाञ् | ३४५ | सहायसू | १११ | समवा | २८४० | समिति | १३८२ |
| सदेधहर | १५०० | सहाय | २०२ | , | २८६३ | , | १६७९ |
| सदेह | २८३ | सति | १५५५ | समर | १६७६ | " | ३४७५ |
| संदोह | १०६५ | समदाचारिन् | १३७५ | समथ | २५०८ | समिध् | १६७९ |
| सद्वाच | १६८९ | समदृक्ता | १०९७ | समथन | १५१७ | समीक | १६७५ |
| सधा | २५३९ | समा | ६०४ | समर्थक | २०३८ | समीय | २१५७ |
| सधान | २०१३ | | १३८३ | समर्पाद | २१५८ | समीर | १२४ |
| सवि | १५०४ | | २६०९ | समवान् | ११५ | समीरण | १२४ |
| " | २२७१ | | २९४७ | समवाच | १०६७ | " | ८०६ |
| मजिनी | १८४४ | समापन | २२६३ | समठिला | २६३ | समुच्चय | २२८१ |
| सवा | २२० | समासदू | १३८५ | समसन | २२९१ | समुच्चय | २६६९ |
| समन्तदु | ७१८ | समान्तर | १३८५ | समस्त | २१५४ | समुच्चित | २२३८ |
| समज | १५९८ | समिन् | २०१७ | समस्या | ३३४ | समुच्चित | १६६५ |
| समय | २६३७ | सम | १३५८ | समा | २५५ | समुद्ग | २२०४ |
| समिद्धर्षण | २१९६ | , | १३८५ | समासमीना | १८५१ | समुद्ग | १०६७ |
| समिष्ट | २१५७ | सम | २००२ | समाकल्पिन् | २९८ | समुद्ग | १०६७ |
| समिति | २२९६ | " | २१५३ | समागत | १६७८ | , | १६७९ |
| समिध्व | ६३० | समम | २१५४ | समाज | १०७१ | समुद्ग | २२३२ |
| सपन | १३८८ | समज्ञा | ८२९ | समाधि | २८७ | समुद्ग | १३५१ |
| सदि | २८५३ | समन् | १०७१ | " | २५२० | समुद्ग | २०७० |
| " | २८६७ | समन्ता | ३६३ | समान | १२६ | समुद्ग | २४४५ |
| सवर्षा | १३८० | समन्ता | ३६३ | , | २००३ | समुद्ग | ३६८ |
| " | १३८० | , | १३८३ | समानोद्ग | ११४१ | समुद्ग | ८३३ |
| " | १३२१ | समन्त | १५१५ | समानम् | २३०४ | " | ८८० |
| समिद्ध | ११४० | समन्ति | २१७५ | समान्ता | १३७३ | " | ९१५ |
| समिन् | १८०६ | समन्तसू | २८७४ | समान्ता | २२०९ | समुद्ग | २२१५ |
| समिन् | १३९० | समन्तदुग्धा | ८५९ | समन्तार | २३८ | समुद्ग | २५३१ |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|---------------|---------|----------------|---------|----------------|---------|------------------|---------|
| समुपजोपम् | २८६८ | सरल ... | ७६८ | सर्वधुरावह | १८३८ | सहज ... | ११४१ |
| समूह | १००६ | ” | २०४१ | सर्वधुरीण ... | १८३८ | सहधर्मिणी | १०८४ |
| समूह | १०६५ | सरलद्रव ... | १३३१ | सर्वमङ्गला... | ७३ | सहज ... | २०८७ |
| समूह | १३९३ | सरला ... | ८६४ | सर्वरस ... | १३२८ | सहभोजन ... | १८१६ |
| समृद्ध | २०४७ | सरस् ... | ५२२ | सर्वला ... | १६५३ | सहस् ... | २४३ |
| समृद्धि | २२६९ | सरसी ... | ५२२ | सर्वलिङ्गिन् | १४४२ | ” | १६७१ |
| संपत्ति | १६३१ | सरसीरुह ... | ५४७ | सर्ववेदस् ... | १३७१ | ” | २८०० |
| संपद् | १६३० | सरस्वत् ... | ४६९ | सर्वसंहन... | १६५५ | सहसा ... | २८६३ |
| संपराय | २३३६ | ” | २४४९ | सर्वानुभूति... | ८६४ | सहन्य ... | २४४ |
| संपरायिका... | १६७५ | सरस्वती ... | ३१२ | सर्वान्नभोजिन् | २०६८ | सहस्र ... | १८७५ |
| संयुक्त | १३५१ | ” | ५३४ | सर्वान्नीन ... | २०६८ | सहस्रदंष्ट्र ... | ५०२ |
| संप्रति | २८९४ | सरित् ... | ५२५ | सर्वान्नीन ... | २०६८ | सहस्रपत्र ... | ५४६ |
| संप्रदाय | २२६४ | सरित्पति ... | ४६८ | सर्वान्नीन ... | २०६८ | सहस्रवीर्या | ९६५ |
| संप्रधारणा... | १५१७ | सरीसृप ... | ४५१ | सर्वार्थसिद्ध | २९ | सहस्रवेधि... | १७८६ |
| संप्रहार | १६७७ | सर्ग ... | २३७८ | सर्वाध | १६५५ | सहस्रवेधिन् | ९३० |
| संयुक्त | ६६३ | सर्ज ... | ७३७ | सर्पप | १७४१ | सहस्रांशु ... | २०६ |
| संवाध | २१९४ | सर्जक ... | ७३६ | सलिल ... | ४७२ | सहस्राक्ष ... | ८८ |
| संवेद | ५३६ | सर्जरस ... | १३२८ | सहस्री ... | ८९६ | सहस्रान्न ... | १५९१ |
| संभ्रम | ४२९ | सर्जिकाक्षार | १९२४ | सव | १३७९ | सहस्रान्न ... | ७९५ |
| ” | २३०२ | सर्प ... | ४५० | सवन | १४४६ | ” | ८७५ |
| संमद | २६३ | सर्पराज ... | ७४६ | सवयस् | १४९१ | सहाय ... | १६१० |
| संमार्जनी | ६२९ | सर्पिम् ... | १८१० | सविनृ | २०६ | सहायता ... | २३३० |
| संमूर्छन | २०६२ | सर्व | २१५३ | सविध | २१५८ | सहिष्णु ... | २०८७ |
| संमृष्ट | १७९८ | सर्वसहा ... | ५६२ | सवेश | २१५८ | सांयात्रिक ... | ४९० |
| सन्त्यक् | ३५४ | सर्वज्ञ ... | २५ | सव्य | २१९३ | सांयुगीन ... | १६२२ |
| सन्नाह | १७७४ | ” | ६५ | सव्यान | १३०९ | सांयत्सर ... | १४९५ |
| सरक | २०१५ | सर्वतत् ... | २८७४ | नव्येष्ट | १५८७ | सांशयिक ... | २०३४ |
| सरया | १०४० | सर्वतोमद्र ... | ६१३ | सत्य | ६७८ | साकम् ... | २८५६ |
| सरट | १०१० | ” | ७७२ | सत्यसवर ... | ७३७ | साक्षात् ... | २८२२ |
| सरणा | ९५३ | सर्वतोमद्रा... | ७१९ | सह | २८०० | सागर ... | ४६९ |
| सरणि | ५८७ | सर्वनोमुख ... | ४७४ | ” | २८५६ | सावि ... | २८६१ |
| सरमा | १९७३ | सर्वदा ... | २८९३ | सहकार ... | ७१५ | सान | २६४ |
| | | | | सहचरी ... | ७९९ | | |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|---------|----------|----------|----------|------------|----------|-----------|----------|
| सातव्य | २३५ | समाध | २१८८ | साहस | २१३५ | सिधवा | २९१० |
| सामि | २३२६ | सामि | २८३४ | सिंह | ९८९ | सिनीवाली | २३२ |
| | २४६९ | सामिपेनी | १३९६ | सिंहनाद | १६८१ | सिन्दुव | ७८४ |
| | २९१३ | सामिनम् | २८७० | सिंहपुच्छी | ८३४ | सिन्दुवार | ७८५ |
| सातिहार | ११९२ | सामिनम् | २८९४ | सिंहसहनन | २०४९ | सिन्दूर | १९१६ |
| सायिक | ३९४ | साय | २२० | सिद्धान | १९०३ | " | २९५३ |
| सादिम् | १५८८ | सायव | २३३९ | सिद्धान्न | १५३० | सिधु | ४६० |
| | २५४८ | सायम् | २८८७ | सिद्धान्न | ८५५ | " | २५३६ |
| साधन | २५७३ | सार | २६७७ | सिद्दी | ८५४ | सिधुज | १७९० |
| साधारण | २००३ | सारङ्ग | १०२१ | " | ८७६ | सिधुगम | ५३६ |
| " | २१८८ | " | २३८१ | सिधना | २४८१ | सिद्ध | १३३० |
| साधित | २१०४ | सारथि | १५८६ | सिधनामय | ४८४ | सीता | १७३५ |
| साधित | २३४९ | सारमेय | १९७१ | सिधनावत् | ५७९ | सील | १७२३ |
| साधीयम् | २८०६ | सारन | ५३८ | सिद्धयक | १९२१ | सीधु | २०१७ |
| साधु | १३५८ | सारस | ५४७ | सित | ३०२ | सीमम् | ६३४ |
| | २१२८ | " | १३१ | " | २३१४ | सीमन्त | २९३२ |
| | २५३७ | सारसव | १३९१ | " | २३२१ | सीमन्तिनी | १०७७ |
| साध्य | २० | " | १५९४ | " | २४९५ | सीमा | ६३२ |
| साध्य | ४०३ | सारिका | २९१० | सितपञ्चा | ९५२ | सीर | १७३४ |
| सादी | १०८६ | सार्ध | १०६९ | सिता | ७९० | सीरपाणि | ४८ |
| साधु | ६४२ | साधकम् | १८६२ | सिताभ | १७९३ | सीवन | २३६० |
| साध्य | ३४७ | साधम् | २८५६ | सिताभ | १३३४ | सीवक | १९१७ |
| | १५०९ | साध्र | २३३५ | सिताभोग | ५४९ | सीधुव | ८५९ |
| साहित्य | १५७६ | साध्वी | १५२ | सिद्ध | २३ | सु | २८५३ |
| साध | २१५६ | " | १४७२ | " | २३२५ | सुभद्रक | २४३ |
| साधाय | १४०६ | साध | ५९९ | सिद्धान्न | २८६ | सुकरा | १८४४ |
| साधयित | १६७५ | " | ६५९ | सिद्धान्न | १७४२ | सुकरा | २०४१ |
| साधयित | १४९२ | " | ७३७ | सिद्धि | ८७३ | सुमार | २१८० |
| साधय | २१७ | साधयनी | ८७९ | सिद्ध | ११७९ | सुत | २६३ |
| | १५०९ | साध्या | १८३२ | सिद्ध | ११९६ | सुतित् | २०३० |
| साधयित | १३८५ | साधय | १५०९ | सिद्ध | २९१४ | सुत | २६४ |
| साधय | २७६ | साधय | १५९१ | सिद्ध | १८८ | " | २९४० |

| शब्द | पंक्ति | शब्द | पंक्ति | शब्द | पंक्ति | शब्द | पंक्ति |
|----------------|--------|-----------------|--------|---------------|--------|----------------|--------|
| सुखवर्चका .. | १९२४ | सुमन्त्राप ... | ३४४ | सुवर्ण ... | १८९४ | सूत ... | २४५८ |
| सुखसंदोहा | १८४९ | सुमगासुत ... | ११२१ | सुवर्णक ... | ६९६ | सूतिकाट्टर | ६०९ |
| सुगत ... | २५ | सुमिक्षा ... | ८९७ | सुवह्नि ... | ८३९ | सूतिमाम ... | ११५१ |
| सुगन्वा ... | ८७७ | सुम ... | ६८२ | सुवरा ... | ७८९ | सूत्यान ... | १९६६ |
| सुगन्धि ... | २९९ | सुमन ... | १४ | " ... | ८७८ | सूत ... | १९८४ |
| " ... | ८९० | सुमनस् ... | ६८२ | " ... | ८८६ | सूयवेष्टन ... | २२९८ |
| सुचारित्रा ... | १०८६ | " ... | ७९३ | " ... | ८९५ | सूत ... | १७६२ |
| सुचेलक ... | १३०५ | " ... | १७४२ | " ... | ९२८ | " ... | २५१६ |
| सुत ... | ११२८ | सुमनोरजस् ... | ६८३ | सुवता ... | १८४९ | सूता ... | २५६० |
| " ... | २४५५ | सुमेरु ... | ९८ | सुपम ... | ७१२८ | सूनु ... | ११२८ |
| सुतश्रेणी ... | ८२४ | सुर ... | १३ | सुपमा ... | १७९ | सूनुत ... | ३४८ |
| सुवामन् ... | ८४ | सुरङ्गा ... | २९११ | सुपयी ... | ९५८ | सूपकार ... | १७६१ |
| सुत्या ... | १४४६ | सुरज्येष्ठ ... | ३१ | " ... | १७८० | सूर ... | २०० |
| सुत्वन ... | १३७३ | सुरदीर्घिका ... | ९७ | सुपिर ... | ३७० | सूरण ... | ९६३ |
| सुदर्शन ... | ५५ | सुरद्विष्ट ... | २४ | सुपिरा ... | ९०७ | सूरत ... | २०५४ |
| सुदाय ... | १५०४ | सुरनिम्नगा ... | ५२८ | सुपीम ... | १८२ | सूरसत ... | २०८ |
| सुदूर ... | २१६२ | सुरपति ... | ८५ | सुपेण ... | ७८३ | सूरि ... | १३६४ |
| सुधर्मन् ... | ९६ | सुरीम ... | २५१ | सुपेणिका ... | ८६५ | सूर्मा ... | १९९९ |
| सुधा ... | ९६ | " ... | २९८ | सुष्टु ... | २८५३ | सूर्य ... | २०० |
| " ... | २५३८ | " ... | २६०८ | " ... | २८८६ | सूर्यतनया ... | ५३० |
| सुधांशु ... | १७२ | सुरभी ... | ८९५ | सुसंस्कृत ... | १७९७ | सूर्येन्दुसंगम | २३१ |
| सुधी ... | १३६२ | सुरार्थि ... | ९५ | सुहृद् ... | १४९१ | सुकिणी ... | १२५६ |
| सुनासीर ... | ८२ | सुरलोक ... | १२ | " ... | १५०२ | सुग ... | १६५० |
| सुनिपण्णक | ९४६ | सुरवर्धन् ... | १४४ | सुहृदय ... | २०३१ | सुणि ... | १५५० |
| सुन्दर ... | २१२९ | सुरसा ... | ८७७ | सूकर ... | ९९१ | सुणिका ... | १२०७ |
| सुन्दरी ... | १०८१ | सुरा ... | २००७ | सूक्ष्म ... | २१४७ | सुति ... | ५८६ |
| सुपयिन् ... | ५८८ | सुरा ... | २९७४ | " ... | २६२३ | सुपाटी ... | २९७१ |
| सुपर्ण ... | ५८ | सुराचार्य ... | १९२ | सूचक ... | २११८ | सुमर ... | १००९ |
| सुपर्वन् ... | १४ | सुरालय ... | ९८ | सूचि ... | २९११ | सुष्ट ... | २४१२ |
| सुपार्थक ... | ७३४ | सुराष्ट्रज ... | ९१० | सूत ... | १५८६ | सेकपात्र ... | ४९३ |
| सुपतीक ... | १५२ | सुवचन ... | ३४४ | " ... | १९०५ | सेचन ... | ४९३ |
| सुप्रयोगविशिख | १६०३ | सुवर्ण ... | १८७९ | " ... | १९३५ | सेतु ... | ५८४ |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|-----------|----------|-----------|----------|--------------|----------|--------------|----------|
| सेतु | ६९८ | सोमपीथिन् | १३७० | स्वप्नग्राया | ६७० | स्रज | २०७७ |
| सेना | १६३३ | सोमरात्री | ८३९ | स्वल्प | ३३३ | स्री | १०७७ |
| " | २९७४ | सोमवरा | ७४९ | स्वल्पित | १६८४ | स्रीवर्मिणी | १११४ |
| सेनाङ्ग | १५३४ | " | २३५२ | स्वप्न | १२३७ | स्रीपुत्र | १०६४ |
| सेनाली | ७८ | सोमवृद्धि | ९२३ | स्वप्नघषी | ११५६ | स्वपिङ्गल | १३८८ |
| " | १५९२ | सोमवृद्धि | ८३९ | स्वप्नपा | ११५६ | " | १४४१ |
| सोमामुख | १६३९ | सोमवृद्धि | ८१४ | स्वप्नपिल | १५७ | स्वपिङ्गलपिल | १४४० |
| सोमारुध | १५८९ | सोमोद्भा | ५३१ | स्वप्नित | १६१ | स्वपति | १३७० |
| सोमक | १४८५ | सोमपिथ | ५३९ | स्वप्न | ६८१ | " | ३४५६ |
| सोमन | २२६० | " | ९८१ | स्वप्नरोमन् | ९९३ | स्वपल | ५६६ |
| सोम्य | ९७७ | " | १९११ | स्वप्न | ६६६ | स्वपली | ५६६ |
| सोमिहिव | १९७ | सोमिव | १८४१ | " | १७४९ | " | १७६९ |
| सोमन | ४८४ | सोमामनी | १६३ | स्वप्नरि | १७४९ | स्वपित | ११५८ |
| सोमवादिनी | ५३३ | सोम | ६१३ | स्वप्नरन | २३२० | स्वपिष्ठ | २३४७ |
| सोमिव | १५८९ | सोमामिनेव | ११३२ | स्वप्नरा | २३२० | स्वपु | ६८ |
| " | १५९० | सोम्य | १९६ | स्वप्नरेम | १५३७ | " | ६६५ |
| सोमव | १५५५ | सोमनेव | १८२६ | स्वप्न | २६०४ | " | २४३२ |
| " | १७९० | सोमनेवी | १८३९ | स्वप्न | २३३ | स्वपिष्टल | १४४१ |
| सोम | १५९० | सोमहि | ४५८ | स्वपि | २३३५ | स्वपान | १५०६ |
| " | १६०४ | सोमि | १९६ | स्वपि | २३४४ | स्वपानीय | ५९५ |
| सोमपृष्ठ | १६३६ | सोमपृष्ठ | १७९३ | स्वपि | २३३ | स्वपाने | २८४० |
| सोमनी | ११०९ | " | १९२५ | स्वपि | २९३३ | स्वपारय | १४८४ |
| सोमि | १८३५ | सोमि | १४८४ | स्वपि | १९७७ | स्वपानी | ८१७ |
| सोमि | ९९६ | सोमि | १४८४ | स्वपि | २३०७ | स्वपान् | १६७१ |
| सोमव | ७९८ | सोमि | ७३३ | स्वपि | १९७९ | स्वपान् | २१४ |
| सोम | २२१८ | " | १४८४ | स्वपि | १९७९ | स्वपान् | १४८१ |
| सोम | ११७१ | " | १९०७ | स्वपि | २३३३ | स्वपान् | २९५८ |
| सोम | २०७० | सोमि | १८१९ | स्वपि | २३३३ | स्वपान् | १७६९ |
| सोम | २३३ | सोम | ७८ | स्वपि | १०३१ | स्वपान् | २१७१ |
| सोम | ६९८ | " | १३३० | स्वपि | २३३ | स्वपान् | ११५४ |
| सोम | १७३ | सोम | ६६९ | स्वपि | १०६६ | स्वपान् | १३१७ |
| सोम | १३७० | " | २५३५ | " | २६१७ | स्वपान् | २१७० |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|-------------|----------|-----------|----------|-------------|----------|---------------|----------|
| स्थिति | ... १५१९ | स्पर्श | ... २२७८ | स्यन्दन | ... ७०१ | स्थधा | ... २८६७ |
| " | ... ७२९२ | स्पर्शन | ... १२२ | " | ... १५६९ | स्थिति | ... १६५१ |
| स्थितर | ... २१७० | " | ... १४११ | स्यन्दनारोह | १५८८ | स्थन | ... ३५५ |
| स्थिरा | ... ५६० | स्पश | ... १४९३ | स्थिदिी | ... १२०७ | स्थनित | ... २२१३ |
| " | ... ८७९ | " | ... २७६३ | स्थन | ... २२०९ | स्थम | ... ४३४ |
| स्थिरायु | ... ७४१ | स्पष्ट | ... २१८७ | स्थूत | ... १७५९ | स्थमज् | ... २०९० |
| स्थूणा | ... १९९९ | स्पृक्षा | ... ९१४ | " | ... २२२६ | स्थमाय | ... ४३७ |
| " | ... २४३६ | स्पृशी | ... ८३५ | स्थूनि | ... २२६० | स्थभू | ... ३६ |
| स्थूल | ... २१४६ | स्पृष्टि | ... २२६८ | स्थोनाक | ... ७६२ | स्थयंवरा | ... १०८७ |
| " | ... २७४४ | स्पृहा | ... ४१६ | स्थितिन् | ... ७०५ | स्थयम् | ... २८८१ |
| स्थूललक्ष्य | ... २०३६ | स्पृष्ट | ... २२७८ | स्थज् | ... १३४३ | स्थयम्भू | ... ३२ |
| स्थूलशायक | १३०५ | स्पृष्टा | ... ४५५ | स्थव | ... २२६८ | स्थर् | ... २८४४ |
| स्थूलोच्चय | ... २६३२ | स्फाति | ... २२६८ | स्थवद्गर्भा | ... १८४४ | स्थर | ... ३१९ |
| स्थेयम् | ... २१७० | स्फार | ... २१५१ | स्थवन्ती | ... ५२७ | स्थर | ... ९४ |
| स्थोण्य | ... ९१३ | स्फिक् | ... १२२४ | स्थष्ट | ... ३४ | " | ... २६७० |
| स्थौरिन् | ... १५५९ | स्फुट | ... ६६३ | स्थत | ... २२३२ | स्वरूप | ... ४३७ |
| स्थव | ... २२६८ | " | ... २१८७ | स्थारू | ... २८५२ | " | ... २५९७ |
| स्नातक | ... १४३८ | स्फुटन | ... २२६० | स्थन | ... २२०९ | स्वर्ग | ... ११ |
| स्नान | ... १३१६ | स्फुरणा | ... २२६९ | स्थव | ... १४०२ | " | ... २९१७ |
| स्नायु | ... १२०६ | स्फुलिङ्ग | ... ११४ | स्थवा | ... ८१५ | स्वर्णिकाक्षर | १९२४ |
| स्निग्ध | ... १४९१ | स्फूर्जक | ... ७२५ | स्थवावृक्ष | ... ७२३ | स्वर्ण | ... १८९४ |
| " | ... १७९९ | स्फूर्जयु | ... १६४ | स्थोतम् | ... ४८८ | स्वर्णगार | ... १९४४ |
| " | ... २०५३ | स्फोट | ... २२४९ | " | ... २८०२ | स्वर्णक्षीरी | ... ९२४ |
| स्तु ... | ... ६४३ | स्म | ... २८५९ | स्थोतम्बती | ... ५२७ | स्वर्णदी | ... ९७ |
| स्तुन | ... २२०९ | " | ... २८८३ | स्थोतोजन | ... १९०७ | स्वर्मायु | ... १९७ |
| स्तुया | ... १०९१ | स्मर | ... ५० | स्थ | ... ११४२ | स्वर्वेद्या | ... १०३ |
| स्तुह | ... ८५९ | स्मरहर | ... ६६ | " | ... २७५८ | स्ववासिनी | ... १०९१ |
| स्तुही | ... ८५९ | स्मित | ... ४३० | स्वच्छन्द | ... २०५५ | स्ववेद्य | ... १०१ |
| स्तुह | ... ४१५ | स्मृति | ... ३२३ | स्वजन | ... ११४२ | स्वय | ... ११३१ |
| स्पर्श | ... २९१ | " | ... ४१९ | स्मत्तन | ... २०५५ | स्वस्ति | ... २८१८ |
| | | स्पर्द | ... १२७ | | | | |

| शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|-------------|----------|----------------|----------|-----------|----------|-----------|----------|
| स्वस्तिक | ६१३ | हृषिक | १२९३ | हरि मणि | १८९० | हृग्न | १२७० |
| स्वसीय | ११३८ | हडिग्रा | ८२७ | हरिमिया | ५४ | " | २४५२ |
| स्वाति | २९७० | हडो | ३९२ | हरिमन्त्र | १७४३ | हस्तधारण | २२५२ |
| स्नाहु | २५२३ | हट्ट | २९३० | हरिवालुक् | ८९० | हस्तिन् | १५३५ |
| स्नादुकण्डक | ७२२ | हट्टविज्ञासिनी | ९०८ | हरिद्वय | ८६ | हस्तिनप्र | ६२६ |
| " | ८४५ | हठ | १६८४ | हरीनकी | ६८४ | हस्तिपत्र | १५८५ |
| स्नादुरघा | ९३६ | हण्डे | २९२ | हरीनकी | ७६७ | हम्पारोह | १५८५ |
| स्वात्री | ८६३ | हण | २१०७ | हरेण | ८८९ | हा | २८४८ |
| स्वाध्याय | १४४६ | हण | ९०८ | " | १७३९ | हाटत | १८९४ |
| स्वात | ३५६ | हण | २८९४ | हम्भ | ६११ | हापन | २५५ |
| स्वात | २७७ | हय | १५७५ | हयध | ९८९ | " | २५५० |
| स्वाप | ४३४ | हयमुष्ठी | ०२५ | हय | २६३ | हार | १२८३ |
| स्वापनैय | १८८६ | हयमारक | ८०१ | हयमाण | २७३९ | हारीत | १०५६ |
| स्वामिग्न | १५०२ | हर | ६६ | हर | १७३३ | हार | ४१५ |
| " | २०४५ | हरण | १५२४ | हला | ३९३ | हारा | २००८ |
| स्वाराज् | ८६ | हरि | ९८९ | हलाधुष | ४६ | हारिण | १८३५ |
| स्वाहा | १३५५ | हरिचम्दा | १०० | हलादम्भ | ४५७ | हार | ४३५ |
| " | २८६४ | हरिण | ३०३ | हलिन | ४७ | हार | ४९९ |
| स्वित् | २८१५ | " | १००३ | हलिनिय | ७३२ | हारिण | १५४० |
| स्वेद | ४२८ | हरिणी | २४३५ | हलिनिया | ९००८ | हार्य | ३९५ |
| स्वेदन | २१२६ | हरित् | १४६ | हल | १७२३ | " | ३९९ |
| स्वेदनी | १७६७ | " | ३०५ | हलया | २३२१ | हाहा | १०४ |
| स्वेर | २७२० | " | २९३२ | हलङ्ग | ५३९ | हि | २८४९ |
| स्वेरिणी | १०९५ | हरित | ३०५ | हल | २२६६ | हिमा | २७९३ |
| स्वेरिता | २९५४ | हरितक | १७७५ | " | २७४९ | दिस | २०८१ |
| स्वेरिग्न | २०५५ | हरिताल | २९५८ | हरित् | १८१० | दिया | २९१० |
| ह | | हरिताल | १९१३ | हल्य | १४०१ | दिय | १७८६ |
| ह | २८५९ | हरिदम्भ | २०२ | हल्य | ११० | दियुनिवा | ७७२ |
| हण | २०६ | हरिद्रा | १०८८ | हल | ३९८ | दियुन | २९३५ |
| " | १०३४ | हरिद्राम | ३०५ | हलनी | १७६६ | दियुनी | ८७६ |
| " | २७८७ | हरिद्रु | ८५१ | हलनी | १२४५ | दियुन | ७७० |

| शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|-----------------|---------|-------------------|---------|-----------------|---------|------------------|---------|
| हिन्ताल ... | १८७ | हीन ... | २२३८ | हृष्टमानस ... | २०३९ | हैयङ्गवीन ... | १८११ |
| हिम ... | १८० | ” ... | २५९० | हे ... | २८६२ | होवृ ... | १३८६ |
| ” ... | १८३ | हुतमुक्प्रिया ... | १३९५ | हेति ... | ११३ | होम ... | १३८० |
| ” ... | २९३८ | हुतमुज्ज ... | ११० | ” ... | २४७६ | होरा ... | २९१४ |
| हिमवत् ... | ६३८ | हुम् ... | २८४० | हेतु ... | २७१ | घस् ... | २८९२ |
| हिमवालुका ... | १३३४ | ” ... | २८८५ | हेमकूट ... | ६३९ | हृद ... | ५१७ |
| हिमसहति ... | १८१ | हृनि ... | ३२७ | हेमदुग्धक ... | ६९२ | हृसिष्ठ ... | २२४९ |
| हिमांशु ... | १७१ | ” ... | २२६६ | हेमन् ... | २९४० | हरत्र ... | ११६५ |
| हिमानी ... | १८१ | हृद् ... | १०४ | हेमन्त ... | २५० | ” ... | २१६५ |
| हिमावती ... | ९२४ | हृणीया ... | २३१४ | हेमपुष्पक ... | ७७५ | हृस्वगवेयुका ... | ८८२ |
| हिरण्य ... | १८८७ | हृद् ... | २७७ | हेमपुष्पिका ... | ७९१ | हृत्वाद् ... | ९३३ |
| ” ... | १८८८ | ” ... | १२०२ | हेनाद्रि ... | ९८ | हादिनी ... | ९३ |
| ” ... | १८९४ | हृदय ... | २७७ | हेरन्व ... | ७६ | ” ... | १६२ |
| हिरण्यगर्भ ... | ३२ | ” ... | १२०२ | हेला ... | ४२५ | ” ... | ५२६ |
| हिरण्यरेतस् ... | ११० | हृदयंगम ... | ३४७ | हेपा ... | १५६२ | ह्री ... | ४०८ |
| हिरण्यबाह ... | ५३४ | हृदयालु ... | २०३१ | है ... | २८६२ | ह्रीण ... | २२०७ |
| हिरन् ... | २८५४ | हृद्य ... | २१३१ | हेमवती ... | ७२ | हीत ... | २२०७ |
| ” ... | २८६२ | हृपीक ... | २९२ | ” ... | ७६७ | हीनेर ... | ८९२ |
| हिलमोचिका ... | ९६३ | हृपीनेश ... | ३६ | ” ... | ८५४ | हेपा ... | १५६२ |
| ही ... | २८६६ | हृष्ट ... | २२३० | ” ... | ९२४ | हादिनी ... | ८९६ |

समाप्तोऽयममरकोशस्थशब्दानां वर्णक्रमकोशः ।

| | |
|--|------|
| द्वे याचितायाचितयोर्यथासंख्यं मृतामृते | १७१२ |
| सत्यानृतं वणिग्भावः स्यादृणं पर्युदञ्चनम् | १७१३ |
| उद्धारोऽर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धिजीविका | १७१४ |
| याच्चयाप्तं याचितकं निमयादापमित्यकम् | १७१५ |
| उत्तमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात् | १७१६ |
| कुसीदिको वार्धुपिको वृद्ध्याजीवश्च वार्धुपिः | १७१७ |
| क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषिकश्च कृषीवलः | १७१८ |
| क्षेत्रं त्रैहेयशालेयं त्रीहिशाल्युद्भवोचितम् | १७१९ |
| यव्यं यवक्यं पष्टिक्यं यवादिभवनं हि यत् | १७२० |
| तिल्यं तैलीनवन्मापोमाणुभङ्गा द्विरूपता | १७२१ |
| मौद्गीनकौद्रवीणादि शेषधान्योद्भवक्षमम् | १७२२ |
| ‘शाकक्षेत्रादिके शाकशाकटं शाकशाकिनम्’ | *** |
| बीजाकृतं तूक्षुकृष्टे सीत्यं कृष्टं च हल्यवत् | १७२३ |
| त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहल्यं त्रिसीत्यमपि तस्मिन् | १७२४ |
| द्विगुणाकृते तु सर्वं पूर्वं शम्वाकृतमपीह | १७२५ |
| द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढकिकादयः | १७२६ |
| खारीवापस्तु खारीक उत्तमर्णादयस्त्रिषु | १७२७ |
| पुंसपुंसकयोर्वप्रः कैदारः क्षेत्रमस्य तु | १७२८ |
| कैदारकं स्यात्कैदार्यं क्षेत्रं कैदारिकं गणे | १७२९ |
| लोष्टानि लेष्टवः पुंसि कोटिशो लोष्टभेदनः | १७३० |
| प्राजनं तोदनं तोत्रं खनित्रमवदारणे | १७३१ |
| दात्रं लवित्रमावन्वो योत्रं योक्रमथो फलम् | १७३२ |

| | |
|---|------|
| निरीशं कुटकं फालं कृपको लाङ्गलं हलम् | १७३३ |
| गोदारणं च सीरोऽथ शम्या स्त्री युगकीलकः | १७३४ |
| ईषा लाङ्गलदण्डः स्यात्सीता लाङ्गलपद्धतिः | १७३५ |
| पुंसि मेधिः खले दारु न्यस्तं यत्पशुबन्धने | १७३६ |
| आशुर्व्रीहिः पाटलः स्याच्छितशूकयवौ समौ | १७३७ |
| तोक्मस्तु तत्र हरिते कलायस्तु सतीनकः | १७३८ |
| हरेणुखण्डिकौ चास्मिन्कोरदूपस्तु कोद्रवः | १७३९ |
| मङ्गल्यको मसूरोऽथ मकुष्टकमयुष्टकौ | १७४० |
| वनमुद्गे सर्पपे तु द्वौ तन्तुभकदम्बकौ | १७४१ |
| सिद्धार्थस्त्वेष धवलो गोधूमः सुमनः समौ | १७४२ |
| स्याद्यावकस्तु कुल्मापश्चणको हरिमन्थकः | १७४३ |
| द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपिञ्जश्च निष्फले | १७४४ |
| क्षवः क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकासुरी | १७४५ |
| स्त्रियौ कङ्गुप्रियङ्गू द्वे अतसी स्यादुमा क्षुमा | १७४६ |
| मातुलानी तु भङ्गाया ब्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् | १७४७ |
| किशारुः सस्यशूकं स्यात्कणिशं सस्यमञ्जरी | १७४८ |
| धान्यं ब्रीहिः स्तम्बकरिः स्तम्बो गुच्छस्तृणादिनः | १७४९ |
| नाडी नालं च काण्डोऽस्य पलालोऽस्त्री स निष्फलः | १७५० |
| कडङ्गरो बुभुक्षुं ह्रीवे धान्यत्वचि तुषः पुमान् | १७५१ |
| शूकोऽस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रे शमी शिम्बा त्रिपूतरे | १७५२ |
| ऋद्धमावसितं धान्यं पूतं तु बहुलीकृतम् | १७५३ |
| माषादयः शमीधान्ये शूकधान्ये यवादयः | १७५४ |

| | |
|---|------|
| शालयः कलमाद्याश्च पट्टिकाद्याश्च पुंस्यमी | १७५५ |
| तृणधान्यानि नीवाराः स्त्री गवेधुर्गवेधुका | १७५६ |
| अयोग्रं मुसलोऽस्त्री स्यादुदूखलमुलूखलम् | १७५७ |
| प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री चालनी तितडः पुमान् | १७५८ |
| स्यूतप्रसेवौ कण्डोलपिटौ कटकिलिञ्जकौ | १७५९ |
| समानौ रसवत्यां तु पाकस्थानमहानसे | १७६० |
| पौरोगवस्तदध्यक्षः सूपकारास्तु बल्लाः | १७६१ |
| आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदनिका गुणाः | १७६२ |
| आपूपिकः कान्दविको भक्ष्यकार इमे त्रिषु | १७६३ |
| अश्मन्तमुद्गानमधिश्रयणी चुलिरन्तिका | १७६४ |
| अङ्गारधानिकाङ्गारशकट्यपि हसन्यपि | १७६५ |
| हसन्यप्यथ न स्त्री स्यादङ्गारोऽलातमुल्मुकम् | १७६६ |
| ह्रीवेऽम्बरीषं भ्राष्ट्रो ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम् | १७६७ |
| अलिङ्गरः स्यान्मणिकः कर्कर्यालुर्गलन्तिका | १७६८ |
| पिठरः स्थाल्युखा कुण्डं कलशस्तु त्रिषु द्वयोः | १७६९ |
| घटः कुटनिपावस्त्री शरावो वर्धमानकः | १७७० |
| ऋजीषं पिष्टपचनं कंसोऽस्त्री पानभाजनम् | १७७१ |
| कुतूः कृत्तेः स्नेहपात्रं सैवाल्पा कुतुपः पुमान् | १७७२ |
| सर्वमावपनं भाण्डं पात्रामत्रं च भाजनम् | १७७३ |
| दर्विः कम्बिः खजाका च स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः | १७७४ |
| अस्त्री शाकं हरितकं शिग्रुरस्य तु नाडिका | १७७५ |
| कलम्बश्च कडम्बश्च वेसवार उपस्करः | १७७६ |

| | |
|---|------|
| तिन्तिडीकं च चुक्रं च वृक्षाम्बलमथ वेहजम् | १७७७ |
| मरीचं कोलकं कृष्णमूपण धर्मपत्तनम् | १७७८ |
| जीरको जरणोऽजाजी कणा कृष्णे तु जीरके | १७७९ |
| सुपवी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चिका | १७८० |
| आर्द्रकं शृङ्गवेरं स्यादथ छत्रा वितुन्नकम् | १७८१ |
| कुस्तुम्बरु च धान्याकमथ शुण्ठी महौषधम् | १७८२ |
| स्त्रीनपुसकयोर्विश्वं नागरं विश्वभेषजम् | १७८३ |
| आरनालकसौवीरकुल्माषाभिपुतानि च | १७८४ |
| अवन्तिसोमधान्याम्बलकुञ्जलानि च काञ्जिके | १७८५ |
| सहस्रवेधि जतुक बाहीक हिङ्गु रामठम् | १७८६ |
| तत्पत्री कारवी पृथ्वी वाष्पिका कवरी पृथुः | १७८७ |
| निशाख्या काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी | १७८८ |
| सामुद्र यत्तु लवणमक्षीवं वशिरं च तत् | १७८९ |
| सैन्धवोऽस्त्री शीतशिरं मणिमन्थं च सिन्धुजे | १७९० |
| रामकं वसुकं पाक्यं विड च कृतके द्वयम् | १७९१ |
| सौवर्चलेऽक्षरुचके तिलकं तत्र मेचके | १७९२ |
| मत्स्यण्डी फाणित सण्डविकारः शर्करा सिता | १७९३ |
| फूर्बिका क्षीरविकृतिः स्याद्रसाला तु मार्जिता | १७९४ |
| स्यात्तेमनं तु निष्ठानं त्रिलिङ्गा वासिताग्रधेः | १७९५ |
| शलाकृतं भट्टिः स्याच्छूल्यमुख्य तु पंठरम् | १७९६ |
| प्रणीतमुपमपन्न प्रयस्त स्यात्सुमंस्कृतम् | १७९७ |
| स्यात्पिच्छिलं तु पिजिलं संमृष्टं शोधित ममे | १७९८ |

| | |
|---|------|
| चिकणं मसृणं स्निग्धं तुल्ये भावितवासिते | १७९९ |
| आपक्वं पौलिरभ्यूपो लाजाः पुंभूम्नि चाक्षताः | १८०० |
| पृथुकः स्याच्चिपिटको धाना भ्रष्टयवे स्त्रियः | १८०१ |
| पूपोऽपूपः पिष्टकः स्यात्करम्भो दधिसक्तवः | १८०२ |
| भिःसा स्त्री भक्तमन्धोऽन्नमोदनोऽस्त्री स दीदिविः | १८०३ |
| भिःसटा दग्धिका सर्वरसाग्रे मण्डमस्त्रियाम् | १८०४ |
| मासराचामनिस्त्रावा मण्डे भक्तसमुद्भवे | १८०५ |
| यवागूरुष्णिका श्राणा विलेपी तरला च सा | १८०६ |
| स्त्रक्षणाभ्यञ्जने तैलं कृसरस्तु तिलौदनः । | ** |
| गव्यं त्रिषु गवां सर्वं गोविद् गोमयमस्त्रियाम् | १८०७ |
| तत्र शुष्कं करीषोऽस्त्री दुग्धं क्षीरं पयः समम् | १८०८ |
| पयस्यमाज्यदध्यादि द्रव्यं दधि घनेतरत् | १८०९ |
| घृतमाज्यं हविः सर्पिर्नवनीतं नवोद्धृतम् | १८१० |
| तत्र हैयंगवीनं यत् ह्योगोदोहोद्भवं घृतम् | १८११ |
| दण्डाहतं कालशेयमरिष्टमपि गोरसः | १८१२ |
| तक्रं ह्युदश्विन्मथितं पादाम्ब्वर्धाम्बु निर्जलम् | १८१३ |
| मण्डं दधिभवं मस्तु पीयूषोऽभिनवं पयः | १८१४ |
| अशनाया बुभुक्षा क्षुद्रासस्तु कवलः पुमान् | १८१५ |
| सपीतिः स्त्री तुल्यपानं सग्धिः स्त्री सहभोजनम् | १८१६ |
| उदन्या तु पिपासा तृद् तर्षो जग्धिस्तु भोजनम् | १८१७ |
| जेमनं लेह आहारो निघासो न्याद इत्यपि | १८१८ |
| सौहित्यं तर्पणं तृप्तिः फेला भुक्तसमुद्भूतम् | १८१९ |

| | |
|---|------|
| कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्टं यथेप्सितम् | १८२० |
| गोपे गोपालगोमंख्यगोधुगाभीरवह्रवा | १८२१ |
| गोमहिष्यादिकं पादवन्धन द्वौ गवीश्वरे | १८२२ |
| गोमान्गोमी गोकुलं तु गोधनं स्याद्गवा व्रजे | १८२३ |
| त्रिष्याशितंगरीन तद्गावो यत्राशिताः पुरा | १८२४ |
| उक्षा भद्रो वलीवर्द ऋपभो वृषभो वृषः | १८२५ |
| अनङ्गान्मौरभेयो गौरुक्ष्णा मंहतिरौक्षकम् | १८२६ |
| गव्या गोत्रा गवा वत्सधेन्योर्वात्मकर्धनुके | १८२७ |
| वृषो महान्महोक्षः स्याद्वृद्धोक्षस्तु जरद्गवः | १८२८ |
| उत्पन्न उक्षा जातोक्षः सद्यो जातस्तु तर्णकः | १८२९ |
| शकृत्करिस्तु वत्सः स्याद्व्ययत्नतरौ ममौ | १८३० |
| आर्षभ्य पण्डतागोयः पण्डो गोपतिरिद्रचरः | १८३१ |
| स्कन्धदेशे त्यस्य वहः सास्त्रा तु गलकम्बलः | १८३२ |
| स्यान्नस्तितस्तु नस्योतः प्रष्ठवाड्युगपार्थगः | १८३३ |
| युगादीना तु वोढारो युग्यप्रासङ्ग्यशाकटा | १८३४ |
| खनति तेन तद्वोढास्येद दालिकसंरिकौ | १८३५ |
| धूर्यहे धूर्यधारेयधुरीणा सधुरधनः | १८३६ |
| वभात्रैकधुरीणैकधुरात्रैकधुरात्रै | १८३७ |
| न तु सर्वधुरीणः स्याद्यो व सर्वधुरात्रै | १८३८ |
| माहेयी सौरभेयी गौरुक्षा माता च शृङ्गिणी | १८३९ |
| प्रजुन्यङ्ग्या रोहिणी स्यादुत्तमा गोपु नैचिकी | १८४० |
| पणादिभेदसंज्ञाः श्नुः शयन्तीधरलादयः | १८४१ |